

અવેરચંદ મેઘાણીને

'Girl

The white blossom in the ear

Will it last ?

The scarlet on the brow

Will stay till death

Will the white blossom in the ear

Last ?'

It should be the endeavour of poets to go back to the essence of India-Village India-and be more of poets of the people

—William G. Archer

यज्ञकार्य

श्री पुष्कर चंद्रवाकर विख्यात लोकसाहित्य सेवी हैं। उन्होंने अपने मनकी उमंगसे और कर्मकी तरंगित शक्तिसे सच्चे पृथ्वीपुत्र बनकर खेद-साहित्यका सग्रह करनेके लिए आत्मसमर्पण किया है। उनके यशस्वी कार्यको देखकर मुझे बराबर प्रसन्नता होती रही है। आज उनके 'नवो हलसी' नामक लोकगीत सग्रहके नवावतारके लिए कुछ मंगल शब्द लिखनेका अवसर पाकर मैं अत्यंत आनंदका अनुभव करता हूँ। मेरी भावना है कि लोकसाहित्यका कार्य एक यज्ञ है। पृथ्वी और आकाशके विशाल अंतरालमें व्याप्त विराट भावोंके साथ जिनका मन मिला हुआ है, वे मातृभूमिके किसी प्रदेशमें रहते हों इस पवित्र यज्ञ के श्रुतिवक् हैं। 'माता भूमिपुत्री अह पृथिव्या' यह उनका साधनामत्र होता है। इस मंत्रकी प्रेरणाशक्ति अनंत है। यह मंत्र देश और कालसे ऊपर व्याप्त एकताका विधायक है। इस प्रकार जिनकी निष्ठा मातृभूमिके प्रति समर्पित हुई हो उन पृथ्वीपुत्रोंका आवाहन हमारे राष्ट्रीय साहित्यका नया धर्म है। आज भारतीय लोकमानस भेदोंसे ऊपर उठकर राष्ट्रीय जीवनमें ओतप्रोत एकताकी ओर उन्मुख हो रहा है। किसी भी अन्य क्षेत्रमें यह ऐक्यभाव इतनी सरल स्वाभाविक रीतिसे प्राप्त नहीं होता जितना उस विराट लोकके घरातल पर जो कोटि कोटि सख्यामें भारतीय ग्राम और जनपदोंमें हिमालय से समुद्र तक फैला हुआ है। जो व्यक्ति इस लोकका अवतीर्णदचंक्रमण शक्तिसे प्रायश्च दर्शन करता है वही उच्चका सच्चा दर्शन पाता है। उसे ही वेद व्यासने सर्वदर्शी कहा है —

प्रत्यक्ष दर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेश्वरः (उद्योग ४३/१६)

लोकके प्रति अन्नत सहानुभूति, हृदयके सुकुमार भावोंका तरल प्रवाह, कमो क्षीण न होनेवाली आत्मीयता, यही लोकसाहित्यके कर्मठ यात्रीकी पूँजी होती है, जिसके बल पर वह घर या नगरकी सीमाओंसे अपने मनको बाहर ले जाकर विपटमें विलीन कर देता है। हृदयमें विराट भावका संस्कार लोकसाहित्यके कार्यकर्ताकी पहली कसौटी है।

इस गीत समूहका नाम 'नवो हलको' या 'नया युग' है। साबरकाटेकी बनवालाएँ वसतके उत्कृष्ट वातावरणमें लोकगीतका स्वर जैसा करते हुए गाती हैं :

मातमा गांधी आये, ने नयो हलको रे !

अर्थात् महत्मा गांधी आ गए। अब नया युग आ गया। बस यही हमारे इस अभिनव पृथ्वीपुत्र आन्दोलनका बीज मंत्र है। महत्मा गांधी नवयुगके दृष्टा थे। उनके कारण ही लोक एवं लोकसाहित्यकी ओर देशका ध्यान गया। जिन कठोंमें इस साहित्यका जन्म हुआ या उन्हें राष्ट्रीय जीवनमें गांधीजीके कारण नई प्रतिष्ठा मिली। राष्ट्रीय आलोचके फैलनेसे हमारे नेत्रोंमें देखनेकी नई क्षिति आई। जहाँ पहले अधेरा था वहाँ उजाला फैल गया। गाँवों और जनपदोंमें, सुदूर नदियोंके किनारों और पहाड़ोंकी गुफाओं में जो जनता सदृशके छत्ते पर लगी हुई मधुमक्खियोंकी तरह मरी हुई थी और जो हमारे ध्यानसे तिरो-हित थी, वह अब राष्ट्रीय चेतनाका अभिन्न अंग बन गई। सागरमती नदी से एक उपलक्षण मात्र है। सचमुच वहाँ पहले-पहल महत्मा गांधीने अपनी साधनाका पाँचजन्य संस्कृत मजाया या चित्रके गगनवेदी स्वर सुनकर सहस्रों वर्षोंकी हमारी बधिरता दूर हो गई। कादमीरकी कृष्णगंगा और महदूषा नदी क्षेपियोंसे लेकर अगम प्रदेशकी सूमा और रोहिय नदी क्षेपियों तक एवं दक्षिण कोशलकी इन्द्रवती और शबरी नदियोंसे लेकर जहाँ कन्याकुमारीके द्वार तक मातृभूमिका विस्तार है, सर्वत्र एक नये युगका आगमन हुआ है। ऐसा कृता है उसे किसी

महावसन्त के प्राणवत फणुहरेने उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिमके चारों
झोंकों शकशोर डाला है। आज उसके कारण हमें अपने जीवनके चौमुखी
सौंदर्यको देखने और समझनेकी नई आँख मिली है।

राजस्थानी लोकगीत, मोजपुरी लोकगीत, कारमारी लोकगीत, पंजाबी
लोकगीत, गढ़वाली लोकगीत बघेली लोकगीत, छत्तीसगढ़ी लोकगीत, उड़ीसा
लोकगीत, सोरठी लोकगीत इत्यादि अनेक प्रदेशोंके लोकगीतोंके नये
समूह कुछ ही वर्षोंके भीतर सामने आये हैं। उनसे लोकजीवनके अनेक
सरस अंगोंको निकटसे जानने और समझनेका नया साधन प्राप्त
हुआ है। लोकगीत प्रत्येक जनपदकी अपूर्व निधि होती है। लोक-
मानसमें उनका जन्म होता है। पृथिवीपुत्र मानवके जीवनकी निज वार्ता
—एहवार्ता इन गीतोंमें पिरोई हुई होती है। जिस प्रकार पौधश सस्कारोंके मंत्र
एहजीवनमें हमारे साथ रहते हैं, उसी प्रकार मंत्रोंसे भी अधिक व्यापक
लोकगीत उन्हीं घरोंमें खो कठोंमें सुरक्षित रहते हुए मानवीय जीवनकी
पूरी रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। मानवहृदयके सुख-दुःख एवं उसके उल्लास
और आशा-निराशासे इन गीतोंका जन्म होता है। मानवीय मनोभावोंमें
प्रेम और त्यागका जो गाढ़ा रंग है वह पदे पदे इन गीतोंमें
मिलता है। लोकगीतोंमें विवाहगीत या जिन्हे गुजरातमें लमगीत कहा
जाता है, सबसे विचित्र और कल्याणपूर्ण होते हैं। लोकमें विवाह सबसे
बड़ी घटना समझी जाती है। विवाह द्वारा मनुष्यके जीवनमें जैसा बिल
क्षण परिवर्तन होता है वैसा अन्य विधिसे नहीं। मानव-जीवनका जो
सबसे प्रभावशाली रस है उसी शृंगार रसके स्वस्थ, संयत रूपसे अधिकांश
लोकगीतोंका स्वरूप निर्मित होता है। विवाह सन्धे अर्थोंमें मानवीय
आत्माकी अध्यात्म दीक्षा है। स्त्री और पुरुष दोनोंके रोमरोममें व्याप्त
देह और मनकी जन्मसिद्ध कोई गहरी अवृत्ति अपने दूसरे केन्द्रसे मिलनेके
लिए विवाहके रूपमें विस्फोट प्राप्त करती है। जैसा स्वाभाविक
या प्रस्तुत समूहमें भी लमगीत और प्रणय गीतोंकी पर्याप्त संख्या
है, जिनमें अनेक सुकुमार भावनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं। जिस प्रकार विवाह

के आगमनकी प्रमन्नतासे उत्तर या मन्वदेशकी नारी गान्धी है—
‘मैं सोने चाँदीकी वेदी बनाऊँगी और केसर-कुङ्कुमने लोंपछर गर-
मोतियों से चौक पुराऊँगी।’ उसी प्रकार गुजराती बहिन कहती है—
‘आज हमारे घर आनन्दका बधावना है, उसमें कुङ्कुम और केसर का
साँधिया पूजा है।’

अविद्यांश लोचनीतोंका चन्द्रबिन्दु नारी है। उसके दृढस्वभाव, प्रेम, बलसन्ध, मान, उपालमके उमारे हुए चित्र गीतोंमें प्रस्त होते हैं। साध-बहू और ननदभोजाई के पारिवारिक चित्र भी मिलते हैं। श्रीक सुजमार यौवनका सौंदर्य लोचनीतोंका अति सरस पक्ष है। राजस्थानकी सुन्दरी भूमलके वर्णनमें किष्की लोचनीने कितना सुन्दर कहा है—

फाली रे फाली फाजलिये री रेखड़ी रे
हांजी रे फाल्योही फोठरामें चमके यीजली।

भूमलकी जिन काली आँखोंमें काजलकी रेखा खिंची हुई है वे ऐसी लगती हैं मानो काली कोठरीमें बिजली चमकती है। बड़ेन्धुंकी छर्वाली विराट भलदरगोकी कल्पना करती हुई पतिसे कहती है—
‘हे मेरे छेक, पृथिवीका वाहन मेघोंका ओहार (पर्दा) और चदमाकी टिङ्गनी लेकर मुझे लेने आओ तो मैं तुम्हारे साथ चलींगी।’

इनके साथ ऋग्वेदके उस विवाह गीतका स्मरण आता है जिसमें धरने पनि सोनके घर जानी हुई सूर्याके लिये मनका वाहन और दुनो-कहा ओहार कल्पित किया गया है—

मनो अस्या अन आसीद्
चो रासीद् उत छदिः

(ऋग्वेद १०/८५/१०)
यह भी सोमसुजाके विवाहका लोचनीत ही हाव होता है। देखें

भिन्न अचलोंमें फैले हुए लोकगीतों में मनोभावोंकी गहरी एकता पाई जाती है। वे सब एक ही सस्कृतिकी जलवायुमें प्रतिपादित हुए हैं।

श्री पुष्करजीने वन्य जानियोंके जीवनमें पुलमिल कर अपनी सामग्रीका अधिकांश भाग प्राप्त किया है। सौराष्ट्र और धर्मई राज्योंकी सीमाके बीचमें लगभग साढ़ धर्ममीलका नल सरोवर नामक जलाशय है। उसके कांठमें पटार नामक जाति बसी हुई है। जनसंख्यामें केवल छह हजार होते हुए भी इस जातिकी जीवन बहुत ही रंगविरंगा है। लोक-कनियोंने उनकी मानवती पटारणोंके अनेक सटीक चित्र गीतोंमें उतारे हैं। उन्हींमें 'भूदी बायदी' या कर्मशाका चित्र भी है जिसको प्रस्तुत करने के लिये उसका पति भौरकी भातवाली साड़ी मोल लाता है, पर परनीका स्वनाल बदलता नहीं। वह अपने घरकी ओखली-बक्की छोड़कर पराए घर दलने-पीसने जाती है। उसके पतिकी आन्तरिक पीड़ा गीतका विषय पनी है।

इसका दूसरा पक्ष यह है जिसमें स्त्री पतिके लिये अत्यंत मधुर रसका स्रोत है। उसे जीवनकी फुलवाड़ीकी सुगंध कहा गया है जिसके लिये पतिरूपी भौरा सदा उत्कण्ठित बना रहता है (पृ० ३७)।

पटारोंके प्रदेशमें बहनेवाली रोड नदी उन्हें माताके समान प्रिय है। उनके लोकगीतोंमें उत्खानपूर्वक उसका वर्णन आता है। उसके तट पर वे ओखला रांधकर खांड मिलाते और गानके स्वरमें पुकारते हैं—
हे बाट चलने वाली, आओ, रोड के कांठमें ओखला तैयार है (पृ० ४२)।

लेखकने पटारोंके स्थानिक वीरोंके कथागीतोंका भी समग्र किया है। किंतु शियाल गांवकी पटार बालाओंका वर्णन विलक्षण है। उनके सुरीले कंठोंसे गीतोंकी झकी लग गई थी। उनमें गानों होइ लग गई और उन्होंने नृत्यगीतकी शार्प, स्थायार, बह, श्री. १. द्वि, शल, पुनर, चाल, घोडी, फूल नामक पटार बालाओंके ध्यान ही कृष्णा नदीके कांठमें

लवाड़ी जातिकी बनबालाओंने एक बार नृत्य और गीतके रस-परंपरे हमें छका दिया था। वस्तुतः ऐसे ही स्वतः प्रेरित मानससे सन्ने गीतोंका जन्म हुआ करता है। उन किशोरियोंकी फिरकन 'चालो भूमन्ती बनमा जावी' गीतकी द्रुत लयमें तरंगित है (पृ० ५६)। नव विविध युवांतिको लोकगीतोंमें 'रनकटोरी' कहा जाता है। पद्मार गीतकी यह पंक्ति कितनी सरस और सुन्दर है—

‘सोना घाटकडी रे, केशर घोल्यां, बालमिया—

घोनेकी कटोरीमें हे बागम केशर पोला हुआ है।

लोकगीतकी यह पंक्ति मानों प्रकृतिने स्वयं अपनी लेखनीसे लिखी है—उसी लेखनीसे जो मोड़ी बालाको चित्रविचित्र रंगोंसे सजाकर नव यौवना किशोरीके रूपमें सज्जित करती है।

चांदीके चार कड़ोंमें घोनेकी साकलोंसे आमकी बालमें बिंबे हुए हिबोलेका चित्र भी मार्मिक है और गुजरातकी निजी सस्कृतिका विशेष प्रतीक है।

चरोर और अहमदाबादकी द्वारा जातिके गीतोंका समूह भी रोचक है। उनके लम्बीगीतोंमें सर्व प्रथम गणेशजीकी वदना और आवहन किया जाता है। यही प्रथा राजस्थानी लोकगीतोंमें बिंदारक देवताके लोकांतर्गते आरम्भ होती है। चूदरी लोकगीतोंका चिरपरिचित अमिष्य है। छप गंगा ह—

मारी छपटीमां आने पनी चूंदही रे,
मारी होले हयासोनी चूंदही रे।

श्रीभाग्यवती श्रीके लिए शुभमिन बापू गुडमीदासजीने रनबरी मनसमें प्रयुक्त किया है। वही गुजरातीमें 'मवाका' और द्वारा चूंदही बोटीमें हवाकोनी हो जाता है।

भाई चंदरवाकरजीके इस संग्रहमें और भी अनेक प्रकारके लोक-गीतोंकी खासनी चरनेको मिलेगी। आशा है भविष्यमें गुजरातके किसी एक प्रदेशमें ही अपना कार्यक्षेत्र सीमित करके वे गीतोंकी पुष्टल संख्या प्राप्त कर सकेगे जैसा उत्तर भारतमें भोजपुरी लोकगीतोंके संग्रहकर्ताओंने किया है।

काशी विश्वविद्यालय }
१६-१०-१९१९ }

वासुदेवशरण अग्रवाल

ક્રમ

ચક્ષુકાર્ય	૫
(આમુલ : ડૉ. વાલુદેવચરણ અમવાલ)						
નવો હલકો	૧
નવો હલકો ૨!	૩
પદારોનાં લોકગીતો	૧૬
પદારનાં સંસારગીતો	૩૧
પદારનાં લોકગીતોમાં સ્થાનીય રંગો	૪૦
પરમ માથે આવવાનું નો ભૂતતા!	૫૨
કિના અરવીર હ દીવ	૬૪
છારનાં લોકગીતો	૬૮
આંખા નાંઈના બિખારી	૭૫
અંગ કિરો ખમતજુવાળો	૮૩
સંસારગીતો	૯૭
ગદ લાગી	૯૯
તથુ પ્રભુચગીતો	૧૦૫
વનનો મોરલો	૧૦૬
જુમારીનું ગીત	૧૧૦
સધીટો મેમાન આઝો	૧૧૨
નાયક	૧૧૪
અરજલિયો	૧૧૭
ઉત્તર ગુજરાતનાં ૭ લોકગીતો	૧૨૦
વનમેં ગોલે રાજ કોયલડી	૧૨૬

શ્રામગીતો	૧૩૩
તમ્મરનાં લાકડાંનિ બારો	૧૩૫	
ગુજલડી રે	૧૩૮	
હોલો રાણો એકલો	૧૪૦	
મેવલો આવે ને મે લાવે	૧૪૪	
આઈ અખાતરી	૧૪૮	
નાટ્યગીતો	૧૫૧
શ્રામજાજનો મેળો	૧૫૩	
કણખી અને કણખણું ગીત	૧૫૬	
સાડી ગુલાખી મગાવો	૧૬૦	
ગાંધીગીતો	૧૬૫
ગાંધીગીતો	૧૬૭	
જવાહરલાલ ને'રુ	૧૭૦	
ટાપીવાળો અંગરેજ	૧૭૩
ટાપીવાળો અંગરેજ	૧૭૫	
મરશિયા	૧૭૯
एको रसः कलशः एव	૧૮૧	
અભિમન્યુના રાજિયા	૧૮૮	
પરભવનું પરબ	૨૦૩
પરભવનું પરબ	૨૦૫	
રવિદાસની વાણી	૨૧૭	
આ જાજન હોતું ?	૨૧૮	
મને નાથ લ્યો ઉગારી	૨૨૧	

ત્યારે, લોકગીતમાં કેટલાક પ્રસંગમાં સામ્ય મળે છે. પુગલ્યના પ્રસંગો તો આખા આસ્તમાં વ્યાપક બનેલા છે તેથી તેના પરનાં લોકગીતોમાં સામ્ય બેલા મળે તે સ્વભાવિક છે, પણ સમાજજીવનના પ્રસંગો અને રાષ્ટ્રવ્યાપી ઘટનાઓ પર રચાયેલાં લોકગીતોના બાવેમાં સામ્ય મળે છે. માનવનું ચિત્તતંત્ર લગભગ સંપૂર્ણ હોવાના કારણે કેટલાક બાવો જાણે આપાનો વાઘો બદલીને મવાના હોય તેવું લાગે છે, પણ તેના મૂળમાં તો રેલું સંવેદન જ પડેલું છે ને તે મવાયું બધાં ને ત્યાં, તે તે ધરતીની બોલીમાં.

ધરતીના બોલ

ધરતીનાં બદલાતાં રૂપવર્ણો બોલનાં અને વેણનાં રસમાદગિયાં કોતરી કાઢ્યાં છે. બીતસંગઠન કરવું છે, ઝેમ કહેવાના બદલે હિચ્ચારે છે: ‘બાધી એકી બાધી!’ ચાકરી કષ્ટદાયક છે, વેદનાબરી છે તે જાવ વ્યક્ત કરવા તે ‘બારા વરહની ચાકરી’ કહેવાય ને? ચઢવાને સુરકેસ એવા કુંજરાળ માર્ગને લોકકવિએ ‘ધૂળિયો ઘાંટો’ કહીને ગીતમાં ગાયું છે :

કેરાળોનો ધૂળિયો ઘાંટો, નહ ચઢાય છારી ચાલુડી !

અને એમાં શમ્યા—મૃત્યુશ્વ્યા ખડકવાની હોય તો તે હોય માત્ર નાગિયેરની, માટે શબ્દપ્રયોગ રચાયો. ‘નાગિયેરની ચયું ખડકે !’ ખૂબ દુઃખ માટે ‘આવેડયાં દખ’ લોકકવિ મૂકે. રોષના સાટે દલની આંટી, વ્યસનનાં ગીતોમાં વ્યસનની તલપ બતાવવી હોય તો લખે : દલનો ભોગી. નારીરૂપ વર્ણવતાં લખે : ‘અંજોડે મલકૂષ.’ જુવાની આવી ગાય તો તો લોકકવિની કલ્પના ખૂટી જ કહેવાય ને? તેથી તેણે ગાયું ‘ફલવાડી ફેરી.’ રેંટિયો ફરતો બતાવવાનો ને તેની મતિને બતાવવા માટે લોકકવિ તેની કાવ્યપંક્તિમાં શબ્દચિત્ર દોરશે : ‘રણુઝણુ રણુઝણુ રેંટુડો ફરિયો !’ વાટકડી હોય તો લોકગીતમાં તે ‘સોના વાટકડી’ જ હોય ! હોંચકાની મતિ બતાવવા માટે કવિએ શું ગાયું ?

પરિશિષ્ટ-૧	૧૩૨
પરિશિષ્ટ ૧ જ	૨૩૪	
” ૨	૨૩૬
બાહ્યો સૂ	૨૪૧	
ગીતોની સૂચિ	૨૪૬
શબ્દોની સૂચિ	૨૫૩
આંખા નાંકંખા લિખારી	૧ (૨૫૬)	

શુદ્ધિ

પૃ-૧૨૮ પરની ૩૭ પંક્તિમાં આવના સંવ. શ્રી. પ્રેમશંકર
ત્રિવેદીના સ્થાને હરગોવિંદ પ્રેમશંકર ત્રિવેદી વાંચો.

લેખકની કૃતિઓ

લોકસાહિત્ય

૧. નવો દવડો (લોકગીતસંગ્રહ)
૨. ચંદ્ર ઊંચે ચાલવું (કથાગીતો)

વાર્તાસંગ્રહો

૧. અંતરદીપ
૨. શુકનવંતી
૩. ખેતરનો ખેડુ
૪. બાધણી

નવલકથાઓ

૧. બાવડાના બળે
૨. જવની કમાણી
૩. રોકનાં રતન
૪. નંવાચેલાં દેવાં
૫. માનવીનો માળો
૬. લીધુડાં લેન્ને

એકાંકીઓ

૧. પિયરનો પડોથી
૨. મહીના ઓવારે
૩. યશ
૪. સહકારમાં

ખાળવાતો

૧. ગ્રાણીવર

સંપાદનો

૧. એકાંકીનો સંગ્રહ
૨. લોકધાતરમાળાની ૧૨ પુસ્તિકાઓ

‘હોવેમ હાલે ને રે દોરી ધરસકા !’

જો પતિ રિસાય તો ગવાય ત્યારે એમ જ ગાય : હજારી ઢોલ રસથો !

અને મદના દાંગરા તે એમ ને એમ વર્ણવાય : તેના માટે તે ‘પાન સરખા જ’ મૂકવું તેને જાણે ! મૂલ્યવાન ચૂદડી મનાવરી હોય તો તે ગવાય ત્યારે અને ‘હેણે સવાસોની ચૂદડી’ તેથી જરા એણી નહો.

તે મીતસર-કાએ સી સૂઝથી આ રસમાદગિયા સગળ્યા હશે !
પછી તેઓ ગાય જ ને ‘આમા નાંધિયા લિખારી !’

આભાર

પ્રથમ તો, શ્રી સંનિર્માઈ શાહનો વસત મુનશ્વનાયના ફોરમેન-
છાપાની કાપનીઓના કૃપાભાંથી નવો દલદો ‘ની છાપણીમાં સજાવ કરી
આપી મુદ્રણ પત્રને, તેથી જ તો નાહી લોકમીતોની કાપનીઓ તો લેખામ
હિરડાનો માથ. તેની સુદર છાપણી કરી આપવી તે જરા મુશ્કેલ. અને
તે પણ ગડગડગોટાગિયા ને તૂટકલખાણભાંથી માટે જ તેમનો આભાર.
પ્રા. જે સી ત્રિવેદીએ લોકમીતોની પક્ષિઓ અને શબ્દની સૃષ્ટિ કરી
આપી માટે તેમનો પણ આભાર માનું છું તેમના ઇપકાના લખને
કદપીને જ મુ. શ્રી. કે. જી. શાઓએ આ સમઢના મૂલ્ય જોઈ આપીને
મને નાણી બનાવ્યો છે હો વાસુદેવચરણ અમરચણુ મમત્વ મારા
પણે રહ્યું છે તે તો આ સમઢની પ્રત્યવના કહે છે તે શું ઓહું ?
અદગ છે ? તેમનો હું ખૂબ જ આભારી છું

‘ગર્ભાંતલુવન’

ખડાયના કાવોની પાછળ
એનિરુમિગ, અમદાવાદ-૬
તા ૧૮ ૬ ૫૬

મુકેર અંદરવાકર

Indian tribal poems, which were a great reservoir of
 'nagery, should be accepted as a valid source for
 enrichment of modern Indian literature.

W. G. Archer

નવો હલકો રે !

વૃક્ષસત્ત્વ સામ્રાજ્ય હતું, જ્યેષ્ઠ પર, વનના સીમાજના દરેક બાક, વેના અને છો પર ત્યારે મહુડાઓનાં મીઠાં ફળ સનાર પડતા ધરતી પર વેગતાં અને વનનો મધમધાટ માદક બનતો હતો.

એવા વર્ષનકાળમાં સાબરકાંઠાના પોસીના પટાની કુમ્ભમાળમાં ઘૂમતો હતો. ઉવાડા તૃણરક્ષ રહિત કુમ્ભાઓ બાહ્યના મોડિયા તાલકા જેવા લાગતા, પણ લોકોના હૈયામાં િરોન અને ઉ નસ હતા.

ત્યારે દોષ દમ્ભવા મડયો, ત્યાના માનવી-ગરાસિયાના આશ્રમે અશ્વમા વૃત્ત રમવા લાગ્યું અને જગનમાંથી લીનુડા વાસની પેરાણિયો સંઈને ત્રણ કુમ્ભાની વચ્ચે પડેના ઝોળમાં-ન્યથા દોસતો રશ્મિકાર આવતો હતો ત્યાં તેઓ સૌ ચાની નીકળ્યા પેના દે નતો દમ્ભો સંભળાતો હતો તે સ્થાનક પર તેઓ જેયારની અખ્યામાં ન હતા, પણ ગામના ગામ ખાલી કરી જોમનિયાને ઝુનાવતા હજારોની સખ્યામાં એક વનજાતિના મુવાનો અને મુવનીઓ ચાલી જીવદયાં હતાં.

તેઓ પેના કુમ્ભાના ઝોળમાં આવે છે કુડી પત્થી અવાજ આવે છે તડાકે ધીન તડાકે.

જીવાનિયાનો શ્વામજો વર્ણ, માથે ઝુંદાં ઝુંદાંને સાચવવા માથે રૂમાલ માથો છે ગમીનો જીવાન રેશમી રૂમાલ ધારીને આન્યો છે અને કાનમાં વગડાકે વનફૂન.

મુવનીઓ ઠાંસ મારીને ચાલી છે અનકારમાં તેમણે પીંજણિયાં પહેર્યાં છે, હાથના પોચે હથકૂન કુમ્ભાના ઝોળનાં કુડાળાં ગ્યાય છે પહેલુ કુડાળુ પુરુષોનું બીજું સ્ત્રીઓનું ત્રીજું પુરુષોનું ચેતુ સ્ત્રીઓનું આ જોતાં તરત જ અભિમન્યુનો ચક્રવો યાદ આવે.

ટહોલાણ, ખાન્નેપીન્ને ને માયા માણ્ણે રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

આંગણ રોપાવું પારસપીપળી રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ, પાંદડાં ગણીને મધના કાદસે રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

દોવાણ પરખ્યા, ને આશીશ મળી ખાન્નેપીન્ને ને માયા
માણ્ણે રે ! પણ ત્યાં તો જોક્ય સી નોકરી આવીને જીભી વિન્નેગણ
ભીયારાણીથી એકસા એકવા દિવમો કેમ જાય ?

આગણ રોપાવું આંખા આંખલી રે !

અને એનાં જે વૃક્ષથીય વિન્નેગણથી વિન્નેગના દિવમો ક્યાં
પૂગ થવાના છે ? તે ગણતરી ક્યારે પૂરી થશે ? વૃક્ષને નવનવા પાંદડાં
ફૂટવાના જ સી વાસ્તવિકતા મૂકી છે લોકગીતના ગ્યમિતાએ ! માટે
તે બોલે છે

આગણ રોપાવું પારમપીપળો રે, ટહોલાણ !

પાંદડાં ગણીને મધના કાદસે રે !

કરુણાની જાંમુરી અડી જ થબે છે આ ગીત પણ લમગીત
છે વૃત્ત કરના કરતા તેઓ ગાતા હોય છે

કેણુના રાજ કનૈયા, દેમસે માદળ વાજે !

કેણુના રાજ કનૈયા, દેમસે માદળ વાજે !

બાપાણના ગજ કનૈયા, દેમસે માદળ વાજે ,

બાપાણના રાજ કનૈયા !

બાપુ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે,
બાપુ કે'તો રેમ કનૈયા, ખેલ કનૈયા; ઢેમસે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમઝે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

મારલીલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

મારલી કે'તો રેમ કનૈયા, રેમ, કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમઝે માદળ વાજે !

કાકાલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કાકુ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કાકુ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢેમઝે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કાકીલના રાજ કનૈયા, ઢેમને માદળ વાજે !

કાકી કે'તો રેમ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કાકી કે'તો ખેલ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમને માદળ વાજે !

બધમાલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

બધમાલ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

કેણુલના રાજ કનૈયા, ઢેમસે માદળ વાજે !

ઢેમસે માદળ વાજે, જોરથી નવાળુ દોલ જાણ ગ્યા છે અને
ગજકનૈયો મોડા લઈને વસ્ત્રાદીને વરના ચાલી નીકળ્યો છે ત્યારે કહે
છે કે બાપુ, મા, કાકા અને બધાના કહેણુ યગમાલે લુ ગોડા ખેમવ,
અર્થાત રમ

કેન્દ્રમાં તથા યુવકોનું 'ઓગ્રેસ્ટ્રા મડળ' ઢાલ, કડી, તળાઈ,
નગાન, પખાવ, કાસીએકા લઈને એને છે

નૃપનો વગાવનાર નાચક હાથમાં પીપુડા વાંસ લઈને લાગી
સાથે દૂદનોરનો ગીનપ્રસ્થિતિએને પ્રાપ્તો હોય છે

નૃપનો સ્વ વ્યા પ્રમાણે છે! હવે પુરુષના હાથમાં લીડ
વાંમના ગળિયા છે તેનાથી સ્વ યજ્ઞમાં એનું શીલ્પ સાથે ને કે
આ નૃપ યોધિયુ નૃપ છે

ત્રીઓ હાથમાં એવી પહેરીને આવે, હાથે હાથના પહેરે,
હાથના પથ ખર્ગ! હાસડી, ખેર, ને દોડા પથ લટકાવે.

ત્રીઓ બહેનપણીના મગમાં હાથ પાડીને કે ખખા પર હાથ
ગળીને મૂકી મૂકીને પથ ઉપાડી નામે, અથવા તોડકુ સોપીને નામે,
તેમાં હાથને પથ તેના બાગીચા તરીકે તેઓ ગ્રાધી લે.

આર આર વર્તુલોમાં ગોઠવાયેન મેકડો વનમાળો વચ્ચે કેન્દ્ર
જોએન નાપક પુકારે છે, કડી જોએ કરીને ના ને લીસા સારે -

માતમાં ગાદી આવે, ને નવો હલકો રે!

લાકગિયા તાર માથે, ને નવો હલકો રે!

બાધવી એવી બાધવી, ને નવો હલકો રે!

હાથે કોઈ મા પીળે, ને નવો હલકો રે!

માતમાં ગાદી આવે, ને નવો હલકો રે!

ગો તો કોઈ મા મારજો, ને નવો હલકો રે!

દુશી કોઈ મા મારજો, ને નવો હલકો રે!

માતમાં ગાદી આવે, ને નવો હલકો રે!

દે તરિયા જાઈઓ, મદા મા મોવી આખા, ને નવા
જમાનનો પ્રગ થો છે અવમેવોએ જમાવી દેશનું કે સમગ્ર

દેશે, દારૂ ત્યાજે, કેમકે મદદાત્મા ગાંધી આવ્યા છે તે નવયુગ મંદાજો છે, કેઈ માથ માગ્યો નહીં, ખિસકોલીનો વધ કુગ્યો નહીં, કેમકે મદદાત્મા ગાંધી આવ્યા છે તે નવયુગ શરૂ થયો છે

આ મીતમા ગાંધી-વિચારસરણીમાંના અદિસાના તત્ત્વજ્ઞાને પ્રાધાન્ય મળ્યું છે તેને આ વનલોક પિછાની શક્યા છે ને તેથી જ ગાયુ :

હુશી કેઈ મારશેા મા, નવો હલકો રે !

આ નવા દલકામાં લગ્નગીત ગવાય છે નૃત્ય અને ઠેક વગર તો વનજાતિ ગાય જ નહીં.

કિહા ગાગેમાં વાળ વાગે રે,

મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ ઠાલ પરણીને ઘેર આવ્યા રે,

મરવાની કાંગમે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ વાગા વારિયામાં ડેરા તાણ્યા રે,

મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ કેહા ગામે કાગજ આવ્યા રે,

મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ ઈરિખગના કાગજ આવ્યા રે,

મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ, શું ઈરિખરાની સાકરી જોલે રે,

મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

ટહોલાણ, બારા વરદની સાકરી જોલે રે,

મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાણ !

પોચીના પટાના ઉદિયો અને લાડુડા બીલની આ વીરગાથા છે.
એ બનેજે મળીને રાજના સિપાઈને માર્યો હતો ને પછી તેમના પર
રાજની શ્રી મહા આદત ઝાનરી હતી તેનું બ્યાન આ ગીતે નોંધ્યું છે

શું સપાઈ મારિયું હે રે, કેહા ગામે માંચ રે !

કુકાવા ગામેમાં સપાઈ મારિયું હે રે,

સપાઈ મારિયાં હે રે,

સપાઈ મારિયાં હે રે, લીરી મોટર આવે,

સપાઈ મારિયાં હે રે, ઉદિયાને પકડાણો !

સપાઈ મારિયાં હે રે, ઉદિયો નહિ માનતો !

સપાઈ મારિયા હે રે, ઉદિયા સાચું બોલ ના !

સપાઈ મારિયાં હે રે,

કુકાવા ગામેમાં પકડાયેલ ઉદિયો પોલીસની પકડમાંથી
નાસી છટે છે :

સપાઈ મારિયાં હે રે, ઉદિયો ને પકડાણો !

સપાઈ મારિયાં હે રે, તીખા તાજણા પરે !

શું કામ ઉદિયો, નાઠો ?

તીખા તાજણા-ડડા પડ્યા માટે !

મરાઠા ફ્રાજદાદે, સપાઈ મારિયાં હે રે !

ઉદિયો નાઠો જાયે રે, સપાઈ મારિયાં હે રે !

સપાઈ મારિયાં હે રે, લાડુ નહિ મળતાં,

સપાઈ મારિયાં હે રે ! સપાઈ મારિયાં હે રે !

કુકાવા ગામે હે રે !

સિપાઈના ત્રાન્ની આ આખીય પટના તેમના જીવનમાં કેટલી
મળી મળી છે !

તેમના મુશ્કેલીમાં પડેલ દુકાળની તેની જ દુર્ઘટના તેમના લોક-
ગીતમાં વર્ણવાઈ છે. દુકાળ આવ્યો ને જીંડોને જીંડ્યા મગવાના દિવસો
આવ્યા ત્યારે શું શું કરવું જોઈએ, જીવવા માટે? જીવનનો સઘર્ષ
Struggle of existence તેમની પાસે શા શા ધમા કરાવે છે
તે આ ગીતમાં તેમણે નોંધ્યું છે :

દુકાળ પડ્યા, લા મોટિયારા !

લેગા હોની, લા મોટિયારા !

જાધા વાસ્તો, લા મોટિયારા !

મોરવા જાવું, લા મોટિયારા !

મોટિયારા સામઠા કોઢરા રે ગણવામાં !

લા મોટિયારા !

મોરવા જાઈયે, લા મોટિયારા લા મોટિયારા !

જોટા સમણા, લા મોટિયારા !

પાછા વળજો, લા મોટિયારા !

સામઠા ધઉરા રે, જાણુરે રે, લા મોટિયારા !

મોરવા જાવું, લા મોટિયારા !

જોટા સમણા, લા મોટિયારા !

પાછા વળજો, લા મોટિયારા !

મોરવા જાઈરે, લા મોટિયારા !

ધોળિયો મરે રે, લા મોટિયારા !

ધોળિયો લેવી, લા મોટિયારા !

મોરવા જાવું રે, લા મોટિયારા !

દુકાળ પડ્યા, લા મોટિયારા !

દુકાળ પડ્યો ત્યારે તેઓ ચોરી કરવા નીકળ્યા, પણ સમજા-શુકન ખોટા થયા. ધરતી ને જાણુમાં ન જાગે. પણ ત્યાં ધોળી બેંસ ચળી નજરે પડી ત્યાં તેઓએ નિર્ણય કર્યો કે તે ઉઠાવો.

આ મીતોના વિષયો નબ્બ મમાજના લોકોને અસહ્ય લાગે તેવા છે, પણ જીવનના મહા તત્વજ્ઞાનને વ્યજનાથી ફેલું લોકમાયકે ગાયુ :

હુશી કેઈ મા મારજે !

ખરી વ્યજના તેજ પ્રયોજ ! લમગીતોમાં મસાગ માંડવા માટે દવિએ ગાયુ .

ખાજેપીજે ને માયા માણજે રે !

ગદગ્ધ-જીવનને દવિએ ફક્ક રીતે વર્ણવી નાખ્યુ, જણ ક્રિયા-પદોમાં ! અને છેવટે તેમની આર્થિક વિવશતાનું દર્શન કરાવતું ગીત છે દુકાળનું તેઓ દુમગમા શુ કરે ? બીયો ..તેઓ ગણાય Criminal Tribe માં પણ છે. શુ તેમની પાસે કે આસ્માની આફતમાં તે સ્થિતિએ બેસીને તેને જીરે ? તેઓ તો તે જ વિચારે; મોટિયારા મોદવા જાનુ, બા મોટિયાગ !

આ ઘરની પગ જીવસ માટે માનવને આ કૃત્ય આચરવું પડે તેમા શિષ્ટ ગણના સમાજની એ લોકમાયકે નાબેધી સી આવેખી !

અને ઈ-ગાથામાય તેમણે તેમની તાકાત બતાવી છે

નમનકનઝી અદાએ નાચના નાચનાં નરી દવકથી જ્યારે તેઓ મન બનીને વાગવ જીવનનાં આ મર્યા મીતો ગાનાં હોય છે ત્યારે શિષ્ટ માનવના કાનમાં આ નવો દવકો કાણમ માટે યુગ્મતો થઈ જાય છે, બે કાન્હે તેમના આર્થિક જીવનની વિવશતાના કાજે, અને મુખ અને આનંદ માણવાની જ્વિતા કાન્હે

સાળગર્દાણા બીચીનાં આ વધુ ચાર ગીતોમાં મેળાનાં ગીત, લક્ષ-
ગીત અને નૃત્યગીત છે. એક નૃત્યગીત અધૂરું છે. નૃત્યગીતમાં સંસારની
બદનાને સુંદર રીતે, ઊર્મિથી સેવીને લોકકર્ણએ મૂકી છે

સામળાણનો મેળો

(બીસોનું આ લોકગીત તેઓ મેળામાં જતી વખતે ગાય છે)

હાલ કટુરી હાલ રે,	રમજણિયુ રે પીજણિયુ વાળે !		
હામળા ^૧ ણને મેળે રે,	"	"	"
ધીરી ધીરી હાલજે રે,	"	"	"
બાજરી ^૨ વાળી નાળમાં રે,	"	"	"
કુહા ^૩ કુહી રમે,	"	"	"
મોટિયાર મૂછો આમળે રે,	"	"	"
ડમેટી ^૪ ડાળા કાઢે રે,	"	"	"
હ ^૫ પહેરને જઈશું રે,	"	"	"
કોને કઈને જઈશું રે,	"	"	"
બાપાણને કઈને જઈશું રે,	"	"	"
ન મોકલે તો, કપડે ^૬ જઈશું રે;	"	"	"
ગામનો હંગાય જાય રે,	"	"	"
ગામના ચૈટ્યા જાય રે.	"	"	"

૧. સામળાણ ૨. હાટ સ્થાન નામ છે ૩. ડોસા જ ડોસાએ
૫. શું ૬. વાડો

છોરી રાત્રી

(સમ વખતે એકલી મહેતો જ આ ગીત ગાય છે)

ભેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નંધ ચઢાય, છોરી રાત્રી !
 વેગળે રહીને એમ કે'લે રે, હુરીટો^૧ ઘડાવું ને !
 હુરીટો મારો દઈ પે'રે ને, ડાસાને કાણુ જાયે રે !
 ભેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નંધ ચઢાય, છોરી રાત્રી !
 વેગળે રહીને એમ કે'લે કે આંસડી^૨ ઘડાવું ને !
 આંસડી મારો દઈ પે'રે ને, ડાસાને કાણુ જાયે ને !
 ભેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નંધ ચઢાય, છોરી રાત્રી !
 વેગળે રહીને એમ કે'લે કે કંઠલાં ઘડાવું ને !
 કંઠલાં મારો દઈ પે'રે ને, ડાસાને કાણુ જાયે ને !
 ભેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નંધ ચઢાય, છોરી રાત્રી !
 વેગળે રહીને એમ કે'લે રે, આજસં ઘડાવું ને !
 આજગ મારો દઈ પહેરે ને, ડાસાને કાણુ જારો રે !



વિહુ વાણિયાણી રે !

(ડોવા વેળાએ ભાઈબહેનો આ ગીત સારે ગાય છે)

(નૃત્યગીત)

વાણિયાણી વાણિયાણી, વિહુ વાણિયાણી રે !
 રહીને કેવુ જોલે, , ,

હાંસજો ^૧ મારી વાતો,	”	”
કંઈર કે અમનગર રે,	”	”
હામું ^૨ અમઠાતેવાદ મોઢાહુ, ^૩ અ અને,	”	”
અમદાવાદ અમદાવાદ,	”	”
ભાર ભાર પોળે અમદાવાદ,	”	”
કાંણાંવાણું આજુ ^૪ ,	”	”
અ્યાં ^૫ કૃષ્ણ વાણિયલે વાજે, ^૬	”	”
એક પાડે ^૭ વાણીલા,	”	”
હામું એક પાડે ભામણિયા,	”	”
અ્યાં વાણિયેલુ વાજું, ^૮	”	”
એને વાજૂડા ^૯ અવતારે,	”	”
એને હકને ભોલમાંય રાખો, ^{૧૦}	”	”
ક્યાં ભોલાય હે દેવ રે,	”	”
મોઢામું વાજું ^{૧૧} રેજું,	”	”
અ્યાંસોકંગાં ^{૧૨} માયહામજાણ,	”	”
તેને રે ભોલમય નાખો,	”	”
હકને વચન રેત્યું ^{૧૩} ,	”	”
એને એકમો મહિનો ભયરે,	”	”
એને બેમો મહિનો ભય રે,	”	”
એને ત્રણમો	”	”
એને ચારમો	”	”

૧. હાંસદેહ, ૨. સારુ ૩. મોઢામું ૪. અટક છે. ૫. ત્યાં ૬. વજે છે. ૭. રેડીએ ૮. વસે છે. ૯. વાણિયો ૧૦. વાણિયો વ્યાજ રહે તેથી ભાષા બેરહીસ ૧૧. મોઢામું ૧૨. વાજૂડા, પ્રખ્યાત, અજાણ ૧૩. ભોલ એવડાં અને તેમ ભોલ આ ॥

એને ખાંચમો	”	”	”	”
એને છઠો	”	”	”	”
એને સાતમો	”	”	”	”
એને આઠમો	”	”	”	”
એને નવમો મહિનાનો આધાન,				”
એને કુંવરિયુ જન્માવો,	”			”
એની સાહેલી તેડાવો,	”			”
વળે એને એકુસ ^{૧૩} એક કુંવારિયુ,				”
કિકલી ^{૧૪} કરતું થાય હી,	”			”
યશો ^{૧૫} એને હીરિયા રળતું થાહે છે,				”
હાસે ફેડું ^{૧૬} જ માંડું થાય રે,	”			”
હકતે બોલમાય રાખો, ^{૧૬}	”			”
હામળાણ હામળાણ,	”			”
બે નાળિયેર જોડ રે,	”			”
હકતે નકલ થાય છે,	”	-	”	”
લું ^{૧૭} તે ફેડું હાથુ જ થાય રે,	”			”
ફરી પાછું માંડું થાય રે,	”			”
એને ત્રોટા બોલમાં રાખો,	”			”
કયાંક તે દેવ બોલાય છે,	”			”

એને જે લમાંય રાખો, " "

જે નાળિયેર જોડ રે, " "

હામે હાજુહમુ થાય રે, " "



જેવનપોરનું બાજરિયું

(ઠેકવા વખતનુ ગીત બાઈ બહેનો સાથે ગાય, ગમ્મન કરતાં જાય
આ ગીતમાં નવુ પ્રતીક અત્રે મળે છે.)

બાજરિયે લેર લાગી રે, જેવનપોરનું બાજરિયું !

યુ હેટુને^૧ હજો^૨ મરી ગયુ રે, " "

જયુ કપડાં હીવતાં^૩ મરી ગયુ રે, " "

યુ^૪ ચામટુંને^૫ હજો મરી ગયુ રે, " "

યુ બાહડાંને હીવયાં " " "

અલા ડુ ગરપોરનાં આટારે " "

હાસે^૬ વાણીલા હાટા " "

બાજરીએ લેર લાગી રે, " "

યુ ધાયજુ હજે મરી ગયુ રે, " "

યુ^૭ માથુ મૂડલા^૮ " " "

બાજરિયે લેર લાગી રે " "

(એ જ પ્રમાણે બીજા વસવાયામાંથી એની, મુધાર અહીં
મૂકવામાં આવે છે)

૧. તે દાઢ ૨. ચેજે ૩. સીવતા ૪. ચપાટ ૫. સાથે ૬. મૂડલાં.

એને પાંચમો	૧૧	૧૧	૧૧
એને છઠ્ઠો	૧૧	૧૧	૧૧
એને સાતમો	૧૧	૧૧	૧૧
એને આઠમો	૧૧	૧૧	૧૧
એને નવમો મહિનાનો આધાન	૧૧		૧૧
એને કુવરિયુ જન્માવો,	૧૧		૧
એની માહેલી તેડાવો,	૧૧		૧૧
વળે એને એકુસ ^{૧૩} એક કુવારિયું,	૧૧		૧૧
કિકલી ^{૧૪} કરતું થાય હી,	૧૧		૧૧
યશે ^{૧૫} એને હીરિયા રણતું થાહે છે,	૧૧		૧૧
હામે ફેડું ^{૧૫} અ માડું થાય દે,	૧૧		૧૧
હકતે બોલમાય રાખો, ^{૧૬}	૧૧		૧૧
હામળાણ હામળાણ,	૧૧		૧૧
બે નાળિયેર જોડ દે,	૧૧		૧૧
હકતે નકલ થાય છે,	૧૧		૧૧
વું ^{૧૭} તેદોડુ હાડુ અ થાય દે,	૧૧		૧૧
ફરી પાછું માંડુ થાય દે,	૧૧		૧૧
એને મોટા બોલમા રાખો,	૧૧		૧૧
કયાંડ તે દેવ બોલાય છે,	૧૧		૧૧
ડુ ગડોવાણ ^{૧૮} દેજો,	૧૧		૧૧
ત્યાં કેશરિયો ^{૧૮} દેવ દે,	૧૧		૧૧

૧૩. એ જ. ૧૪. હસાદસ ૩૧૩ કિકિયારી ૩૧૨. દેરીમ
 ૧૫. સાર્ય જ ઘડ. ૧૬. બાધા રાખો ૧૭. વડુ
 ૧૮. ડુગડામાં વસેડો. ૧૮. કેશરિયા.

એને બેલમાંય રાખો, " "
 બે નાજિયેર બેડ રે, " "
 હાસે હાતુહયુ થાય રે, " "



જોવનપોરનું બાજરિયું

(ટેકવા વખતનું ગીત બાઈ બહેનો સાથે ગાય, ગમ્મત કરતાં જવ.
 આ ગીતમાં નવું પ્રતીક અત્રે મળે છે.)

બાજરિયે લેર લાગી રે, જોવનપોરનું બાજરિયું !

યુ હેટુને ^૧ હથે ^૨ મરી ગયુ રે,	"	"
જયુ કપડાં હીવતાં ^૩ મરી ગયુ રે,	"	"
યું આમટુંને ^૩ હથે મરી ગયું રે,	"	"
યું ખાહડાંને હીવયાં "	"	"
અલા ડુંગરપોરનાં આટારે	"	"
હાસે ^૪ વાણીલા હાટાં	"	"
બાજરીએ લેર લાગી રે,	"	"
યું ધાયજુ હજો મરી ગયુ રે,	"	"
યું માયું મૂંડલા ^૫	"	"
બાજરિયે લેર લાગી રે	"	"

(એ જ પ્રમાણે બીજા વસવાયામાંથી ચોની, સુધાર અહીં
 મૂકવામાં આવે છે)

૧. તે દાજ ૧૨. થેજે ૨. સીવતાં ૩. વગાર ૪. સાથે ૫. મૂંડલાં.

પઢારોનાં લોકગીતા.

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબના ઘોડલારે,
 વાંહે વાંહે પઢારની ટોળી, મુર્સીંગડો મુન્વરને મારવો દોયલો રે.
 ગયા વેરાસર નામના તળાવડે,
 ઘેરી લીધો મુન્વરને ત્યાંહી, " "
 કંઈક *કલાને કાને અવાજ,
 ત્યાં તો પઢાર-ખાયદલ દોડે, " "
 પડખે પરતાપસંગ પડકાર કરે, " "
 ભેળા મોનુભા સકદાર, " "
 ત્યાં તો કૂતરાએ ડાડવાળો લીધી, " "
 ઘોડી સવિતાએ સપડાંચો, " "
 હવે જેલો તે ભાલો કેાણે ભોંક્યો ? " "
 નાનભઈ સા'બ નાખ્યો નાખ્યે, " "
 જેલો પગના ડાબોટે પાડી લીધો, " "
 ત્યાં તો લૂલો થયો તત્કાળ, " "
 હવે જેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો, " "
 હવે બીજો લાવો તત્કાળ, " "
 ત્યાં તો માધુભાએ માકારો કર્યો, " "
 હવે મરેલાને શું મારો, ખુમાનસંગ, " "

સવરને નગકાંઠામાં ખાજ મનમાન્યું મળે પદાર ઠામને સવરનો
ભારે ત્રાસ. લીંબડીના રાજકુમારે કરેલી મદદનું વર્ણન કેવું વિશેષનામોની
મનબર ગૂચણીથી દીપી જડે છે! કોંગ્રેસનો મોભો વધ્યો, રામસંગ,
રૂપસંગ અને ધંધુકાની ગેરી સત્તા દૂર્યા, ત્યાં લોકકવિ કોંગ્રેસવાળાનું
પંથુ કેવું રોનકનાર ચિત્ર આલેખે છે :

હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલ્યો રૂપસંગ,
હાર્યો ઓલ્યો ધંધુકાવાળો રે લોલ !
કેશુભાઈની મેડીએ કોણકોણ જીતયા, કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ !
પાંચસે પાદરવાળા કોંગ્રેસે બાપુ; છસે જેતરવાળા....હાર્યો
લીલડી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસવાળા, રાઝી ઘોડીવાળા રે
રાઝી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ !

આ પદારોના સામાજિક જીવનના વિવિધ રંગ એમનાં કેટલાંક
લોકગીતોની મદદથી જોઈએ.

બાલના વળવળતા બપોરે બીક ખાડતાં શરીર પરસેવે રેમઝેખ બને
ને કંઠ સુકાય ત્યારે રાગની સરવાણીઓ પદારણના સુકાયેલ કંઠમાંથી
ફાપી ફૂટે ! આખોય પદારવાસ જાણે પોઢી મપે ■ એવી શાંતિ
જનાળે પદારવાસમાં રહે. પદારણનાં કંઠ અને હૃદય માણાથી ઠાંસ્યા
હોય, પણ પદારણનાં કંઠ અને હૃદય તો ખૂલે આકાશમાં હાપીનાં
ખચકાં જેવાં મનપતાં વાદળાં દેખીને, ત્યારે તેની આંખોમાં ઘેરી મસ્તી
અને પ્રસન્નતા દેખાય. પદારણના અજેઅંગમાં ત્યારે આનંદનાં મોજાં
ફળાય મોરલાનાં ફેકારવ સાથે પદારણના કંઠ ખૂલે, મેઘમર્જના સાથે
તેનું હૃદય ધનધનવા લાગે ને મેવલો આવે ત્યારે તો ગાય :

તારા મલકમાં વરસ્યા મેવલા, મારા મલકમાં આવી રેલ,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂઝુના છે મનિયાર.

પઢારોનાં લોકગીતો

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબના દોડવારે,		
વાંહિ વાંહિ પઢારની ટોળી, મુર્રીંગડો મુન્વરને મારવો દોયલો દે		
ગયા વેરાસર નામના તળાવડે,		
ઘેરી હીધો મુન્વરને ત્યાંહી,	”	■
કંઈક #કલાને કાને અવાજ,		
ત્યાં તો પઢાર-પાયદલ દોડે,	”	”
પડખે પરતાપસંગ પડકાર કરે,	”	”
લેળા મોનુભા સકદાર,	”	”
ત્યાં તો કૂતરાએ ડાડવાળો હીધી,	”	”
ઘોડી સવિતાએ સપડાવ્યો,	”	”
હવે પેલો તે ભાલો કેણે લેંક્યો ?	”	”
નાનભઈ સા’બ નાખ્યો નાખ્યે,	”	”
પેલો પગના ડાબાટે પાડી હીધો,	”	”
ત્યાં તો લૂલો યથો તત્કાળ,	”	”
હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો,	”	”
હવે બીજો લાવો તત્કાળ,	”	”
ત્યાં તો માધુભાએ માકારો કર્યો,	”	”
હવે મરેલાને શુભારો, શુભાનસંગ,	”	”

“ સુવરને નગકાંઠામાં ખાજ મનમાન્યું મળે. પદાર કામને સુવરનો
બારે ત્રાસ. લીંબડીના રાજકુમારે કરેલી મદદનું વર્ણન કેવું વિશેષનામેની
મનબર ગૂંચણીથી દીપી જોડે છે। કોએસનો મોજો વધ્યો, રામસંગ,
રૂપસંગ અને ધંધુકાની ગેરી સત્તા દુશ્માં, ત્યાં લોકકવિ કોએસવાળાનું
પંથુ કેવું રાનકમાર ચિત્ર આવેજે છે :

હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલ્યો રૂપસંગ,
હાર્યો ઓલ્યો ધંધુકાવાળો રે લોલ !
કેશુભાઈની મેડીએ કાણુ કાણુ જિતર્યા, કોએસ બાપુ રે લોલ !
પાંચસે પાદરવાળા કોએસે બાપુ; છસે ખેતરવાળા....હાર્યો
લીલડી ઘોડીવાળા કોએસવાળા, રોઝી ઘોડીવાળા રે
રોઝી ઘોડીવાળા કોએસ બાપુ રે લોલ !

આ પદારોના સામાજિક જીવનના વિવિધ રંગ એમનાં દેહલાક
સોંકળીતોની મદદથી જોઈએ.

ભાલના બળબળતા બપોરે ખીડ ખાંડતાં શરીર પરસેવે રેમઝેબ બને
ને કંઠે સુકાય ત્યારે રાગની સરવાણીઓ પદારણના સુકાયેલ કંઠમાંથી
ફપાંથી ફૂટે ! આખોય પદારવાસ બજે પોઢી ગયો છે એવી શાંતિ
હિનાયે પદારવાસમાં રહે. પદારણનાં કંઠ અને હૈયાં માણુથી દાંસ્યાં
હોય, પણ પદારણનાં કંઠ અને હૈયું તો ખૂટે આકાશમાં દાંથીનાં
બચડાં જેવાં મલપતાં વાદળાં દેખીને, ત્યારે તેની આંખોમાં ઘેરી મસ્તી
અને પ્રસન્નતા દેખાય. પદારણના અંગેઅંગમાં ત્યારે આનંદનાં મોજાં
ઠળાય. મોરલાના કેકાસ્વ સાથે પદારણના કંઠે ખૂટે, મેઘમર્જના સાથે
તેનું હૈયું યનયનવા લાગે ને મેવલો આવે ત્યારે તો ગાય :

વારા મલકમાં વરસ્યા મેવલા, મારા મલકમાં આવી રેલ,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છે મનિયાર.

પઢારોનાં લોકગીતો.

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબના ઘોડાવારે,		
વાંહે વાંહે પઢારની ટોળી, મુર્સીગરો સુન્વરને મારવો દાયલો રે.		
ગયા વેરામર નામના તળાવડે,		
થેરી લીધો સુન્વરને ત્યાંછી,	■	”
કંઈક કંકલાને કાને અવાજ,		
ત્યાં તો પઢાર-પાયદલ હોડે,	”	”
પડખે પરતાપસંગ પડકાર કરે,	”	”
લેળા મોતુભા સકદાર,	”	”
ત્યાં તો ફૂતરાએ ડાડવાળો લીધી,	”	”
ઘોડી સવિતાએ સપડાવે,	”	”
હવે પેલો તે ભાલો કેલો લોકચો ?	”	”
નાનભઈ સા’બ નાખ્યો નાખ્યો,	”	”
પેલો પત્રના ડાબાટે પાડી લીધો,	”	”
ત્યાં તો લલો થયો તત્કાળ,	”	”
હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો,	”	”
હવે બીજો લાવો તત્કાળ,	”	”
ત્યાં તો માધુભાએ માકારો કર્યો,	”	”
હવે મરેલાને શું મારો, ખુમાનસંગ,	”	”

તારા તે અંગનો રોમાલ, બેલી મારા, તારા તે અંગનો રોમાલ;
 તારો રોમાલ દેખી રૂંથું આવે, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા તે અંગનો રેટો, બેલી મારા, તારા તે અંગનો રેટો;
 મને ધડીક બોલવા દેજે, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
 મેં તો મેલ્યો સૈયરનો સાથ, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા પગમાં બેડી, બેલી મારા, તારા તે પગમાં બેડી,
 આપણુ નાના હતા ત્યારે નાનપણની હેડી.
 ભાઈબંધ મોરા ને.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
 મેં તો મેલ્યાં છે મા ને બાપ, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
 મેં તો મેલ્યાં છે ભાઈ ને ભોભાઈ, ભાઈબંધ મોરા ને.
 આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણુ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
 નીકર તે દિનો દ્રકો કરત, ભાઈબંધ મોરા ને.
 આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણુ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
 નીકર થઈથી થોડી રાખત, વાલા સાજણુ,
 નીકર થઈથી થોડી રાખત, ભાઈબંધ મોરા ને.

પ્રેમનિષ્ફળતાની નાદ ધમા બળેવ પદારણના મીઠા સરોવરી
 દલક આખા વગડ ને વીધી નાખે છે આવી પદારણને નિષ્ફળતાને
 અતે સહે છે કે પહેલેથી જ બને મને પ્રણયનિષ્ફળતાની ખમર હોત તો
 થઈથી પ્રીતિ થોડી ન ગખના આ કુણુ સર વગડમાં ન જ પે ત્યાંજ
 ક્યારડાની પદારણો બીજા ગીતને હિપાડે છે.

તાગ મલકમા આંખાઆંખડી, મારા મલકમાં મીઠી ધરાખ,
 મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છે મનિયાર.
 દેરાણીનેઠાણી આંખે જોડવું, ચાલો દોઝીનો અસવાર જોવા,
 મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છે મનિયાર.
 સૌને જોળે સે ખારેકટોપરાં, જોની મારી બાળ્યો છે અવતાર,
 મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છે મનિયાર.

પદારના મુવકના મારે સાથુંદ અને બાવગાનાં ગામે ત્યાંથી
 વરસેત મેંનાં નીચે આવનાંકને વિગટકાય નળમા કરાય છે આ નીચેને
 દેખીને પદારજીના કંઠની સન્વાણીઓ કૂટે છે પણ તેય ક્યાં જાઝા
 દિવસ રહેવાનાં છે। એ નીચે ખારેય ગામને જીવંતી દે ॥ મારાંના
 ડાંગના કચારડાઓ હવેજીવ જગઈ જાય છે પદાર વહેના પરાંડે
 જીદીને, અંધારે, ખોળે જોદાણી મૂળી, ધરુ કરવાં આસ્વાં જાય છે અને
 ત્યારે રાસવા દિ' અડ્યે ગાતડી વાળી, કઠોટો મારતી પદા જો। ડાંગના
 કચારડે, પદારને જાન પહોચાડવા નીચેને વીંધીને જાય છે.
 પાણીએ જતમના કચારડા દેખીને પદારજીના દેવામાં કામેન પ્રજ્યુયગીતો
 સરી પડે છે એ ગીતોમાં જીવનની માત્ર મસ્તી છે, કાઠડા વાળીને
 સ્વાગાઓ ગાતી ગાતી ડાંગના ધરુને રોપતો લાગે છે. સાથમતિ
 સાયમે એ ગીતની પક્તિઓ મોર્ખ મોર્ખ વધકાન્તો ડાંગ રોપતો હોય
 છે, પાઠગ પાછળ પદારજો ગીત જીલની હોય છે :

એ સૂતી'તી ને પ્રીતિવાળાએ પછીતે પાવા વગાડ્યા,
 પછીને પાવા વાજ્યા, જોડી મારા, પછીતે પાવા વાજ્યા,
 મારો જીવડિયો ઉદાસી, બાઈબધ મેરા જો.
 પાવઠટે પગ ધોતી, જોડી મારા, સાજજીની વાટ જોતી;
 મારો જીવડિયો ઉદાસી, બાઈબધ મેરા જો.

તારા તે અંગનો રોમાલ, જેલી મારા, તારા તે અંગનો રોમાલ;
 તારો રોમાલ દેખી રૂંચું આવે, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા તે અંગનો રેટો, જેલી મારા, તારા તે અંગનો રેટો;
 મને ધડીક ઓઢવા દેજે, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
 મેં તો મેલ્યો સૈયરનો સાથ, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા પગમાં બેડી, જેલી મારા, તારા તે પગમાં બેડી,
 આપણુ નાના હતા ત્યારે નાનપણની હેડી.
 ભાઈબંધ મોરા ને.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
 મેં તો મેલ્યાં છે મા ને બાપ, ભાઈબંધ મોરા ને.
 તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
 મેં તો મેલ્યાં છે ભાઈ ને ભોજાઈ, ભાઈબંધ મોરા ને.
 આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણુ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
 નીકર તે દિનો દૂકે કરત, ભાઈબંધ મોરા ને.
 આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણુ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
 નીકર થડથી થોડી રાખત, વાલા માજણુ,
 નીકર થડથી થોડી રાખત, ભાઈબંધ મોરા ને.

પ્રેમનિષ્ફળતાની આર્દ્ર ધર્મા વાળેલ પદારથના મીઠા સરોવરની
 દલક આખા વગડ ને વીધી નાખે છે. આવી પદારથને નિષ્ફળતાને
 અંતે સૂઝે છે કે પડેલેથી જ ને મને અણનિષ્ફળતાની ખગર હોત તો
 યશ્વી પ્રીતિ થોડી ન ગણત! આ કરુણ સરવગ્રમાં ન જ પે ત્યાં જ
 કપારડાની પદારથો બીજા ગીતને ઉપાડે છે :

પાણી ગ્યાંતાં ઝીલડિયે તલાવ, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
અમદાવાદી ઘાંયજો તેડાવ્ય, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં,

એ પાટડિયા બાંધે પગની, લાંકમાં.
પથમલ ! મુરત રો'રથી ચૂંડડી મગાવ્ય, એ પાટડિયા બાંધે
પગની લાંકમાં.
પથમલ ! તારે ને મારે નાનપણની પ્રીત, પ્રીતું તોડીને
મારે બાવું સાસરે !

પથમલ તું છે મારા હૈયા ઢેરો હાર,
પરણ્યો મારા હાળા પગની મોઝડી !
પથમલ ! તને પીરસું સાકરિયો કંસાર,
પરણ્યાને પીરસું ખાટો દૂંમરો.

આ પદાન્વયી પથમલની પ્રીત તોડી તોડાની નથી. હંયાના સિંહાસન પર પથમલ આવીને બેઠો છે ને વાન પજુ તે કમળે છે અને પથમલને કહે છે, "તને દુ કંસાર પીરસું અને પરણ્યાને ખાટો દૂંમરો." પદાન્વયમાર્ગમાં કોઈ મુવતી એના મનમાન્યાનું ધર નથી માંડી શકતી. પ્રથમ સમ તો માયાપની ઇચ્છા પ્રમાણે જ મુવતીને સ્વીકારવું પડે. તેના બદલે આ પદારણની આંખમાં છતોછત્ત આંસુઓ છે. પણ દેટલીક પદાન્વયો પરણ્યાને વચ દરી લે છે. કામજુ દરી લે છે તેવ વાન પદારના કંકમાંથી ગંગર રોપનાં રોપનાં સરી પડે છે :

વને વગડામાં રાણું, અમકુડી વનવગડામાં રાણું.
ઈ તો રાણું ટોવા હાલી, અમકુડી નાટોદણ !
રાણુંનાં થડે જઈ બેડી અમકુડી.
રાણુંનાં થડે જઈ બેડી અમકુડી,

ઈ ને કરડ્યો છે કાળો નાગ, ઝમકુડી નાડોદી !
 છહો જોડી લાંબો, જગમવ છહો જોડી લાંબો,
 ઈને ધોળકા શેર લાંબો, ઝમકુડી નાડોદી !
 ધોળકાનો કામદાર જોવે, ઝમકુને, ધોળકાનો કામદાર જોવે,
 ઈ તો ઝોછી આપરદાની છે, ઝમકુડી નાડોદી !
 નાળિયેરની શેય ખડકે, જગમલ, નાળિયેરની શેય ખડકે,
 ઈના જમણે અગૂઠે આગ મેલી, ઝમકુડી નાડોદી !
 ઝમકુનો સાસરો વાટયુ જોવે, ઝમકુની સાસુ વાટયુ જોવે,
 દાડી વહિ મલોળ કાઢી ફેરે, ઝમકુડી નાડોદી !

આ ગીતમાંય ઠરુણ જાવ પણ આ ઠરુણનો જાવ આગના ગીત કરતાં
 આમાં જુદો અહીં શબ્દ પ્રેમ છે પણ ઝમકુડી નાડોદીના રૂપને બતાવવા
 લોકજીભે નાકય આખું 'ધોળકાનો કામદાર જોવે ઝમકુને' એવી
 શ્યામાનાં સામુસસગ ઝમકુની વાટ જોતાં મેસે ગે તો મજાગરી વહુનું
 સ્વયન છે ને ! અને વળી ઝમકુ કુશીને ય કયા ઝોછી ઠે ! માટે જ
 સાસુસસરાનો તે મનાજ રાખે છે ને ! આની કુશીન પદાગ્રણ વહુવારુને
 પરચ્યાના ય કયા એહા દુખ છે ? પરચ્યો ભવોભવના અમોક્ષા લઈ
 બેસે છે પદાગ્રણ સમળીગોષ્ઠી આગળ હૈયુ કાવવે છે

જી ચી તે જી ચી સમળી ભમે,

સમળી એક સદેશો લઈ જા, સૈયર !

સમળી, મોરી નાતને જઈને જોટલુ કે'જે,

'માતા, આવેડયા દખ વેડયા કેમ જાય ?'

માનો સંજો સૈયર આપ છે તારે મા મ વે રે

'નીકરી જ્યમ વેઠાય તેમ વેઠજો,

આપણુ મોટાના છોડુ કે'વાય'

પાણી ગ્યાંતાં ગ્રીલડિયે તલાવ, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
અમદાવાદી ઘાંયજો તેડાવ્ય, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.

કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં,

એ પાટડિયા બાંધે પગની લાંકમાં.

પથમલ! મુરત શેરથી ચૂંડડી મંગાવ્ય, એ પાટડિયા બાંધે
પગની લાંકમાં.

પથમલ! તારે ને મારે નાનપણની પ્રીત, પ્રીતું તોડીને
મારે બવું સાસરે!

પથમલ તું છે મારા હૈયા કેરો હાર,

પરણ્યો મારા ડાળા પગની મોઝડી!

પથમલ! તને પીરમું સાકરિયો કંસાર,

પરણ્યાને પીરમું ખાટો ફૂંમરો.

આ પદારણથી પથમલનો પ્રીત તોડી તોડાની નથી હંધાનાં
સિંદાસન પર પથમલ આવીને બેઠો છે ને વાન પણ તે ક્યારે છે
અને પથમલને કહે છે, “તને ફૂં કંસાર પીરમું અને પરણ્યાને ખાટો
ફૂંમરો.” પદારણમાજમાં કાંઈ યુવની એના મનમાન્યાનું ધર નથી માંડી
સકતી પ્રથમ સમ તો માળાપની ઇચ્છા પ્રમાણે જ યુવનીને સ્વીકારવું
પડે. તેના બંધને આ પદારણની આંખમાં છલોછલ આંસુઓ છે. પણ
કેટલીક પદારણો પરણ્યાને વચ્ચે કરી લે છે. કામજુ કરી લે છે તેમ
વાન પદારણ કંકમાંથી ડાંગર ગેપનાં શેપનાં સરી પડે છે :

વને વગડામાં રાણ્યું, ઝમકુડી વનવગડામાં રાણ્યું.

ઈ તો રાણ્યું ટોવા હાલી, ઝમકુડી નાટોદણ!

રાણ્યુંનાં થડે જઈ બેઠી ઝમકુડી.

રાણ્યુંનાં થડે જઈ બેઠી ઝમકુડી,

ઈ ને કરડચો છે કાળે નાગ, ઝમકુડી નાડોદી !
 છુહો ભેડી લાવ્યો, જગમલ છુહો ભેડી લાવ્યે,
 ઈને ધોળકા શેર લાવ્યે, ઝમકુડી નાડોદી !
 ધોળકાનો કામદાર ભેવે, ઝમકુને, ધોળકાનો કામદાર ભેવે,
 ઈ તો ઝોછી આવરદાની છે, ઝમકુડી નાડોદી !
 નાળિયેરની શેયું ખડકે, જગમલ, નાળિયેરની શેયું ખડકે,
 ઈના જમણે અંગૂઠે આગ મેલી, ઝમકુડી નાડોદી !
 ઝમકુનો સાસરો વાટયું ભેવે, ઝમકુની સાસુ વાટયું ભેવે,
 દાડી વડે મહાજાત કાઢી ફેરે, ઝમકુડી નાડોદી !

આ ગીતમાંય દરુણ ભાવ. પણ આ દરુણતા ભાવ આગલા ગીત કરતાં
 આમાં જુદો. અહીં શુદ્ધ પ્રેમ છે. પણ ઝમકુડી નાડોદીના રૂપને ખતાવવા
 લોકજીભે વાક્ય આપ્યું ‘ ધોળકાનો કામદાર ભેવે ઝમકુને ’ એવી
 આમાંનાં સાસુસસરા ઝમકુની વાટ ભેળાં ભેસે એ તો દુઃખામરી વહુનું
 સ્થાન છે ને ! અને વળી ઝમકુ કુધાને ય કયા ઝોછી છે ! માટે જ
 સાસુસસરાનો તે મજાગ્ન રાખે છે ને ! આથી કુશીન પદાગ્ય વહુવાડુને
 પરપુયાના ય કયાં ઝોછી દુઃખ છે ! પરપુયો ભવોભવના અખોલા લઈ
 ભેસે છે. પદાગ્ય સમળીગોઠ્યુ આમળ હૈયું દાસવે છે .

જિંથી તે જિંથી સમળી ભમે,

સમળી એક સંદેશો લઈ જા, સૈયર !

સમળી, મોરી માતને જઈને એટલું કે’જે;

‘ માતા, આવેડયાં દખ વેઠયાં કેમ જાય ? ’

માનો સંદેશો સૈયર આપે છે ત્યારે આ કા’વે છે

‘ દીકરી ન્યમ વેઠાય તેમ વેઠજે,

આપણુ મોટાનાં છોડુ કે’વાય . ’

એ સૈયર અખોલા ભવે રૂયાં .

આમ નાથ, વિચાર કરતી સૈયરને પદારણ વીનવે છે :

સમળી, એક સદેશો લઈ જા, સૈયર,

સૈયર અખોલા ભવે રૂયાં, :

સૈયર મોરા દાદાને એટલું કે'નું :

'દાદા આવેડયાં દખ વેઠયાં કેમ જાય ?

સૈયર, અખોલા ભવે રૂયાં.'

દાદા દીકરીને શીખ મોકલાવે છે :

'દીયરી, જમે વેઠાય, ઈમ વેઠો,

આપણુ મોટાનાં છોડું કે'વાય.'

સૈયર અખોલા ભવે રૂયાં

પિયુષના અખોલા જાવ આખોય તથે છે, પદારણ નિહીતર આસુએ કમખો ભીજવતી એ ઘરમાં જ રહે છે, તેમકે 'આપણુ મોટાનાં છોડું કે'વાય' મોટા ધનુ છોડું ન હોત તો પદારણે કપારતોય છેડે નાત સમક્ષ ફાડી આપ્યો હોત !

આ પદારણવતી નિહીતર આસુ સારે છે, જ્યારે સરખેસરખી દેરીનાં પદાર નણુંદભોગઈ પાણી કરવા જાય છે ભોગઈથી નણુંદ છેડે પડી જવાથી ભોગઈ વણુગ્રામને ઘડ્યો વણુગ્રામ કહે છે ને તેનું મન મેલે છે એ વણુગ્રામમાં માગાપને તે પદારણ વાગ કરે છે :

નણુદેસોગઈ જે પાણીડાંની સ્વર્પ,

નણુદેસોગઈને છેટાં બહુ પડયાં, વણુગ્રામ દોષ.

એ વણુગ્રામ, મુજને ઘડ્યો ભરી અઘ્ય,

ગ્રામે ઘડ્યો ભરી અઘ્ય,

હિંડાડી (એ'દોષી) આંબાઇએ વગગાડી, વણુગ્રામ દોષ !

કૃતો અલિ, હું અડધો ભરું,
અડધો ભરું ખારેકટોપરે, વણુઝારા હોણ !

અડધો ઘડો વણુઝારે ખાનેકટોપરે ભર્યો પદ્માણ્ય હવે વણુઝારાને વીનવે :

એ વણુઝારા મુજને ઘડૂલો ચડાવ્ય,

મોરો ઘડૂલો ચડાવ્ય.

એ કૂવાના પગથિયે જિગી આથમ્યો, વણુઝારા હોણ !

ધેર આવે છે. માને કહે છે :

મોરી માતા ઘડૂલો ઉતરાવ્ય, મોરો ઘડૂલો ઉતરાવ્ય,

એ હાથું તપ્યુ, એ છાતી જિમટ્યું, વણુઝારા હોણ.

દાદાને વીનવે છે :

મોરા દાદા રે, જોજો આપણુ દેશપરદેશ,

મોરી હેડીનો નાયક જોતજો આખર, વણુઝારા હોણ.

દાદા દેશપરદેશ દાક્ષી નીકળે છે.

એ રે દીકરી જોયો દેશપરદેશ, આવડ દેશપરદેશ,

તોય તેરી હેડીનો નાયક નો મળ્યો, વણુઝારા હોણ.

દીકરી દાદાને ફરીને વીનવે છે :

મોરા દાદા, જોજો સરોવરિયાં પાળ,

મોરી હેડીનો નાયક ત્યાં છે, વણુઝારા હોણ.

દાદા સરોવરિયાપાળ જાય છે :

એ રે ઘેડી, જોયુ સરવરિયાં પાળ,

જોયુ સરવરિયાં પાળ,

તોરી હેડીનો નાયક ત્યાં છે, વણુઝારા હોણ.

દીકરી દાદાને કહે છે :

મોરા દાદા એ લીલા વામળિયા વઢાવો,
એ લીલા વાંમળિયા વઢાવો,
ચોરી ચીતરાય ચાંપાનેરની, વણુઝારા હોણ.

અને દીકરીનાં મગગ વગનાં છે, મનના જેતેન માનવીને
પદારથ આમ વગી પણ લે કે માનાં અને દાદા એવી ધેડીને મારગ
કરી આપે છે આ નિવાજ ત્યાંના મમાજની એક કડીરૂપ છે

પણ માનાપનેય ખમગ આપ્યા વિના પદારથ આલી તીકળે
તેને ય પદાન્ગીનમાં વિષય તરીકે રચાન મળ્યું છે ફેના રંગીલી બાઈ
ગામમાં બવાયા નામક આખ્યા નાના નાપકને જોઈ તે મોલી પડી :

બાલાળે બવાયા રમે,
સોએ છોડિયું જોવા જાય.
ફેળા નાશ આદમી હારે જાય, ફેળાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયું માયા રે જૂથે,
ફેળા પટિયા પાડે, ફેળાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયું મચડી આંજે,
ફેળા સોયરો આંજે, ફેળાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયું ઠાલડિયે જોને,
ફેળા ગઢના ઠાગરે રે, ફેળાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયું છૂટા નાખે,
ફેળા રૂપિયા ઉલાળે રે, ફેળાને દેવલો હેરી ગયો.
ત્યાથી બવાયા રમીને હાલ્યા,
ફેળા વાંમોવાંસ રે, ફેળાને દેવલો હેરી ગયો.
નાના રે નાપકે સારું રે જોયું,

ઝોલી બઈ આવે ઈ કુણ રે, ફેખાને દેવલો હેરી ગયો.
 હવે નાનો નાપકં કડે છે :

ગામે રમતાં, બે ગામે રમશું,
 ફેખાને સાડી સાચી લેશું રે, ફેખા દેવલો હેરી ગયો.
 બે ગામ રમતાં, પાંચ ગામ રમશું,
 ફેખાને કાપડું લેશું રે, ફેખાને દેવલો હેરી ગયો.

ફેખા નાના નાપકને ત્યાં ગઈ, એ ગીત તેમના સમાજની એક
 બાજુ છે તેમ ગણુડી નાડોદીને ત્યાં સામતો બેસવા આવે છે ત્યારે
 ગણુડી નાડોદીને રેટિયો ઉઘાળી મેવવાનું દહેવાય છે આ ગીતની
 ખૂમી તો એ છે કે તે અભિવ્યવસ્થા બન્યું છે ! જાણે કેઈ નાટકની
 વચ્ચે આવતું ગીત ન હોય !

ખેતર વચાળે ખીજડાનાં ફાલે ફૂલ, સામતો છેલી છે
 ડાળખીવાળો.

ગણુડી નીચે ફૂલ, ગણુને વાલો રેટિયો રે !
 એ રેટિયાને વાલાં તેલ, સામતો છેલી બેસવા આવ્યો,
 સામતો છેલી બેસવા આવ્યો, રેટિયો ઉઘાળી મેલ,
 નાડોદી ગણુડી, રે તારા દલની આટી મેલ.
 રે તારા દલની આટી મેલ.

ગણુને આવ્યો હીકરો રે, એ કોને કેસે બાપ ?
 પાળે બંધાવો પારણા, એ હીચાળે એનો બાપ !
 ખેતર વચાળે ખીજડાનાં ફાલે ફૂલ, સામતો છેલી છે
 ડાળખીવાળો.

આવા આડા સંબંધને કાન્યે તેમના સમાજમાં આવી અનેક
 સમસ્યાઓ ઊભી થઈ છે ઉપરના ગીતબાવની અવધિ તો ત્યાં છે કે,

‘ગયુને આગ્યો દીકરો રે, એ કાને, કેસે આપો!’ સોકમીનના રચનારે એ સમાજના એવા પ્રસંગોને ગીતોમાં ગૂંથવાનું નથી ચૂક્યા. જાણ સેવા અથેલ સાંકુ પદારણ બાણિયાને લઈને આવે છે. તેમનો સમાજ સંકેત નજરે સાંકુને અને બાણિયાને વૃત્તે છે. કૃષ્ણ શા જાળની છાતી પર પગ મૂકીને તેને ધમર મોકલે છે. તેવી કૂતાના મૂર પણ વગડાને વધુ મમગીન બનાવે છે:

છાણના વાસીદે રે હાલી સાંકુ, સાણના વાસીદે રે હાલી,
સાંકુ, છાણના વાસીદે રે હાલી.
ચાંથી તે ભાણિયાને લાવી સાંકુ, ચાંથી તે ભાણિયાને લાવી,
સાંકુ, ચાંથી તે ભાણિયાને લાવી ?
ઊભી બળદે જઈ હાલી સાંકુ, ઊભી બળદે જઈ હાલી,
સાંકુ, ઊભી બળદે જઈ હાલી.
જઈના તે ડાળિયા લીધા સાંકુ, જઈના તે ડાળિયા લીધા,
સાંકુ, જઈના તે ડાળિયા લીધા.
લઈને શુંબમાં નખાવ્યા સાંકુ, લઈને શુંબમાં નખાવ્યા,
સાંકુ, લઈને શુંબમાં નખાવ્યા.
ઊભી બળદે લઈ હાલી ભાણિયાને, ઊભી બળદે લઈ હાલી,
સાંકુ, ઊભી બળદે લઈ હાલી.
એક ફેરો પાણી પાજે માસી, એક ફેરો પાણી પાજે,
માસી, એક ફેરો પાણી પાજે.
હવે તો પાણી કેવાં ભાણિયાને, હવે તો પાણી કેવાં,
સાંકુ, હવે તો પાણી કેવાં !
ત્યાં વંડિયું ઠેકાવી ભાણિયાને, ત્યાંથી વંડિયું ઠેકાવી,
થી તે વંડિયું ઠેકાવી !

છાતી ઉપર પગ મૂક્યો, લાલિયાની, છાતી ઉપર પગ મૂક્યો !
સાંકુ, લાલિયાની જીભ તાણી લીધી રે ।

નિર્દોષની સામે તે સમાજે અપરાધી વર્તન ગતાવ્યું. સમાજની
કાંઈ વ્યક્તિએ રાત્રી આખે તે કૃત્યનેય ગીતમાં ગાઈ નાખ્યું ॥

આ બધાં મીતોમાં સંસારચિત્રો છે, કેટલાંક કરુણ, કેટલાંક મીઠાં.
એ સમાજની દૃષ્ટિએ જે જે વાત અગત્યની અને મહત્વની લાગી તે
તે ત્યાંના જનસમૂહે લોકદાળમાં ઢાળી દીધી. પણ તે લોકસમુદાય
એટલેથી નથી થઈતો. તેમના સ્વભાવમાં કટાક્ષ અને મર્મ તો બધાં
છે. મરમીલા લોક છે. તેમનાં વેણુ પણ મરમીલાં છે. મરમીલાં લોકોએ
ગીતોમાં કટાક્ષો વેરવામાંય પાછું નથી બેસ્યું. નળસરોવરના કાંઠાનાં
બારપંદર તેમનાં ગાઓ. તેમાં વેપારીનાં ગાંડમાંડ પાંચપંદર ધર હશે.
એ વેપારીઓએ તેમને ત્રાહિઓવિદ પોકરાવી, ત્યારે પદારોએ ગનિયાના
રાગનું ગાયું :

કૂડાં તોલ ને કૂડાં ત્રાજવાં,
કૂડાં કીધાં કામ, અમરતને તમે ના ઓળખ્યો,
હાય રે લાડા હાય હાય !

આ તો વ્યક્તિ પડતો રાજિયો પણ તેમના સ્વજન મારેના
ગનિયામાં ગીનનું કરુણ તત્ત્વ બહુ છે સાથે સાથે જીવનનું નત્વતાન
પણ કાંઈ ઓછું નથી :

લીલી લીંબરડીની છાંય રે, મરઘો બોલ્યો કરોધમાં,
મરઘે એના કટુંમ જગાડિયાં, કટુંમનાં રામબાણ છૂટશે,
નાખે^૧ પંખીડા તુને મારશે.
પંખીડાં જીડયાં ને રાજા^૨ રઈ ગિયાં, લીલી લીંબરડીની છાંય રે,

મરથે એના બાંધવ જંગાડિયાં, બાંધવનાં સંમંબાણ છૂટશે,
નાખે પંખીડા તુને મારશે, પંખીડાં ઊડ્યાં ને રાજાં રઈ ગિયાં.
મરથે એના દાદાને જંગાડિયા, દાદાજીનાં સમંબાણ છૂટશે,
નાખે પંખીડા તુને મારશે, પંખીડાં ઊડ્યાં ને રાજાં રઈ ગિયાં.

ખીજ મૃત્યુગીતમાં પંખીડાનો કયાં વાસ છે, તે વાત મૂકી છે.
પાળે ધૂમે પારેવડાં, મઢીએ ધૂમે નાગરવેલ, એય લાડા
હાય હાય,

પાંહે રઈને દાદાએ પૂછિયાં, કયાં છે અમારો વાહ,
સીંગાસણ અમારાં બેસણાં, ને વઈકુંઠ અમારો વાહ.

આ મૃત્યુગીતમાં તેમજે પરસોઢવાસીની વાતો મૂકી છે તેમ
અંદિઠ જીવનની વાતો પણ પદારસોઢાએ તેમનાં ગીતોમાં મૂકી છે. સ્વભાવે
ખૂબ નરમ ક્રિયા વેળે જન્મદાર કે રાજનો નાનો નોકર ત્રાફે તો તે
ધરધરી કાઢે. આવા નાના નોકર પદાર પર ભારે દાંસ ભારે. તેવો
'ચોનીલાલ મોઝડીવાળો' પદારનાં લોકગીતનું કરુણપાત્ર અનેક છે.
રાજના કુંવરને સવારે નળમાં પંખીના ચિકારે જતું છે. મનોરાતમાં
નળના કોકા સુધીનો કાદવથી બરપૂર રસતો, મોટર ચાલી શકે તેવો
પાકો તૈયાર થવો જ જોઈએ, એવી રાજકુમારની આત્મા આમાં રિખાઈ
ગયા પદારો. પ્રતિનિધીત્વ વિચારસરણીવાળા કાઈ અલગન કવિએ જાણે
અમનું મોત ન રચ્યું હોય.

એક ચાળીશ તો દાડિયા લાવ્યો,

એક ચાળીશ તો દાડિયા લાવ્યો,

પાવડા લાવ્યો ચાર, ચોનીલાલ મોઝડીવાળા,
કામનો નાવ્યો પાર.

પાંચા જોદીને હાથડાં કુંખ્યાં, એ દાડિયો આવ્યો તાર,
ચોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો નાવ્યો પાર.

માથડે ટોપી, હાથમાં સોટી, ફરતો ફેરા નાખ્ય,
 યોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.
 તારો સપ્તે તો બવ રે બુંડો, ધોકલા એલ્યા ચાર,
 યોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.
 પાંચ રૂપિયા તો ચોકડા આલ્યા, પાચલાનો નેં પાર,
 યોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.
 ગોંદરા મુખી ગોધલે હાંક્યાં, ચોખે મચન ચાલુ થાય,
 યોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.

યોનીલાલ મોઝડીવાળાએ પદાર કામને ત્રાસ આપ્યો, પણ એક
 જમાદાર પાણી ભરવા ત્રણેક લુલડી પદારથની આડે જઈ ઊભો ને
 લુલડીને પ્રતોષન આપવા લાગ્યો :

પાણી ગઈ'તી લુલડી ઝીલણિયે તળાવ,
 એને આડો ઊભો જમાદાર,
 એને આડો ઊભો જમાદાર.

કે'તો લુલડી તુંને ઠડલાં ઘડાવું,
 કે'તો કાંખીએ મોરલા મેલાવું,
 એને આડો ઊભો જમાદાર.

પાણી ગઈ'તી લુલડી, ઝીલણિયે તળાવ,
 એને આડો ઊભો જમાદાર,
 એને આડો ઊભો જમાદાર.

કે'તો લુલડી તુંને ઘાઘરો સિવડાવું,
 કે'તો તુંને તેમાં ચાર મેલાવું,
 એને આડો ઊભો જમાદાર.

જમાદારના પ્રનોજને તે ન લલચાઈ મનનાં ધમસાણુ તેના શાં
દગે ? લોકવિષ્ણે તે અત્ર નથી આલેખ્યા તનનાં ધમસાણો પણ
પદારોએ તેમના ગીનમાં મૂક્યા છે મગના પદારને ત્રાડી ગામના માગે
કુશ્મનોએ બેગા થઈને માર્યો

ત્રાડીના મારગે આવે મગનિયો,
ત્રાડીના મારગે આવે રે લોલ.
મથાડે કુઝડી ઘોલી મગનિયાને,
મથાડે કુઝડી ઘોલી રે લોલ.
પાછી મોઢે બાધ્યો મગનિયાને,
પાછી મોઢે બાધ્યો રે લોલ,
નેતરની સોટીએ માર્યા મગનિયાને,
નેતરની સોટીએ માર્યો રે લોલ.
ઘોઠા ધના મા ને બાપ,
ઘોઠા મગનિયાને માર્યો રે લોલ.
ઘોઠા ધના બાઈ ને બાપ,
ઘોઠા મગનિયાને માર્યો રે લોલ.

આ ગીત દીટાનાં ગીત છે પદારના નૃપનું વિશેષ નામગીરોડો,
(જે કે આખાવ જાન પ્રેમમાં દીટોડો હવે જણીનો ॥ મેળામનમાં
અન્ય જાનોમાં બંધિયાએ તે દીટોડા લેતી મે લોઈ છે) દીટાનાં
નૃત્યદંડ વા ૧૮ની એક દંડ કહે મૂકે બીજે માથે પણ મનિયીન
ગહે પમના પડાટમાં એ પ્રમનનો નિર્વૃત્ત લય છે આ નૃત્યપ્રમાર
લાગ્યને મગનો નથીજ તેમના દીટામાં એક પ્રમાનું નેમ છે,
ત્વરિત ગનિ છે, અને દીટાના નૃત્યમાં લેવાનું છે પાંચસાત બેગા મગ ને
સે પછી તે પુરુષોવ સે ઓ પણ લઈ શકે દીટાના લેનાર સૌ કેમ
મોઝેથી અમાજચિતનાં ગીતો મતાં જાય. બીજા પ્રમાનનાં પણ ગીતો
ગાઈ : ૫

પદારનાં સંસારગીતો

કોઈ રાજનીતિએ કહ્યું ■ કે રાષ્ટ્રના ને પ્રજાના અવપતનનું દર્શન દર્શાવે કરવું હોય તો તે દેશના શાસકે તે પ્રજાને માટે થોડા કામદાઓ જોઈ જવા અને પછી તો તે પ્રજાના સરકાર અને અસરકારનાં બધાં જ વર્ગો (pattern) તમારી દૃષ્ટિ સમક્ષ આવી ખર્ચ થશે આ કથન લોકગીતના સમાહકને દોકદોક માર્ગદર્શન આપી શકે તેમ છે લોકગીતનો સમાહક કહેશે દર્શનજાતિના સરકારજીવનના વર્ગો જોવાં હોય તો તેમનાં લોકગીતો જુઓ જુસ્તારશાહી જેમ ધરતીના પડ જોઈને ધરતીનો ઇતિહાસ કહી શકે છે તેમ સમાજશાસ્ત્રી (sociologist) આ લોકગીતો જોઈને જાતિઓના જીવનના અનેક વર્ગો જોઈ શકે છે કેઈ પ્રજાના કે જાતિના લોકજીવનને પિછાનવા માટે તેમનાં લોકગીતો અનેક દૃષ્ટિએ ઉપયોગી મળી શકે છે પદારનાં લોકગીતો તે જ દૃષ્ટિએ અહીં જોવાનાં રહે

સૌરાષ્ટ્રરાજ ને મુબઈરાજની સીમા વચ્ચે પડેલું લગભગ ૬૦ ચોરસ માઈલનું નળ સરોવર તેના કાંઠા પર પદારનાં બાર ગામ ને બાર ગામમાં પદારનો વસ્તી આશરે ૭ હજારનો આ જ હજાર પદારો અઘપર્પત તેમની સંસ્કૃતિને જળવીને મેસી નહેરા કેટની ગુડથન કને છે? સિંધુ નદીના કાંઠા પરથી તે જાતિ અવી સૌરાષ્ટ્રમાં અને તેતેય કેનાય વર્તે થયાં હશે? અનત એવા કાળના મુજિયાં મ્યા પમડવા મેસવું ?

પણ પદારનો સમાજ હિંદુ સમાજ જેવો જ સમાજ છે એવું દર્શન દર્શાવે પણ સમાજશાસ્ત્રીને પ્રથમ તો લાગે, પણ છતાંય તેમાં એક જુદું વર્ગ છે, તેની તે ના પાડી શકે એમ નથી તેવાં રંગ

એવા માટે તેમનાં લોકગીતો કીક કીક સદાચરુષ બને છે. આ લોક-
ગીતોને તેમનું સ્વત્વ છે તે પણ લોકગીતનો પરોક્ષ સમજી શકશે
પડારનું આ લોકગીત છે :

પાંચ રૂપિયાનું કાપડું રે લીધું પેરીને હાલી પાણી,
પાણી ભરીને ઉંબરે આવી, ત્યારે ઉંબરા વચ્ચે બેડું ટાળી,
આંબળો મૂકી દેને મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાની ઘરવાળી.
સાસરો બચ્ચારો દગણાં દળે ને બેઠ ભરે છે પાણી,
નાનો દિયરિયો વાછીદાં વાળે, ને નણદલ કરે છે લાણી,
આંબળો મૂકી દે ને મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાની ઘરવાળી.
પારકા મૂરે ત્યારે પીતાંબર પહેરતી ને નાકમાં નાખતી વાળી,
ઘરનાં મરે ત્યારે રોતાં ના આવડે, મેલી દે મૂંઝીયું વાળી,
આંબળો મૂકી દેને મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાની ઘરવાળી.

તેમના સમાજમાં આંબળાવાળી, મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાવાળી
ત્રી છે તેનું ચિત્ર લોકકવિએ કેવી રીતે આધારી ઉપરિધન કયું છે !
શ્રીસ્વભાવનું આધારી વિશેષ વાસ્તવદર્શન કરાવવાની વાચકોને જાણ
લાગે છે ખરી ?

હોકો પીનાર પડારને કેવી માથામાટે પન્ની મળી છે તેનું ચિત્ર
નીચેના લોકગીતમાં લોકકવિ કરાવે છે. હોકો આ પડારના દિલનો
કળને લઈને બેઠો છે, તેણે તેનું દાસત્વ સ્વીકાર્યું છે તો તેને કોનું
દાસત્વ સ્વીકાર્યું પડે છે ? લોકકવિ ગાય છે :

હોકો મારો દલનો ભોગી, હોકે કરેલ છે ભોગી,
બજાર તો મને ગમતી નથી, ને હોકો સૂરતા લાવી દે !
ચૂલે બેઠો દગદગું ત્યારે બેઠું ચપટી દાણા દે !
આ હોકો મારા દલનો ભોગી, હોકે કરેલ છે ભોગી !

આ સહા ગામનો સવાદિયો, સાંભડા જેવી નાજ્ય,
 'લરી સલામાં તો પીવા ગેઠો, કોઈને ન કે' લે,
 આ હોઠો મારો દલનો લોગી, હોઠે કરેલ છે ભેગી.

શી છે આ પદારની સ્થિતિ! પદાર જાતિ નિર્ભ્યસની
 જાતિ છે. તેમની આર્થિક સ્થિતિ જ એવી છે કે તેમને વ્યસન રાખવા
 પાલવે નહીં. ત્યાં જો હોઠો કે ખીડીનું વ્યસન રાખે તો તેની શી
 દશા થાય! તંબાકુ ખરીદવા ચપટી દાણા તો જોઈએ ને! તે તે
 દાણાનો મયકાના છે પદારણુ, તેથી તેને રગરણું પડે છે.

આ હોઠોએ તેમના સસારના ઝીણા ઝીણા પ્રસંગોને યાદ કરીને
 પશુ ગાયા છે. ભૂંડી બાયડીને તેઓ કાંઈ બિરદાવવાનું ચૂકે! તે વેદના
 અને પીડા પછી સ્નેહ ડહાપણ કેવું તેણે નીચેની પહેલી પંક્તિમાં
 મૂક્યું છે :

ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે જાડી !
 આ બામણુ આવ્યો લોટ માગવા, ઘેણી ઘરમાં જાય !
 જિભી જિભી તાજિયું પાડે, બાવો આદ્યો જાય !
 ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે જાડી !
 આ પાંચ રૂપિયાનો સાડલો લીધો, ને ભમ્મરિયાળી ખાત !
 જમી કરીને જિભી ચર્ધ ત્યારે સાડલે લૂછ્યા હાથ !
 ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે જાડી !
 ઘરમાં ખાંડલિયો ને ઘરમાં ઘટી, પરઘર દળવા જાય !
 ટોડલે જિભી ટોલા મારે, ત્યારે ફૂતરા લોટ ચાટી જાય !
 ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે જાડી !

કર્કશાઓના દિમાકનું દર્શન આ ગીતમાં થાય છે. યાકેલ અને
 ત્રાસેવ પ્રતિ તેમની પ્રતીતિ માટે પહેલી પંક્તિના ઉદ્દાસનેથી શાં
 વિશેષ પીડાકથન કાઢે!

‘બામડી જૂડી’, ‘આમળાવાળી’, ‘મરકાળી’, ‘હબળા-
ઝુબળાવાળી’ સ્ત્રીઓએ લોકસાહિત્યમાં પણ તેમનો ફાળો આપીને
તેમના સમાજનું દર્શન કેટલું બાતીગળ બનાવ્યું છે !

મરકાળાવાળીનાં ગીતો જ્યેાં યજ્ઞેશ્વીનીનાં કૃપ યા કેમળ દિલવાળી
સુવર્તિઓનાં ગીતો પણ તેમના લોકકવિએ કયાં ઓછાં ગાયાં છે !
સાસુનું શકિન દિલ ચદનની નંદવાયેવ ઢાંકણી પર રો તકે કરે છે !
સંસારની રદમાંથી તેને ઢાંકી કાઢવા માટે તે સાસુ તૈયાર થાય છે.
અને ત્યારે તે સુવર્તિનું દિલ રસ રસ ટપકવા મારે છે. સાસુ પૂછે છે .

અગર ચદનની ઢાંકણી, વવ શું કરતાં નંદવાણી ને,
નાના દિયેરિયાને પીરસતાં, મારા હાથમાંથી વસૂટી રે !
ઢાંકણી ફૂટી તે. વવ ભલે ફૂટી, હવે મેલો ઘરની માયા ને,
ઘરની માયા તે કેમ કરી મેલું, શીદ ખાધા’તા ચોખા ને !
પાળે બેહુ’તું એક પંખીડું, મારો સંદેશો લઈ નયે રે,
મારા હાદને જઈ એટલું કે’ને, દીકરી વનડાં વેઠે ને !
ખરા બપોરે મારો હાદો આબ્યા, નવ નવ વેલ્યું લાબ્યા રે,
તારી વેલ્યુને હું શું રે કરુ, હાદા, દીકરીનાં મેણાં ભાંગે ને !

કામ્યત્વથી દસિન આ ગીતમાં ભગ હૃદયનું દર્શન થાય છે.
અને હેવટે તેના દેવામાંથી હરગાર સરી પડે છે :

‘તારી વેલ્યુને હું શું રે કરુ, હાદા, દીકરીનાં મેણાં ભાંગે ને !’

આ ક્યુ મેલું ? દિયે-બોળાઈના જ્ઞાનીય સંબંધો માટે આવાં ધણાં
ગીતો મળે છે ! સાસુ શુ કામ. પતિએ પણ કયાં આવી ચમેલીવેને ને
નથી ચમદા ? પતિ અજેન્દા છે, તો પત્નીનું જીવાન હૈયુ કયાં કયાં ભમવા
નીકળે છે ! એના દેવાના મુઠ્ઠા સંજોગો .

હાથી ગોવીદાની પી પગી, નીચાં દાનારીનાં હાટ, વા’લા !
ચૂડલી મૂવવવાને હું ગઈ’તી રે, સાગો મળિયો મેલ, વા’લા !

બોલાવ્યો પણ બોલ્યો નેં, કોના હૈયામાં ફૂડ, વા'લા !

અંબોડે ગલફૂલ વા'લા !

છાંચી ગોવીંદાની પી'પળી, એ નીચાં મોચીડાનાં હાટ, વા'લા !

મોઝડી મૂલવવાને હું ગઈ'તી રે, સામો મળિયો સેલ, વા'લા !

બોલાવ્યો પણ બોલ્યો નેં, કોના હૈયામાં ફૂડ, વા'લા !

અંબોડે ગલફૂલ, વા'લા !

કૃષ્ણ આશાએ અંબોડે ગલફૂલ ધાલીને તે ગઈ હશે? અને વહાલાને બોલાવ્યો ત્યારે પણ તે બોલ્યો નહીં, અને ત્યારે વેલ ચીમળાઈ ગઈ અને હૃદયાર સરી પડ્યો કે 'કોના હૈયામાં ફૂડ!' આફ્રિકિયાનો પણ હેન્ડ્રેટ આમ જ ક્યાં અનાદર કરતો નથી! 'કોના હૈયામાં ફૂડ!' એ પ્રશ્ન કવચપુત્રી શકુંતલાને પણ કુપ્પતે નાકારો દીધો ત્યારે જન્મ્યો હશે ને? સીતાનો જ્યારે રામે ત્યાગ કર્યો ત્યારે સીતાના હૈયામાં પણ આવો જ પ્રશ્ન નહીં જન્મ્યો હોય? 'દીપક છુઝાપીને તેનો જીવનદીપ છુઝાવવા દે!' બોલતો આયેત્રો. કેઝડીમોનાના મૃત્યુ માટે હાથમાં છરીને રમાડતો હશે ત્યારે તેના હૈયામાં પણ 'કોના હૈયામાં ફૂડ!'નો જ પ્રશ્ન નહીં જન્મ્યો હોય? જમનસાહિત્યની ઉત્તમ કૃતિઓમાં આ જ આવે શું કરેણા નથી જન્મ્યાવી? ટેસ, શકુંતલા, આફ્રિકિયા, કેસડીમોના, એના, નોરા; આ બધી સુંદરીઓને સહન શા કાળે કરવું પડ્યું છે? કોના હૈયામાં ફૂડના કારણે જ? જમનસાહિત્યમાં રેલાતો આવ આ માનવીઓએ માણ્યો છે ને તેને ગાઈ નાખ્યો છે. અને ઠરુણ ગીતોમાં આ સંસારગીત આમ ઉલ્લેખનીય ઉમેરો કરે છે.

અને તે સ્થિતિનો કાળ એટલે પ્રણયકાળ (Period of courtship). એ કાળમાં ચીજો-જણસોની લેવડદેવડ કાંઈ ઓછી થવા વગર રહે! આયેત્રોએ કેસડીમોનાને રમાલ આપ્યો, કુપ્પતે શકુંતલાને વીંટી. પ્રણયચીજોની લેવડદેવડ ચલી હશે ત્યારે હૈયામાં કેવા

શાવો જીગના દરોઃ નીચેના ગીનમાં કવિએ આપેઆપું દેયું ઠાણની દીધું છે :

મારી સગી નણુંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જલો,
રૂમાલ મારો લેતા જલો, કે દલ દેતા જલો, સગી નણુંદના વીરા,
રૂમાલ મારો લેતા જલો !

લીલી ઘોડીના અસવાર રે, રૂમાલ મારો લેતા જલો,
એ લેતા જલો, કે દલ તમારું દેતા જલો,

મારી સગી નણુંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જલો !
ઓઢ્યા વાણિયાના હાટનો લીલો રૂમાલ,

મારી સગી નણુંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જલો !
ઉતારા આલીશ ઓરડા, રૂમાલ મારો લેતા જલો,

મેડી મોલાત્યું માણસું, કે રૂમાલ મારો લેતા જલો,
મારી સગી નણુંદના વીર, રૂમાલ મારો લેતા જલો !

લોજન આલીશ લાડવા, રૂમાલ મારો લેતા જલો,
તને પીરમુ સાકરિયો કંસાર, દર્ધિય, રૂમાલ મારો લેતા જલો,

મારી સગી નણુંદના વીર, રૂમાલ મારો લેતા જલો !
નાવણુ આલીશ કુંડિયુ, એ રૂમાલ મારો લેતા જલો,

ઝિલ્લિયા તળાવ બાઈશું, રૂમાલ મારો લેતા જલો !
મારી સગી નણુંદના વીર, રૂમાલ મારો લેતા જલો !

આટઆટલાં પ્રલોભનો આપ્યાં ! દિલની આરતુઓ એણે-
નાવિઝાએ ઠાણની પ્રેમની મન્નીમાં સમસામા પાણીયા એકબીજાને
છટકાવવાનો વિગલ આવ અજના સિદ્ધ સાદિયમાં વિગલ બન્યો છે.
'વસંતવિવાસ'ની નાવિઝાએ તે આવ વ્યક્ત કર્યો છે અને આ પદાર
નાવિઝાએ !

એવી જ પદાર નાવિકા નાવકને વીનવે છે :

અરમર મેહુલો વરસે, લોગાવે કચરો પાણી;
આંચે લે'રીડા,
મારા જીવના સારુ ને !

લોગાવે તારાં પગલાં પડશે, ફૂલવાડી ફેરી,
આંચે લે'રીડા,
ઘેયે આંચે, મારા જીવના સારુ ને !

હાં કરી છે લોકકવિએ આ ચાર પંક્તિઓમાં ! ફૂલવાડી ફેરી.
કઈ ફૂલવાડી ? નેમનની જ તો ! ફૂલવાડીતો બોક્તા બ્રમર તો
નેમંએ જ તો !

અને એ જ બ્રમરબોગી સુંદરીઓ પાસે આ સમાજનાં જડ
બંધનોએ પણ કયાં ઝોઝાં પાપકર્મ કરાવ્યા છે ! ચોરીમાં અગ્નિ-
સાક્ષીએ સ્વીકારેલ પતિને દણી નાખવામાં પણ આ સુંદરીઓ
કયાં જરાય અરેરાટી અનુભવે છે ! નીચેનું ગીત એવી એક નાવિકાનું
દર્શન કરાવે છે :

પાંચે પાંચે બેઠાં નાની વઉ હલકે સરી આવી ને,
છઠ્ઠા બેઠે વારું લાગી, પાંચે પાંચે નાની વઉ....
છઠ્ઠા બેઠે વારું લાગી, નાની વઉ !

લીંબડે થડીને નાની વઉ કાંચીડા માર્યો ને,
ખોળે ઘાલીને ધરે લાવી, નાની વઉ ને,
ચીની તાવણુમાં આંધણુ મૂક્યાં દે, તાની વઉ ને !
ખોળે ઘાલીને ધરે લાવી, નાની વઉ ને !
કાંહાંની ચાળીમાં કાર્યો ને !

રમતાંઝમતાં વાલીડે એક જ કાળિયો ભર્યો ને,
 ખીજા કાળિયે લેયું લીધી ને, નાની વઉ ને !
 ત્રીજા કાળિયે આણુ છાંડ્યા ને, નાની વઉ ને !
 લીંબડથી દેરાણી જેઠાણીને બોલાવે ને, નાની વઉ ને !
 ઉપરવાડથી દેરાણી જેઠાણીને બોલાવે ને, નાની વઉ ને !
 તમારો દિયરિયો રિસાણો ને, નાની વઉ ને !

જેઠાણી આખા પ્રસંગનો મર્મ પામી જાય છે :
 નોતું રેતું તો નાની વઉ, નોતું આવું કરવું ને,
 રાજના કુંવર સરખો માર્યો રે, નાની વઉ ને !

પ્રેમે માનવ પામે શું શું નથી કરાવ્યું ? ને જનિમાં પ્રેમનો
 ઉપ ભાવ નથી તે સમાજને માલોજ કહેવો રહે ને !

હેત્રે જુઓ આ રેટિયાનું ગીત તેમાં ય તેમના સમાજનું આ
 રહ્યું અચ્છું ચિત્ર !

રણુઝણુ રણુઝણુ રેંદુડો ફરિયો,
 રણુઝણુ રણુઝણુ રેંદુડો ફરિયો,
 સામુ જાણે વહુ કાંતે રે, મારી સૈયરું યરમાણી !
 વહુ રે વહુ અમને કોકડાં દેખાડો,
 કોકડાંનાં લીધાં ચોકડાં રે, મારી સૈયરું યરમાણી !
 વહુ રે વહુ અમને ચોકડાં વતાડો,
 ચોકડાંની લીધી ઝારી રે, મારી સૈયરું યરમાણી !
 વહુ રે વહુ અમને ઝારી વતાડો,
 ઝારીના ચ્યા બે કટકા રે, મારી સૈયરું યરમાણી !
 વહુ રે વહુ અમને કટકા વતાડો,
 કટકા નાખ્યા ઉઠરડે રે, મારી સૈયરું યરમાણી !

વહુ રે વહુ અમને ઉકરડો દેખાડો,
 ઉકરડો નાખ્યો સાબર નદીએ રે,
 મારી સૈયરું શરમાણી !

વહુ રે વહુ અમને સાબર વતાડો,
 સાબર ઊછળે નીર રે,
 મારી સૈયરું શરમાણી !

સાસુડી મુંડી, સાડલો તરિયો,
 જો જો નગરીનાં લોકો રે !

બધી જારી ગોતે રે, મારી સૈયરું શરમાણી !

સાસુને, આમ, વહુએ ટૂંકાં કરી નાખ્યાં. એ જાવને બ્યક્ત કરવા
 ગીતને લોકકવિએ મલાવી મલાવીને મૂક્યું છે તે તો સ્પષ્ટ જાણે છે.
 પણ એ કાવ્યત્વની ખાજી પડેલ સમાજવર્ણાની એક આજી રેખા
 કાંઈ અજાની રહેતી નથી.

પદાર સમાજના અનેક રંગો તેમનાં લોકગીતોમાંથી મળે છે.
 તેમના સમાજમાં મડકાવાળાઓ પતિને હોઠા માટેની ગડાકુ લાવવા
 માટે હાજીની યાચના કરાવે છે. ગુર્મની વેલ થી મુવતિઓ કૂલેલ
 કૂલવાડીમાં જમર આવે તેની જાંખના કર્મ કરે છે. તો કાંઈને પતિ તરફ
 ધિક્કાર જન્મે છે, તેથી પતિને તે પૂરો કરી નાખે છે અને તેની સાથે
 વંચના ખેલવાનું પણ તે જાણે છે ! કેટલું દૂર છે તે સમાજનું દર્શન !
 અને કાંઈ વહુઆરુઓએ સાસુને પૂરાં કર્યાનાં દૃષ્ટિ જોવા મળ્યાં હશે,
 તેનેય કવિએ ઊંડ્યું નથી. આમ આ લોકનાં સંસારનાં દૂર, બપોલક,
 ધેરાં, ડામળ, કાળાં-પોળાં અનેક ચિત્રો તેમનાં લોકગીતોમાંથી જોવા
 મળે છે. આ લોકગીતો દ્વારા તે સમાજમાં અનેક ચિત્રો-સ્પષ્ટ અને
 રંગદર્શી-જોવા શું નથી મળ્યાં ?

પદારનાં લોકગીતોમાં સ્થાનીય રંગો

કવિ વડંબરવર્મા “હેક્ટોરબ્રસ” (આવળનાં ફૂલો) કે “સોસિટરી રીપર” (એકાકી દાપણી કરનારી) વાંચો અથવા એ જ કવિનું “ધ્યૂસી ગ્રે” કાળજીપૂર્વક જોઈ જાઓ. કવિ વડંબરવર્મા સ્થાનીય રંગ (Local Colour) નાં ચિત્રો દોરનાર કવિ છે. એની છાંય મન પર તરત જ અદાઈ જાય છે. એવું તો નહિ જન્યુ હોય કે એ કવિએ લોકગીતોમાં, ત્યાંના લોકોમાં, સરોવર-મુલક (Lake Country) માં, ત્યાંનાં ફૂલોમાં, કુશરાઓમાં, નદીઓમાં, જ્યોત્સ્ના અને પ્રાણીઓમાં, ત્યાંની ધરતી પર જે કંઈ જાણ્યું તે સર્વમાં-જીવને પરાવ્યા અને પછી તેમાંથી પોતાનાં ગીત-ગરજાને જન્માપીને પદાબ્યુ એટલે જ તેનાં કાવ્યોમાં સ્થાનીય રંગનાં અનેક ચિત્રો પ્રગટ્યાં! પછી તો જનતસાહિત્યમાં તેની પરંપરા ચાલતી જોવા મળે છે. શેક્સપિયર પંજુ ક્યાં તેમાં પાછો પડે તેમ છે! આડંનનું જંગલ, ઇંગ્લાંડની ધરતીને પખાળનો સાગર, લેમ્બેટના ઘોર-ખોદિયા; એ સર્વમાં સ્થાનીય રંગો છે. ટોમસ હાર્ડી, આર્નોલ્ડ ઝેનેટ, રાજકવિ મેઝફીલ્ડ, ટમ્સન એચ ડેવીસ, ફીલિસ ઝેન્ટી, ટોમસ ડિસેન; એ સર્વ કવિઓ અને સર્જકોએ ઇંગ્લાંડના સ્થાનીય રંગોમાં મનભર ચિત્રો પોતાની કૃતિઓમાં આપ્યાં. આયરિશ લેખક લિયામ ફોક્સલોર્ડમાં પણ આ રંગ જોવા મળે છે. રપેનિસ કવિ લોર્કેએ પોતાના એક નાટકમાં સ્થાનીય રંગો ચીતરવામાં કમાલ કરી છે, સર્સ્ટન સાહિત્યમાં આ પ્રકારના સ્થાનીય રંગો ક્યા સર્જકમાં સૌથી વિશેષ છે એ અભ્યાસનો વિષય જની શકે એમ છે.

લોકસાહિત્યમાં સ્થાનીય રંગો પ્રાધાન્ય ભોગવનાં હોય તેવું લાગે કે લોકજીવનની સાથે મંદગાથેવ સૌ કોઈને પોતાપોતાના લોકસાહિત્યમાં

સ્થાન મળતું હોય છે, પણી તે વહેળા સરખી નાનકડી નદી હોય કે નર્મદા કે મહી જેવી મહાનદી હોય; સમડી, કાગડો, પારેવું કે ચક્રી હોય કે રાવણ, લોમડા, પીંપળા કે જીજ્ઞાસા જેવી હોય; કૂવો હોય, કૂવાના પાવડા હોય; આ બધાને લોકકવિ પોતાના ગીતોમાં ગિરદાવતો હોય છે—તેઓને યોગ્ય સ્થાન આપતો હોય છે સ્થાનીય રંગોમાં તે તે પ્રદેશના ગામોના પણ અનેક ઉદ્દેશો મળતા હોય. લોકકવિ તેની સૃષ્ટિનું સાહિત્યમાં નખસિખ નિર્માણ કરવાનું જરાય ચૂકતો નથી. સાથે સાથે સ્થાનીય પ્રયાઓ, લોકમાન્યતાઓ, રૂઢિઓ, ગિવાનું, રહેણીકરણી ઇત્યાદિના સ્વરૂપ પણ એ લેખોમાં મંજગાતા હોય છે તે તે સ્થળની ભૂગોળ—Topography પણ લોકગીતોમાં જોવા મળે છે. લોકગીતોમાં જ સ્થાનીય રંગો ધેરા જોવા મળે છે કદાચ એટલા ધેરા રંગો અન્ય કોઈ સાહિત્યમાં બાક્યેજ જોવા મળે.

પદારનાં લોકગીતોમાં સ્થાનીય રંગનાં ચિત્રો તેમજ ઉદ્દેશો અત્યંત ખૂબ છે; જેમકે

તારા મલકમાં વરસ્યો મેહુલો,
મારા મલકમાં આવી હેલ.

નળ સરોવરના કાંઠા પરના પ્રદેશમાં આ પદાર ગીતોના વસવાટ. નળનો પ્રદેશ નીચાણવાળો છે, આથી ઉપરના પ્રદેશમાં “મેહુલો” વરસે કે તરત જ પાણી દડી દડીને નીચાણવાળા નળમાં બરાબ છે. નળના પ્રદેશનો ચિતાર આ પદાર કવિ આપે છે. અને નળ સરોવરને ઘસાઈને વહેતી કે થોડા અંતરે વહેતી નદીઓના ઉદ્દેશો પણ તેમનાં ગીતોમાં ક્યાં જોવા છે. “રેટુડો” નામે એક પદાર લોકગીતમાં એક પદાર આવે છે કે

“ ઉકરડો નાખ્યો સાલર નદીએ રે ! ”

આ સાલર નદી તે સાગર નદી પદારના વસવાટનાં ગામોમાં વહેતી રોડ નદીની જન્મદાત્રી આ સાગર છે સાગરમાંના ‘પોંપળિયા’

નામની વિશાળ ધરાનાં રૂપ અને મિલન તેમણે જોયાં છે, આથી
‘સાબર’ને તેમનાં લોકગીતોમાં સ્થાન આપ્યું. સાબરમાંથી જન્મેલ
રોડ નદીના ઉત્સેખો પણ સ્મરણીય છે :

રોડના કાંઠે એક લીંબડી,
લીંબડીનાં કાંઈ લીલાં પીળાં પાન રે !
ગેલીગેલના રાજ.

પદારતે મન આ રોડ નદી જીવન ટકાવનાર માતા સમી છે.
રોડના ઉત્સેખો તેમનાં અનેક કાવ્યોમાં મળે છે. બીજા સ્થળે પણ
રોડનો ઉલ્લેખ મળે છે :

રોડના કાંઠે ચીખરી બોલી,
રોડના કાંઠે ચીખરી બોલી,
અવળાં શુકન થાય, બિલો રે,
બિલો રે’ વાટના જાનાર !
નેડહું લેજું થાય !
એ—એ....રોડના કાંઠે ચોખલા સંધ્યા,
એ....એ....રોડના કાંઠે ચોખલા સંધ્યા,
ચોખલે ઊડી ખાંડ;
બિલો રે’ વાટના જાનાર !
નેડહું લેજું થાય !

સાબર અને રોડ પછી લીંબડી ને વડવાણના ભોગાવાનાં ગીતો
પણ તેમના મોકસાહિત્યમાં પ્રાપ્ત થાય છે; જેમકે

વડવાણનો ભોગાવો બહુ બારે,
તાણું તાણું છે વડવાણ રો’ર રે !
બૂડ તો બારે,

તાણ્યાં તાણ્યાં વા'લીડાનાં ચીર રે !

ખૂડ તો બહુ ભારે !

લીંબડીનો લોગાવો બહુ ભારે,

તાણ્યું તાણ્યું છે લીંબડી રો'ર રે !

ખૂડ તો બહુ ભારે,

તાણ્યાં તાણ્યાં વા'લીડાનાં ચીર રે !

ખૂડ તો બહુ ભારે.

પાણીના પ્રવાહના સ્વભાવનું દર્શન કરાવતાં કરાવતાં કવિએ તેમાં પ્રત્યુપભાવને સેધી દીધી. આ કાવ્યો માત્ર સ્થાનીય રંગોને ચીતરવા જ લખાતાં હોય છે એવું નથી, પણ તેમને કદીક પશ્ચાદ્ભૂમાં રાખીને, તો કદીક તેમને જ ગ્રાધાન્ય આપીને કવિ તેનું આલેખન કરતો હોય છે.

સ્થાનીય રંગોમાં વિશેષ ઉમેરણ કરે છે તે તે સ્થાનમાં વસતા સ્થાનિક વીરો (Local heroes) નાં પરાક્રમનાં કથાગીતો (Ballads). "રઘિયાળી રાત" નાં ગીતોમાં આવાં ગીતો છે. પદ્યરોના મનમાં આવી વસે તેમના ગામના મુખી કનુભા, લીંબડીના રાજકુંવરે કરેલા શિકારનો પ્રસંગ, શિયાળ ગામમાં સર્વોદય કેન્દ્ર સરે થયું ને નાનકડા બંધલા જેવું મકાન બંધાયું એ ઘટના, એ બંધલાના બંધાવનાર-હાડુભાઈ, ને બકરાણા ગામનો જીવુભા કાકાર.

તેમણે કનુભા મુખીનું ગીત જોડ્યું :

ડેલીએ ડેલીએ રે ! કનુભાના ડામરા,

કસુંબાની છોડે રે, છાકમછોળ રે !કનુભા મુખી !

ડકો દેવડાવ્યો રે, ભાલ દેશમાં !

નામ આખું રાખ્યું છે ભાલ દેશમાં;

રેઝી ઘોડી કનુભાની રાંગમાં,
ઉપર માંડયાં પિત્તળિયાં પલાણુ રેકનુભા મુખી !

બખ્ખે ભોટાની રક્ષુલ હાયમાં,
ખભે મૂલે ચાંદલિયો તરવાર;
પોલીસ પટ્ટનો ટોટો રાખતા,
પચાસની રહી ગઈ છે હાર રે !કનુભા મુખી !

માથે રેશમી ફેટો કનુભા બાંધતા,
રે ! હાથમાં નેતર સોટીનાં બાન રે !કનુભા મુખી

કનુભાનું સુરેખ ચિત્ર લોકમીતના રચનારે આપી દીધું છે. શિયાળ
મામનો ગરાસિયો છોકોટો બોલાવે છે કનુભાના વ્યક્તિત્વનું વિશેષ
જોઈ છે તે અહીં આ ગીતના માનારે આલેખ્યું છે.

બકરાણાના છવુછને બંગલો તો બધાઓ, પણ સ્વભાવમાં
જરા બખ્ખિતપણું આથી મજૂરી ચુકવવામાં તેણે ક્યારા રાખી.
બંગલો રૂપાળો થયો, તેનો ઉપભોગ છવુભા બંધે કરે; પણ છવુછને
રૂપિયો વઢાલો એનું શું ? આથી છવુછના આવા સ્વભાવની વિરોધના
પદારોએ એક ગીતમાં ગાઈ :

બકરાણા વચ્ચે બંગલો, છવુછ !
બકરાણા વચ્ચે તારો બંગલો,
છવુછને રૂપિયો વા'લો લાગે !

બસો ને બાર બારિયું, છવુછ !
બસો ને બાર બારિયું, છવુછ !
છવુછને રૂપિયો વા'લો લાગે !

બારીએ બેસીને દાતણ કરજો, છવુછ !

બારીએ બેસીને દાતણ કરજો, છવુછ !

છવુછને રૂપિયો વા'લો લાગે !

બારીએ બેસીને લોજન કરજો, છવુછ !

બારીએ બેસીને લોજન કરજો, છવુછ !

છવુછને રૂપિયો વા'લો લાગે !

શિયાળ મામના પાદરમાં સર્વોદય કાર્યકર શ્રી. છોટુભાઈએ
કરકમ દાઉસનો બંગલો વેચાતો લીધો. તેમની સાથે તેમના સહ-
કાર્યકરોમાં શ્રી. નવલભાઈ, શ્રી. મુનિ સંતમાલ, શાંતિભાઈ વગેરે પધારશે.
તેમને મળવા માટે મોટર આવશે, તેને પણ તેઓ જુદી સકના નથી,
કેન્દ્રમાં વૈષ્ણવીય સારવાર કરનાર બહેનને પણ ગીતમાં રથાન આપ્યું છે.
ગીત જ શુઓ :

એ ગામના ઝાંપલે છોટુભાનો બંગલો,

બંગલે લીલાને પીળા નેલ હોય રે !

એ ભલો બનાવ્યો તમે બંગલો.

એ બંગલાની બારિયુંમાં કેણુ કેણુ બેસે ?

બંગલામાં બેસશે નવલભાઈ સાહેબ.....છોટુભા સેવક

એ ભલો બનાવ્યો તમે બંગલો.

બંગલે મોટા મારાજ પધારાશે.

લેશે લેશે ગરીબ માણસુંની ખબર.....છોટુભા સેવક

એ ભલો બનાવ્યો તમે બંગલો,

બંગલે લીલાપીળા ખટારા આવશે,

મહીં મરેલાં કંઈ બાજરી કેસં બીજ રે !.....છોટુભા સેવક

એ લલો બનાવ્યો તમે બગલો
 એ લોયા લોયા વડોદરાના વેદડા
 ના'વે ના'વે મારી કાશીને'નના તોલ રે!
 એ લલો બનાવ્યો તમે બગલો
 એ રોઝી ઘોડી લઈ શાતિલાઈ આવિયા,
 લેશે લેશે બગલાની ઝોળખ . છાટુલા સેવક
 એ લલો બનાવ્યો તમે બગલો

એ પ્રેમના કાઠારને જૂનાગઢની જેલમાં પુગવું પડ્યું તેના પર
 પથ્થુ પદાગની સદાનુદ્ધતિ રેનાણો તેમણે ગાયું

એ હવણુલ કાઠેર, કાયા મેલી રે, જૂનાની જેલમાં!
 ઘરે રે, પે'રતો તું ધોતિયા,
 જેલખાનામાં પે'રવી દૂદી ચડીયુ રે!

હવણુલ કાઠેર!

કાયા રે, મેલી જૂનાની જેલમાં!
 ઘરે રે, સૂતો'તો હવણુલ ઢાલિયે,
 જેલખાનામાં ભોય પયારી હોય છે,

હવણુલ કાઠેર!

કાયા રે! મેલી જૂનાની જેલમાં
 ઘરે રે, ખાતો'તો હવણુલ બાજરે,
 જેલખાનામાં આવી ખોરી ભર રે,

હવણુલ કાઠેર!

કાયા રે! મેલી જૂનાની જેલમાં!

છાટુ કાઠો ના આ લોખંડીમાં મિ માનવમાંના અનુકંપા,
 સદાનુદ્ધતિ અને દયાના આવને “કયા રે! મેલી જૂનાની જેલમાં”

લખીને કેટલી હદે જામત કરે છે ! અને સાહિત્યદૃષ્ટિએ જો તેનું પૃથ-
ક્કરણ કરવાનું હોય તો લોકકવિએ તેમાં વિરોધવાક્યો સામસામાં મૂકીને
કેવું ફક્કડ કાવ્યનું નિરૂપણ કર્યું છે ! કાવ્યના સિદ્ધિતાથી અતઃ એવા
કવિએ જ આના સર્જક છે તેની તો કાઈ ના નદિ કહી શકે. વળી
તેમાં જીવુજીના જીવનમાં કવિએ સ્થાનીય રંગો ફક્કડ અદાથી પૂર્ણ છે.

પદારના સોડો જેમ વીરપૂજક છે તેમ તેમના પ્રદેશમાં ખતેલા
નાનકડા રામાયક પ્રસંગને કાવ્યત્વે ભોજનીને નાટ્યાત્મક પદ્ધતિએ તેનું
નિરૂપણ કરવાનું પણ તેઓ જાણે છે. આ લોકગીત જુઓ :

છસોનો સાંઢિયો લીધો સારણિયે,

છસોનો સાંઢિયો લીધો !

સારણિયાના છોકરે છસોનો સાંઢિયો લીધો રે !

ધીના તે બાડા ભરિયા સારણિયા,

ધીના તે બાડા ભરિયા રે !

અધવચ્ચે લૂંટાણો સારણિયો,

અધવચ્ચે લૂંટાણો સારણિયો રે !

સારણિયાનો છોકરો અધવચ્ચે લૂંટાણો રે !

બાપ તે વાંહે હાલ્યો,

સારણિયાના છોકરાનો બાપ તે વાંહે હાલ્યો રે !

સારણિયાના છોકરાનો બાપ તે વાંહે હાલ્યો રે !

મા તે માયાં ચૂટે,

સારણિયાના છોકરાની મા માયાં ચૂટે રે !

સારણિયાના છોકરાની મા માયાં ચૂટે રે !

લીંબડીની કેદયું પડી રે !

સારણિયાના છોકરાનો લીંબડીની કેદયું પડી રે !

સારણિયાના છોકરાને લીંબડીની કેદયું પડી રે !

શાથી રઈને કેદયું છૂટયું ?

સારણિયાના છોકરાને શાથી રઈને કેદયું છૂટયું રે ?

સારણિયાના છોકરાને શાથી રઈને કેદયું છૂટયું રે ?

શિયાળની ખારુમાં બગોદસ ચાળ્યું ગામ છે. તે ગામના કોઈ ચારણપુત્રની અવદશાને તેઓએ ગાઈ દરી ? ચારણના છોકરાને શાથી કેદ પડી ? તે તો લૂંટાયો હતો, તો સળને પાત્ર શાથી થયો ? પદારના મનમાં આ પ્રસંગે પ્રશ્ન પેદા કર્યો અને તેનો ઉત્તર તેમને ન જડ્યો, પણ પાછો ચારણનો છોકરો કેદમાંથી છૂટીને બહાર આવ્યો ત્યારે પણ તે જ પ્રશ્ન જન્મ્યો. લોકકવિ સમૂહના ધનકારા જીલના હોય તેવું લાગે છે. વિશેષે તે લખના હોય છે સમૂહ (mass)ના કાન્ને. લોકકવિ પોતાના વ્યક્તિત્વને કુમાડીને અન્ય લોકોને કાન્ને જ જણે કૃતિ રચતા ન હોય તેવું બાસે છે સૌનો પ્રસંગ લઈને સૌને તે અર્પણ કરે છે ને છતાંય તેમાં કાવ્યત્વ અને રસ જળવવા તે સતત મથતો હોય છે.

ચારણનો છોકરો લૂંટાગનો શિકાર બન્યો તેમ ધનસ્થામ સાહેબનો શિકાર બન્યો એક સુન્દર. તેનું દુઃખ મિત્ર નીચેના કાવ્યમાં જોશો :

આગળ ધનસ્થામ સાહેબનાં ઘોડાં રે !

વાંહે વાહે પદારની ટોળી,

મુર્દાગડો મુન્દરને મારવો દોયલો છે.

ગયા વેરાસર નામના તળાવડે,

ઘેરી લીધો મુન્દરને ત્યાંય;

મુર્દાગડો મુન્દરને મારવો દોયલો છે.

પડખે પરવાપત્રગ પડકાર કરે,

લેળા માનુલા સખદાર,

મુર્દાગડો મુન્દરને મારવો દોયલો છે.

ત્યાં તો કુતરાએ ડાડલાળો દીધી,
 ઘોડી સવિતાએ સપડાવ્યો,
 સુરંગડો સુન્વરને મારવો દોયલો છે.
 હવે પેલો તે ભાલો કાણે ભોંક્યો ?
 નાનલઈ સા'જે નાખ્યો નાખ્યે,
 સુરંગડો સુન્વરને મારવો દોયલો છે.
 પેલો પગના ડાળોટે પાડી દીધો,
 ત્યાં તો લૂલો થયો તત્કાળ,
 સુરંગડો સુન્વરને મારવો દોયલો છે.
 હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો,
 હવે ખીજો લાવો તત્કાળ,
 સુરંગડો સુન્વરને મારવો દોયલો છે.
 ત્યાં તો માધુલાએ માકારો કર્યો,
 “હવે મરેલાંને શું મારો ?”
 સુરંગડો સુન્વરને મારવો દોયલો છે.

જેલમાં પુરાતું એ પદારના જીવનમાં બહુ જ કલકિત પ્રસંગ
 લેખાય છે. મગનિયાને જેલમાં જવું પડ્યું તો જાણે આખી જાતિનો
 કંકળાટ ન હોય તેવું એક ગીત તેમણે કરી નાખ્યું :

ત્રાડીના મારગે આવે મગનિયો
 ત્રાડીના મારગે આવે રે લોલ !
 મથાળે ફૂંઝડી બોલી મગનિયાને
 મથાળે ફૂંઝડી બોલી રે લોલ !
 પાછી મોડે બાંધ્યો મગનિયાને
 પાછી મોડે બાંધ્યો રે લોલ !

ઘોળકાની મોટરું છટી,
 એ ઘોળકાની મોટરું છટી રે લોલ !
 ઘોળકાની જેલમાં પૂર્યો,
 એ ઘોળકાની જેલમાં પૂર્યો રે લોલ !
 નેતરની સોટીએ માર્યો,
 મગનિયાને નેતરની સોટીએ માર્યો રે લોલ !
 ઘોડો ધનાં મા ને બાપ,
 ઘોડો, મગનિયાને માર્યો રે લોલ !
 ઘોડો ધના ભાઈ ને બાપ,
 ઘોડો, મગનિયાને માર્યો રે લોલ !

આ હિ અત્યંત નાનકડો પણ તેમના જ જીવનનો, તેમના જ ચિત્તની વેદના બ્યક્ત કરતો, પ્રસંગ તેમાં સ્થાનીય રંગો છે એ કહેવાની જરૂર ખરી ?

અને આ લોકકવિ હવાનાં સ્પંદનો પણ સવેદી શકે તો ગાંધૂની જીયલપાથલોને કેમ ન અનુભવી શકે ? જમીનદોગ ને બાપુઓનો અમલ ગયો. તેમણે પોતાના શાસનકાળમાં તેમનાં જીન ગાયાં. કૅંગ્રેસ આવી ને તેમનાં પણ ગીતો ગાયા તેમાં તેમણે જે જોયું તે જ ગાયું તેમનાં ગીતોમાં ક્ષપના કરતાં વિગેત પ્રાધાન્ય છે વાસ્તવને. અને તેથી કૅંગ્રેસનું જીન ગાતાં ગાયુ :

“ હાર્યો ચોલો રામસંગ, હાર્યો ચોલો રૂપમંગ,
 હાર્યો ચોલો ધધુકાવાળો રે લોલ !
 કેશુભાઈની મેડીએ ઠોણ ઠોણ બિતર્યા ?
 “ કૅંગ્રેસ બાપુ ” રે લોલ !

પાંચસે પાઠરવાળા, કૅંગ્રેસ બાપુ, છસે ખેતરવાળા;
 હાર્યો ચોલો રામસંગ, હાર્યો ચોલો રૂપસંગ,

હાર્યો ઓલો ધધુકાવાળો રે લોલ !

લીલડી ઘોડીવાળા, કોઝેસ બાપુ.

હાર્યો ઓલો રામસગ, હાર્યો ઓલો રૂપસંગ,

હાર્યો ઓલો ધધુકાવાળો રે લોલ !

ઘોડી પર પનાણુ નાખીને ફરનાર રામસગ ને રૂપસગ હાપો, ધધુકાની ગોરી સંનત પણ હારી, કોઝેસ બાપુનો અગય સ્થપાયો અને તેમણે પણ “લીલડી” અને “રોઝી” ઘોડીઓ રાખી સામત શાળીમાં તજના સચાનકો કેશુભાઈની મેડીએ આવીને લીતરતા અને હવે “કોઝેસ બાપુ” પણ એ જ મેડીએ જિતે છે ! નવું વાસ્તવ જ તેમણે ઠાનમ્યુ છે ! જે તેઓ નિરખે છે, અનુભવે છે સર્વે છે તે જ તેઓ કાન્યમાં નિરૂપે છે આ સ્થાનીય રંગો તેમને મન કવિતાવિષય બનવા પામે છે કમકે તેમના સર્વેદનો તેમથી જ જન્મ્યા હોય છે અને તેમાં જ શમી જાય છે એ બે વચ્ચેના ગાળાની ઊર્મિઓ પછી કવિતારૂપે સર્જન પામે છે ઇગ્નાકી સ્ત્રી-નવનકથાકાર ફ્રીલિસ બ્રેન્ટ લીએ કહ્યું કે ‘મારી નવનકથામાં હું પ્રસંગનું કાવ્યતત્વ લાવવા મથુ છું વીશ-પચીશ વર્ષના ગાળાના સમયમાં માનવમાં જે પરિવર્તન થાય છે તે જ મારે મન સાચુ જીવન છે તેના નિરૂપણમાં હું રાત્રુ છું’ પદારોનો લોકકવિ પણ જાણે આ કથનને વરી ચૂક્યો હોય તેવું નથી જાણતું ?

અને એ કથના મટે જરૂરી સામગ્રી કવિ ધસ્તીમાંથી મેળવે છે આથી સ્વાભાવિકપણે અનેક સ્થાનીય રંગો તેમનાં મીતોમાં મળવાના જ. પણ સાચે એ પણ નોંધપાત્ર છે કે તે સ્થાનીય રંગો માત્ર જીવનના લીસોટા બનવા નથી પામ્યા, પણ તેમાં જ જીવતા અને જાગતા, શ્વાસ લેતા અને ઊર્મિઓ અનુભવતા માનવીઓના હૃદયોને ઠાવરી દીધાં છે એ કારણે જ તેમને આટની વિચિત્રતા જોવાના રહે છે ને ?

પરંબ માથે આવવાનું નો બૂલતા !

‘ગીતો મંગાવશો ?’

‘ગાણાં ઉતરાવશો ?’ મેં ફરી પૂછ્યું.

કોઈએ મને જવાબ ન આપ્યો.

‘રાહમાં લખાવશો ?’

‘અમારા તો સાદ સુકાઈ ગયા છે.’

‘સાદ સુકાઈ ગયા છે ?’

‘જુઓ કાળ...પડ્યા છે. જુઓ કાળની કસોટીએ ચડ્યા છીએ, પછી સાદ સુકાઈ જ ગય ને ? પણ સારા વરસે કંઈ ઝાલ્યો ય ન રે’. આ દીકરીયુંને સાદ દેવા મ નો જવું પડે.’

શિયાળ ગામની પહાર નાતના આગેવાન વિદ્વા મંગદા મારી સાથે વાતે વળગ્યા હતા. જામેલી રાત ધમ્મર ગતિએ આગળ વધ્યે જતી હતી. મેં કહ્યું : ‘પણ દિવાળીગહેને તો અમને તેમના ખેતરકઠિ ગયા ત્યારે કહ્યું હતું કે રાતે વાસમાં આવજો, જરૂર ગાણાં મંગાવશું.’

‘દિવાળી ?’ અમે તેના ધરના જાપરાની ઓસરીમાં બેઠા બેઠા મપાટા મારતા હતા. વિદ્વા મંગદાએ કહ્યું : ‘હોય જ ને’. દિવાળી કેજ ને.’ તે આત્મવિશ્વાસથી બોલ્યો. ‘અમે જાણી ને કે દિવાળી ગાણું ઉપાડે જ ને ?’

મારી સાથે બીજા મિત્રો હતા, તેમણે દિવાળીના ધરનું ત્રણ ચાર વાર કમાડ ખખડાવ્યું ત્યારે અંદરથી જ બોલી : ‘મારું તો માયું’ અમન ફૂળે છે.’

‘એ નૈ ઉતરાવે’ વિદ્યા ગગદા દડતાથી બોલ્યો, ‘એને તો નાતની આડી છે ઈકાઈ દિ’ નૈ મડાવે. પણ તમને કઈ ખાલી લાગે પાછા કડાય ?’ તેણે ખૂમ પાડી : ‘અલી વાંલી !’ તે મારી સામે બેસી લાગ્યો. ‘વાંલી આપણા બાપી હરાવાની બોન અને નેશન બગતની પરવાણી. ધણીધણિયાણીનો જીવ ભારે ધગમગા છે.’ તેણે ફરી ખૂમ પાડી : ‘વાંલી જો !’

એક જ ઝોશરીએ ખીજી ધગ છે તેનો ખડ ખૂલ્યો અને શરમાળ નેશ્યામગી મૌરા ખડમાયી બહાર આવી. તેને બેઠકને વિદ્યા ગગદા બોલ્યો. ‘બેઠકને થોડાંક ગાણાં મડાવવાં પડશે. હાડીયુંને બકાશે ને ! (બોલાવો)’ તે વધુ શરમાઈ અને જમારી આજીવાજી બેઠક મોટિયાર જીવાનોને કહ્યું : ‘ઓલી હેતુડી, કે રાજીડીને સાકરી લાવ ને ! જાહ’ અને તે દાવડી બનીને બોલી ‘અસા ઊકરાવ, કઈક મડાવો !’ તેઓ જાણે મારી નિગધાગ રિયતિ પર દયા ખાતા હોય તેમ બોખામાં મોં ઢાંકીને ખડખડાટ દસવા લાગ્યા. ત્યાં તો વૈયાનું ટેણ આવે તેમ બાગ્યદર કિશોરીએ આવી દિવુ, રાજી, કુવર, વાંલુ, ઘોળી, ફૂલ ..

વાંલીમેંન બોલી • ‘વાંલામૂઠ્ઠા, ગાણાં મડાવવાં પડશે’

આ તો એકબીજાના ખબા પર માથાં નાખી, આંખ આડી હચેવોએ ઢાંકી હસીહસીને બોલવા માગી • ‘ઓદણાં અલાવો’

‘સારા વરસે મત્રામ આપણને વરસ કાઠુ લાગે, તો ધમિનેય ..’

ખી...ખી...ખી...ખી...ખી ખી

‘તે હવે દસવું મેયો ને !’

ખી ખી .ખી ..ખી

‘તે ચુ પારી છે, હિતુડી !’

‘શરમ લાગે છે’

‘સારુ’ બોલી વાલીમેન જીભી થઈ ઘરમાંથી ખાટયો વાતી
વંચાના ટોગા અને અમારી વચ્ચે જીભો તેણે મૂક્યો અને તેઓ
ખાટવા પાછળ લપાઈને મેઠાં વાલીમેને શુ મીઠા માટે ગીત ઉપાડ્યું !

મીરાબઈ જ્યોતમકળમાં અવતર્યા રે
મીરાબઈ જ્યોતમકળ અજવાળો, સાચા બેલી રે ગિરધારી,
દાદે માટે સરપનો સૂડલો ઝોકયો રે,
દાદે માટે સરપનો સૂડલો ઝોકયો રે,
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈએ સરપના કયાં જો બેગખા રે,
મીરાબઈએ સરપના કયાં જો બેગખા રે,
લીધી તળશીની માળાય, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈ જ્યોતમકળમાં અવતર્યા રે,
મીરાબઈ જ્યોતમકળ અજવાળો, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
દાદે માટે વખના કટોરા મોડ્યા રે,
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈ વાટી ઘોળીને પીએ જિયા રે,
મીરાબઈએ સમર્યો શગીલગવાન, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈ જ્યોતમકળમાં અવતર્યા રે,

‘હ્યો મીનરીઓ અમને તો મઈ ય મ નો નામી’ વાલીમેન
ખાટવા પગવાડેથી જીભી થઈ હવે ગડિ ઝ મ નાવવા’

‘પણ દેવે ચના લી ને !’

‘હા, પરમના રાસડા...લ્યો ઉપાડો.’ બધી કિશોરીઓ સાથે વાંધીમે’ને રાસડો ઉપાડ્યો :

ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ રાતનો છ રે !

ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ રાતનો છ રે !

ચાંદાનાં આંખાં તેજ રે, રાજ, ગોકુળમાં વેલા પધારને છ રે !

તાંબાકૂંડી જળે ભરી રે !

ઝિલણિયાં તળાવ જઈશ રે, રાજ, ગોકુળમાં વે’લા પધારને

છ રે !

ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ રાતનો છ રે,

ચાંદાનાં આંખાં તેજ રે, રાજ, ગોકુળમાં વે’લા પધારને છ રે !

‘ અને છોડીયું હવે જોડિયાનો મેળો મડાવો.’ કઠની માઠી હલકે તેમણે જોડિયાનો મેળો શરૂ કર્યો :

જોડિયાનો મેળો, રણછોડજીનો મેળો,

મારી સાસુ કે’ છે કે વહુ, નથી જાણું મેળે !

છાનીમાની રે’જે, ચૂલે ભેંસી રે’જે, રાટલા ઘડી રે’જે,

મારે જાણું છે મેળે.

મારો જોઈ કે’ છે કે વહુ, નથી જાણું મેળે !

છાનીમાની રે’જે, સાંતીડું ભેડી જાળે,

મારે જાણું છે મેળે.

મારી નણુંદ કે’ છે, વહુ, નથી જાણું મેળે.

જોડિયાનો મેળો, રણછોડજીનો મેળો, મારે જાણું છે મેળે !’

ધમણની જેમ હાફતી કિશોરીઓ ચાકલો ખાવા થતી અને ત્યાં તો વાંધીમે’ને ઠણું : ‘દિવસિયો બાળીને વનમાં લઈ જાય છે તે !’ તેણે ઉપાડ્યું.

ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી,
 ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી,
 વનમાં કાંટડા દિવરિયા !
 નાના દિવરિયે સડકે બંધાવી,
 સડકે ચાલો રે ભાભલડી !
 ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી,
 વનમાં તડકા રે, દિવરિયા !
 નાના દિવરિયે આબો રોપાબો,
 છાંચે બેસે રે ભાભલડી !
 ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી,
 ચાલો ભાભલડી વનમાં જાવી.
 વનમાં તરસ્યાં રે, દિવરિયા,
 નાના દિવરિયે પરબ બંધાવી,
 પાણી પીજે રે ભાભલડી !
 પાણી પીજે રે ભાભલડી !
 ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી,
 ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી.
 વનમાં હું જવ છું, દિવરિયા,
 વનમાં મૂણું લાગે, દિવરિયા,
 નાના દિવરિયે કંઠોઈ અણાબો.
 લાડુ જમજે રે, ભાભલડી,
 લાડુ જમજે રે, ભાભલડી,
 ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવી.
 વનમાં કાંટડા છે રે, દિવરિયા,

નાના દિયરિયે ઓચી બોલાવ્યો,
ઓજડી ચે'રશે રે લાલકડી.

આખા પદાગ્વાસને તેમણે ગજવી મૂક્યો અને ખાટવામાં સૂતેલ
બીજી પણ પદાર યુવતિઓ ઘેવી થતી થતી વાસના આ બોરડા તરફ
ધસી ઓશરીમાં નાનકડું સુંદરીટોણુ જામ્યું ચા'લીમે'ન જરાક મરકી
પડી : 'તમે ઓઢણું લેજો. આ સધીઓને ઢાકજો, પણ સાન વરસે.
'અત્યા...' તેણે બીજી ગીત ઉપાડ્યું :

સોના વાટકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં, વા'લભિયા !
નાના દિયરિયે રે, રંગમાં રોળ્યાં, વા'લભિયા !
ઘરે જાશું તો રે, સાસુ મારી વઢશે, વા'લભિયા !
સામુજી દેશે ગાળ રે, વેગળા રો'ને, વા'લભિયા !
સોના વાટકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં, વા'લભિયા !
નાના દિયરિયે રે, રંગમાં રોળ્યાં, વા'લભિયા !
ઘરે જાશું તો રે, જેઠ મારો વઢશે, વા'લભિયા !
જેઠાણી દેશે ગાળ રે, વેગળા રો'ને, વા'લભિયા !
સોના વાટકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં વા'લભિયા !
નાના દિયરિયે રે, રંગમાં રોળ્યાં, વા'લભિયા !

'તમારાં કાંઈ કુખશે, લઈ ! બોલો મગવું ?' મેં ડોકું
ધુણીયાંને હા પાડી : 'અલી છોડીયું, મગવો પારસપીપળો.'

ઠાકોરિયા, રજવાડાને રે પાદર પારસપીપળો,
ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી મુરસકે,
ઠાકોરિયા, અ્યાં રે બધાવું ઠાલર હીંચકો ?
ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી મુરસકે,
ઠાકોરિયા, રજવાડાને પાદર પારસપીપળો,

ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી ધુરસકે,
 ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી ધુરસકે.
 ઠાકોરિયા, સ્યાં રે બધાવુ ડાલર હીંચકો ?

‘ ઊંચિયુ જામુડાનું ગાણુ કાગે ’

જામુડો જિગ્યો રે રમિયા, મો’લમાં રે !

જામુડાની ડાજખી લળી લળી જાય,

જાણુ મને જામુડો રજિયામણો રે !

જામુડાની બેટડી, તું મારી બે’નડી,

બે’ન, મને રે માગ્યાં ઠડલાં આલ્ય,

પરણે ગૂદીનો ગગમિયો રે !

જામુડો જિગ્યો રે રસિયા, મો’લમાં રે !

જામુડાની ડાજખી લળી લળી જાય,

જાણુ મને જામુડો રજિયામણો રે !

જામુડાની બેટડી, તું મારી બે’નડી,

બે’ન, મને રે માગ્યો ઘાઘરો આલ્ય,

પરણે ગૂદીનો ગગમિયો રે

જામુડો જિગ્યો રે રમિયા, મો’લમાં રે !

‘ ગણુડી, હવે તું વડો મગબ્બ ’

દાદા વડલો ફૂટ્યો રે, લાખા પાંદડે,

દાદા વડલો ફૂટ્યો રે, લાખા પાંદડે !

ઇની ડાજખી ઘેરગણીર કે રગમાં,

લીધો રે હજારી દોલા રૂસણો !

અમે દાતણિયાં કરીને હાલ્યા હીંચવા,

તો ચે ને આલ્યો જુગરો બોલ, કે રગમાં,

લીધો રે હબારી ઢાલા રૂસણો !
 અમે નાવણિયાં કરીને હાલ્યાં હીંચવા,
 તોયે ને આલ્યો નુગરો ખોલ, કે રંગમાં,
 લીધો રે હબારી ઢાલા રૂસણો !
 અમે લોજનિયાં કરીને હાલ્યાં હીંચવા,
 તોયે ને આલ્યો નુગરો ખોલ, કે રંગમાં,
 લીધો રે હબારી ઢાલા રૂસણો !
 અમે પોઢણિયાં કરીને ચાલી નીસર્યાં,
 તોયે ને આલ્યો નુગરો ખોલ, કે રંગમાં,
 લીધો રે હબારી ઢાલા રૂસણો !

‘ હજી આલ્યું, મડાવવાનું રૂંધું ! ‘વા’લો મારો હીંચે રે ! ’

સોનાની સાંકળે ખાંધ્યો હીંડોળો, આંખાની ડાળ્ય;
 રૂપાનાં કડાં ચાર, વા’લો હીંચે રે આંખાની ડાળ્ય !
 અવળખવળ ખોરડી, આંખાની ડાળ્ય;
 આવળિયાં દાતણુ દઈશ, વા’લો મારો હીંચે રે,
 આંખાની ડાળ્ય !

સોનાની સાંકળે ખાંધ્યો હીંડોળો, આંખાની ડાળ્ય;
 રૂપાનાં કડાં ચાર, વા’લો મારો હીંચે રે, આંખાની ડાળ્ય,
 તરાખાંડૂડીયુ જળે ભરી, આંખાની ડાળ્ય,
 ઝિલણિયા તળાવે જઈશ, વા’લો મારો હીંચે રે,
 આંખાની ડાળ્ય !

સોનાની સાંકળે ખાંધ્યો હીંડોળો, આંખાની ડાળ્ય,
 રૂપાનાં કડાં ચાર, વા’લો મારો હીંચે રે, આંખાની ડાળ્ય !

ચેર ઝુંવાળી લાપસી, આંખાની ડાહ્ય,
 સાકરિયા કંહાર હઈશ, આંખાની ડાહ્ય;
 સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડોળો, આંખાની ડાહ્ય !
 રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો મારો હીંચે રે, આંખાની ડાહ્ય !
 ઢાલણુ આલીશ ઢાલિયો, આંખાની ડાહ્ય,
 હીંડોળા ખાટયું હઈશ, વા'લો મારો હીંચે રે;
 આંખાની ડાહ્ય !

સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડોળો, આંખાની ડાહ્ય;
 રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો મારો હીંચે રે આંખાની ડાહ્ય !

‘હજીય મારું છે, લઈ!’

‘આ તો શું મંડાવ્યા છે?’

‘મોતડી, એત્યું મોતીવાણું!’

ચ્યાં ગયું, મારું મોતી,
 મોતી વિનાની રાતી, મચકામાં તોડિયાં !

હું બાર વરસની છોડી,
 મારી ઉંમર થઈ છે થોડી;
 મારી ઢાલે તોડી નોડી, મચકામાં તોડિયાં !

હું ઢાલિયેથી ઢળી ગઈ,
 પલંગ નીચે પડી ગઈ,
 આ ચ્યાં ગયો મારો વાલો, મચકામાં તોડિયાં !

ચ્યાં ગયું મારું મોતી,
 મોતી વિનાની રાતી, ચમકામાં તોડિયાં !

‘તમે તો નથી ઘાઘ્યા ને, લઈ?’ વા'લીજેને મને પૂછ્યું.

‘તમે તમારે મંડવ્યે રાખો ને ।’

‘તારે . ?’ તે જરા વિમાસજીમાં પડી ને તરતજ ગીત તેના હંમે આન્યુ ને શરૂ કર્યું :

એકલડી જિણી હું પનઘટની ખારીએ,

કોઈ મને બેઠલું ચડાવે.

અજાણ્યા ગામમાં જોળખતું નથી.

હું ચ અજાણી, તે ચ અજાણ્યા,

કોઈ મને બેઠલું ચડાવે,

નાજુકડી નાર, માથે બેડાનો ભાર,

કોઈ મને બેઠલું ચડાવે,

એકલડી જિણી હું પનઘટની ખારીએ,

કોઈ મને બેઠલું ચડાવે.

‘ભઈ, હવે ઝાઝા ને મડાવીએ સવારે વેંલા જીંને ઢોકવે જલુ પડશે ને ત્યાં આખો દિ’ તકકામાં ફૂલામાંથી ચડવા કાઢવાના. ધડી પો’ર થાક્યો તો બોધે ને ? છાડીયુ, રણુઝણુ રણુઝણુ રેડુડો...’

તરતજ યુવતિએ ગીતને ઉપાડ્યું .

રણુઝણુ રેડુડો ફેરિયો,

રણુઝણુ રેડુડો ફેરિયો,

સાસુ બાણે વહુ કાતે રે, મારી સૈયરું શરમાણી !

વહુ રે વહુ, અમને કોકડા વતાડો,

કોકડાનાં લીધાં રોકડાં રે, મારી સૈયરું શરમાણી !

વહુ રે વહુ, અમને રોકડાં વતાડો,

રોકડાની લીધી જારી રે, મારી સૈયરું શરમાણી !

વહુ રે વહુ, અમને ઝારી વતાડો,
 ઝારીનાં ઘ્યાં છે રે કટકારે, મારી સૈયરું શરમાણી !
 વહુ રે વહુ, અમને કટકાં વતાડો,
 કટકાં નાખ્યાં ઉકરડે રે, મારી સૈયરું શરમાણી !
 વહુ રે વહુ, અમને ઉકરડો વતાડો,
 ઉકરડો નાખ્યો સાબર નદીએ રે, મારી સૈયરું
 શરમાણી !

વહુ રે વહુ, અમને સાબર વતાડો,
 સાસુડી બૂંડી ને સાડલો તરિયો,
 ને ને નગરીનાં લોકો રે, મારી સૈયરું શરમાણી.

‘હવે નેં મંડાવીએ.’ વા’લીએ ન જ આગસ મરણી એ સી.
 તમારે અમારાં ગાણાં, રાસડાં માંડવાં હોય તો કાં તો પરગમા, કાં તો
 દિવાળી માથે, કે કાં તો અખાનરીએ આવજો. ને ને. પછી કાણુ
 પાછા પડે છે તમે કે અમે ?’

ઊઝણુ ચક્રીઓની જેમ આવજો કહેવાની વાટ જોયા વગર
 યુવતિઓ અને કિશોરી ચાલી ગઈ, પણ તેમાંથી બેચાર ઝીણા સાહે
 બોલી : ‘પણ ખાસી દાથે નો આવતા. અમારું દાણું લેતા આવજો.
 એકલું બોલું !’

‘જવ, જવ હવે ચીતરીયું ! એવી હીઝા પેટની ચું થાતી દગો ?’
 ખી...ખી...ખી...ખી....!

હાથમાં ફાનસ લઈને હું જીતો થયો ત્યારે વા’લીએ ને વળી વળીને
 મને કહ્યું : ‘પરજ માથે આવવાનું નો જૂવના. તમે ગત ને દિ’ ગાણાં
 માંડ્યા જ કરજો તે દિ’ ધરઈ ધરઈને આ સૌ ગાવાનાં. તમારે
 કેવું જ નેં પડે. તરે તો ગણું બિધડી અંચું હોય છે.’

આકાશમાં નજર કરતો જતો હતો, ત્યારે આ ઊંચા ચક્રીઓ
 જેવું જ તારાનું જૂથનું પણ જાણે ગીતો ગાઈને આકાશને પ્રકુલ ન
 કરતું હોય તેવું મને લાગ્યું અને સાથે સાથે પેતો રણકાર કાનના
 દોલ સાથે પડ્યો : 'પરમ માથે આવવાનું નો જૂથતા.'



કિતના શૂરવીર હૈ દિલ !

શિષ્ટ સમાજ અને બહુલોક ધારા જાતિને પિછાને છે માત્ર ચોર, ડાકુ, ખિસ્સાકાતરુ અને ગઠિયાના રૂપે જ આ બધી તે જાતિ માટેની એમ્પ્તગ્રી કલ્પના દૂર જોભા જોભા બસોનબસોન અને શિષ્ટ સમાજે ધારા જાતિ માટે કરેન છે તે ચોર બન્યો હેય તો શા માટે ? ધારાને એ ધધા ગમે ■ ખરો ? તે ડાકુ ચોર લૂટારા ખિસ્સાકાતરુ ચીલઝડપ કરનારમાં દિલ છે ખરું ? તે માનવી છે ? તેનામાં માનવ હૃદય શું નથી ? તેનામાં માનવીમા છે તેવી મીઠી ને સુકોમળ લાગણીઓ છે ખરી ? આવા પ્રશ્નો તે જાતિ માટે શિષ્ટ સમાજના માનવને કઠીય થયા ■ ખરા ?

માનવનું આ જોગિયુ બધાને તેના સર્જકે જેમ સ ખુ આપ્યું છે તેમ જો ચિત્તનું સર્જન ધ્યું છે તેમાંય શુભો અને અવગુણોય તેના સર્જકોએ સરખા મૂક્યા ■ તેના વિકાસ સંયોગોને આધીન છે

શિષ્ટ સમાજનો કોઈ માનવી વધુ સવેદનશીલ બની શકે અને ગીત જોડી શકે તો તે કવિ કહેવાય લોકો તેની કવિના સાંભળે, વાંચે ! ને ગાય ત્યારે સાંભળે અત્રે જે ગીત પ્રખ્યાત થાય છે તે ધારા યુવાન શ્રી શિવરામ કચ્છનભાઈ ગારુજેનું રચિત છે એ ગીતમાં તેનું સવેદન શીન માનસ વ્યક્ત થયું ■ તેના દિનમાં વસ્ત્રા ■ તેની જાતિનાં અને સમાજનાં સુખ-દુખો તેના કંઠમાં હલક છે અને મીઠાઈ છે તે ગુજરાતી બાષામાં ય મીતો રચે છે, દોહાઓ રચે છે ! સાથે સાથે તેમના સમાજની અદરનાં મનોમથનો પણ તેમાં મૂકે છે

આ ગીતમાં ધારાજાતિની તવાગિખની આછી રૂપરેખા આપી છે, અને બાવિની ઝખના વ્યક્ત કરી છે ધારાજાતિ મૂળ તો રાજ

સ્થાનની રજપૂત જાતિ છે, તે વાત ઈ. સ. ૧૯૩૧ નો ભાવનગર રાજની વસ્તીગણતરીના પુસ્તકમાં તેના લેખકે સ્પષ્ટ કરી છે. દુકાળો, પાણીની તંગી, વરસાદની ખેંચ, મુસલમાન રાજવીઓની ધર્મવટાળ-પ્રવૃત્તિ; આ બધાં કારણોથી આ લોકોએ આશ્રય લોધે જંગલોમાં, કુંગરોમાં ! આ જાતિનાં કેટલાંક કુળો ઉત્તર હિંદના પર્વતોમાં પણ જઈ વસ્યાં. કેટલાંક માળવાઉદેશુરના કુંગરોમાં. ગુજરાતના છારાઓ, આડોડિયાનો સ્થળાંતરનું સંશોધન કરવાનો દિવસ આવ્યો ત્યારે કદાચ આને 'ડેટા' તરીકે સ્વીકાર્યું પડશે ત્યાં તેઓ વનફળ ખાતા. પોષણના માટે તેઓ નાની ચોરીઓ-જેવી કે ધાનની અને પશુની કરતા. પણ તેઓ સંતાઈને જ રહેતા. ત્યાંથી તેઓ ગુજરાતમાં આવ્યા. તેઓ મૂળ તો ઓળખાતા હતા 'ભાતુ'ના નામથી. આ શબ્દ 'આતુ'માંથી આવ્યો હશે ! આખા ય હિંદમાં વસતી આ જાતિનાં જુદા જુદા પ્રાંતમાં જુદા જુદા નામે છે. ગુજરાતમાં આ ભાતુ ઓળખાયા છારાના નામે.

ગુજરાતમાં તેઓ ગોધરાના રસ્તે યઈને ચરોતરમાં અને અમદાવાદ-માં આવ્યા. અમદાવાદમાં શરેશ્વરમાં રહેતા લોકડિયા પૂલ પાસે રહેતા. ત્યાંથી તેઓ રહેવા ગયા જૂના વાડજની સીમમાં, પણ તેમની પ્રવૃત્તિ શિષ્ટ સમાજના માટે બાધક દેખાઈ ત્યારે અંગ્રેજ સરકારે તેમના માટે કાંટાળા તારની વાડવાળું 'સેટલમેન્ટ' બનાવ્યું તે ત્યાં પૂર્વા, ઘોઝ્યા, ને નજરકેદ રાખ્યા. યુનાઈટેડ કેમ માટેની હાજરી આપવાની ૧૧ કક્ષમ તેમના પર ઠાકી બેસાડી.

પણ ૧૩ મી ઓગસ્ટ '૪૯ ના રોજ તેમાંથી તેમને મુક્તિ મળી, ને આજે તે ફી કોલોનીમાં કુજેરનગર આગળ રહે છે. હવે તો તેમને ઝંખના ■ સ્વતંત્ર ભારતના આદર્શ નાગરિક બનવાની ! પણ તો ય તેમનાં સુખદુઃખ તેમના દિલમાં ક્યારેક વસે છે અને ત્યારે આવી કોઈક કવિતા છાંય ચાચરના દિલમાંથી સરી પડે છે. પણ તેમાં જ ઝંખના, પસીનો પાડીને કમાઈ આવવાની, ધંધાની માગણીની ! શિષ્ટ

સમાજ હવે આ જાનિની વધુ નજીક આવીને તેને સમજે તો દેટલું સુંદર આર્માંથી પગિણામ નીપજે !

ધંધા બિન હય મુશ્કીલ, કીતના શૂરવીર હય દિલ,
એ ન જાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
આપદાદાને ચોરી બનાઈ, છોટે બચ્ચો તક ચોરી મનાઈ !

કર રહે હય જિંગલ, પછુ રહે થે જંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
બાપુદાદાને જંગલ બનાયા, ઘોડે ગઢે પે ડેરા જમાયા !
ફીર રહે થે જંગલ, કર રહે થે મંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
નદીનાળાંએ ગહરી બનાઈ, ચીરત બચ્ચોને દુખતો ઉઠાઈ !

કર રહે થે મંગલ, ફીર રહે થે જંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
માજકનેજમે ડેરા જમાયા, માટીમાંસ ફી હોળી મનાયા !

દીખ રહે થે અંધારી, કર રહે થે શુલતાની,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
લકડિયા પૂલસે રંગ જમાયા, જૂની વાડજ પે ડેરા લગાયા !

પડ રહી થી મેંટર, બન રહી થી સેંટર,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
સોલા ત્રીકસના રંગ જમાયા, ઘર ઘરમેં હાજરી લગાયા !

કટ ગયે થે જંગલ, કર રહે થે મંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;

ચોરી કર કે રંગ બતાયા, ધુળે જલગાંવ મેં ધકલાયા !
 માત બહનકેા ફુકરાયા, અપની હાલત બિગડાયા,
 વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
 તેરા અગસ્ટ કેા આઝાદ બનાયા, ગાંધી બાપુકા આગવા મનાયા !
 તેરગી ઝંડા ચડાયા, સેન્ટલમેન્ટ છુડાયા,
 વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
 પંદર ઓગસ્ટ કેા આઝાદ બનાયા, ક્રી કોલોનીમે રંગ જમાયા !
 કમા રહે ચે માયા, ઉઠ રહીથી છાયા,
 વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે જમાના;
 દોઝેસવાદીને રંગ જમાયા, ચોરી દારૂ સે અલગ બનાયા !
 કર રહી હય સુધારા, બધ રહી હય મજદારા,
 વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે જમાના;
 છારા મંડળને અરજ પુકારી, ઉતકા પેટકા કરે તો શુભરા !
 મીલ કે કરેગે સુધારા, મીલ જાય સહારા;
 વો ભી હય જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના !



છારાનાં લોકગીતો

(૧)

લક્ષ્મીનાં ગીતો

ગણેસ શુંભરા ને પાનેરું મોટી,
પાનેરું મોટી ને વીરને મોટી રે,
મારા ગણેસે શુંભરા ને પાનેરું મોટી....
ગણેસે શુંભરા ને ફૂલડાંની માળા,
માળીની વાડીમાંનાં ફૂલડાં રે—મારા....
ગણેસે શુંભરા ને સોનાની સોટી,
સોનાની સોટી ને વીરની મોટી રે—મારા....
ગણેસે શુંભરા ને સોનાની વીંટી,
સોનાની વીંટી ને માથે મોટી રે—મારા....
તેત્રીસ કોડ દેવતા રે સ્ત્રીમળી આવ્યા,
આવીને પાછા વાળિયા રે, મારા ગણેસે શુંભરા.

(૨)

લીમડલીનાં લૂગેઝૂમે પાન રે,
પાન સરખાં રે ગઢનાં કાંગરાં રે;
વીરના ઝીણા ઝીણા મોર !
મારા રે વીરને હાતણિયાં દેવરાવ,

એકે દાતણે વીરને દાણમે....વીરના ઝીણા....
 મારા તે વીરને નાવણિયાં દેવરાય,
 એકે નાવણુ વીરને કૂંડિયાં....વીરના ઝીણા....
 મારા રે વીરને લોજનિયાં દેવરાય,
 એક લોજને વીરને લાપસી....વીરના ઝીણા....
 મારા રે વીરને પોઢણિયાં દેવરાય,
 એકે પોઢણિયે વીરને ઢાલિયા રે....વીરના....
 મારા રે વીરને મુખવાસ દેવરાય,
 એકે મુખવાસે વીરને એલચી....વીરના....

(૩)

સીમંત વખતનું ગીત

આજ મારે આનહનાં વધામણાં,
 કંકુકેસરના સાથિયા પુરાવશે રે....આજ....
 પંડિત જયંતીભાઈ તો આવશે રે,
 એ તો દિલ્હી તણા દરબાર રે....આજ....
 આસોપાલવનાં તોરણ બંધાવશું રે,
 પંડિત જયંતીભાઈ બોલાવે,
 એ તો મુંબઈતણા દરબાર રે....આજ....

(૪)

લોકગીત

મારી ચપટીમાં આવે એવી ચૂંદડી રે,
 મારી હોળે હવાસોની ચૂંદડી રે;

મારી ચૂંદલડીનો રંગ રાતો હો લાડલી રે !
 ઓઢારે સાહેબ બડી ચૂંદડી રે !
 મારા બાપના તેડયા અમે આવિયા રે
 મારાં માતાએ માનસોંપા અમે આવિયા રે
 લાડલી ઓઢારે સાહેબ બડી ચૂંદડી રે !
 મારા કાકાના તેડયા અમે આવિયા રે,
 મારી કાકીને માનસોંપા રે,
 મારા મામાને તેડયા અમે આવિયા રે,
 મારી મામીએ માનસોંપા રે,
 મામીએ માનસોંપા હો લાડલી....ઓઢા રે....
 મારા ભાઈને તેડયા અમે આવિયા રે,
 મારી ભાભીએ માનસોંપા રે,
 ભાભીએ માનસોંપા હો લાડલી....ઓઢા રે....
 મારા દાદાને તેડયા અમે આવિયા રે,
 દાદીએ માનસોંપા હો લાડલી....ઓઢા રે....

(૫)

આંગણિયે બાવે મઢી બનાવી,
 મઢીઓમાં સ્થામના ઉતારા !
 સ્થામના ઉતારા, રામના ઉતારા !
 ગાંને મારે ન હતો પીવો, નહતો પીવો,
 કડલા વેચી બાવે ગાંને મંગાવ્યો,
 કડલાં મારાં બ્યાજલામાં રૂપ્યાં,
 બ્યાજલામાં રૂપ્યાં, ગાંને મારે નહતો પીવો રે !

હાંસડી વેચીને બાવે ગાળે મંગાવ્યો,
 હાંસડી મારી વ્યાજડાંમાં ફૂળી,
 ગાંભે મારે નહતો પીવો રે !

કબળો વેચીને બાવે ગાળે મંગાવ્યો,
 કબળો મારે વ્યાજડાંમાં ફૂળ્યો,
 ગાંભે મારે નહતો પીવો રે !

ધાધરો વેચીને બાવે ગાળે મંગાવ્યો,
 ધાધરો મારો વ્યાજમાં ફૂળ્યો,
 ગાળે મારે નહતો પીવો રે !

કઠી વેચીને બાવે ગાંભે મંગાવ્યો,
 કઠી મારી વ્યાજડલામાં ફૂળી,
 ગાળે મારે નહતો પીવો રે !

(૬)

પોપટ બોલે મારા મૈયરમાં,
 કે'તો નણદલબા, કડલા ઘડાવી દઉં,
 ખાંલિયે લાડે લડાવું, મારા નણદલબા ...પોપટ

કે'તો નણદલબા, બગડી ઘડાવી દઉં,
 કકણે લાડે લડાવું, મોરી નણદલબા....પોપટ

કે'તો નણદલબા, કાટો ઘડાવી દઉં,
 નયડીએ લાડે લડાઉં, મારા નણદલબા....પોપટ

કે'તો નણદલબા, ચાકળી ઘડાવી દઉં,
 તોડે લાડે કેમ લડાઉં, મારાં નણદલબા....પોપટ

છારા ગુનાદિન જાતિ તરીકે સારા ય ગુજરાતમાં જાણીતા છે. અમેજેએ તેમના શાસનકાળમાં બદ્ધસમાજથી તેમને જુદા વસાવ્યા હતા, ને આજે તેઓ તે જ જગ્યાએ અમદાવાદ શહેરથી દૂર છારાનગરમાં રહે છે તેમના રીતગિવાજ વિચિત્ર અને આશ્ચર્ય પેદા કરે તેવા છે, તે તેમના લોકગીતોમાં અભિવ્યક્ત થાય છે મૃત્યુમાં મહેદિય માણતી તો આ જ કામ છે અને તેથી ગુનાદિત કામને પણ તેની સરકૃતિ છે તેની જાણ તેમના ગીતો પરથી થાય છે ! તેના લોકગીતોમાંથી થોડાં અત્ર પ્રગટ કરું છું

૧ હું ગીત લમગીત છે મોટી ફાંદાળા ગણેશને એ જાનિએ શુ લાડ લાડ્યા છે ? મગદળ અને લાડુના ભોગી ગણેશ મોગી ફાંદાળા છે તેમણે ગળામાં ફૂલડાંની માળા ધાવી છે અને તે પણ છેવાડીનાં ફૂલડાંની. તેમની પૂજા માટે સોનાની થાળી આણી છે. તેમણે હાથે સોનાની વીટી પહેરી છે શ્રી ગણેશની આ માનસપૂજા છે અને એવા દેવને પૂજવા તેત્રીસ કરોડ દેવ આન્યા છે વર્ષો સુધી વનજાતિ વચ્ચે રહેલ આ જાગઓમાં લમ વખતે શ્રી ગણેશને ખેસાડવાનો રિવાજ ક્યાંથી લાવ્યા, હજે ? તે સમાજશાસ્ત્રીઓ માટે અભ્યસનીય વસ્તુ જની જ્ય છે. છારાઓને તેમની પોતાની પાગસી (dialect) છે તેનો થોડો પરિચય આ ગીતોમાં તો થશે જ

૨ જુ ગીત સામાન્ય કોટિનું છે દિહુઓનાં લમગીતોમાં આ બાવનું ગીત જડે છે આ ગીતની પકિતઓ પરપરાગત Traditional લાગે છે, પણ તેમાં કાવ્યનત્વ બહુ છે તેનો અચ્છો ખ્યાલ પ્રથમ પકિતઓમાં આવે ૨ :

લીમડાની લૂમેઝૂમે પાન રે,
પાન સરખા રે, ગઢનાં કાંઝરાં રે !

૩ જુ ગીત ભારતીય વિશિષ્ટ પ્રકારની લોકરીતિનું છે સીમતને

વધા જ લોકસભાને વધાવ્યું છે અને ગાયુ છે તે તો ઉત્સવ લેખાય છે, માટે લોકોને મન તે હૈયાનો આનંદ છે, માટે તે વ્યક્ત કર્યો.

આજ મારે આનંદનાં વધામણાં,
કંકુકેસરના સાથિયા પુરવશે રે !

ખરી રીતે આ પ્રસંગ સ્ત્રીઓનો છે, પણ યુસુફિયાની વિધિ કરવા માટે દિયરની હાજરી આવશ્યક છે તો તે દિયર કેવા છે ?

એ તો દિલ્હી તણા દરબાર રે,
એ તો મુંગઈ તણા દરબાર રે !

એવા કામગીરા દિયર આજે સર્વળાં કામ છોડીને આ ઉત્સવે જરૂર હાજર રહેશે. આમંત્રણ માનવની રીત અદ્ય જતાની છે આ સભાને પણ !

૪ થુ ગીત હૈયાનાં અરમાનતુ મીન છે વસ્ત્રપરિધાનના શોખ-
માથી કઈ જાતિની સ્ત્રી બાકી રહી છે ? ચૂદડીના શોખે નારીઓને
ધેની કરી છે ને તેથી છાસ સીએ ગાયુ.

મારી ચપટીમાં આવે એવી ચૂદડી રે,
મારી હોળે હવાસોની ચૂદડી રે;
મારી ચૂદડીનો રંગ રાતો, હો લાડલી રે !

મહિયરની તે ચૂદડી કેવી છે ? ચપટીમાં સમાય તેવી ! સોળ સવાસોની, રાત રગની ! અતિશયોકિત તો લોકકવિને ખપે છે અને ચૂદડીમાં વિરોધ પણ કેવો છે ? સાહેબની ઝાડાડેવો ચૂદડી જાડી અને મારી મહિયરનો ચપટીમાં આવે એવી ! અને તે છે કાવ્યચમત્કૃતિ. પછી તો કેનાં તેડાવ્યાં બેન આવ્યાં છે ? બાપના, માનાં, કાકાકાકીનાં, મામામામીનાં, વાઈબોબાઈનાં ! અને તે પણ માન સોત્તા ? પણ વચ્ચે આ 'સાહેબ' ક્યાંથી આવ્યા હશે ? તે પતિના જલ્લે ? કે પછી...

૫ મું ગીત વ્યસનનું ગીત છે. છારાઓ હોય છે મદાવ્યસની અને ભોગી દારૂ તેઓ ખૂન વાવરે છે તેનાં લોકગીતો તો ખૂન છે અન્ય જાતિઓમાંથી દારૂડા, ગામીન ને વણઝારામાં પણ દારૂનાં ગીતો મળે છે પદારોમાંથી હોદાનું ગીત મળે છે, કાળાઓમાંથી જુગારના અનિષ્ટનું લોકગીત મળે છે, પણ ગાંજનું ગીત અનજ મળ્યું છે છારાના વાસમાં ખાવો આપ્યો, તેરો મદી જનાવો અને તેમાં બેસાડયા શ્યામ અને રામને ! પણ ખાવો નીકળ્યો મજેરી. અને તેણે છારાની સ્ત્રીને તેનું વ્યસન લગાડ્યું, તેમાં તે બાઈએ દારૂ, દારૂડા, દારૂજો, ધાધરો અને કદી દૂન કર્યાં દરમ્યાં સાહિત્યમાંથી વ્યસનનાં આવાં ગીતો એકત્ર કરવા જેવાં છે, જે લોકોપદેશ માટે ફીકીકીક કામમાં લાગે

૬ કું ગીત સસાનું ગીત છે, મૃદુજીવનનું ગીત છે નણદ બોલખના વચ્ચે ગગ ન હોય, વિગેરે દ્રેષ પણ અહીં તો ખરેખર હેન ગાયુ છે ? ના નણદધમાને ખાલિયાં, બગડી, કઠણુ કટા, નયડી અને સાંકળાં ધડાવી દેવાની લાખચ બાબી રાને કાજ આપે છે ? પિયરમાનો પોપટ બોલી રહ્યો છે, તો તે સાદ સાંભળીને બાબીને તેના પિયરમાં જવું છે, તો તે વખતે નણદી અવરોધ ન નાખે તે હેતુથી બાબી નણદને ખુશ કરવા ચાહે છે આ બાવને વ્યક્ત કરવા આ ગીત ગવાયુ છે

લોકગીતોનું વિશેષ તો એ છે કે તે કલ્પના-ભરી ઉત્તુમ બાવના કરતાં વાસ્તવ પર વિશેષ ગ્યાય છે ઉત્તુમવાળી બાવનાના ગુજન કરતાં તેમાં હૃદયસ્થ બાવોનું ગુજન વિશેષ હોય છે, તેથી તેનો કવિ કાયમ કવે જી માનવને અને માનવના મનને !

આ ગીતોમાં તમે માનવ અને તેની હૃદયસ્થ જિમ્મીઓનું જ કવન જોશો, અને માનવના સહજ મનોવ્યાપારનું વાસ્તવિક નિરૂપણ પણ જોશો



આંખા નાંઈળા લિખારી

ગુજરાતની પૂર્વ સરહદ પર ઢેઢકેટલી કુમરમાળો છે? સાતપૂડા અને સલાદ્રિની કુમરમાળા સુગત જિલ્લાની અને રાજપીપળાની હદ પર જીબેન આ કુમરમાળો વચ્ચે અનેક વનજાતિઓ વસે છે ગામીત, વસાવા, ચોધરા, કુકણા આ સર્વ જાતિઓ કુમરમાળને શોભવતાં વનમાં રિધર બની જીવી ગઈ છે પ્રત્યેક જાગૈયા વસીને આ વનજાતિઓ તેમનાં સરકાર અને સરકૃતિને અકમલ જાળની ગઈ છે

ત્યાં જ્યાં માટે તાપ્તાવેની રેવમાં બેસીને સોનમદ જીતરીને કુમર માળમાં જઈ શકાય છે આ કુમરમાળના બધા જ કુમરા લીલોતરીએ લચી પડતા છે પચાસ, સાત, સીસમ, હળદરવો, આમો, સાદડો, તણુજ અને વાસના અલકારે આ વનો શોભી રહ્યાં છે વસત બેસે ત્યારે તે પ્રદેશમાં વનાશ—ખાખરાનો દિમાક કાંઈક ઓર જ લાગે દોઈ અલકાગ્લોબી ધરમાં હોય તેટલાં એક જ ભાતનાં ધરેણાં ઠાંસી ઠરસો મારી જીબો રહે તેમ પચાસ તેનાં પુષ્પાજૂથોથી તબી પડી ત્યાં મિળજથી જીબો જોવા મળે છે શીમળાનાં રડ્યાંખડ્યાં જુલો પર લટકતા ફૂલો મનોહર છે આના આંબલીની ગણતરી વસમી પડે તેટલી સખ્યામાં છે આમો મજરીએ મહેકતો મૂકીને જીબો હોય છે, ત્યારે આંબલી કાનમાં પોખાનિયો પહેરીને જીબી હોય તેવું ચિત્ર આવે છે

વસત પછવે પછવે અને જુલો જુલો જોવા મળે છે ત્યારે વનખાળો હોળીની રાહ જુએ છે, કેમ કે હોળી પર તેમનું નાચણું ચાલે છે નાચણું તેમને અતિ પ્રિય ■ દિવાળી આવે ત્યારે તેઓ નાચે-બજેવના દિવસોમાં પણ નાચે દિવાસો આવે ત્યારે પણ તેઓ નાચણું

ગોઠવવાના । નવો પાક આવે ત્યારે ‘દેવ કરવા’ જાય, દેવકી માડીના કુંગરે જાય. દેવકી માડી આગળ નવાં ધાન મૂકે, અને માડી આગળ બકરું કે મરધું વધેરે, અનાજ અને ગ્રાણીને રાંધીને ખાવાનું તૈયાર કરે, ત્યારે પણ તેઓ નાચે.

ગામીતના નૃત્યનાં વાદ્યોમાં ડોળરું હોય છે; દોડ પશુ ખરે અને મંછરાં । તેમને નાચણા માટે ખુલ્લું ચોગાન જોઈએ. વિશાળ પટનું ખુલ્લું મેદાન હોય તો તેમના નાચણાની જમાવટ થાય અને તેઓ નાચણા-પ્રિય તો એવા કે તેમને નાચણાની જાણ મળે કે તરત જ કુંગરીના અંનરિયાળમાંથી ચ દડક દડક કરતાં જુવાનગુવતિઓ નાચણાની જગાએ આવે અને ઓપુઓ સાથમાં જ ગોઠવાઈને નાચવા લાગે. તેમના નૃત્યના પ્રકારોમાંથી બાવજી દોઢિયો જણીતો છે. જેમ હાડલામાં બફાતા શાકને કડાછી વતી હલાવીએ, તેવા હાથથી પગનો ઠેક આપીને આ નૃત્યમાં તેઓ નાચે છે. વારોડિયો તેમનું લમપ્રલંભનું નાચણું છે. તેમનો જેમ-દાર નાચ છે બદલા દોડો નાચ આ નાચમાં ગતિ દ્રુત છે. પગની ઠેક જેરદાર છે. હોનદોડો નાચને તેઓએ વિવારાવાળાનો નાચ એવું નામ આપ્યું છે. દેવ કરવા જતી વખતે નાચે છે તેનું નામ આપ્યું છે ‘દેવ કરો!’. ગામીતનાં નૃત્યોમાં હાથ સાવ બંધાઈ જાય છે. આંકડા ખીડીને તે તો બેરુની પીક પાછળ બંધાઈ જ ગયાં હોય છે આ નૃત્યો તેઓ મૂર્ગાં મૂર્ગાં કરતાં હોય છે, સાથે સાથે કદીક કદીક ગીતો પણ ગાતાં હોય છે અહીં હોળીના નાચણનાં ઓતો આપુ ધું :

હોળી બાઈબા કાઈ લિયે છે, લીંગણ લોલ ।

જોડજોડ આંકડા લેઈ બાયે છે, ” ”

આડલો વાટી લેઈ બાયે છે, ” ”

જોડજોડ પાવીઓ લેઈ બાયે છે, ” ”

હોળી બાઈબા કાઈ લિયે છે, ” ”

ચપટી દાહા ને ચપટી લાહું, ” ”

નેડનેડ	બાઈબા	લેઈયે હે,	લીંગલ લોલ !
હોળી	બાઈબા	ફેરવે,	” ”
આંમા	નાઈબા	શીર ને,	” ”
હોળી	બાઈબા	કાઈ લિયે હે,	” ”
નેડનેડ	ઈ નેડિયો	લેઈ બાયે હે,	” ”
હોળી	બાઈબા	લિખારી,	” ”
આમા	નાઈબા	લિખારી.	” ”

હોળી બાઈ શુ લાવી છે? બખ્ખે આંકડા લાવે છે (વાંસનાં માથાના પાતળા બાગ પર કેરુડાના ફૂલને ધાલે છે તે) સૂકાં નારિયેળ અને ટોપરાં લાવે છે નાચતી વખતે કેડયે નાંધવાના નેડય નેડય ધૂધરા લાવે છે હોળી બાઈ શુ લાવી છે? ચપટી દાળિયા અને ધાણી નેડય બાવાને પણ લાવી। હોળી અમને ધુમાવે છે અમે ફરતા નથી, પણ હોળી અમને ધુમાવે છે। હોળી બાઈ શુ લાવી? બખ્ખે હીજડાને પણ। હોળી લિખારી છે, અમે લિખારી નથી આંમા નાઈબા લિખારી,— અમે લિખારી નથી।

હોળીનું આગમન ગમીતોના માટે શુ શુ લાવે છે તે તો ગાનારે ગાઈ નાખ્યુ, પણ તેમની ખુમારી અજ્ઞની ગાઈ છે, આંમા નાઈબા લિખારી અમે માગણુ નથી અમે દરિદ્ર નથી, પણ અમે હોળીની આમન્યા ગમીને ગાવા નીકળીએ છીએ, નાચવા નીકળીએ છીએ. માગવા આવીએ છે તમારે આંગણે તો ?

બારા મહીની હોળીબાઈ ચેકે દીહી ચેનીવા,
હોળી બાઈયે નાંવાસે, આમુ નીગી આલાહે !
દેઅના એ રીતે દેજે, હા, ગાળી રજે દેતેરા
હોળી બાઈબા લિખારી, આમા નાહા લિખાર્યા !

માર મહિનામાં એક દિવસે હોળી આવે છે હોળી બાઈના નામથી અમે નીચ્છ્યા છીએ આપવાનું હોય તો આપજો પણ ગાળ મત દેતા હોળી બાઈ લિખારી છે, પણ અમે નહીં !

પણ એક દિવસ માટે આવેતી હોળી તેમને ત્યાં પાંચ દિવસ રહે છે, અને આ બંને ગીતો તો માત્ર મરહોજ માથે છે

હોળી તે બાઈ તું, ડાળેહેરા ગેરિયા !
 આડલો ને વાટી, " "
 ભેડભેડ પાવા, " "
 ભેડભેડ નરાળે, " "
 હોળી તું બાઈ તું, " "
 ભેડભેડ પાવા, " "
 ભેડભેડ આકડા, " "
 હોળી બાઈ તું, " "

ધડિયા કહે છે કે હોળીનાઈ તમે આવો છો અને ખજૂર અને નારિયેળ, દારડો અને પાવા, તેમજ આકડા વર્ષને તમે આવો છો આ ગીતમાં કય મદનાયો છે

અને તેઓ કૃપી બેઠા છે હોળીના રહેડાણને તો તે મહેડાણ કયાં છે ?

બારા મહીની હોળીરા બાઈ તું !
 અબા પાળીમે રેવાનીવા બાઈ તું !
 પાચે દીહી જૂળીવા બાઈ તું !
 હોળીએ બાઈચે, લિખાર્યાવા બાઈ તું !

બાર મહિને, હોળીનાઈ તું આવી તુ અનાપાગી મામની રહેવાથી છે ! અમે પાંચ દિવસના જૂલ્યા છીએ હોળીના નામથી અમે બીજા મામવા અન્યા છીએ

આ ગીત હોળી સળગે ત્યારથી તેઓ ગાવુ શરૂ કરે છે અને હોળીની સમાપ્તિ વદ પાયમના દિવસે યાચ ત્યાંમુધી તેઓ ગાયે જ નય છે !

તેમના નૃત્યનાં ગીતોમાં સસારનાથ અટપટા રંગો જોવા મળે છે. તેમની દોકરીઓને લગ્નજીવન બહુ બધનકર્તા નથી, તો તે દોકરીઓ મન ફાવે ત્યારે ઊંડો ફાડી આપે જ એની છૂટ પશ્ચુ સમાજે શી આપી છે !

આ ગીત જ્યારે કન્યા વગના ધરે પન્થુવા નય ત્યારની વિદાયનું ગીત છે ! બહેનપણીને વિદાય આપતી કુમારિકાઓ અને સૌભાગ્યવતી બહેનપણીઓ ગાય ■ કે તમારાથી રહેવાય તો રહેજે !

સ્વા તે રાજે બેના, ચેતી રાજે વા !
 બોકાહા માંધવા બેના, કાઢી ઢે નીવા !
 તુલનાંઈ વિચારી, બેના !
 ડાંમરિયા લોક બેના, તુલનાંઈ ચેવાઈવા !
 જાડી માંધવા બેના, કાઢી ઢેનીવા !
 હું જાતી જોડી બેના, તૂટી ગઈવા !
 સ્વાતે રાજે બેના, ચેતી રાજેવા !

બહેની, તારાથી સાસરે રહેવાય તો રહેજે, નહીં તો પાછી આવજે ! તે લોક તને સગાવડાલાંથી વેળળી કરી નાખશે તારા સાસરિયા પશ્ચુ નહીં વિચારે ! તારા સાસરિયા ડામરિયા લોક - હલકા લોક ■ તેથી તુ સાસરામાં રહી શકીશ કે કેમ તેની શકા છે ! તને ધરમાંથી જગમમાં કાઢી મૂકશે ખરેખર, આપણી તો સમત જોડ તૂટી ગઈ તારાથી સાસરામાં રહેવાય તો રહેવું નહીં તો આવતી રહેશે, પાછી આ ધરે ! આપણે દહેજના પૈસા પાછા આપી દઈશું !

આવી ગોરીને દિયરના શા કુખ છે ?

સોના ચાટુલીએ ખીચડી ખીચી,
તે ન રીઝવાય મા' નાહલો દેરા ।

બાબીએ તેના દિયરને ચોટાની ચમચીવડે ધી ખીરસું, પણ તો ય
તેનો લાડકો અને નાનકડો દિયર રીઝતો નથી. શું દુઃખ છે આ બાબીને ?
આવી નવપરિણીતાને પતિનાં શાં દુઃખ છે ?

દાડુ છોડા, દાડુ છોડા રા !
ઓ રામ, સત્યાનાશ વૈયા ।
દાડુ છોડા, દાડુ છોડા રા !
વિયારે ગિયા, ગોળ લઈને,
ગોડા માંચ નાખ્યા રા !
ઓ રામ, સત્યાનાશ વૈયા ।
દાડુ છોડા, દાડુ છોડા રા !
હોરો છોડા રા !
તપલા લીધા, પડમા લીધા,
નદીએ ચાલ્યો રા !
રામ સત્યાનાશ વૈયા,
હોરો છોડા રા !
બાઈઓ, હોરો છોડા રા !
દારવા ખીધા ગોઈનો,
ચેએલ ઠેકચા રા,
ઓ રામ, સત્યાનાશ વૈયા,
દાડુ છોડા, દાડુ છોડા રા !

પતિ દાડુગિયા છે. તેને પત્ની સમજતી રહી છે કે દાડુ છોડે.
દાડુએ સત્યાનાશ વાળી નાખ્યું છે. બ્યારે જઈને ગોળ લાગીને ગોળામાં

તેને નાખ્યો, અને તોણાં લઈને તેને ગાળવા માટે નહીંએ ચાલ્યો.
ધેર આવીને દારૂ પો તેણે તેની બેયરને ખૂડી. માટે હવે દારૂ છોડો.
તેણે સત્યાનાશ વાળી દીધુ છે ।

પણ તેણે પતિ હોવા છતાં જ ન્યારે નવું અનાજ આવે છે ત્યારે
દેવથી માડીના કુંભરે હવે ચકાવવા જવાનું છે અને ત્યાં નાયણું થવાનું
છે, તો ત્યારે સાથે જાય છે અને નાયતાં નાયતાં અને સામસામા
લલકારે છે .

ચાલેવા આવે છે રાડાલી કેહેડા વાર લાગી, આંહાવામા રાડલી ભેડી ।
હુનિયા વાટ ભેવે હેવા કેહેડા વાર લાગી, " " "
થેડીના થેડીએ રોડાલા વાટેના ઊભો રે'જે, " " "
હુનિમેં નામે કાઢુવા, નામેના કાઢી જાડું, " " "
દેખીલાં નાહા રાજેવા દેખાયા હાલી લાલો, " " "
ચાલે આવે છે રાડાલી કેહેડા વાર લાગી, " " "

તને કેટલી વાર લાગે છે? હુનિયા આખી વાટ જુએ છે એક
ધડી તું ઊભી રહેજે આપણે નામ કાઢવાનું છે

શ્રી કહે છે : મેં માર્ગ જોયો નથી, તો હું ક્યાં આવું? કેમ
કરીને આવું ?

પુરુષ - જલદી જલદી ચાલી આવ

ફાટેશ શૃંગારનું આ ગીત છે

હૃદયસ્ય જાવોના ગાનારે નવુ મદિર જોયુ . નવા યુગન તવું

મદિર. તો તેને માર્ગ નાખ્યુ .

રામે રામે રામેરા ડયાં ।

રામે રામે કેહેડામાં ડયાં,

બારા માસની શિગિર ડયાં ।

શિબિર હેંરા આલેરામાં ડાયાં !
 જતીરા સરીખો જતીરા ડાયાં !
 જતીરા હેંરા આલેરામાં ડાયાં !
 ગોવાલ દેવાહા જતીરા ડાયાં !
 જતીરા હેંરા, આલેરામાં ડાયાં !
 દેવલી માડીએ જતીરા ડાયાં !
 જતીરા હેંરા, આલેરામાં ડાયાં !
 રામે રામે રામેરા ડાયાં !
 રામે રામે કહેંરામાં ડાયાં !

શિબિર આવી છે તે તો યાત્રાનું ધામ છે. ખાર માસે શિબિર આવી છે. જત્રા જેવી જત્રા છે ત્યાં. ગોવાલ દેવની અને દેવલીની માડીની જત્રા જેવી તે છે. આ શિબિર તે અમશિબિર.

ક્યા શિષ્ટ કવિએ પંચવર્ષીય યોજના હેઠળ યોજાતી શિબિર પર સમ ખાવા એક પણ કાવ્યપંક્તિ માંડી છે ?

ગરીબાર્ધમાં પણ જીવન જીવી જનાર અને મણાય તેટલું માણી જનાર આ વનગતિ તેમની જીવનશૈલીમાં જે નહું તત્ત્વ ઉમેરાય છે તેને નાયણમાં ગાવાનું વિસ્મરતી નથી. યુગના પડખાના વધુ ઝીલનાર કાણુ ? ઉજળિયાતોનો સમાજ કે આ પછાત જનિના લોકો, કે વનગતિએ ?

તે જ, કેમકે તેઓ કહે છે : આમા નાઈના ભિખારી !

‘ચંગ ઘેરો બળવણુવાળો સાને તાને રિનેરે !’

ચંગ ઘેરો બળવણુવાળો સાને તાને રિનેરે રે ।

ગૂગરા બળવણુવાળો આયો રિનેરે,

ભરિયા ફાગણમેં ! હેરે, ભરિયા ફાગણમેં !

લાડકિયો મઈને એવો જાવે રે,

ભરિયા ફાગણમેં ! હેરે, ભરિયા ફાગણમેં !

પાદર હોય; પછી ગાજતા ચહેરનું, કામચરા નગરનું કે નાનકડા
રૂપાળા વક્ત્રી ભર્યાભાદર્યા, લૂખા કે સૂકા જનપદનું, પણ માત્ર મહિનો
અધૂરે કે પગે ધૂનરા બાધી, ચમટોવ લઈ હાથમાં ઝાઝ, કસીંગોડા કે
મંજીરા લઈ મારવાડી જુવાનિયા કાઢીને કોટોટો મારી રાત પડ્યે
દલકથી તીણા લાંબા સૂરીયા રાગે પગના ઠેકા દબને ફાગ ..ગાઈને
પાદરને જગાડવાના !

અમદાવાદને પાદર છે. નવરંગપુરાની રેકરિયાળી ધગ્ગી પર હોળી
સુધી પગે ધૂનરા બાધીને ચંગ ને કસીંગોડા લઈ વણખરાજુવાનો ફાગ
લલકાડવાના કે:—

ચંગ ઘેરો બળવણુવાળો, સાને તાને રિનેરે રે ।

સૂરપરામાં ડેરા નાખીને પડેલ મારવાડી વાધરીઓ તાનમાં
આવીને ગાવાના :

ગૂગરા બળવણુવાળો, આયો રિનેરે,

ભરિયા ફાગણમેં ।

છે તો આ વિરહિણીનો ફાગ, વસંત આવ્યો છે. પદાશના-
આખરાના વૃક્ષ પર ફૂલડા ખીસ્વા છે. શરીર પરસેવો ફેરે ને ધામ
થાય છે, ત્યાર તેના મનમાં ફાગપંક્તિ સ્ફુરે છે :

લાડકિયો મઈનો એળો જાવે રે, સરિયા ફાગણુમેં !

અમદાવાદમાં વલંદાની હવેલી પાસે, મણિક્યોદ, ચાક બજારમાં,
જમાલપુર વૈશ્ય સભા સામેના મેદાનમાં, ચાહપુર દરવાજા બહારના
મેદાનમાં ચગ, ઘૂપરા, ઝાંઝ, કાંસીએડાવાળા ચનગનના મારવાડી
જીવાનો નાચતા જોવા મળે છે, હોળીના દિવસોમાં; ને મોંએ ફાગ
આલાપતા ગુજરાતની સગદરો પર પણ તે દિવસોમાં આ જ દૃશ્યો
નજરે પડે છે માથા પરના આણુમાં, પૂર્વમાં ચાંદાદરનાળીના
મસ્તકારવાન ધાટ પર રાજસ્થાની બીલો નિરનિરાળા વેરો દાદીને ફાગ
માવા ઊતરી આવે છે.

સાજરકાંદામાં બીલોડા શામળાજી ને લૂસડિયામાં ય 'પંની સાલમાં
આવા જ ધેરૈયા વચ્ચે ક્યાં નહોતો ધેરાઇ મયો ! શહેરી વેશ
પહેરીને, આંખે ચસમાં ચડાવીને ઢોલકુડીઓ જગનવના તે ય સ્ત્રીઓનાં
ટોળાં ભેગા મળીને જીવનનો સાચો આનંદ કેવો વ્યક્ત કરી રહ્યા હતા !

આ તહેવારને રાષ્ટ્રીય તહેવાર કહેવો જોઈએ આ હામ સરકારનું
છે. પણ સરકાર તે કરે કે ન કરે તેની આ લોડને ચિંતા નથી, પણ
વસંતના તહેવાર તરીકે તે લેખાવો જોઈએ. ઉત્તરદિશનો સર્વવ્યાપક ને
લાડકો તહેવાર છે જ. રાષ્ટ્રીય તહેવાર તે બને કે ન બને પણ લોકોનો
તહેવાર છે. નાચવાનો તહેવાર...શ્રમજીવીનો સાચો આનંદ સાથી ! મસ્ત
બનીને બસ નાચવું ને ઈશક બર્સા, પ્રેમબર્સા કરુણ ફાગો આલાપવા !

અવલ નંબરના રખડુ અને ખાનાખટોશ થી દેવેન્દ્ર સત્યાર્થોએ
ય જુન્ટેલખંડના મસ્તીબર્સા ને ઇશકરંગી ફાગ ભેગા કર્યા છે.

અંગના સુકૈ સુકની' સો જન સુકૈ કચનાર,
ગોરી સુકૈ માયકૈ સો હીન પુરખ કી નાર,
હમૈ સુખ નઈહા સાસરે આયકૈ ।

સાસરામાં સુકાયેવ નારની અતરવ્યથા આલેખનો ફાગ શ્રી.
દેવેન્દ્ર સત્યાર્થોએ આલેખ્યો છે, પણ ખીજા ફાગમાં તો રસીમાં છેલ
બાવગણ લાખ્યા છે 'બિન્દુલિયા' નામિકાના પ્રત્યાધાતો છે આ ફાગમાં—

ચૂનરી રંગી રંગરેજને ગગરી ગઢન કુમાર;
બિહિયા ગઢી ચુનારને સો દમકત માઝે લિહાર;
બિન્દુલિયા તો લે દઈ રસીલે છેલને ।

અર્થાત્ રાજસ્થાન અને ઉત્તર હિન્દમાં તો ફાગ લોકસાહિત્યનો
એક પ્રકાર જ નવના પામેલ છે. માનવના દિવના સર્વ લાવેતું
નિર્વહણ આ કાવ્યપ્રકારમાં થાય છે.

તે માત્ર શબ્દમાં પુરાઈ મળેલો સાહિત્યપ્રકાર નથી, તે ચિરજીવ
અને વહેતો સાહિત્યપ્રકાર છે તે વાસી નથી જનતો, કેમકે તેની
સાથે છે વાદન, સંગીત અને નૃત્ય આથી પુરાણો ફાગ આજે ૫ લોક-
જીવ પર નવો અને છે, તાકાતવાન બામે છે, હોળીના દિવસે સખગ બને છે,
સાંબળયુ છે કે હોરપુગ પાસેના માંડળગઢમાં તો હોળી પછીના સાતમા
દિવસે રાજગઢીમાં સૌ બેગા મળી ગઝગઢના ઉપરના કાગરા પર
છજ પર, ગોખ પર ગોઠવાય, નિશાળ ઉઘાડા ચોકમાં ઘેરૈયા
આવે છે, ચમ જખરીને વૂંદરા અધિવ ઘેરૈયાના પગ નાચવા માંડે,
ને લોકો તપસ્વી જેમ તપીતપીને આ સમૂહ નૃત્યો જોયા કરે. અમદા-
વાદમાં રહેના ગઝરયાની શ્રમજીઓ તે દિવસોમાં જીવનરિપતિને—
જીવનસર્પને વીખરીને ચમ લેના, પગે ધૂરગ નાધતા, વસ્ત્રો
પહેરીને, મગામાં ગંગમેરગી ખોટા મોતીના અનકારો ધાસીને નાચવા
માંડે છે અને વાણીની આસપાસ દેવો શરહોને રમ્મરે છે ફાગમાં જ :

સમરુ માતા શારદા, લવાની તને ધ્યાલું;
ભૂલ્યા ચૂક્યા અગસર અડધે રાત્રુ, દેવી શારદા !
શારદા, પાલીના વાહ ઠહું, દેવી શારદા !

ચમ દેલ, અને ફૂંડીઓ પર હાથ પડે છે, અને ઘેઁવાના અંગે-
અંગમાં નવેા ઉત્સાહ જન્મે છે પગના ધૂલગઓ ખણખણવા અને
રણઝણવા માંડે છે પગ ધગતી પર ટેકા દેવા માંડે છે. મેંમાંથી ગવાતા
ફાગના સગીતના સૂરના તાલ સાથે પગના ટેકાનો તાલ તેમજ
ચમકોવનો તલ એકરસ જનતો જાય છે ને મસ્તાન ખની નાયવા
લાગે છે ત્યાર તેઓ ખીમ દેવે ને વીનવે છે—

તેલ ને સિંદુર ખાળો હનુમાન માગે,
બાકરિયોની જોડે તો મામાજી માગે....ઓ....ઓ.....!
ઉપર રાખજો ! હેરે, ઉપર રાખજો !
હેરે ઉપર રાખજો, ઝાડામે મેરા ખેલા નાચે !
ઓ, ઉપર રાખજો ! ઓ, ઉપર રાખજો !

ઝાડાની ધટામાં ઊંધા નાચી ન્હા છે, તો હે હનુમાન, હે મામા,
મારા ઊંધા પર તમે નજર મપજો !

અને પછી નૃત્યનાં વર્ણનો તેઓ આનાપે છે :

સોયત ને જોધાણા વચ્ચે, ગેરો ઢાલ ગાજે !
માર બતી ડાવણી, નાયણને લાગી !
ડાકો હોજે દો ! હોરે, ડાકો હોજે દો !
નાચતી પગલાં ધૂજે રે ! ડાકો હોજે દો !

સોયત અને જોધણા વચ્ચે ઘેઁવાની ઘેવનો ઝહરો દોલ જળવા
લાગ્યો, આ સાંભળને જાન દેવા જતી હોઠરી નાયવા લગી અને

છાકરી બોલી જીદી કે હળવા હાથે ઝાંડી દે। ઘેરી ઝાંડી મને ગાંડી
ગાંડી કરી મૂકે છે !

પશુ આ ઘેરેયાને જોવાનો ઉત્સાહ રોક્યો રોકતો નથી, તેથી
તે ભાવને ફાગ ગાનારે ગાયો :

પનધટિયા વડલા ઉપર સોવન ચડિયો, બોલો એ !

ઘેરિયો મૂકે જવાની બોલો, હાલો દેખણને !

હેરે હાલો દેખણને !

લીલડિયા નાળે લેને રે ! હાલો દેખણને !

દેલડીના એવઠ મેં મારિડો માલક બહિયો રે,

મેલેક બેઠો ડાકરિયો, ગોળી દીધી રે !

મોરો મારિયો, હેરે મોરો મારિયો !

દેલડી સડોલી કીલી રે, હેરે, મોરો મારિયો !

કરુણ રસથી નીતરતો આ આ ફાગ શરૂ થાય છે. ઘેરેયા જોવાના
જવાના કોડથી કોઈ છાકરો પનધટિયા વડલા ઉપર ચડીને બોલ્યોઃ
મોંથી જવાનીનું નામ સ્મરણ કરતા ઘેરેયાને લીધુડાં નાળિયેર લઈને
જોવાને જઈએ.

અને હસ્ય કેવું રમણીય અને કમનીય છે ! ઘેરેયાં યુવતિઓ છે
તેથી વચ્ચે એક યુવાન ઘેરે લઈ રહ્યો છે. જાણે દેલડીની વચ્ચે
મારલો કે !

પશુ ત્યાં પેલા કૂડપેટા ડોચાએ મોસ્લા પર ગોળી છોડી અને
ગોરને હાળી દીધો અને દેલડીને રડિલી કીધી.

આ કરુણ ભાવના ગાનાર ઘેરેયાઓને બીજા અન્ય જાણે પશુ
ગાવા ફાવે છે, અને ગમે છે. ઘેરેયા તો જુવાન છે, ઘેર પરણેલો છે,
દેલડીઓ છે. આખો દિવસ તે નાચ્યા કરે છે. ફાગણ આગ્યો !

ત્યારથી તે જન્મે જ નથી તેથી નિનણી-દેવડી તેને પાછળ સંદેશો
મોકલાવે છે :

ગળામેં સોનાનો ફૂલ, સાપે ચડિયો નાચે ચો !

હારે તારી લીતણી, સમાચાર મેલો;

એ ઘણો નાચે મા ! એ ઘણો નાચે મા !

લોહરો ભરાવ થયલા રે, ઘણો નાચે મા !

તું બહુ ન નાચ, પગની પોંડીઓમાં લોહીનો ભરાવ થઈ જશે,

આ ઘેરેયા તો વસંતના રાજમાં મહાલી રહ્યા છે. નવપરિણીનાના

અને ભોજનવંતી યુવતિઓના દિલમાં શૃંગારના ભાવ જન્મ્યા વગર રહે
ખરા કે ? તેથી નજદી અગા ભંવરવાને તે કહેવાય છે :

‘ ગંગા તારા ઘાટમાં, ગેરી પાકી ઠાંગણ્યો

ખૂણે બેઠી ડાવડી, આંસૂડાં રાળે રે,

ભીંને આંગણિયો ! હેરે, ભીંને આંગણિયો !

મેહુડા ભાત બિગાડજો, ભીંને આંગણિયો !

ગણ્યો પાકી ગઈ અને ખૂણામાં બેઠી યુવતિની આંખમાં આંસૂડાં
ભીમટ્યાં છે. આંગણું ભીંને છે, પણ સાથે માથે તેની કાચળી પણ
ભીંને છે.

એક નાપિશાને પતિની અંખના ને મનોરથ ફાગણમાં જન્મ્યા ને
તેને તેજે ફાગમાં ગાયા :

બાગાન રખવાળા રો'તો, કોયલ હોને બોલું રે !

પિત્તળની પાંદડી હારે આર્બું મૂઠે બોલો તો !

મૂઠે બોલો તો, તે મુવેલી મુખેતર પવ !

સોઇલી દરવાજે, તમારી પૂતળી દોરાવું રે !

હથેલીમાં કંકુ લઈ, ચે'રો કડું તારા નામનો !

ઘેરના મેળા આવ્યો અને નાયિકાને નાયકની સાથે નાયવાના કોડ જન્મ્યા, પણ તેમાં વિધિ જોવા કરી ગઈ તે ચક્રવ્યુહ નાયિકાના મનમાંથી સરી ગઈ:

મેળ ત્યારી થઈ ગઈ, તામણિયો રેઈજો તાળા મેં !

ભંવરજીનો ધોતિયો વડલાનાં ડાળાં મેં !

ગેલર વેગી....વેગી....ઓ !

હેરે ગેલર વેગી ઓ ! નજીવલ ભરોસે રે ગિયો !

ગેલર....વેગી....ઓ !

નાયિકા મેળે જવા તૈયાર થઈ પણ ચાલીઓ તાળામાં રહી ગઈ તેમજ ભંવરજી નવું ધોતિયું પહેરીને મેળની ઘેરમાં તેની સાથે નાયવાના દતા તે ધોતિયું પણ અચી લેવાયું નહીં અને તે મિચ્છારી રહી નજીવલના ભરોસે નજીવલ આવું વિશેષ કરનારું તત્ત્વ છે એ જ ભાવ આ નાયિકાનો હશે ને ?

લગ્ન પતાવવાની હિતાવગી નાયિકાને જન્મી છે તેથી તે કહેવડાવે છે કે અગિયારશ આવે છે ત્યારે આપણે ફેરા ફરી જઈએ :

મેળાના મારગે મને ફૂલમાળા લીધી રે !

પાછી ફરને ભમરલા, ગળામેં નાખિયે !

ભાને ગાલી દો ! હેરે ભાને ગાલી દો !

આંગળી અગિયારશ ફેરીવો, ભાને ગાલી દો !

જાંટને શણગારીને, જીવાનિયો મેળે ભણડે છે તેને નાયિકા કહે છે કે તું જાણે રાખ :

કરેલિયો શણગારી, છોરો મેળે ત્યારી લેનિયો રે !

ધૂધરિયારો, ઝાલો કરે ને, હેલો મારું રે !

કરિયો ઢાળી દે ! હેરે કરિયો ઢાળી દે !
તારા કરિયાને ઘૂઘરી બાધુ રે ! કરિયો ઢાળી દે !

આવા પ્રગોષાથી ભવ ને દેડીને અમોના થાય છે ત્યારે
સખી શિખામણ આપે છે -

તારે મારે બેમણા નદીઓના કાંઠે રે !
તારે ને ભવગ્ને વેર કહરે પડિયો રે !
કરલે ગળાં હેરે કરલે રાણપો !
સોનાને પાલે દારૂ પીલે રે ! કરલે રાણપો !
હેરે, કરલે રાણપો !

ગાંતિયો થઈ ગયા પછી ભવગ્ન કેવો મોટો લાગે છે, પ્યારો
લાગે છે અને વડાનો લાગે છે તેનો ભાવ ફાગમાગવાઈ જાય છે -

ઓલો માગ માદલિયા, પલારે પલો બાપે !
મેલા મારે આપણે લેળા, વા'લા કરજો નખરો !
કરજો વા'લા નખરો ! ભવરણ માને લાગે સખરો !
કરજો વા'લા નખરો !

આ ભવગ્ન રાતે પાગમી હવેલીમાં પગ માડે છે તેનું નાચકાને
જાન થાય છે ત્યારે તે જમને આસુને કહે છે કે તમે તમારા મુખને
વારજો

રાતે તો સામુલ, માને સાયવો સપનો આયો રે !
ધારો નયો પારકી હવેલી માયે પગવ્યા માટે રે !
ભરજો બાયા ને ! એહરે, ભરજો બાયા ને !
લાખેણા ઘરરો પાણી લાજે ઝો ! ભરજો બાયા ને !

પોતાના લક્ષણની મા પામે ફરિયાદ મઈ અને ભવગ્નને ચાંતક

ચડી. તેમણે રિસામણાં લઈને મુંઝઈ જવાનું નક્કી કર્યું. પેલી નાયિકાના દિલમાં અત્યારે તકફાત જન્મ્યો :

ઓઢવા ને પાલીનો પીળો, ઘડીક રમવા મેલો !

કાલ તમારો લાડકયો, મુંઝઈ બચ ! મૂઠો જોવા ઘો !

અરે, મૂઠો જોવા ઘો ! મરેલી મુખેતર પાઈ.

મને તેનું મોં જોવા ઘો નહીં મને તો હું મોતને વરીને પશુ
તેનું મોં જોઈશ

અને આવી નાયિકાની જુવાની ચાલી ગઈ છે. હવે માયાની
પોથીમાં ધોળા વાળ આવ્યા છે ને તેની સાથે ડહાપણ પણ આવ્યું
છે, તેથી તે જુવાનીના ઘેરિયાને ચિખામણ આપે છે :

કાઠિયા ઉઘ આની જાંખી, સામે ઢોરે બળકે હો !

દાતારી સતીસી માથે, બાળી (દાંતની મુવણું રેખા)

ભળકે ઓ !

આયો જુડાપો ! એરે, આયો જુડાપો !

નેણ નો નખરો હોઠો મેલો રે ! આયો જુડાપો !

આમ ફાગમાં સુગર રસના અને લક્ષિતના લાવ તેમજ શીખના
લાવે વ્યક્ત દેવામાં આવ્યા છે ફાગ જોટલા ગળીર લાવના વહનનું
સાહિત્યરવરૂપ છે, તેટલું જ વહન તેમાં ત્યાંની ધરતીના રંગરૂપો,
સમાજના વગિયાઓનું પણ તેણે વહન કર્યું જો મારવાડનો સોય તને
ઠાઠારિયો કવો છો !

ગાડી ને શુડનેલ ધાગો, ગળિયારામાં મળિયો;

આતીડાનો હલકો, મને સામે મળિયો;

ઠાકોર સોયતનો ! હોરે ઠાકોર સોયતનો !

સોનાના માદળિયાવાળો ઠાકોર સોયતનો !

માડે જોડેલ જગદ જોડેને દાથીડાની જોડ સાથે મગખાવીને,
સોયનના ઠાકોરની સાથેથી વચૂંવાને, તેની ધનસંરક્ષિ ગાર્ધ નાખી માત્ર
ગળામાંના મેનાના માદગિયાને ગાઇને જુદાથી ઠાકોરનો કામ રચ્યો છે.
તેણે બહુગીને પદ્મીને મદમાં જેમાડી છે. તે બહુચીએ ઠાકોરને
ચાપ આપેા કે નરી કુકળન જળીને ખાખ યાજે :

અવાવાળો અડમીરાજ, બામણી ગઠ સાડી
મેલો છડથી બામણી મુસપ દિધો, બગલો આડવો
એરે બગલો આડવો ની ગાયો અરને રે !
બગલો આડવો ! ધરતીનો ધાળો, બગલો આડવો !

ત્યંનું અર્ધગજગીય અને સામાજિક જીવન માત્રા પછી
તત જ ત્યંના અમાજજીવનમાં તેઓ સરી પડે છે. સમાજજીવનમાં
હજુય અંયુક્ત કુટુંબો ક્યાં વૃદ્ધા છે ? ને જાણીને મન નજદક કો તો
સાકર સમાન હોય, કો તો અખી સમાન હોય તે તેનાથી વિખૂડી પડી
સાસરે તપ ત્યારે નો જાણી 'સગપ' રે :

નણુંદલ ને બોલાર્ધ જોડે માથો ધોયો,
નણુંદલ ચાલી સાસરે
જેડી બીખર ગર્ધ, હેરે, જેડી બીખર ગર્ધ;
નણુંદોર્ધ થારો નાસ જાલે, જેડી બીખર ગર્ધ !

દૂથી અણું આત્મુ છે ને તેના હિલ્લાસ મનમાં છે તે પ
કામમાં જડી આવે છે :

ધોળ્યા ખોદાની જોડ્યા, માળખિયો જાચો રે !
પાછી ફરને, જોયો, મારો જોઠ આવે રે !
આણું અળમાંનો, હેરે, આણું અળમાંનો !

સાંતળિયો મારો માથો ગૂથો રે, આણું અળગાંને !

હેરે આણું અળગાંને !

મીંડાઓ મોતી પોહ્યાં રે ! આણું અળગાંને !

આણે ગયા. કુટુંબજીવનમાં દેવનિયો વહાલો વહાલો લાગવા લાગ્યો, ને દેવરિયા કાજે 'નિનસી' લવવાના લગ્નનીને કોડ જન્મે છે :

કાઠિયા ઘઉંની જાંબી સામે મોરે લાળકે રે !

દીવલાના ચાંદલિયે લાભી રૂપિયા પરખે,

ઓ ખ્યાં દેવરનો હેરે, ખ્યાં દેવરનો સોરાણી !

કમરો કાંઠી બાંધો રે, હેરે કમરો કાંઠી બાંધો રે !

મુઠ્ઠ એકલડી પરણાવો, લાઉ ઓ ! ખ્યાં દેવરનો !

કુટુંબમાં લંવરજી સાથે રહેવાથી હવે તો લંવરજીના દુર્ગુણો અને વ્યસનોની જાણકાર થઈ છે લંવરજીને હોઠા અને અફીણનો ખારે શોખ છે. તો તે કાગ દ્વારા શિખામણ આપે છે :

હાથમાં ચોકો, બેઠક સારી લાગે,

માથામાં અમલની ડાબી, ખારી લાગે !

માવો છોડ દે ! હેરે, માવો છોડ દે !

માવેરો, માવે દાડૂ પી લે, માવો છોડ દે !

માવો-અફીણ પીવાથી માથા પર દેવું થઈ ગયું છે ને તેમાં પાલીનો જોડતો શેઠ અચાનક રગમાં આવીને લંગ પડાવી જાય છે ને લેણા પેટે ચીજો લીધી તે ગાયુ છે :

કાકો ને ભતિજો, હોકો આકડિયો એં ભરિયો,

પાલીવાળો જોડતો, અલખીને પડિરો; ધોળા દે પર !

એરે, ધોળા દે પર !

વાણિયે લેણામાં લીધો, સોળા દે પર !

સંસારની આવી અનેક વિટંબણામાંથી નીકળ્યા પછી સંસારના મોજશોખ માણ્યા પછી જીવ વિચારમાં પડે છે કે :

હંસને મૂડે બોલો, અનેસો મથી રાખો રે !
 થોડા દા'ડાનો જીવણો, બલાઈ લેલો રે !
 ઝોછી ઉંમરમે, હે રે ઝોછી ઉંમરમે,
 મરજણો! સંસારમાં !

રણૂળના રામાપીરને પણ તેઓ સંસાર પાર ઉતરવા સ્મરે છે :

કેસર ઘોળી કાળમે પાણુજી થાને સોવે !
 લીલો ઘોડો નવલખો, રણૂંળે છેવે, રામાપીરનો !
 રામા પીરનો ! હે રામા પીરનો,
 રણૂંળે લીલો ધારો ધૂમે, રામા પીરનો !

જીવ અને શિવ જુદા છે. જીવને સંસારમાં રહીને ધરતીના બધા જ રંગરાગ જોવા પડે છે. ધણાય જીવને પરમાત્મા પાછળ લઈ જવા મથે છે, પણ ધરતીની નક્કર અને ધન વાસ્તવિકતાઓ જીવને તેમ કરતા અટકાવે છે. આવી નક્કરતામાંની એક છે. તેમના અર્થ જીવનની આ તો વજુઝરાએ ગાયેલ ક્ષણો હિ તેથી તેમના જીવનનું વિશેષ અગ્ર ધાગા-જળદો-છે ને તેના ય ક્ષત્ર છે :

ગજાને વાડલિયો મૂકીને ખૂડો ધાગો લાયો રે !
 ઉનાળો આયો, ધાગે ઠોકર ખાધી, ડૂંગો વાડલિયો !
 હારે ડૂંગો વાડલિયો !
 પરાયો લેણો માથે કીદો રે, ડૂંગો વાડલિયો !

બળદ કાદવમાં ખૂંચી જાય છે ને માળવો ખાસો અને તે નીચેના કાગમાં છે :

કાળરિયા બરદિયાની જોડ, માળવિયાથી લાઈ રે !
 હેણીવાળા નારકિયો, કાઠામેં કળિયેયો રે !
 બાણુ માળવિયો ! એરે, બાણુ માળવિયો !
 દેવરિયા, માંડણી લાયો રે બાણુ માળવિયો !

બળદો ચુજરી ગયા. જીવન વિષમ બન્યું છે તેથી ચાકરી સ્વીકાર્યા
 વગર છૂટકો ન'તો તેથી ભંવરજી નોકરીએ જવા તૈયાર થયા છે. આટલ-
 આટલા દિવસ, મહિના અને વર્ષો સાથમાં કાઠવા તેવી નાયિકાને હવે
 વિજેગથ તરીકે કેમ કરીને વિનાશાય ?

હાથમેં કડિયાળી ડાંગ, ખડિયો બાંધણુ ટેટી,
 પરાઈ ચાકરીઓ લાગે, ઠરડી છાતી ઓ !
 હું ચો હારો મા, હરે હીનો હારો મા !
 મૂંછોનો પાણી હરામ રાખે ઓ ! ડિયો, હારો મા !

વિજેગથ અને છે પછી તેનાથી શણગાર સમજતા નથી સૌ
 શણગાર સાધનો અઠમક પડ્યાં રહે છે તેથી નાયિકા ગાય છે :

નેણુરો શણગાર કાજળ કૂંપલીમેં રે ગિયો !
 એક ટઉકો તેલરો, શેલેરો પડિઓ રે !
 કાજળ રેલાણો, હેરે, કાજળ રેલાણો !
 નેણુરો ખરાઓ કીધો રે, કાજળ રેલાણો !

આમ આ ચાર પંક્તિઓના લોકગીતમાં તે સમાજનાં અનેક-
 વિધ રૂપો જોવા મળે છે.

આ ફાગો 'ચોગડિયા ફાગ'ના નામે તેના ગાનારોએ પિછાને
 છે. ચાર પંક્તિનો ફાગ માટે 'ચોગડિયા ફાગ.'

કાવ્યસાહિત્યમાં ચાર પાદનું ૩૫ ઠીક ઠીક અવ્યક્તિ અને બાધીતું
 છે. સોગદી દોદરમ ચાર પાદ અનુષ્ટુપ જેવા વેદકાલીન પ્રાચીન છંદમાં

રહ લાગી !

માનવીના મંલકા મૂળભૂત સ્વભાવની વિચારણા કરીને આપણે માનવને સમજવા બેસીએ તો માનવમાં બેઠે નહોં કળાય ! માનવસ્વભાવ તો પૃથ્વીના ૫૩ પરના સર્વ માનવીમાં સરખો જ લાગે, પછી ભલે સસેકસ કે વેસેકસની નારી હોય, પણ તે આમગૌરી મહુડીની કાઈ બીજારાણી જેવી બાસશે કે સોરકમાં બાદરનાં વહેતાં પાણી પર જીવતી કાઈકે મેરકન્યા શી !

આ ગીતો હિતર ગુજરાતમાં ખૂબ નામીયા બનેલ સુલુસર ગામની કાકરડા ઓઝોનાં છે. ત્યાંના કાકરડાઓ ઈતિહાસપ્ર્યાત ગણાય છે. સ્વ. શ્રીમંત સયાજીરાવે તેમને ‘સંરકારવા’ બારે મયામણ કરી. ગુનાહિત કેમોમાં સંરકાર ફેલાવવાનું કાર્ય કરી પ્રતિજ્ઞાને વરેલ શ્રી. રવિશંકર મહારાજ પણ તે ગામમાં વસી આવેલા છે.

આ કેમની ઓઝોની અંદર શી કુણાસ પડી છે તે એમના એકેએક ગીતમાંથી જડશે અને તે બાવો ઓબાવ નથી શું ?

(૧)

ભાંચાં રે થક, દૂંકડે મારું સાસરું;
 નેચી મહિયર મારી વાટ રે,
 મારા વીરાને કે'લે, આણું મોકલે !
 સાડલા ફાટ્યા છે, માડી, મારે ઘૂઘરે બાય છે;
 મારા પિયરિયાની પડી બાય લાજ રે;
 મારા વીરાને કે'લે, આણું મોકલે !

પોલકું ફાટયું મારા અંગથી રે,
જાય છે મારા પિયરિયાવાળી લાજ રે,
મારા વીરાને કે'ને, આણું મોકલે !

ધાધરા ફાટયા છે મારા ઘેરથી રે,
જાય છે મારા પિયરિયાવાળી લાજ રે,
મારા વીરાને કે'ને, આણું મોકલે !

જિંયાં રે થક, ફૂંકડે મારું સાસરું;
નેથી મહિયર મારી વાટ રે,
મારા વીરાને કે'ને, આણું મોકલે !

(૨)

સામુ મારી સાંભળો ને સાહેલીની હાથમાં અંગૂઠી,
મને જોલી અંગૂઠીની રહ લાગી !

કે' તો વહુવર મોઝડી લઈ આપું;
બળી તમારી મોઝડી, બળ્યાં તમારાં કડલાં,
મને પેલી અંગૂઠીની રહ લાગી !

કે' તો વહુવર સાંકળાં લઈ આપું;
બળ્યાં તમારાં સાંકળાં ને બળ્યાં તમારાં ચૂડલાં,
મને પેલી અંગૂઠીની રહ લાગી !

કે' તો વહુવર નથડી લઈ આપું, કે' તો ટીલડી,
બળી તમારી નથડી ને બળી તમારી ટીલડી,
મને પેલી અંગૂઠીની રહ લાગી !

કો' તો વહુવંર વાળિયું ને કો' તો કાંકણી* લઈ આપું;
બળી તમારી નથડી ને બળી તમારી કાંકણી,
મને પેલી અંગૂઠીની રહ લાગી !

(૩)

સમેળામાં ભિગ્યો રંગ કેવડો રે,
ધોળું રે સાહેબનું ફૂલ, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરે બાપાનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે સાસુનાં ઝેર, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરે માતાનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે જેઠુંનાં હખ, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરે વીરાનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે જેઠાણીનાં ઝેર, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરીએ લોભઈનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે નણ્ણીનાં ઝેર, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરીએ બે'નીનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !

(૪)

સંગ મારું સસરું લલું પણ વેગળું;
દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

સંગ મારા સસરા લલા પણ વેગળા;
સંગ મને લાળું કાઢ્યાનો કોડ;
દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

* દીપકા, નાકમાં પહેરવાનું ચીનું અલંકાર



સગ મારી સામુ લલાં પણ વેગળાં રે;
 સગ મને પગે લાગ્યાના કોડ,
 દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

સગ મારા જેઠ લલાં પણ વેગળા રે;
 સંગ મને ધૂધટ કાઠચાનો કોડ રે,
 દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

સંગ મારી જેઠાણી લલાં પણ વેગળાં;
 સંગ મને કેડે મા'લ્યાનો કોડ રે,
 દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

સગ મારા દિયોર લલાં પણ વેગળા,
 સગ મને હોળી રમ્યાના કોડ રે,
 દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

સગ મારી દેરાણી લક્ષી પણ વેગળી,
 સગ મને કેડે હાલ્યાના કોપ રે,
 દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

સગ મારી નણદી લક્ષી પણ વેગળી,
 સગ મને માયાં ગૂંથ્યાનો કોડ રે,
 દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

(૫)

લીલુડી પાટણની બગડી બહુ સારી,
 હારી, હોરી, શુ રે ઠુ ઝેની પહેરનારી પરદેશ !

લીલુડી પાટણની મોજડી બહુ સારી,
 હોરી હોરી, શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
 લીલુડી પાટણનાં ઝડલાં બહુ સારાં,
 હોરી હોરી, શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
 લીલુડી પાટણનાં સાંકળાં બહુ સારાં,
 હોરી હોરી, શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
 લીલુડી પાટણના ચૂડલા બહુ સારા,
 હોરી હોરી શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
 લીલુડી પાટણની ટીલડી બહુ સારી,
 હોરી હોરી શું રે કરું, ટીલડીની પહેરનારી પરદેશ !
 ટીલડીની પહેરનારી પરદેશ !

અર્થ

ગીત ૧. ગોરીને પિયરની લાજની થી ચિંતા જન્મી છે । સાસરિયે આવી ત્યારે બચ્ચડી બાંધીને માએ લગડાં આપેલ તે ફાટી ગયાં છે । આમ તો ઠકરાણીઓ ઝોઝલ પાળે, પણ પિયુષ પાસે ચ પોતાના પિયરની લાજ જાય તે શે અમાય ?

સાબળ્યું છે કે ત્યાંની ઠાકરઘ કામગીરીઓ બાધરે ઝડપ મુકાવે, ધૂધરીઓ મુકાવે । તો બાધરા જળા ગયા છે તેથી પેલી ધૂધરીઓ ખરી પડે છે તે લાવ હશે પક્ષિત ૪ માં ? કે જેમ બાધરે ઝડપ મુકાવે છે તેમ સાડલે હશે ?

ગીત ૨. ફક્ક સંવાદ છે ગીતમાં ને સાસુ વહુ વચ્ચે મીઠાશ કેટલી છે । સાસુ વહુ બેઝલતાં હશે ત્યારે તો મોઝે ચખ્દોએ બરાઈ જ

જનુ દશે ને! અને શી મીઠાશે સાસુ વહુને ઉત્તર વાળી રહ્યાં છે?

ગીત ૩. કેવાનો રંગ રાતો ક્યાં બાળ્યો છે? લોકની શી આસમાની (Romantic) રંગબેરી દ્રષ્યના છે? જુવાનીનો-પ્રેમનો-રંગ લાલ, માટે કેવાને ય તે તેજ રંગે જુઓ ને!

મદિયરિયા અને સાસુરિયાની ટુલના આ ગીનમાં છે!

ગીત ૪. ઠાકોરનાં નામની અતે સિંહ આવે ને લોકઆજમાં પછી તે બને છે મંગ : મહોબતસંગ, હિંમતમંગ ! જુવાન ઠાકરાણી ઠાકોરની આગળ મન કામનાઓ વણવે છે.

ગીત ૫. સરખેસરખી હેડીના બે દોરતારો ગયા છે પાટણ દોસ્તો પાટણની બજારમાં નીકળે છે ને વારાફરતી ચીંજે બનાવે છે. તે જથ્થો પેલા મિત્રને અપમાં લાગે એમ નથી, પણ ઘેર નારને અપે તેમ છે, આથી તેને વારેધડીએ આજ ઉત્તર દેવો પડે છે : 'એની પહેરનાર પરદેસ.'



ત્રણ પ્રણયગીતો

સોમાબાર્ધ भारी साथे हता ने अमे जने वीरभगामयी त्रयै
गाढि हरेना रहैभक्षपर गाममां पगपाणा जर्ध दखा हता । ओहोहो !
सोमबार्ध शुं भजना भानवी । वातोनेो कंडर नेतेमां गामडाना शुव ।
धरतीनेो साथेो सपूत, आयी लोकगीतोनी वात नीकणे तयारे अे तो
भने गार्ध संबणावे अेनी पकितअेो. हातरडाना गीतनी वात
करनार न ते ।

રહેમક્ષપર અમે ગયા હતા, ખેતમજૂરની સહકારી મંડળનાં કામ-
કાજ જોવાને માટે. સહકારી મંડળીઅે અમેની ત્યારે આરે વાતો ભેગી
કરવી હતી. સોમાબાર્ધ પણ સહકારી મંડળીઅેના કામકાજના અવ્યજ
જાણકાર, આથી તેની ગૂંચો, અગવડો, ફાયદાઅે, ગેરફાયદાઅે,
મર્યાદાઅે ઇત્યાદિ વિના—સ કાએ રસ્તામાં સમજવતા જાય અને સાથે
સાથે કાર્ધ લોકગીત શ્રદ્ધ આવી જાય તો તેની પણ વાત કાઢે અમારી
સાથે સોમાશ્ર નામે તરવરાટવાળા કાકરડાબાર્ધ પણ હતા અને ઉધાડા
વગડામાં સવારના પહેરમાં મૂખાં મારતાં મારતાં, રસ્તો જૂઝતા અને
પાછો તેને ભેગ પકડીને અલ્થે જતા હતા, ત્યાં ઉસ ધરતીમાં રીંગણી-
અેની કપારડીઅે જોઈ સોમાબાર્ધઅે કહ્યું; ‘ભુઅે આ રેતમપર
અદીથી તમને પણ લોકગીતો પણ મળશે.’ અને અમે ગામમાં ગયા.
સહકારીમંડળનું કામકાજ સંભાળનાર બાર્ધના જ અમે મહેમાન બન્યા,
તેમના નિવાસસ્થાનના મોટા વિશાળ વંડમાં કાઠાનેા આઠ હતો.
કાળી, વાધરી અને બરવાડ સ્ત્રીઅે કાઠાના દમલા લઈને કાલા ફોલના
બેસી ગઈ હતી.

લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં,	”	”	”
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ,	”	”	”
હાંહડી લાંબો ગૂંઢીનો ગરાસિયો,	”	દુ	”
દાણિયુ લાંબો અલબેલો,	”	”	”
લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં,	”	”	”
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ,	”	”	”
નથડી લાંબો ગૂંઢીનો ગરાસિયો,	”	”	”
ટીલડી લાંબો અલબેલો,	”	”	”
લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં,	”	”	”
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ,	”	”	”
ધાધરો લાંબો ગૂંઢીનો ગરાસિયો,	”	”	”
સાડી લાંબો અલબેલો,	”	”	”
લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં,	”	”	”
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ,	”	”	”

નવરંગ લાકડું

કે રસિયા, વાડીમાં પડ્યું રે, નવરંગ લાકડું રે લોલ !
 કે રસિયા, તેની રે ઘડાવો નવરંગ ચાંખડી રે લોલ !
 કે રસિયા, લીલી રે ચાંખડીએ રડ્યાપડ્યા રે લોલ !
 કે રસિયા, અમને રે લાગ્યું, તમને આઝી ખમાયું રે લોલ !
 કે રસિયા, તિયાં રે બંધાવો રે ડોલર હીંચકો રે લોલ !
 કે રસિયા, હીંચકડો તૂટ્યો ને પડીઅલ બે જણાં રે લોલ !
 કે રસિયા અમને રે લાગ્યું, તમને આઝી ખમાયું રે લોલ !
 કે રસિયા રીસે બળવી કવાણું, તમને ઘણી ખમાયું રે લોલ !

ઠે રસિયા, મારી હિંદનાણીનો ઝગડો પૂરો નહિ પડે રે લોલ !
 ઠે રસિયા, મારા ગલકૂલિયાનો હાર તોડ્યો નહિ તૂટે રે લોલ !

માયાળુ માનવી

આપણા મલકમાં માયાળુ, માનવી,
 માયા મેલીને ઘોઠે ચડો, મારા દરબાર,
 હાલોને આપણા મલકમાં !

આપણે મલકમેં દાતણ દાડમાં,
 દાતણ કરીને ઘોઠે ચડો, મારા દરબાર,
 હાલોને આપણા મલકમાં !

આપણા મલકમાં માયાળુ માનવી,
 માયા મેલીને ઘોઠે ચડો, મારા દરબાર,
 હાલોને આપણા મલકમાં !

આપણા મલકમાં નાવણ કૂડિયું,
 નાવણ કરીને ઘોઠે ચડો, મારા દરબાર,
 હાલોને આપણા મલકમાં !

આ મીતમાં જે લય વેગ છે તે ત્રિચિદ્ર પ્રકારનો છે અને શ્રમ-
 જીવીએાનું આ મીત ■ તે મુઘકમાં કામનો પાક મનનખ થાય છે
 ને દાહાં વીણતી વખતે આ મીત ત્યાંની સુંદરીઓ ગાય છે

ગ્રામધરતીની રસસુંદરીઓનો પ્રેમ બેડાકુ નથી, તે વાત મારા
 કાનમાં આવા ધગ્ગીના લોકોએ અનેક વાર નાખી છે અહીં પણ
 તેઓએ તે જ કહ્યું : તેમના પ્રેમને પાણી પાનર માળી ■
 અમયુક્ત જીવન !

તેમની પાસે પ્રેમ કવવાની આ અનોખી રીત છે । ને તે લાવોને
 કામ કરતાં કરતાં ગાયા ■



વનનો મોરલો

જાતિ-ધર્મિયું આ લોકગીત છે. કાઈ મરધાનેણીને મોરલો સાથે પ્રીત બંધાઈ હશે. ચનચનતો મોરલો આગણે આવી નાચતો હશે. કાચની પૂતળી શી કામિની રૂપકડી હથેલીમાં જવારધઉંના દાણા રાખી મોરલાને ખીજા હાથે પંખાળતી પંખાળતી બોજનિયા કરાવતી હશે, કદાચ । કે મોરલો પ્રીતકર્યાને હશે ?

આવી હેતનો અવસર પરણ્યાને ન સંપડ્યો હોય તો પરણ્યે પેલા મોરલાનો શિકાર જ એલે ને ?

પુરુષ જાત શું છે તેનો કેવો ચિતાર આ લોકકવિએ આપ્યો છે !

સોના કામઠડી ને રૂપલાંનાં છે તીર,

રાજનો કુવર શિકાર ચડિયો ।

માયા' માયા' હરણુ ને કાળિયાર,

એકે માર્યો વનનો મોરલો ।

એ મોરલિયો કાવડ નાખી લાગ્યો,

લાવીને નાખ્યો મઢી બારણિયે ।

ઊઠો રાણી, આપલિયાં ઉઘાડો,

રમતાં ને જમતાં આંપલિયાં ઉઘેડિયાં ।

ઊઠો રાણી, બે મોરલિયા પિછાવો,

તમારા મોરલિયા તમે પીછો ।

રાણી ખિન્નરદના બને છે, ત્યારે પતિના દિશમાં પશ્ચતાપની ધૂણી ધખવી યર થાય છે :

કો'તો રાણી, બે કડલાં ઘડાણું, કડલે ટંકાણું વનના મોરલા ।

એ મોરલિયો બોલે ને, ન ચાલે, વનનો મોરલો ટહુકા કરે ।

કે'તો રાણી, બે ઘાઘરા લઈ આણું, ઘાઘરે ટકાવું વનના મોરલા !
 એ મોરલિયો બોલે ને, ન ચાલે, વનનો મોરલિયો ટહુકા કરે !
 કે'તો રાણી, બે હાહડી ઘડાવું, હાંહડીએ ટકાવું વનનો મોરલો !
 એ મોરલિયો બોલે ને, ન ચાલે, વનનો મોરલિયો ટહુકા કરે !

અને રાણીનું મોં કદી ય પછી ન પ્રફુલ્લ બન્યું કે ન બન્યું
 પસંવિત !

શા છે આ સસાગના ધાટ !



જુગારીનું ગીત

લોકગીતો એ સમાજના આલનાં જોવાં ■ ગુજરાતનાં
 લોકગીતોમાં ગુજરાતના લોકજીવનનાં કઈ કઈ પડછાયા, ઓઝાયા અને
 પ્રતિબિંબો જિવાયાં છે

આ ગીતમાં સુંદર ચિત્રરસ છે, જુગારીનું ! જુગારીની શી
 મનોદશા હોય છે તેનું આમાં સુંદર માનસચિત્ર જોવા મળે છે

લાલ જુગારી, છેલ જુગારી,
 પગના તે કડલાં લઈ ગિયો, જુગારી !
 હારીને આંખો બિચારો, લાલ જુગારી, છેલ જુગારી !
 ડાકનું તે દાણિયું લઈ ગિયો, જુગારી !
 હારીને આંખો નિમાણો, (ઉતરેલ મો વાળો)
 હારીને આંખો બિચારો ! લાલ જુગારી, છેલ જુગારી !
 ડાકની હાહડી તે લઈ ગિયો જુગારી !
 હારીને આંખો બિચારો ! હારીને આંખો નિમાણો !

લાલ જુગારી, છેલ જુગારી ।
 ઢેડનો તે ઘાઘરો લઈ ગિયો જુગારી ।
 હારીને આંચો નિમાણો । હારીને આંચો બિચારો ।
 લાલ જુગારી, છેલ જુગારી ।
 ઓઢવાની ઓઢણી લઈ ગિયો, જુગારી ।
 હારીને આંચો બિચારો, હારીને આંચો નિમાણો ।
 લાલ જુગારી, છેલ જુગારી ।
 નાકની તે નથડી તે લઈ ગિયો જુગારી ।
 હારીને આંચો બિચારો । હારીને આંચો નિમાણો ।
 લાલ જુગારી, છેલ જુગારી ।

(૨)

જૂગઠિયો સરદારે, જૂગઠ કોઈ રમશે નેં રે !
 જૂગઠ રમતાં શું શું હાર્યો ! જૂગઠ રમતાં ગોધા રે હાર્યો ।
 સાંતીડાં જૂગઠમાં રૂલ્યાં, જૂગઠ કોઈ રમશે નેં રે !
 જૂગઠિયો સરદારે, જૂગઠ કોઈ રમશે નેં રે ।
 જૂગઠ રમતાં ॥ શું હાર્યો ? જૂગઠ રમતાં ઓરડા હાર્યો,
 ઓશરી વિયાજડામાં રૂલી, જૂગઠ કોઈ રમશે નેં રે ।
 જૂગઠિયા સરદારે, જૂગઠ કોઈ રમશે નેં રે ।
 જૂગઠ રમતાં શું શું હાર્યો ? જૂગઠ રમતાં બાયડી રે હાર્યો ।
 છોકરાં વિયાજમાં રૂલ્યાં, જૂગઠ કોઈ રમશે નેં રે ।

★

‘સંધીડા મેમાન આવ્યો !’

લોકગીતોમાં કેટલીક વખતે તત્કાલીન સમાજનું, કેમ-પ્રયાતુ તેમજ રીતરિવાજોનું દર્શન થાય છે તો કેટલીક વખતે બીજા મથેન એકાંક સામાજિક પ્રમુખને ગાતાં ગાતાં પશ્ચાદ્ગમમાં તે વાતાવરણ દ્વારા કેઈ મુલકના ભૌગોલિક અહોરાત્રોરનું સુંદર આલેખન લોકમાયક કરી નાખે છે

આ લોકગીત મને બાનમાંથી સાંપડ્યું છે ને બાવની ધરતીનું ચિતરણ, આથી, આ લોકગીતમાં બળદ ખરીદાય. બાળધાના માથે સીંધી સિંવના મુસલમાન વેપારી છાંટ લઈને ઉવરાણીએ નીકળે તેમનો પહેરવેશ, શરીરનું કાકુ, સોલરો અગ્નિય ઝીણી આખો, કાતરેન પાતળા મૂછો, મુલાયમ ને ચમકદાર કાળી દાદી, ઠંડ્ય ઉપર વીંટાળેન લૂગી જેવું સિંધનું બાતીંગળ કપડું, બીચી એડીના દેશી ચામડાના બેડા; આમ તે ખૂબ નમણા અને આનંદક હોય છે

આવો સંધી બાવના ઝીંઝર ગામે આવી ચડે છે ગામડામાં તો મેમાનને બેસાડવા ઢોનિયો ઢળાય તેના માટે વખતીએ ઢોનિયો ઢાલ્યો, જાનાં પાણી મૂક્યાં, ડિય ચોળાને તેને નવરાખ્યો, ને બાવની ધરતીમાં ધઉંનો અડળક પાક પાકે ને તેય સ્વાદમાં ખૂબ મીઠો, તેથી સેવ તો ત્યાંની જ. વખતી આ સંધી મિજગાનને માટે સેવ રાંધવા મૂકે છે, ધીંગોળ તેમાં પીરસે છે, પણ આ બોજન દારે છે, પીરસે છે વખતી એક જ બાણમાં ને બેગા બેસીને તેઓએ ખાધું

વખતી વટવાણી ને બંને બાગી જવાનો નિર્ણય લે છે સારો સાંદિયો લાવીને તેઓ બંને નાસી છૂટે છે તેમની પાછળ વાર છૂટે છે

‘પદારોનાં લોકગીતો’માં ફેના બનાયા સાથે, બનાસકાંડાનાં ‘જ્યવો’માં કાકી બત્રીજ સાથે અને બાવનાં લોકગીતોમાં વખતી સંધી સાથે નાસી જાય છે આ ત્રણેય લોકગીતો સમાજશાસ્ત્રીઓને કેઈ પણ ખપમાં લાગશે ખર્ગ કે ?

સંધીઠા મેમાન આવ્યો વખતી, સંધીઠા મેમાન આવ્યો રે !
 ઝીઝરિયાની વખતી સંધીઠા, મેમાન આવ્યો ને !
 ધોડાને ઢાલિયો ઢાલ્યો રે, વખતીએ ધોડીને ઢાલિયો ઢાલ્યો રે,
 ઝીઝરિયાની વખતી, સંધીઠા મેમાન આવ્યો ને !
 બિનાં પાણી મેલ્યાં રે, વખતીએ બિનાં પાણી મેલ્યાં રે,
 ઝીઝરિયાની વખતીએ બિનાં પાણી મેલ્યાં રે,
 ડિલે સોળી નવરાવ્યો રે, વખતીએ ડિલે સોળી નવરાવ્યો રે,
 ઝીઝરિયાની વખતીએ ડિલે સોળી નવરાવ્યો ને !
 શેવુંનાં આંધણ મૂક્યાં, વખતીએ શેવુંનાં આંધણ મૂક્યાં રે,
 ઝીઝરિયાની વખતીએ શેવુંનાં આંધણ મૂક્યાં ને !
 બિલી બજારે હાલી વખતી, બિલી બજારે હાલી રે,
 ઝીઝરિયાની વખતી બિલી બજારે હાલી ને !
 અડધાનાં ધી ગોળ લાવી રે વખતી, અડધાનાં ધી ગોળ લાવી રે !
 ઝીઝરિયાની વખતી અડધાનાં ધી ગોળ લાવી ને !
 એકે લાણુમાં ઠાયું વખતીએ, એકે લાણુમાં ઠાયું રે,
 ઝીઝરિયાની વખતીએ એકે લાણુમાં ઠાયું ને !
 લેળાં બેસીને ખાધું વખતીએ, લેળાં બેસીને ખાધું રે,
 ઝીઝરિયાની વખતીએ લેળાં બેસીને ખાધું ને !
 તારો છવ વટલાણો વખતી, તારો છવ વટલાણો રે,
 ઝીઝરિયાની વખતી તારો છવ વટલાણો ને !
 હાલ્યને લાગી નય્યાં, વખતી, હાલ્યને લાગી નય્યાં રે,
 ઝીઝરિયાની વખતી, હાલ્યને લાગી નય્યાં રે !
 સારો સાંઢિયો લાવ્યો સંધીઠા, સારો સાંઢિયો લાવ્યો રે,
 સિધ માંયલો સંધી સારો સાંઢિયો લાવ્યો ને !

બાગી ભાલ લેજાં યાચીં રે વખતી, બાગીને ભાલ લેજાં યાચીં રે,
 ઝીઝરિયાની વખતી બાગીને ભાલ લેજાં યાચીં ને !
 વાહેં વારું સૂટી, સંધીડા વાહે વારું સૂટી રે,
 સંધ માંયલો સધી, વાહે વારું સૂટી ને !



ના ય ક

પુતિ યુદ્ધે ચડે ■ ત્યારે નવોડા નાર એને પૂછે છે : 'તમે ક્યારે આવશે ?' આ ગીતનો પૂર્વાર્ધ તે પ્રશ્નના ઉત્તરરૂપ છે. ઉત્તરાર્ધમાં પત્ની પતિના જુદા જુદા સ્વજનોને પૂછવા કરે છે કે મારા પતિ ક્યારે આવશે. સૌ સ્વજનો સક્રિય વાણીમાં ઉત્તર આપે છે. આ આખુંય ગીત જેટલું સરળ છે તેટલું જ કરુણ પણ છે.

આ ગીત અને બે જગ્યાએ સાંભળવા મળ્યું પદારમાં પદારજોએ સાંળી હથકે અને મીઠા સૂરે પરખમાં જન્મભ્રમી વખતે શિયાળ ગામે ગાયેલ. ઉત્તર ગુજરાતમાં પાટણવાડમાં પણ પ્રચલિત છે. શ્રી. ઈન્દ્રજિત આચાર્યે ઉત્તર ગુજરાતના આજણા પર મહાનિર્ગંધ લખ્યો છે, તેમજો પણ તેમના નિર્ગંધના અંતે આજણા કેમમાં પ્રચલિત ગીતોમાંના એક તરીકે આ ગીતને સ્થાન આપ્યું છે. પદાર, હાકરડા કે આજણા કેમની સ્ત્રીના જ કંઠમાં આ ગીત જોઈવાય તેવું કંઈ નથી; તેનો સીમાડો તથીયે મોટા હશે, કેમકે તેનો જાવ અને રસ કંઈ પણ માનવીને સ્પર્શી જાય તેવો છે. તેનો કરુણ રસ માનવ દિલને હલાવી નાખે છે ને તથી આ ગીત વધુ ચિરંજીવ બને છે. આ ગીતની સક્રિય વાણી ગીતને વધુ ને વધુ કવિતા પાસે લઈ જાય છે.

નાયક રે તમે ચાલણુરડ, આજના ચાલ્યા તે ક્યારે આવશે ?
વણુઆરા હો છ !

બેસજો રે તમે ગોરી પીંપળા હેઠ, પાન ગણીને માસ કાઢજો,
વણુઆરા હો છ !

ચાઢજો રે ગોરી નણુંદ-લોભઈ, ઉઘાડાં બાર ન મેલજો;
વણુઆરા હો છ !

રમજો રે ગોરી દિયર-લોભઈ, ખડખડ હાંત ન કાઢજો;
વણુઆરા હો છ !

પહેરને રે ગોરી હીર-ચીર, પૂઠો વાળીને ન નીરખને,
વણુઝારા હો છ !

ઉત્તરાર્ધ :

આવી રે મારા સસરાની પોઠ, જવું રે સાસુડી ઘેર પૂછવા;
વણુઝારા હો છ !

આવી રે વહુવર ઘઢંની શુષ્ક, શુષ્કો કાટીને ઘઉં રણ ચડ્યા,
વણુઝારા હો છ !

આવી રે મારા જેઠણની પોઠ, જવું રે જેઠણીને ઘેર પૂછવા;
વણુઝારા હો છ !

જેઠણી રે, મારા બાણ અબાણ, તમે રે આવ્યા, ને નાયક કયાં મેલ્યા;
વણુઝારા હો છ !

આવી રે વહુવર, અડદાની ગૂણ, ગૂણો કાટીને અડદા રણે ચડ્યા;
વણુઝારા હો છ !

આવી રે મારા દિયરની પોઠ, જવું રે દેરાણીને ઘેર પૂછવા;
વણુઝારા હો છ !

દેરાણી રે મારાં બાણ અબાણ, તમે રે આવ્યાં ને નાયક કયાં મેલ્યા ?
વણુઝારા હો છ !

આવી રે લોબાઈ ચોખાની ગૂણ, ગૂણો કાટીને ચોખા રણે ચડ્યા;
વણુઝારા હો છ !

આવી રે મારા લાણેજની પોઠ, જવું રે લાણેજ ઘેર પૂછવા;
વણુઝારા હો છ !

લાણેજ રે મારા બાણ અબાણ, તમે રે આવ્યા ને નાયક કયાં મેલ્યા;
વણુઝારા હો છ !

બાઈ રે મામી બાંધુડી બાર, સોડયો તાણીને મામા સુઈ ગયા;
વણુઝારા હો છ !

અરજણિયો

શ્રી. મેઘાણીભાઈ સંપાદિત “રઠિયાળી રાત-” ભાગ ૪ માં (પ્રથમ આવૃત્તિ: જૂન, ૧૯૨૪) પૃષ્ઠ બાવન પર “ધામલ” નામનું લોકગીત છે. તે ગીતનો પરિચય આપતાં શ્રી. મેઘાણીભાઈ લખે છે કે “કાઈ પ્રેમિક ગોવાળ અરજણિયાને એની પરણેલી પ્રેમિકા ચેતવણી આપતી ને મોઢ પામતી સબોધી રહી છે.” શ્રી. મેઘાણીભાઈના કથન પરથી એવું ફલિત થયું લાગે છે કે અરજણિયો ગોવાળ પ્રેમિક છે, પણ મને પરખડાધી (તા. હિંમતનગર, જિલ્લો સાબરકાંઠા) જ. વધીભાઈ મોમીનના પત્ર સાથે “અરજણિયો” મળ્યો છે. તે અંગે તેઓ લખે છે: “આ પત્ર સાથે લોકગીત મોકલું છું. ભારતની આદર્શ સંસ્કૃતિ સર્મા ગામડાં અને તેમાં વસનારા લોકોએ અનેક ગીતો દુહાફપમાં જોડી કાઢેલાં છે. ખૂબ લખ્યા સાદ તાણીને દુહા લલકારે અને અંતે ‘અરજણિયો’ એવો શબ્દ ઉચ્ચારે ત્યારે તો વનસીમમાં મધુર શ્વનિ આરંભાર ફેલાઈ જાય.

આ લોકગીત ‘અરજણિયો’ વિશે અનેક પ્રકારની કંતકથા ચાલે છે. કેટલાક કહે છે કે બાઈજીએ હંમેશાં દારૂના પીંડે દારૂ પીવા જતા અને નશામાં ચક્રવૃત્ત જતી આ ‘અરજણિયો’ લલકારતા ત્યારથી ‘અરજણિયો’ ગીત અસ્તિત્વમાં આવ્યું.

ગામડાંના ‘શેખીલાલા’ પણ બવાઈરામચીલા વગેરેમાં પોતાનો વટરાખવા આ અરજણિયો ગવડાવે !

કેટલાકનું કહેવું એમ છે કે એ ગામડાં નજીક નજીક હતી; વચ્ચે જુહોની સુંદર મટા હતી; જાને ગામડાંના ગોવાળો આ વૃક્ષમટામાં ઢોરો

ચરાવવા બેઠા મળતા, સામેના મામની ગોવાળખાળા વડાની હાંથી
વડવાઈ પકડીને હોંચકા ખામ; આ જોઈ સામેના હોંચકે હોંચકતા
ગોવાળોએ આ દોહરા લલકાર્યા, અને પ્રેમમસ્તીની રેલમહેલ યઈ રહી
આ પ્રેમમસ્તીનું ગીત તે જ ‘અરજણિયો.’

શ્રી. મેઘાણીભાઈ અને શ્રી. વલીભાઈનાં ક્યનોની ઘુલના કરતાં
લેદ એ પારખવા મળે છે કે વલીભાઈ આ ગીતને લોકસાહિત્યના એક
પ્રકાર તરીકે લેખે છે, શ્રી. મેઘાણીભાઈ તે અંગે કશું લખતા નથી.

(૧)

તારમાર ઠીક છ ગાયલ રે ! તારમાર ઠીક છ
ઠીકના ઠેકાણુ વે'લો આવજે; રે અરજણિયો.....

(૨)

હ્યા, પારસી પીઠ આવજે રે ગાયલ રે ! પારસી પીઠ આવજે;
કાચના રિયાલે દારૂ પીમું રે અરજણિયો.....

(૩)

ગૂંજમાં છ ગોળિયો ગાયલ; રે ! ગૂંજમાં જ ગોળિયો
એવી રે ! પરણ્યા ધણીની ગોળિયો રે અરજણિયો.....

(૪)

ખોળ તાર ખોપરું ગાયલ રે ! ખોળ તાર ખોપરું
એવા પરણ્યા ધણીનું છોરું રે ! અરજણિયો

(૫)

ખોળ તાર ખજૂર ગાયલ રે ! ખોળ તાર ખજૂર
એવી પરણ્યા ધણીની મરજ્યા રે ! અરજણિયો.....

ગીત ગાનાર સામેથી ઉત્તર આપનારને ' માયત્ર ' કહે છે.

જેમ ગજવામાં ખીસામાં ગોળાઓ (ખાવાની) હોય અને તે ખાવાની ઇચ્છા થાય તેમ પરપચા ધણીને થોડા પૈસા મળતાં દારૂ પીવાનું મન થઈ જાય છે ને તેથી ધરમાં સદાય હોળી જેમ સંસાર સળગતો રહે છે.

અથવા તો વનસીમમાં ગોવાળ અને ગોવાળના ગજવામાં ગોળાઓ હોય અને ખાવાની પ્રમળ ઇચ્છા થાય તેમ-બને પ્રેમીઓને તેવી જ પ્રમળ મિલનઇચ્છા થાય છે. ઉત્સુકતા બતાવતી તે પ કિત્તો દાખ્યમાં છે.

શિયાળાની કડકડતી ઠંડીમાં ગામડાનાં યુવાન નરનારીઓ ખેતરમાં વહેલી સવારે ચાર (ધાસ) લેવા જાય છે. શિયાળામાં ગ્રામજનોમાં ખજૂર ડોપડું ખાવાનો રિવાજ છે. તેથી સ્ત્રી તેના પોતાના બોળામાં રાખેલ ખજૂર ડોપડું ખાય છે. દારૂડિયાનાં હાકરાની રિવાજ આ જાતની છે.

આ અરજણિયો પેલા દારૂડિયા અને ગોવાળ ગોવાલણ બંનેની પાત્રમુદ્રિને દષ્ટિ સમક્ષ રાખીને રચાયેલો હોય તેવું લાગે છે.

“ ખીસામાં ગોળ હોય ને ખાધા વગર જંપ ન પડે. ” એ કહેવત ખજૂર અને ગોળાઓ માટે લાગુ પડે છે. જે પ્રેમીઓ માટે પણ તે તેટલું જ સાચું છે. દારૂડિયો ને દારૂ માટે પણ તે તેટલું જ ચોખ્ખું છે.



ઉત્તર ગુજરાતનાં છ લોકગીતો

આમાંના પ્રથમ બે ગીતો રાસડાના ઢાળાનાં છે. ચાંદની રાતે સાહેલીઓ સામટી ભિમટીને સવું સવું ચના ગામને રાસ રમાડે છે, ત્યારે ગવાતા રાસડા જેવાં જ. રાસડાને એક રીતે તો સમૂહનૃત્ય જ લેખી શકાય. તો આપણી સગવડ ખાતર આ બે ગીતોને ઓળખવાં હોય તો ઠીક શકીએ કે પ્રથમ બે ગીતો રઢિયાળી રાનના રાસડા છે

આવા રાસડાઓ વિશેષે માનવભાવથી તરખતર હોય છે. તેમાં પ્રણયના પૂરનાં મોજાંઓનાં ભાવ વ્યક્ત થતા હોય છે ત્યારે કવચિત્ કુટુંબજીવનની બીજી બાજુ-કુટુંબજીવનના સંઘર્ષો પણ આસેખાયા હોય છે. પહેલા રાસડામાં એક નવોઢા શ્વશુરગૃહેથી પિયર આવી પોતાના અનુભવની વાન માડે છે:—

શેમડામાં જિગ્યો રંગ ખેવડો રે,

ધોળું રે સાહેલીનું ફૂલ, રાતો રે રંગ ખેવડો રે !

શેમડામાં ભૂંડી મારી સાસુડી રે,

મહિયરિયે દાદાનું હેત, રાતો રે રંગ ખેવડો રે !

શેમડામાં ભૂટો મારો જેઠ રે,

મહિયરિયે મારા વીરાનું હેત, રાતો રે રંગ ખેવડો રે !

શેમડામાં ભૂંડી મારી જેઠાણી રે,

મહિયરિયે બોબાઈનું હેત, રાતો રે રંગ ખેવડો રે !

શેમડામાં ભૂટો મારો દેવરિયો રે,

મહિયરિયે વીરાનું હેત, રાતો રે રંગ ખેવડો રે !

સાસરામાં ભૂડી મારી દેરાણી રે,

મહિયરિયે કાકીનું હેત, રાતો રે રગ ખેવડો રે !

સાસરિયે ભૂડી નણદલડી રે,

મહિયરિયે જે'નીખાનું હેત, રાતો રે રગ ખેવડો રે !

સીમડામાં—સીમમાં ખેવડાનો છાડ જાઓ તેના માથે ફૂલ આવ્યું,
સાહેલીનું ફૂલ સ્વેન રાસડાની પ્રથમ બે પક્ષિઓમાં આખાય રાસડાના
ભાવનની વ્યવના છે અને પક્ષિઓમાં કષ્ટિ ગર્ભિત અર્થધનતા છે

એ સીમડામાં—જહજવનમાં, કુટુબજવનમાં ડાણુ ડાણુ શૂડા ?
સાસુ, જેઠાણી, દેવર, દેરાણી, અને કાપમી અજખામણી નણદલડી
આ નવાંદા સદજપણે પછી તો મહિયર અને સાસરિયાની સરખામણીમાં
સરી પડે છે મહિયરનાં ચ સ્વજનો ત્યારે યાદ આવે છે દાદાનું, વીરાનું,
બાઈનું, ભોળાનું, કાકીનું અને બહેનનાનું હેન યાદ આવે છે એક
તરફ શૂડાપો છે, જવનનું વિષ છે, ખોળ પક્ષે જવનનું અમૂલ્ય અને
મોંઘુ અમૃત.

ખોળ ગીતના પ્રારંભમાં ધન્યતા અનુભવતી બહેનનો અનુભવ
વર્ણવાયો છે યેટનામ દિવસે માનો જણ્યો બાઈબહેનીને મળવા આગ્યો
છે બહેનીને ઘેર બાઈ આવ્યો જણ્યો તે ધેની ધેની ચર્ધ ગઈ એના
હૈયામાંથી ત્યારે આપોઆપ ગીત સરી પડે છે, એ ધન્યતાભર્યા
અનુભવનું

મારવાડમા જાશું મારા ધન રે કેશરિયાલાલ !

એક પૂજો લાવો, ધન રે કેશરિયાલાલ !

પૂજો ગાયને નીચો, ધન રે કેશરિયાલાલ !

પૂજો દઈ દોવા બેઠી, ધન રે કેશરિયાલાલ !

દો'તા દો'તા ચોખા ઉતાર્યા, ધન રે કેશરિયાલાલ !

ચોખ્ખાની ખીર રાંધી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 ખીર ને પ્રીતિ વીર જમાડ્યા, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 વીરે મને ચૂડી લીધી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 ચૂડી પે'રી સાસરિયાં વ્યા'તાં, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 કેડમે આણું આંબું, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 આણે ચૂદડી પલળી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 ચૂદડી મે નેવે સૂકવી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
 ભમતો ભમતો ઠાગ આંચે, ધન રે કેશરિયાલાલ !

આ બહેનીએ ભાષને ખીજ જમાડી અને ભાઈએ બહેનને ચટકદાર ચૂડી લઈ દીધી. ભાઈ ખાબો હાથે બહેનના સાસરેથી તો ન જોરે ને ! અને ત્યાંજે રુ બન્યું ! વીરાએ આપેલ ચૂડી પહેરીને બહેની સાસરે મઈ, વગર આણુ વગાડ્યે.

પછીથી બહેનનું આણુ આ-નુ અતિ દર્પના અને મહિમર-વિશેષનાં અસુધા બહેનની પહેરેલ ચૂદડી-આંમુથી જ તો-પવળી મઈ સૂકવવા ચૂદડીને બહેને નેવે મૂકી. હોંશીની બહેન એ ચૂદડીને પામતી નથી, કેમકે પેલો ઠાગડો તેનો વિસ્પેષ બને છે ને ચૂદડી લઈ જીવી જાય છે આ મીતના એ વિરોધી ભાવો વિગેરે નોંધપાત્ર છે મીતના પ્રારભમાં આનંદની જે હોળી લોભદત્વના ગાયકે મૂકી છે તેનું પૂર્ણવિગમ મૂખ્ય દિવની દરુણ નાનકડી વેદનાથી

પછીનાં બે મીતો લમગીતો છે આ લમગીતો ઉત્તર યુગરાતમાં સૌનાં માનીતાં છે બહણુ, વાણિયા, ઠાકોરો તેમજ બગીચાની જાનોમાં ગવાનાં એ તે સંભળ્યાં છે, તે વિગેરે રીતે આપજે, અને નોંધવું જોઈએ સામાન્ય નાનકડાં લમગીતો દોષ છે, પણ આ લમગીતો આમ વધુ વ્યાપકતાને પામ્યાં છે

બીજું વિશેષ આ લમગીતનું એ કે રઈવર નદીકિનારે પતંગ ઉડાડવા નીકળ્યો છે તે બાવનું. સૌરાષ્ટ્રમાં લમગીતના લોકગીતો ઘણાં છે, તે સપરાવાં પણ છે, પણ પતંગ ઉડાડવાનો બાવ તે લમગીતોમાં હોવાનું મારી જાણમાં નથી.* આ રઈવર પતંગ ઉડાડતો ઉડાડતો ચૂડલા ઉતારવા બેસે છે. તે વેરવા પણ બેસે છે અને છેવટે ચૂડવા :

નદીકિનારે રઈવર પતંગે ઉડાડે,
પવનગોળો છૂટ્યો, પતંગનો દોરો રે છૂટ્યો,
પતંગે ઉડાડે, રઈવર ચૂડલા ઉતારે,
પતંગે ઉડાડે, રઈવર ચૂડલા વેરવે,
પતંગે ઉડાડે, રઈવર ચૂડલા મુકાવે,

પછી ગીતમાં જુદા જુદા અલકારોનાં નામ પૂરીને ગીતને માનારી બાઈએ લખાવે છે, જેમકે કાલા મુકાવે, કાળી મુકાવે આ ગીતની છેવટની પંક્તિ આમ છે.—

સમુવહિ આમી લાબ્યો, તમારો સામી,
પતંગે ઉડાડે, નદીકિનાર રઈવર પતંગે ઉડાડે.

બીજા લમગીતોમાં પણ લમનો લાડીલો બાવ કે સૌભાગ્ય-ચિહ્નમાં ચૂડલાનું સ્થાન અમ છે લોકગીતના ગાયકોને વ્યજનાનો કદીય તોરો પડ્યો નથી રૂપકો માટે તેમણે બહુ આધે દષ્ટિ પણ

* મારા મુ. રોહી મિત્ર પ્રા. વજરાચ દેસાઈએ ખેડા જિલ્લાના લોક-ગીતમાં આવેલો બાવ ઠપાક સાલજ્યાનું તેમણે અને કહ્યું છે. સ્વ. ડૉ. હરિ-પ્રસાદ વ દેસાઈએ અલકારિય જાતિનાં લમગીતો એકઠાં કરીને લેખરૂપે પ્રગટ કર્યાં છે, તેમાં આ કથના બેવા મળી છે. ઉત્તર ગુજરાતના ખેડેલનાં લમ-ગીતોમાં પણ આવું જ લમગીત હમણાં મને સાપડ્યું છે.

થવા દેતો નથી. અતે એનું થયું શું? એની પાછળ છેવટે આંસુ
સારનાર એક માત્ર હાડિયો જ રહ્યો છે. તેણે જ જવજ્ઞાનું તર્પણ કર્યું.

હેતુ ગીત મરણિયાનું છે. ઉત્તર ગુજરાતમાં કચ્છના રણને સુખ
સેતી કાંધીના મુશ્કેલીમાં પૂરીની વસ્તી ઠીક ઠીક છે. તૂરીઓ અહીંમાં
સેખાય છે. તેઓ લોકગીત ગાવાનો ધધો કરી પેટગુજારે કરે છે. તેઓ
રાવણદુષ્ટા પર ગીતો ગાતા નથી, પણ 'દીકર' જેવા રાવણદુષ્ટા પર
ગાય છે. બળશાના નવાજ સાહેબખાનનો મરણિયો જેથીંગા બિખાજ
તૂરીએ રણના કાંઠા પરના બઝાર ગામમાં મને ગાઈ સંભળાવેલો.

પ્રથમ તો મરણિયામાં લોકકવિ રામસાહેબનું ચિત્ર શ્રીતાના
માનસચ્છામાં ખૂં કરવા લાગે છે—

રાજા સાહેબખાન રૂખાળા, મોતી ગજરા હેમની માળા,
બંકા સૂબા બળશાવાળા !
હેમર હાથીઓ ઝૂરે, દેહોતનો દરબાર, ઝૂરે બળશાનાં ઝાડમાં,
તે સૌ વખાણે સરદાર !
પલમાં રાજા હાલ્યા પરવારી, ચંદરઘટા ચડી અસવારી,
ગામ રૂએ નર ને નારી,
છતરધારી સરદારજી છતન, વખાણું-અઠાર વરણ !
બધંબે બેઠી રૂએ બંગલે, ને ઉતરા અબરકણ,
વાતું પોતી ધાંગે વડવાણે !

● શ્રી બલગનદાસ કેલામે 'હમારી આદિમ જાતિયાં' નામના ગ્રંથમાં
તૂરીની વસ્તી ગુજરાત સૌરાષ્ટ્રમાં એસોની અહલી બણાવી છે તે કથન
મને પોતાને સ્વયં જૂન વેચ્યું લાગે છે. સૌરાષ્ટ્રમાં અને ઉત્તર ગુજરાતમાં
તૂરીઓ પ્રાચીન રૂખામાં છે.

જૂનો ગઢ રાધનપર બહો, એ બંકા સાહેબખાન બબણા !
રતનબાઈ ઠંકરાણી વાટુ બેવે, દેહોતનો હરબાર બેતબેતામાં
બતા રિયા, હેયાના ઉતાર્યા હાર !

તરત હાર મોતીના તોડ્યા, સોનેરી બિતર્યા ચૂકા !
રાજા સાહેબખાન રૂપાળા, મોતી ગજરા હેમની માળા,
બંકા સુખા બબણાવાળા

આ કરુણપ્રશસ્તિ કાવ્યમાં સાહેબખાનના મુણેની પ્રશસા આં
સામે પહે લોકોને તેમના મૃત્યુથી વાગેન આઘાતજ લોકકવિ
વર્ણવ્યા છે ! રતનમાઈને જે અકથ્ય દુઃખ થયુ તે દુખના બાવડ
કવિ ઉત્કટ તત્ત્વ બતાવી શક્યા નથી માત્ર એક પદ્ધતિમાં લોકકવિ
કહે છે - 'તસ્ત હાય મોતીના તોડ્યા, સોનેરી બિતર્યા ચૂકા !'

લોકગીતના ગાયકો ગઈ કાનનાં વર્તમાનપત્રો સમ હતા આવા
માનવજીવનના નાનામોટા બધા જ પ્રસંગોને તેઓએ લોકજીવન માટે
બાવિના ધૂરવતા પૂરમાં વણીડ્યા રાખ્યા છે જવલો ! કાકરિયો જુવાનાં
એને કાણુ ઓળખત આજે, તો એ લોકગાયકે તેની પર કરુણરસબધુ
ગીત ન રચ્યુ હોત તો ?

આથી ગુજરાતનાં લોકગીતો માટે એક વિચાર મૂકે છે. સાંભળ્યું
કે કેન્ડાઈ પાસે ખૂન ખૂન લોકગીતો છે. તેમાંના ધણાપ સધરાઈ
ગયાં છે, હેલાં સો વરસની સતત મહેનત ખજો. જગતમાં તેમનાં
લોકગીતો જોટ્યાં લોકગીતો બાગ્યેજ કાઈ દેશ પાસે દશે, અને સંધ-
રાયાં દશે એમ કરવામાં ત્યાંના સૌ કાંઈ જ કામે લાગ્યા દશે ને !
ધમધમાટ વેગે જતી રેલગાડીનો પ્રવાસી એકાદ લોકગીતની નવી પદ્ધતિ
સાંભળે કે બગનચેલામાંથી કાળજીની ચગરખી કાઢી તે નોધી લેતો જ
દશે ને !

નથી નાખી પડખેથીજ રૂપક ઉપાડી લીધું આ લમખોતમાં પારેવડું
છે તે નવપરિણીત મુખ્યાના રૂપક રથાને તો નહિ હોય ?

પાવા તે ગઢનું પારેવડું, માણુરાજ !

જઈ જોકું ધરજીને શેઠે, રે ચૂડલો ચતુરે રંગ્યો,
હાથીઘંતનો રે, માણુરાજ !

પે'રા સમુવઠ ચૂડલો, ચૂડલો ચતુરે રંગ્યો !
હાથીઘંતનો રે, માણુરાજ !

પે'રાવે લખમીમાઈનો વીર રે, ચૂડલો ચતુરે રંગ્યો !
હાથીઘંતનો રે, માણુરાજ !

પાવા તે ગઢનું પારેવડું, માણુરાજ !

એ ચતુરવઠનો રઘવિર, વઠિરાણી લાયા,

અવગના રંગેન ચૂડનાના પ્રશસાવેજી કન્યાને વર માટે મમત્વ
જગાડવાનું દ્વીકાય જણે જનનડીઓ ન કરી રહી હોય એવું આ
આ ગીત પરથી જાણે છે કન્યાને પારેવડું કહીને લોકગીતના ગાયકે
લાવપૂણીમાં હા કરી નાખી છે ! મોઢલક મદિયર મેનીને પરને પ્રિય
કરવા નીકળેલ મુખ્યાને એથી વધુ કયું યોગ્ય રૂપક આપી શકાય ?

આ નિમ્નલિખિત ગીત છે, પરંપરા પ્રેમે જગાડેલ દર્દનું અને આઠનું
ચરાદરીના જવનાને કરમાયેલ થાય છે કે દેવના મેળે ન જતો આપડનાં
મેળે દેવજીવારના મેળામાં તું કાકાની સાથે વેર રાખીને જઈશ ? જવલા,
તું પ્રેમમાં પડ્યો છે કાકા સાથે માટે મા પણ તને થોડી
ધણી રીખ આપે છે પણ તું કર્યા કોઈને ગણકાવવા તંબાર છે ! નો,
તને અ કાસવાણીના જેવું 'ના'નું ફરમાન છે —

દેવને મેળે ન જઈશ રે જવલા, કાકામત્રીજના વેર રે જવલા,
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !

તારા કાકાની ડેહીએ અહ્યા, હીંચનો વાગે ઢાલ,
 રમવા આવ રે જવલા ! મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
 તારા કાકાને કાળરો રે ઘોરો, કાંઈ ચડયાનો કાઠ જવલાં
 મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
 દા'ડે દા'ડે જવોલ કાકીઓ કે'તો, ને લેળે મળ્યે લાગે કાન !
 મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
 બાર બારાળો ચોરણો જવાને ને કેડિયુ કઠાકઠ !
 મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
 તારી ગોઠણકાકી તને ગામમાં ગોતે ને જવલો મેળામાંય !
 મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
 તારી માડી તને એમ કે' છે કે તરકડીને શું મોહ્યો,
 ઢાંગલી જેવી ઢલને શું મોહ્યો !
 છેતરીને શું છેલને માર્યો !
 જવલાને મારી જાળમાં નાખ્યો, ત્યારે હાડિયો હાલાં ગાય !
 મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
 (મેળે) જાતા જવોલ ઘોડલે જાતા, વળતાં ખેયા માયાં !
 તારી ગોઠણે જ્યારે જાણ્યુ ત્યારે એમ કહ્યું કે,
 છેલને છેતરીને શું કામ માર્યા રે !

જવવાએ ત્રેમની સામે હોડમાં માથુ મેટ્યુ ખને મગયો કમોતે.
 માએ કપડાનાં વેણ કહ્યાં, 'તરકડીને જવલા, શું જોઈ વારી ગયો છે !'
 પણ જવયો તે વેણને ઉવેખીને તેના ત્રેમતંત્રમાંથી એકને પણ દીધું

વનમેં બાલે રાજ કોયલડી રે !

[અહીં ત્રણ લોકગીતો આપવામાં આવ્યાં છે તે ગવાતાં સંક્ષિપ્ત છે, વીરમગમ તાલુકાના કાંઠાવિસ્તારમાંના રહેમણપુર ગામમાં.]

ગામ કોળીઓનું અને હરિજનનું. ગીત ઉતરાવનાર બહેનને કઈ તાતિનાં કહેવાં ? નામ પારવતીબહેન.

પ્રારંભમાં તો તેમણે શું સાતમઆઠમનાં ગાણાં મંડાવાં છે એમ પૂછ્યું.

હા કહી, અને તેમણે કૃષ્ણગોપીનાં ગાણાં મંડાવ્યાં તે મેં ખૂંધું, ખોટી શરમ આડેથી ચાલી ગઈ અને ત્યારે ગીતો મંડાવ્યાં કુર્કુબ-જીવનનાં. તેમાંનાં આ ત્રણ ગીતો અહીં આપ્યાં છે:—

(૧)

કે રસિયાં, વાડીમાં પડ્યું રે નવરંજ લાકડું રે લોલ !
 કે રસિયાં, તેની રે ઘડાવો નવરંગ ચાંખડી રે લોલ !
 કે રસિયાં, લીલી રે ચાંખડીએ રડ્યાખડ્યા પડ્યા રે લોલ !
 કે રસિયાં, અમને રે લાગ્યું તમને ઝાઝી ખમાયુ રે લોલ !
 કે રસિયાં, અણિયાળીને પાધર પારસ પીપળો રે લોલ !
 કે રસિયાં, તિયાં રે બંધાવો રે ડાલર હીચકો રે લોલ !
 કે રસિયાં, હીંચકડો તૂટ્યો ને પડિયલ બે જણાં રે લોલ !
 કે રસિયાં, અમને રે લાગ્યું, તમને ઝાઝી ખમાયું રે લોલ !
 કે રસિયાં, રીસે બળતી કવં છું, તમને ઘણી ખમાયું રે લોલ !
 કે રસિયાં, મારી હિંદવાણીનો ઝગડો પૂરો નેં પડે રે લોલ !
 કે રસિયાં, મારા જલકૂલિયાનો હાર તોડ્યો નેં તૂટે રે લોલ !

(૨)

ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
 રેશમિયો રોમાલ લાયો;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ !
 ધરમે નથી શેર બંટીનો દાણો,
 નથી રે દળવા ઘંટી;
 માડી મારે શેનો રેશમિયો રોમાલ !
 ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
 રેશમિયો રોમાલ લાયો;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 ઝોરડા રે વેચ્યા, ઝોશરી રે વેચી,
 વેચીને મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
 રેશમિયો રોમાલ લાયો;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 ગોધા રે વેચ્યા, સાંતીડાં વેચ્યાં,
 વેચ્યાં રે સાંતીનાં નેતર;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
 રેશમિયો રોમાલ લાયો;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 છોકરાં રે વેચ્યાં, ઝોરડા રે વેચ્યા,

વેચ્યા રે ઘરના જોધા,
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
 રેશમિયો રોમાલ લાયો;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ !
 સાંતીડાં વેચ્યાં રે, છોકરાં રે વેચ્યાં,
 વેચ્યો રે ઘરનો ધણ;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
 ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
 રેશમિયો રોમાલ લાયો;
 માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !

(૭)

પગ પરમાણે ઠહલાં તારે પે'રવાં છે કે નેં ?
 જાલાવાડ જળલી તારે ચાલવું છે કે નેં ?
 ડાક પરમાણે હાંહડી તારે પે'રવી છે કે નેં ?
 પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !
 જાલાવાડ જળલી તારે ચાલવું છે કે નેં ?
 ડાક પરમાણે ડાણિયું તારે પે'રવું છે કે નેં ?
 પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !
 જાલાવાડ જળલી તારે ચાલવું છે કે નેં ?
 નાક પરમાણે નથડી તારે પે'રવી છે કે નેં ?
 પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

જાલાવાડ બળલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
 કેડય પરમાણે ઘાઘરો તારે પે'રવો છે કે નૈં ?
 પે'રવો છે ભઈ પે'રવો છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

જાલાવાડ બળલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
 હાથ પરમાણે ચૂંડિયું તારે પે'રવી છે કે નૈં ?
 પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

જાલાવાડ બળલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
 ડિલ પરમાણે પોલકું તારે પે'રવું છે કે નૈં ?
 પે'રવું છે ભઈ પે'રવું છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

જાલાવાડ બળલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
 ડિલ પરમાણે જોડણી તારે જોડવી છે કે નૈં ?
 જોડવી ॥ ભઈ જોડવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

જાલાવાડ બળલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?



श्रामगीतो और लोकगीतों में हमने यही भेद किया है कि सब प्रकार के गीत, जो व्यक्ति-विशेष की रचनाएँ नहीं हैं, बल्कि लोक की परंपरागत रचनाएँ हैं। लोकगीत हैं। गाँव के गीत-ग्रामीण जीवन के गीत-ग्रामगीत हैं। एक का क्षेत्र विस्तृत है, दूसरे का संकीर्ण। लोकगीतों में श्रामगीत आ जाते हैं, पर श्रामगीतों में लोकगीत नहीं आते। दोनों में व्याप्यव्यापक का संबंध है।

स्व सूर्यकिरण पारीक

તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો

તા. ૨૪-૧-૧૪ના રોજ ઘોળકામાં પઢારના બારોટોની હું જોત્યે ગયો. તેમાં પ્રથમ અને શ્રી વિષ્ણુરામ કૃષ્ણરામ બારોટનો મિલાપ કરાવ્યો. અમારા પચદશીક શ્રી પરતાપભાઈ ભરવાડ. તેઓ અને તેમના બારોટવાસમાં ખારાકૂવા પાસે હેળીચકલામાં લઈ ગયા ને ત્યાં ત્યારે આગણામાં ઢાલ ઢખૂરી રજો હતો. સુઢરીઓ વિચાળ ઉઢાડા ફગિયામાં લહેકાબરી હલકે તાળીઓ પાડીને હળવા ને હીસા કઢે પગના ઢેકા દઈ ને લમગીતો ગાઈ રહી હતી અને ફગિયુ વજોટીને ગયા એક ઓરડામાં. ઓરડામાં અમારી ઓળખ સૌને આપી શ્રી. પરતાપભાઈએ, અને ઘોડી આપી વિષ્ણુભાઈએ.

મારે પઢારના વહીવચાના ચોપડાઓ જોઈતા હતા. તેમનાં કુળો અને શાખની વાતો જોઈતી હતી તે તો પૂરેપૂરી મળશે તેવી આશા શ્રી. વિષ્ણુભાઈને મળ્યા પછી બધાણી ને અમે જાઢવા ખીજ બારોટોને ત્યાં, પણ વિષ્ણુભાઈ અમને લઈ ચલ્યા હેવટે તેમના ઘેર.

તેમણે તેમની જોડકાં ઉપર અમને જોસાડ્યા, ને હાથવાણું કાઢ્યું ને પૂછ્યું : ‘તમારામાંથી કોઈને બળવતાં આવડે હે ?’

અમે ના પાડી.

‘ત્યારે સાંભળશે ?’ તેઓ જોલ્યા.

મે તેમને પૂછ્યું : ‘લોકગીતો સળળાવશે, બારોટશ ?’

‘ઢેવા ?’ તેઓ જોલ્યા.

મારી સાથે અમદાવાદ વાણિજ્ય મહાવિદ્યાલયના અંગ્રેજીના અધ્યાપક શ્રી જી કે જી જોશી હતા તેમણે મને કહ્યું : ‘તેમને

શ્રમજીવીનાં લોકગીતો ગાવાનું કહેાને .

તે પ્રમાણે શ્રી. વિષ્ણુભાઈને કથું ને તેમણે ‘ તમ્મરનાં લોકડાંનેા ભારો ’ ગાયું. એક વખત નહીં, બે વખત, સમસ ને ભાવવાહી હલકથી. પહેલી વખત વાગ્ગ પર, બીજી વાર કોરું જ.

આ ગીત મને સાંપડયું છે, સાહિત્યના અભ્યાસી ભાઈશ્રી વિષ્ણુ-ભાઈ પાસેથી. તેમણે જે ભાષામાં ગાયું તે જ ભાષામાં હું તેને અંગ્રે મૂકું છું. તેની ભાષા લદ્દ વર્ગના લોકોની ભાષા છે. ભાષા પરથી, તેની કાવ્યકલા પરથી, ગ્રાસની મેગવણી જોનાં તો જણે કાંઈ વિદ્યમાન કવિની કૃતિ હોય તેવું લાગે છે.

પણ આ લોકગીત હશે તેમ માનવાને લક્ષ્યાઈએ છીએ, કેમકે આ ગીતમાં લોકના સમૂહજીવનનું સુંદર ચિત્ર છે. તમ્મર—ભાસના દરિયાકાંઠા પર થતો એક પ્રકારનો છોડ લેવા સમૂહમાં સૌ જાય છે અને આખાય લોકસમૂહને દિનભરનો જે પરિશ્રમ ભોગવવો પડે છે તે સમૂહ-જીવનનું જે ચિત્રણ જોવા મળે છે, તેથી માનવા લક્ષ્યાઈએ કે આ લોકગીત હોય ! આ ગીત મહુવાના દરિયાકાંઠે ફરી ખવાસજોનાં મેંએ, ત્યાર પછી, સાંભળવા મળ્યું બે વર્ષ પછી.

બાકી લોકગીતની ભાષા લોકોની નથી રહી ગ્રાસ ને કાવ્ય-પંક્તિઓની ગોઠવણી તો સાવ અઘનન લાગે છે. માત્ર સમૂહજીવનની અભિવ્યક્તિ અને વિષય જ લોકભાવે છે કે તે લોકગીત હશે.

હ્યો, હ્યો, તમ્મરનાં લોકડાંનેા ભારો,
એ તમ્મરનો ભારો !

સવારે ઊઠીને અમે દરિયે જઈએ,
ગોઠણ સુધીના ગારામાં પડીએ,
તો ચે ન આવતો વારો !
એ તમ્મરનો ભારો !

હ્યો, હ્યો, તમ્ભરનાં લાકડાંનો ભારો !
 એ તમ્ભરનો ભારો !

હાથમાં કુવાડી તે માથે છે પોટલા !
 થોડાં થોડાં મર્યાં
 ને ટાઢા છે રોટલા,
 બપોરે ખાવાનો વારો !
 એ તમ્ભરનો ભારો !

હ્યો, હ્યો, તમ્ભરનાં લાકડાંનો ભારો !
 એ તમ્ભરનો ભારો !

જેમતેમ, ઝટપટ ઝટપટ કાપીકૂપીને,
 તમ્ભરનાં લાકડાં લેજાં કરીને,
 સીંદરીએ બાંધવાનો વારો !
 એ તમ્ભરનો ભારો !

હ્યો, હ્યો, તમ્ભરનાં લાકડાંનો ભારો !
 એ તમ્ભરનો ભારો !

સાંજ પડે તારે ઘર લેજાં થઈને,
 ધાત્રીપાકીને પછે બિંધી જઈએ,
 બીજે દિ' વેચવાનો આરો !
 એ તમ્ભરનો ભારો !

ગુજલડી રે !

શ્રમજીવનપ્રેરિત લોકગીતો ગુજરાતમાં ક્યાં ઓછાં છે ? પદારોનાં લોકગીતોમાં ‘ ચુર્નલાલ મોઝડી-મળો ’ તેમનાં દરુણ જીવનનું ગીત છે. લાલમાં દુકાળ પડે છે ત્યારે માણસને ખાવાના દાણા મળે, પણ ઢોંગને ખાવાના સાંસા પડે છે ત્યારે દરિયાના કડિ આપોઆપ ઊગતું ‘ તમ્બર ’ (એક પ્રકારનું ઢોરને ખાવાનું ઘાસ) આશિષરૂપ બને છે, અને તે તમ્બરનાં ગીત બાલના દરિયાકાંઠા પર લોકની જીમ પર રમતાં જોવા મળે છે.

આ ગીત પણ શ્રમજીવોનાં ગીત છે સરકારી બીડમાં આઝાબીઝ ઘાસ ઊર્ખાં છે, તો તેની દાંડી રોજ નીકળી છે. સ્વાભાવિક જ છે કે ઊભડ લોકોને, મજૂરોને તે વાઢવાની તાલાવેલી જન્મે, ઢેમકે રોજ જરા ત્યાં વધુ હોય, આથી આવી એક ગુજલડીને આ બીડ વાઢવાની આનંદિક ઇચ્છા જન્મે છે, અને તે બાઈના મનમાં આવતા એકેએક વિચાર કેટલા અપ્રેરિત આ ગીતમાં મવાયા છે !

સોના રૂપાનું દાતરડું રે લોલ,
મારા વાલમાણ રે લોલ,
સરકારી બીડલાં વાઢવાં ગુજલડી રે !

અવા બચેરનું દાતરડું રે લોલ,
હીરાના બંધિયા હાથ,
સરકારી બીડલાં વાઢવાં, ગુજલડી રે !

પરણ્યે વાઢયા પાંચ પૂરિયા રે લોલ,
 મેં રે વાઢી છે ખીડ, રે મારા વાલમા,
 સરકારી ખીડલાં વાઢવાં, શુજલડી રે !

પરણ્યો ઉપાડીને લઈ ગિયો,
 હું રે રઈ વનરા વચ જો, રે મારા વાલમા !
 સરકારી ખીડલાં વાઢવાં, શુજલડી રે !

વાટે નીકળ્યા વટેમારશુ રે લોલ,
 ભઈ વીર, ભારો ચડાવ્ય રે, મારા વાલમા !
 સરકારી ખીડલાં વાઢવાં, શુજલડી રે !

ભારો ચડવું તારા યોલડે રે લોલ,
 તું છો મારા ઘસઢાની નાર,
 રે મારા વાલમા હવે નૈ જવં ખીડ વાઢવા રે લોલ !

ફટ બૂડા ને ફટે પાપિયા,
 તું છો મારો માડી-ભયો વીર,
 રે મારા વાલમા, હવે નૈ જવં ખીડ વાઢવા રે લોલ !



હોલો રાણો એકલો

દિવાસાની સાંજના ૪-૩૦આશરે એલિસપ્રિન્સ વિત્તારની પશ્ચિમ છેાની ગુનગાઈની ટેકરી ટેકરીના તળિયામાં મારવાડી વાધરીનો મોટો ડેરો એના પ્રાંગણમાં ખુલ્લા વિદ્યાળ જેવો, ઉમમણી દિવાના ડાના હાથે જમણા હાથ તરફ દસદોશીનાં ગામડાનાં ઠાઠગડાની ત્રીસ ખોરડાની વસાહત વસાહતના આયમણા હેડે ઉવાડી જમીન.

કાળા દિવાન વાદળીએ ધેગથેલું આકાશ મુજબ સાથે કાગુડી વાદળીઓ સાતતાળી લેની હોવાને કારણે આ ભોમ પર ધડીવારે પથરાતી ઇય, તો ધડીબર આવતી જતી વર્ષાગુ તડકી

કાળા દિવાન વાદળીની ઝાંવમાં, આમસના ઝાપગ નીચે, દિવાસાની આંજો આ ધગતી પગ પેલી વસાહતની કુવેવડીઓ ટકુકી રહી છે ટોળે મળી છે, લામી લામી હાગમાં એક સામગી ચાગીશથી પચાસ કુવેવડીઓ

કુવડગેગના ધાવરા બાગ બાગ હાથ કાપ. તેમાં સમાઈમયું છે ટોળે મળીને પગનો ડેકા દઈને, તાળીઓના તાન સાથે અંમના અણુએ અણને નચાવની કુવેવડીઓ પેલી વાદળીને કહે છે

ઓતર રે દખણ રે ચડી એણી વાદળી,
મેવલો રે વરચ્યો, એણા એણા મોતિયે,
મેવલો રે વરસાવશું આપણે બે છુનુ રે !
મેવલો વરસાવશું આપણે બે છુનુ રે !
મેવલો વરસાવનાર, હોલો રાણો એકલો !

હોળા જોડાવશું આપણે જે પુનું ;
 હોળાનો જોડનાર હોલો રાણો એકલો !
 ડાંગર પૂંખાવશું આપણે જે પુનું ;
 ડાંગરનો પૂંખનાર હોલો રાણો એકલો !
 ધરુનો તણાવશું આપણે જે જણાં ;
 ધરુનો તણનાર, હોલો રાણો એકલો !
 ડાંગર રોપાવશું આપણે જે જણાં ;
 ડાંગરનો રોપનાર, હોલો રાણો એકલો !
 બીલાં રે તાણશું અમે જે પુનું ;
 બીલાંનો તાણનાર, હોલો રાણો એકલો !
 ડાંગર વાઢશું અમે જે પુનું ;
 ડાંગરનો વાઢનાર, હોલો રાણો એકલો !
 ડાંગર લઈશું અમે જે પુનું ;
 ડાંગરનો લેનાર, હોલો રાણો એકલો !
 ડાંગર ખાંડીશું અમે જે પુનું ;
 ડાંગરનો ખાંડનાર, હોલો રાણો એકલો !
 ચોખલિયા સંધીશું અમે જે પુનું ;
 ચોખલિયાનો સંધનાર, હોલો રાણો એકલો !
 ચોખા જમીશું અમે જે જણીઓ ;
 ચોખલિયાનો જમનાર, હોલો રાણો એકલો !

જે બહેનો—જે શોક્યો સમજને હમીગમીને છવનમાં ને કામમાં
 આદર્શ સંધજીવન ગુમરે છે તેનો અગ્રહો ખ્યાલ આ ગીત આપે છે.

આતરદખણ વાદળી ચડી, મેવલો આગ્યો, દણ જોડ્યાં, ડાંગર
 રોપી, ધરુ તૈયાર થયાં અને તેને ખેત્યાં, ધરતીમાંથી—એક ક્યારણમાંથી !

ધરુને ફગી વાગ રોપ્યા ! બહોળા પાણી વગર ડાંગરનો મોલ લેનાય નહિ તેથી પગનાં લાગ્યાં લાગ્યાં ઝીંઝાં પાણી ખેંચવા માટે લાગ્યાં ડાંગરને શેડાની નીચ્છાંથી વહાં જતાં નીચેને તેના વડે ખેંચી ડાંગરને ઉઠેરી ડાંગર પાણી પીને તૈયાર થઈ ગયું ત્યારે મ્યાન્ડામાંથી વાડીને તેને લેવાનો સમય આવી પડેલો ત્યારે તે બે છુનું જ તેને વાડીને ઘેરે નાચી ખાંણિયામાં ડાંગરને નાખીને ખડી ! ત્યાં તો આજનાં હનર નથી પહોંચ્યાં ડાંગરને ખાંડી નાખીને એ આ મરવા જામમળી જો કે પખાળી હશે કે કમોહની જન હશે ! જે હેલ તે, પણ તે તો મીઠા લાગવ ના જ ! આપપેદાશની છે આ જ તો ! મોખણિયા મધાય છે, જમાય છે, પણ ચેનો હોનો ગલો તો એને જ મહે છે

સમયુક્તા ચુદશ્ચવનનું આથી વધુ ફક્ક સજ્જિત આતેખી સમય ! લોકોના ન વચ્ચે જાવને સજ્જના ચલુતાર વગર લોકમંત્રિએ મૂત્ત કાવામાં કમાવ કરી છે ! અને એમનું પતિને માટે ૩૫૦ પણ પોલ્યુ ! હોનો રાજો ! ઝાડના છૂંદા પર એકનું બેઠો મહેનાર પખીકુ ! માર્કનો સમય પણ તે પખીને ન ગમે ! ધર્મા બમ્બે નાગ, તોય એમનું જીવન ચુલગનારને લોકમંત્રિએ મિત્રાન્યો હોવા ગણના સંબોધને !

આ બે છુનુંમાં માનવસ્વભાવનું સ્વચ્છ મિત્ર જોવા મળે છે ખેટા વેરવ વેડા પણ તેમનામાં નથી જોવા મળે લોકમંત્રિને ડાંગ વાવી દોલા રાણા વગર ને મધીને જમ્યાં દોલા રાણા વગર ! મનવ કેવો છે તેના સ્વભાવનું વાસ્તવચિત્ર (True Picture) કવિએ ઉત્કૃષ્ટ પદ્ધિમાં ફક્ક અપ્યુ છે, જરાય વેરવાસમાં ઝીંઝાં વગર !

અને ઝીંઝાં ગતિ (Dynamic Element) પણ મળી છે ! એ પછી એ મો એ પ મિત્ર વાત ને એ નાખતી અવલોકનમાં ચહેલી વાતના સમયથી મળીને વિદ્યા સુચીના માગને કવિએ માર્ક નાખે અ મજૂતગીની પદ્ધિએ મ.

અને એ માર્કનું મળે પેલી માત્ર ફક્કતેલીએ જ મળતી ન

હોય । તે ટોળે મળી, ધાધરા ધુમાવતી, પાલવના છોડાનું પેરેશ્યૂટ
 જનાવતી જતી, કાર્યના લશ્પરે જળતી, પક્ષિ કંઠમાંથી ઉચ્ચારે છે ત્યારે
 જે કુવેનડીને ટોળામાંથી, સમૂદ્રમાંથી પેના ઢોન વમાડતા રાવન-તરફ
 હસેને જ તે જોઈ સાથે મળીને નૃત્યમાં પગના તાનમાં ઇગિતો વડે
 અભિનય ખતાવી પક્ષિના આખા ય મર્મને શ્રોતાની સામે ધરી દે છે ।
 એમ હશે મનમાં કે સમૂદ્રમાં લાના લસગદા જેવા સાદમાં ગવાતી આ
 પક્ષિઓનો તો કદાચ અર્થક્રાંતિ ન થાય ને શ્રોતા ગીતને ન સમજે
 માટે અભિનય તેમની મદદાગે આવી જીમશે । એવો જ કંઈ આમાં
 વિચાર હશે ?

ગુજરાતનાં શ્રમણાં અનેક ગીતોમાં સંગીત, નૃત્ય અને અભિનય
 સાથે જ હોય છે હોશીની કુવેનડીઓ હોય તો ગીતનો પૂરેપૂરો રસ
 સ્વાદ શ્રોતાને આ ત્રણે દ્વાર મળાડે

દિવાસાની સાંજે એકના હોવા રાજ્યને મે માત્ર સંજીવ્યો નહિ,
 પણ તેની એકનતા આ ગવાતા ગીત દ્વારા મૂર્ત થતી જોઈ

પેથી પક્ષિ ધણીય વાર જાનમાં રજુકી જાય છે - હોમો રાજ્યો
 એકમે ।

અને તેમનું નૃત્ય ? નજર સામે તરવરે છે ।

અભિનય મનમાં ધર કરી જોડેન છે ।

આ જ ગુજરાતનાં ગ્રામનોક અને શ્રમગીતોનું જાદું ।

આ જ અભિનયગીત વાગકને કડિ જીટડિયા મદાદેવ પાસેના
 વાધજીપુર ગામે મવાતું સંજીવ્ય છે, અભિનય સાથે પહારણો પણ આ
 અભિનયગીત ગાય જ

મેવલો આવે ને મે લાવે !

આદિમાનવ પ્રકૃતિના ખોળે ખેંચે હતો, ગમનો હતો ત્યાં
તેને પ્રકૃતિના વિવિધ તત્ત્વોમાં શ્રદ્ધા હતી એ જ શ્રદ્ધામાંથી તે તત્ત્વો
પ્રત્યે તેને જામી જતી અને તેની આમ ઉપાસના શરૂ થઈ

આદિમાનવે ઉભાને આરાધી, વીગળાને પૂજી શરૂ કરી, વર્ષાના
દેવના સ્તવનો પ્રયાગ, કેમકે આદિમાનવ વિશ્વસીને ખેતી કરતો થયે
એ સુખ પામ્યો તો ન જ હતો, તેથી ધોમધખના ઉનાળા પછી તે
આકુળગાકુળ થતો ધમ્મી પછુ એ કૃષ્ણ જોઈતી જ આકુળઆકુળ
થતી તેના અગેઅગમાં આવ વ્યાપની અને તેમાંથી શાના મેગવવાની
તેનેય ઈચ્છા જ નહોતી.

તપના દિવસોમાં ધત્તીપુત્રોએ આકાશના ઝડ માથે આવીને
રિધ થતાં વાદળોની સામે ક્યાંય વાગ સુવી નજર મેગવી રાખી.
મનમાં લાલ્લી-વાહ્યોને તેમણે સ્વભાષા અને આ કહેલીના અને
જોણના જાણુગર માથે શ્રદ્ધા ગાળી, પછુ તોય ધરતીને તરમે મારને
અને ખેડોને મૂઝવનો મેવ ધરાગ ધત્તી પર ન આવજી લાગ્યો ત્યારે
ધરતીપુત્રોએ ગાધુ.

મેવલો આવે ને મે લાવે,

મલક જાણે મેવલો,

ઝોર્યાંતા મેવલે છેતર્યા રે !

ગામના મુતાર વાટ જોઈ રિયા,

એને ઝોરણી પૂર્યાની ઘણી હામ રે,

ઝોર્યાંતા મેવલે છેતર્યા રે !

અધેળી ગામના ખેડુ વાટ જોઈ રિ'યા,
એને ઓળિયા જોડયાની ઘણી હામ રે,
ઓર્ચીતાં મેવલે છેતર્યા રે !

અધેળી ગામની વવાડુ વાટ જોઈ ર'ઈ,
એને બાતું દેવાની ઘણી હામ રે,
ઓર્ચીતાં મેવલે છેતર્યા રે !

અધેળી ગામની દીકરીયું વાટું જોઈ ર'ઈ,
એને ભરત ભરવાની ઘણી હામ રે,
ઓર્ચીતાં મેવલે છેતર્યા રે !

ઓર્ચીતાં મેહુલયે આવીને છેતરી રહ્યો છે. અધેળી ગામના મુયાર એની રાહ જોતો ખેસી રહ્યો હતો, કેમકે મેઘ વરસ્યે ખી વાવવા જતી વખતે ઓરણિયા જોઈએ તે ધડવાની તેને ઘણી હોંશ હતી. પણ આ તો એકાએક આવી પહોંચ્યો ને મુયારની મનઃકામના મનમાં જ રહી ગઈ. ખેડૂતને ઓળિયા જોડયાની હામ હતી તે પણ મનમાં જ રહી ગઈ. ઓળિયે ગયેલ પતિને, દિયરને, જેકને ભાત આપવા જવાની હામવાળી જુવાન વહુવાડુ પણ ખિન્ન બની અને હિનાળાના લાંબા દિવસમાં સાંગા-માંચીએ ચડીને ભરત ભરતી દીકરીઓની પણ મનઃકામના મનમાં જ રહી ગઈ, કેમકે મેહુલે ઓર્ચીતાં છેતર્યા.

અને ત્યાં તો જસતરા ઉધાડ નીકળ્યો. કામે લાગેલ વહુવાડુઓ અને દીકરીઓ હવે જરા શ્વાસ લે છે. ત્યાં તેમનો કંઠ ખૂલે છે અને વાદળોએ ચાંદની રાતમાં લાંબી હલકે સૌને મેઘના સમાચાર આપે છે :

ઓતરહખણની વાદળી ચડી રે,
વરસ્યો મારા દાદાજીના દેશમાં, મારુછ !

ભાઈ મારા હજી જોડ રે,
 નાનાં વડે ભાતના ભતવારે, મારુછ !
 લેંબય મારા ભાઈના મોળિયારે,
 લેંબય નાની વહિનાં ચીરે, મારુછ !

ઓતરદખણની વાદળા આકાશના ગોખે ચડીને વરસ્યો મારા દાદાજીના દેશમાં ને ત્યારે મારો વીરો હજી જોતરવા લાગી ગયો છે; અને નાની વહુ ભતવારે ચાલી નીકળી છે, પણ ત્યારે માથા પર ખાધેલ ભાઈની પાધડીનું મોળિયું ભોળય છે અને ભાત આપવા નીકળેલ નાની વહુનાં ચીર ભોળય ■ આ ભોળયેલ ચીર અને મોળિયાવાળાના ઉરમાં કેવો આનંદ ઊભરાયો હશે !

ને ત્યારે ધરતી લીપુડાં વચ્ચે ધારણ કરી, જૂમડી બાગશ જેવી ઉનાળાના તાપમાં બનેલ તે પોતાની કાશને સરપની કચળા જેમ ઉનારીને ફપવતી બને છે. ધરતીપુત્રીઓ ત્યારે માતા વસુધરાના ફપનાં ગીત ગાય ■ અને 'મેકુવા'ને કૃતમ્ભાવે મીતમાં ગાય છે

ઓતરદખણથી ચડી રે

વાદળી રે લોલ,

ઝીણી ઝીણી ઝખૂકે છે વીજ જો,
 આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ !
 ખેડુના માથે લીલાં મોળિયાંરે લોલ,
 ધોરીડાના કોટે ઘૂમરમાળ જો,
 આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ !
 વીરના વાવણિયે હોરલા જડયા રે લોલ,
 મોતીડાની ચેરું ટંકાવું જો,
 આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ,

ધેરીને ડાકે ખાંધી રાખડી રે લોલ,
વીરને લેલાટ કુંકુમનો ચાંદલો ને,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ,

વાવી જાડુ ને વાઘ્યા જાજરા રે લોલ,
ધરતીએ ઝોઢયાં લીલાં ચીર ને,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ !

સરિતાની શેરુ ચાલે જોરમાં રે લોલ,
ઝવરી તો ચરે લીલાં ઘાસ ને,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ !

મેઘ આપ્યો અને ધરતીએ, સરિતાએ નવરૂપ ધર્મા છે, તેતું
હમદ મિત્ર લોકકવિએ આમાં ગાઇ નાખ્યું. ધેરી અને ખેડુ પણ
હૈયે ઉત્સાહ ધરીને ઠેવા બપ્પા છે, ઠપ્પા છે ! અને છેવટે તો સૌએ
સાથમાં ગાયું

‘ આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ ! ’ એ ગાયું ત્યાં તો
ખેડુ લોકોએ હળ જોડ્યાં છે, અને હળ જોડીને ખેતરે જાય છે ત્યારે
તમને ધરનારો શીખર્યો બે-ચાર વેણુ કહે છે :

વરસ્યા વરસ્યા અપાઢીલા મેઘ રે;
હોળ શેરુએ હોળ જોતર્યા,
મારા રાજ !

વાવજો વાવજો મગ, જવ, તલ ને જાર;
મોચ મરી લવિંગ એલચી,

મારા રાજ .

રંગજો રંગજો ધીરજનાં મોળિયાં,
પારવતીની રંગજો ચૂંદડી,
હા મારા રાજ !

મેઘનાં ઉત્સાસનાં ગીતો આ ધરતી-ખાળોએ માયાં છે. મન
મૂકીને અને દિલના ઉમળકાથી !

એ ધરતીનાં ખાળોને મેઘ જ્યારે વંસતો દરો ત્યારે આજ્યે
તેજ ઉત્સાસ જીવનમાં આવીને તેને આનંદ નવપલ્લવિત બનાવી જતો
દરો ને !



આઈ અખાતરી

ભારત મામડાંમાં વસ્યું છે. આ મામડાં એટલે ખેડૂતમાં
ગોકુળો. આવાં ગોકુળોમાં તેની સંસ્કૃતિનું આજ્યે આધુનિકતાનું દર્શન
થાય છે. તેમાં તેમના ઉત્સવો વખતે તો તેમની સંસ્કૃતિનાં અરણ્ય
ભાવો ભાવો હોય છે. આ ઉત્સવો તેમની કૃષિસંસ્કૃતિ સાથે મુગ્ધ છે.
આથી ખેડૂતોના જીવનની સંસ્કૃતિ ને પરંપરાએ જે ઉત્સવોને એમના
જીવન સાથે વણી લીધા છે તે ઉત્સવોને નકામા લીસેલા ગણી ફેંકી
દેવા ન જોઈએ. મામજીવનના ધનકતા અને પ્રાણવાન ઉત્સવનું આ
લોકગીત લોકજીવનનાં દર્શન શુ નથી કરાવી જતું ? આ લોકગીતનો
કવિ એ સંસ્કૃતિના નીરને જાણે હેલે ચડાવવા નથી માઈ રહ્યો કે
' જીવનમાં એતન લાવો, અવિરતપણે કાવ' કરો ' !

આ ગીત અખાતરીનું છે, અખાતરી એ કૃષિજીવનનું મહાપર્વ. આ દિવસે તેઓ ઉત્સવ જીજ્ઞાસે અને ગાણે છે. આ ગાળામાં વસંત યૌવન મહાલી રહ્યો હોય છે. વનવનની કુંજોમાં અને ઉદ્યાનોમાં વસંત ધૂમી રહ્યો દેખાય છે કાકિલ પંચમસૂર લલકારતો હોય છે. બધે જ પ્રેમ અને ઉત્સાહ હોય છે. ટૂંકમાં, બધે જ નવું જીવન ડોકિયા કરતું જોવા મળે છે. આ સમયે ખેડૂતોનો આ ઉત્સવ આવે છે. ત્યારે સાબરકાંઠાના ખેડૂતના ગળામાંથી સૂર લહેરાય છે : ‘અલ્યા, ઉંઘાં સાં સમ !’ “અલ્યા, જીપો છો શા માટે ?” ઉત્તિષ્ઠ, જમત...નો મંત્ર તેમના કાનમાં ફૂંકવા લાગે છે,

અખાતરીના દિવસે ખેડૂતો શુભ શુકન-અજોતરો કરે છે. આજે તો અજોતરાની ધામધૂમ લગભગ અદૃશ્ય થઈ છે, પણ કોઈક અતરિયાળ ગામડામાં તેની મળ જરૂર જોવા મળતી હશે આ દિવસે ખેડૂતો ‘ટાઠા’ રાધે છે અને બળદોને ચણુગારે છે. બળદોનાં ઘોંગડે—નાડાછડી બાંધે છે, તેલ પાય છે, હળ સળવે છે, ઝાળનાં શુકન લઈ સૌ સ્ત્રી-બાળકો ગામના ઝાંપે જાય છે, બેળાં મળે છે. સ્ત્રીઓ માથા પર મોરિયો મૂકી, કૂવેથી પાણી ભરીને ‘આઘ અખાતરી’ ગાતી ગામના ઝાંપે આવી જાણી રહે છે. સ્ત્રીઓ પાસેથી પાણીભર્યાં મોરિયા લઈને મુરુઘો ખેતરે જાય છે. નવા વર્ષના કામનાં શુકન વધાવવા આ ઉત્સવને ‘અજોતરો’ એવું વિશિષ્ટ નામ આમસંસ્કૃતિના ધજાએ આપ્યું છે.]

અલ્યા ઉંઘાં સાં સમ,

અલ્યા ઉંઘાં સાં સમ,

આઘ અખાતરી !^૧

હેડાં અજોતરા કરવા, ‘લ્યા લાલિયા,^૨ હેડાં, અજોતરા કરવા’

‘લ્યા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા !

બાબલાને ધૂંસરી બાંધીને ધૂંસરે,

૧. અલ્યા, જીપો છો કપ્પમ, આવી અખાતરી. ૨. પ્રગુપને સંબોધ્યું છે.

કાટિયાં રે ટોકરી બાંધીને ચેરમે^૧

બળદાંને લેને શણગારી,^૨ દયા, લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

દયા, લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

ભેળે દયા પૂજિયા પરુણો બૂલતો;

જઈએ અજોતરા કરવા, દયા, લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

ઓર^૩ ને ધૂંસરે, બળદાંને રીંગડે બાંધી દયો, નાડાછડી

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

કંકુનો આંહલો કરી કપાળમાં,

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

ડાબેથી દેવલી^૪ જમણે બિતરે તો આખલાં લેને હલકારી

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

શુકનનો ગાર^૫ નથી, દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

અદયા ઉઘાં સાં સમ,

આઈ અખાતરી, દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!

દયા લાલિયા, હેડાં, અજોતરા કરવા!^૫

૧. પગમાં. ૨. હળ. ૩. પોશીના પટ્ટામાં ગણસિયા લોકોમાં પ્રચલિત માન્યતા છે કે દેવલી-નાનકડુ દેવચલી નેવડું કળું પખી-જડીને લીધા જાડ પર બેસે તો શુકન કહેવાય, સૂકા જાડ પર બેસે તો અપશુકન કહેવાય. ૪. શુભ પ્રસંગે ગોળ વહેવવાનો નિવાજ બાજીતો છે, પણ જ્યાં મીઠમ જ મધુરતા લાવીને લેખો હોય ત્યાં ગોર-ગોળની મધુરતાની—“મીઠું મોં કરવાની” પણ શી જરૂર! ૫. પરિક્રિષ્ટ શ્રુતો.

'No study of a people can be more rewarding than a study of its folk culture -- its songs, and dramas and dances. '

શામળાજીનો મેળો

સાજરકાંઠા જિલ્લાના એકલપરા કંપારા ગુજરાતનું નવું લોકી દશેક દિવસ પૂરતું નવરચનાના કામે ધમધમકાજ લાગી ગયું હતું સવારે ૭ વાગ્યે ધરતી પર એક સાથે ત્રીસેક તીકમ તૂટી પડે, પાવડા માટી બરવા લાગે, અને ખોદાયેલ ખાડામાંથી માટી જો ચકતાં ચોકડીઓ આબહા જેવી ચોખ્ખી ને ચટ ચાય

મક્કા શીતળ હતી ઉધાડો વગડો આખી રાત તે કપોં હોય. કેતાનના ધગ્માં રહીએ તો સવારે જીકતાં તો મનમાં ચાય કે હડી... પણ જ્યાં તીકમના પચ્ચીશ ધા ધરતી પર ક્યાં કે દેહમાતું હરી ગયેલ 'ખોઈવર' ધમધમવા લાગે અને ત્યારે ધનસૂના નાનકડા પૂનમ-ચંદની જીલ પરથી કાવ્યપકિત સત્તવા મડે : "શામળાજીના મેળે કે રમજશ્વિયુ રે પોજશ્વિયુ વાગે," ઝીણો લહેકાદાર સુર. થતું કામ જેવા નીકળ્યા હોઈએ તો કાવ્યપકિતમાં જીવ જતાં દેફા સાથે પગ અથડાય, પણ પેલા સૂરનો રણકાર જતો કરવા કાન ના જ પાડે.

અને પૂનમચંદનાઈને કહ્યું : 'ફક્કડ છે. ક્યાંથી લાબ્યા છે ?' તે તો શગ્માઈ પડ્યા 'આવું પ્રેમનું ગીત,...બાઈ સંભળી ગયા ?' એવું મનમાં થયું હતું ? ફરી વાર કહ્યું 'સંભળાવશે પૂર ?' 'પણ મને આપું નથી અવડતું આ તો શામળાજીને મેળે બીવ જાય ત્યારે ગાય'

એક વખત અમારા વરુણ દુકાળદુશ્મન - 'ફેમોનફાઈલર'નું યંત્ર ચલાવતા જાય અને મસ્તીથી ગીત ગાય : 'ધીરુબાઈ, ફાંકડું ગીત છે. ક્યાંથી તમે લાબ્યા ?'

'આ તો આ લોક ગાય છે, મેળે જતાં જતાં.'

થાવરો : હોવે ને.

કટારી : બરાબર હોકો બોલે ને, હાં ને, ॥ ॥

થાવરો : કલયારીનું અણુલું આયું હાં ને, ॥ ॥

પિયારી બટકાઈ ને, ॥ ॥

કટારી : લણુડીની લળમાં, † હાં ને, ॥ ॥

ઝાંઝરીવાળી નાળમાં, ॥ ॥

થાવરા તારા પગે, ॥ ॥

હે, ડાસા હોટો કાઢો ॥ ॥

મોટિયારા મૂછો મરડે, ॥ ॥

એ, છૈયાં સીતોxકરે, હાં ને, ॥ ॥

હે ડાસી પાણી મારે, ॥ ॥

પાઠાતર (૧) સનાનો શામળિયો ને, (૨) આણુનો શામળિયો ને,

* કાટપમા xસીદીબા.



કણ્ણી ને કણ્ણણનું ગીત

લોકસાહિત્ય જવાઈમાં પણ સંધરાયું જી જવાઈનાં મુખ્ય અંગો

ત્રણ : નૃત્ય, સંગીત અને અભિનય.

તેમાં સંવાદ પણ છે. જવાઈમાંના સંવાદો મઘમાં તેમજ પઘમાં ચાલતા હોય છે. ધણી વખતે આખા વેશનો સંવાદ પઘમાં હોય ! તે સંવાદના વસ્તુમાં પછી કથા ન પણ હોય ! કથાનું તત્ત્વ સાવ નબળું હોય તેમ ચાલે !

પઠારની જવાઈના ધણાય વેશ એવા છે કે જેમાં પતિ-પત્નીના માત્ર ગીતસંવાદ હોય, દા. ત. મુંબઈનો વેશ, તેમાં માત્ર મુંબઈની કંપના કરીને પત્ની ને પતિના મોંમાંથી ગીતપંક્તિઓ સરે છે. પત્ની હાથમાં ધુવરિયાળ રૂમાલ લઈને પમના તાલ અને ઠેકા સાથે સાયબાની પાછળ પાછળ ગીતપંક્તિ ગાતી જતી હોય છે. સટોડિયાના વેશમાં વાજડ ચાલે છે પત્ની ગીત ઉપાડે છે :

એક આનામાયે,

એક સો લગાયા;

ચોગાના માથે ચાર,

સવારમાં બિહી, મુંબઈની મેહી દેખાય,

હાય હાય રે સટોડિયા.

પતિ : હાય હાય રે મોરી મા !

અને પછી સટોડિયાના જીવનનું વસ્તવદર્શન પત્ની કરાવતી જતી હોય છે.

પમમાં બાંધેલ ઘૂંચરા, હાથમાં રાખેલ રૂમાલ, આ અને ઉપ-

ઠરણીથી અને સંગીતથી તે ગીત જ વેશના વસ્તુસ્થાને રહે છે. આ વેશ ભજવીને જને આસ્વા જાય છે.

આ ગીત કણુખી-કણુખણુનું છે પ્રથમ ભજવ્યું વીરમગામ તાલુકાના સાપરના પઢારોએ. તેઓ ક્યારી લાવ્યા તેની જાણ મળી નથી, પણ મેં જોયું શિયાળના પઢારની ભવાઈમાં.

અત્યંત ભાવપૂર્ણ રીતે આ ગીત એ પઢાર જુવાનભાઈએ કહ્યો અને પાંચો, તેમણે એ ભજવી બતાવ્યું. કણુખીએ હાથમાં ફંતાળી લીધી હતી. કણુખી જેવું પોતકું, માથે ચોટલી, કાનમાં કોકરવા ને આંગળે ચાંદીના વેઢ, ફાટેલ કંકનું પહેરણુ ને તે પર તાફેટાનું ગામડાં ઢખનું જાકીટ.

પઢારની ભવાઈમાં Open Air Stageને સ્થાન છે, બેઝેલ પ્રેક્ષક વચ્ચેના ખુલ્લા ઉધાડા ગોળ ફૂંડાળામાં કણુખી આવીને ફંતાળીથી જમીનને ફેળવા મંડ્યો, અને તેણે પંક્તિ લલકારી :

આજ મારે બાજરો વાવવો,

રાણી કણુખણુ લાવશે ભાત !

ત્યાં તો જોડાણુમાંથી ઉતર મળ્યો :

વાવી કરી તમે વેલા પધારજો,

હું નેં આણું ભાત !

• કણુખીએ પાછી તે જ પંક્તિઓ લલકારી. ત્યાં કણુખણુના પહેરવેશમાં પુરુષે લીધેલ સ્ત્રી-પાત્ર પટમાં આવ્યું. ઘડીભર તેમણે જનેએ પટમાં નાચી લીધું અને પછી તેમના વચ્ચેનો સંવાદ શરૂ થયો :

કણુખી : આજ મારે બાજરો વાવવો,

રાણી કણુખણુ આવશે ભાત !

કણુખણુ : વાવી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આણું ભાત !

કળના કણખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણખી : આજ મારે બાજરો ઢૂંઢવો

રાણી કણખણ ને આવ્યાં ભાત !

કણખણ : ઢૂંઢી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આવું ભાત !

કળના કણખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણખી : આજ મારે બાજરો નીંદવો,

રાણી કણખણ ને આવ્યાં ભાત !

કણખણ : નીંદી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આવું ભાત !

કળના કણખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણખી : આજ મારે બાજરો લણવો,

રાણી કણખણ ને આવ્યાં ભાત !

કણખણ : લણી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આવું ભાત !

કળના કણખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણખી : આજ મારે બાજરો વાઢવો,

રાણી કણખણ ને આવ્યાં ભાત !

કણખણ : વાઢી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આવું ભાત !

કળના કણખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણખી : આજ મારે બાજરો વે'વો,

રાણી કણખણ ને આવ્યાં ભાત !

કણખણ : વેઈ કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આવું ભાત !

કળના કણખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણુખી : આજ મારે બાજરો મસળવો,
રાણી કણુખણુ ને આખ્યાં ભાત !

કણુખણુ : મસળી કરી તમે વે'લા પધારને, હું નેં આવું ભાત !
કળના કણુખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણુખી : આજ મારે બાજરો વેચવે,
રાણી કણુખણુ ને આખ્યાં ભાત !

કણુખણુ : વેચી કરી તમે વે'લા પધારને, હું નેં આવું ભાત, !
કળના કણુખી રે મારે નથી શેતરમાં ભાત !

કણુખી : આજ મારે પૈસા લાવવા,
રાણી કણુખણુ ને આખ્યાં ભાત !

કણુખણુ : પૈસા લાવી ઝાંઝરી ઘડાવને, ધમધમ આવીશ ભાત !
કળના કણુખી રે મારે છે તમ ખેતરમાં ભાગ !



સાડી ગુલાબી મંગાવો !

આ નાટ્ય-ગીત છે. ગુજરાતના લોકનાટ્યનાં ઢેટલાંચ શૃંગારી ગીતોને લોકસાહિત્યમાં અનોખું સ્થાન મળ્યું છે. ‘મેદી વાવી તે માળવે,’ ‘શામળાજીના મેળે...’ ‘સોના રૂપાનું દાતરડું રે લોલ,’ ‘લાલ જુગારી છેલ જુગારી,’ ‘જુગટિયાં સરદારે, જૂગટ કાઈ રમશે નેં રે !’ આ બધાં ગીતો ભવાઈમાં અને લોકનાટ્યના વેશોમાં ગાઈ સંભળાવે છે. ભવૈયા-આંચે કાઈ ગીતોમાંથી જ વેશ આપો રચી નાખ્યો છે. દા. ત. કણ્ઠી-કણ્ઠણનું ગીત, ભવાઈમાં વેશ બને છે.

આ ગીત શૃંગારનું છે.

પ્રીતમજી સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી સાડી ગુલાબી લાવો !
સાડીમાં લેસ હીરલે જડાવો,
પ્રીતમજી હરખે હરિના શુભ ગાશું !

ગૃહસ્થાશ્રમનાં સુખ માણી લઈએ અને પછી ચોક્કસ જીવને શિવમાં પરોવીશું.

(દોહરો)

પીળ પીત ને પચરગી;
વળી ધોયે ધોળી ચાય,
પરદેશી પ્રીત ન કરીએ, વાલમજી,
પણમાં તે તૂટી જાય;
વાલમજી, સાડી ગુલાબી લાવો,

વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું !

લોકનાટ્યની એક ખૂબી એ છે કે તેમ શિક્ષણના સાધન સ્થાને છે. તે હરતીફરતી (Moving University) વિદ્યાપીઠ છે તેમાં કટાક્ષ ઈત્યાદિ તો છે જ. લોકશિક્ષણમાં, માનવસ્વભાવ લોકોને સમજાવવામાં તેણે મૂળ અમલ્યનો ભાગ આજ દિવસ સુધી ભજવ્યો છે, પ્રીત જી છે તેને વ્યંજના દ્વારા યતારવા ઉપરના દોહરામાં લોકકવિએ ખત્મ કર્યો છે.

(દોહરો)

વાલમ જાને વાડીએ,
વેરાવળે હળહર ને હીંગ,
એવી વસ્તુએ વેરાવળે,
એના માથે શીંગ,
ચતુર હોય તો ચેતળે,
મૂરખો કરે છે વિચાર !
વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે જડાવો,
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું !

લોકોના બૌદ્ધિક વિકાસમાં પણ આવા વેશોએ ભાગ ભજવ્યો છે, અહીં સમસ્યા-કોયડો-પ્રહેલિકા ખૂબી છે, પાત્રના મોંમાં ! પ્રેક્ષકો તેના વિચારમાં ફવ થાય છે ને ત્યાં તો બીજી સમસ્યા ઉચ્ચારે છે પુરુષ પાત્ર :

(દોહરો)

તલ જેટલું ટીટોડું
વળી તારા નામે નામ,

નામ હતું તે ક'ઈ દીધું,
 બાલમણ, મૂરખો કરે છે વિચાર !
 પ્રીતમણ, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
 વાલમણ, સાચા હીરલે જડાવો,
 પ્રીતમણ, હરખે હરિના ગુણ ગાશું ?
 (દોહરો)

વેંત નેટલી વરખડી રે,
 ઈનાં ઢાલો જેવડાં પાન,
 કાયનાં ઊતરે કાપલાં,
 પાકાનાં મૂલ થાય,
 ચતુર હોય તે ચેતલે,
 મૂરખો કરે છે વિચાર,
 વાલમણ, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
 વાલમણ, સાચા હીરલે તે જડાવો,
 પ્રીતમણ, હરખે હરિના ગુણ ગાશું.

શુ ફક્ત વિરોધાભાસ (contrast) આ સમસ્યામાં મુક્યો છે !
 (દોહરો)

સામું, વહું, મા ને દીકરી,
 ઈ ચારેના એક બડથાર;
 ચતુર હોય ઈ ચેતી લેલે,
 મૂરખો કરે છે વિચાર !
 વાલમણ, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
 વાલમણ, સાચા હીરલે તે જડાવો.
 પ્રીતમણ, હરખે હરિના ગુણ ગાશું !

(દોહરો)

સાસરો, જમાઈ, બાપ ને દીકરો,
ચારેના ઘરે એક નાર;
ચતુર હોય એ ચેતી લેને,
મૂરખો કરે છે વિચાર !
વાલમજી, સાડી શુલાળી મંગાવો,
વાલમજી, સાચી હીરલે તે જડાવો;
પ્રીતમજી, હરખે હરિના શુભ ગાશું !

(દોહરો)

કાળો તે માર્યો કાગડો,
માર્યો લીલો હંસ;
ખાય વાણિયા-પ્રાદેશી,
ખાય અહારે વધુ !
ચતુર હોય તે ચેતને,
મૂરખો કરે છે વિચાર !
પ્રીતમજી, સાડી શુલાળી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે જડાવો !
પ્રીતમજી, હરખે હરિના શુભ ગાશું !



As for the accusation that the folk forms belong to the distant past nothing could be more misconceived. As a matter of fact, the most significant characteristic of folk art is its contemporaneity *

ગાંધીગીતા

[પૂણેવાડામાં કરાળરૂપ ધારણ કરીને જતી બનાસના તીર પર રનારીનાં અનેક ગોકળિયાં વર્યા છે વર્ષો પહેલાં બનાસના કાંઠાનાં એ ગામોમાં ધૂમતાં જુદાં સરદાસ રાઈકો બજનિક મળી ગયા. તેઓએ ધોળા દિવસે બજનો ગાઈ સંબળાવ્યાં તે માત્ર બજનો ગાતા હતા તેવું ન હતું, તેઓ બજનો બનાવી પણ જાણતા તેમણે તેમની જવાની અમદાવાદમાં વાડજની આશુનાજી માળેલી, ને તે જ અરસામાં અમદાવાદથી ગાંધીજીએ દાંડીની મહાકૂચ આદરી તેમાં આ રાયકાને રસ નજરે આ નિહાળેન, ને ત્યારથી તેમને તે રમ લાગ્યો. તે રગનાં પ્રથમ ત્રણ ગીતો તેમની જીમ પરથી મે લીધાં છે, બ્યારે ગીત ચાર અને પાંચ પઠારમાંથી પ્રાપ્ત થયેલ છે ગીત ચાર ટીટોડા નૃત્યનું નૃત્ય ગીત છે, બ્યારે ગીત પાંચ રાસગીત છે દાંડિયા લેતા લેતા પઠારો આ ગીત અગાવતાં રમઝટ બોલાવે છે સવેદનશીલ લોકકવિઓને સમાજનાં આ સર્વ પરિવર્તનો અને મહાનરો કેટલા સ્પર્શી જાય છે.]

‘ સરિતાતીરે તપસા કીધી, સાબરમતીના સતજ,
હાક તમારી હિંદમાં લાગી, સાથી સોબતીઓ શ્રીમંતજ.
આશ્રમ કીધો અમદાવાદ, ધનધન સુંદર ધામજ;
સરદાર વલ્લભલાઈ સાથી, એમનાં નવખંડોમાં નામજ.
નામ ધરાવ્યાં ગાંધીજી, એ તો ઈશ્વરનો અવતારજ,
ભરદ્વનિયામાં જાણણ કરિયુ, સંબળાવ્યા સારાસારજ.
ગાંધી ગાંધી સૌ કોઈ કે’વે, પણ વીરલા સમજે ભેદજ,
ભવિષ્યવાણી ભૂલ્યા પ્રાણજ, વિપ્ર ભૂલ્યા વેદજ.

સાનો શાસ્ત્રની સમજ્યા ને, ન જાણ્યા ગુપ્ત ગ્રંથજી,
 ભાવારથ કા લેહ ન જાણ્યા, અનરથ કરિયા અરથજી.
 બ્રાહ્મણમેથી જોતીક^૧ જુવે, વિપ્ર વિચારે વેદજી,
 પંડિત પુરાણી પાર ન પામ્યા, ભગવતગીતે પાયા લેહજી.
 ચૌદ ભુવનના સ્વામી એ તે, બ્રાહ્મણ કેરા ભૂપજી,
 એ બેહદવાસી^૨ બુદ્ધિબળિયા, બાપુ બુદ્ધા રૂપજી.^૩
 એ જૂના જોગેશ્વર જુગમે આયા, જરણા^૪ જાપ જપાયાજી.

(૧)

સત અહિંસાકા શબ્દ મુણાયા, બ્રહ્મગીતા શુણ ગાયાજી,
 એ બ્રહ્મસ્વરૂપી, નિવિકારી, નિર્મળ ગુણો ગાયાજી.
 ઉત્તમકુળ અવતાર લિયા, બાપુ બુદ્ધ અવતારજી,
 મહાસભામાં મોહનજી, સવરાજસત્તા સમજાયાજી.
 જગત જગાડ્યાં જુગતે બાપુ, સંગીત સૂર સંભળાયાજી,
 દેહ ધ્યાન જ ધરિયાં, ગાંધી શુણ કંડારજી.
 બ્રહ્મજ્ઞાન ભાખ્યાં આલમ, કરવા એકાકારજી,^૫
 આતમબળ સમજાયા બાપુ, ગાંધી બુદ્ધ અવતારજી.
 સતકા સુધારણ, વિખના વારણ, હિંદના તારણહારજી,
 સાધુજનના સ્વાંગ ધરિયા, ભારે ભજવ્યો લેખજી.
 કહત રૈકા રાશી, તુમ ત્રિલોચન રાખો દેકજી.

(૩)

દલી તખત, સિંહાસન ઉપર જોગજી જવાહરલાલજી,
 સતનું થાપન કરવા, આબ્યા લેવા ભારત સંભાળજી.

* શાસ્ત્રાર્થ જાણ્યા. ૧. ભવિષ્ય ૨. સ્વર્ગવાસી ૩. શુદ્ધરૂપ ૪. શાંતિ

૫. વર્ણભેદ અને જ્ઞાતિભેદ તોડવા.

પાંચે પાંડવ પરભુ માથે, આળ્યા શૂરવીર ધીરોલ,
 બળિયા બહાદુર બેઢા બગ્યા, વઢકણિયા કાંઈ વીરોલ.
 મોટા મોટા મહિપત મળિયા, સાહેબ કંઈ સુલતાનલ,
 સામંત શૂરા સર્વ સખાયા, મળિયા મદત મસ્તાનલ.
 મળિયા મુર્શિદ મીર મુંબવર, બગ્યા સર્વે બનલ,
 રાવત કંઈ રઢિયાળા રણમાં, લડશે ક્ષત્રો ખાનલ.
 રાજા કંઈ રજવાડી મળશે, સેનાપતિ સરદારલ,
 લાખો લશ્કર લડશે હોશે, હિંમતમાં હુંશિયારલ.
 જળખર જોરાવર બેઢા મળશે, લાખ-કરોડ લોકલ,
 અનંત જિંટો, ગજ, રથ, ઘોડા, જુક્તિ જોવા જોગલ.
 ઋષિમુનિ, દેવ, દિગંબર, મળશે મોટા મહંતલ,
 જોગી, જંગમ, સિદ્ધ, સંન્યાસી, મળશે સાધુ સંતલ.
 આલમ, દુનિયા વણું અઢારે, મળશે કંઈ નરનારલ,
 કહત રેકા રાથી ! હિંદમાં, હોશે હલહલકારલ.

(૪)

ગાંધી મા'તમારે, તારા ખાલી નગરમાં રે;
 વળિયુંના વાડા બનાવ્યા, ઉપર ચોડયા બાવટા,
 ગાંધી મા'તમા રે !
 ગાંધી મા'તમારે, તારા ખાલીનગરમાં રે;
 દાડનાં પીઠાં બંધ કરાવ્યાં, બજાર મેલી છૂટી;
 ગાંધી મા'તમા રે !
 કાળી ટોપી કાલી મૂકી, ઘોળીનાં આખ્યાં નિશાન;
 રાકડા રૂપિયા કાલી મેલ્યા, નોટનાં આખ્યાં નિશાન,
 ગાંધી મા'તમા રે !

(૫)

એકવાર આવો રે ગાંધીજી શુષ્કિયલ ગરવા,
 હિંદુનાં દુખડાં હરવા,
 એકવાર આવો રે ગાંધીજી શુષ્કિયલ ગરવા !
 ભિખારી નહિ કેઈ આપ સરીખો,
 બીજી તૂંબડીએ તરવા,
 એકવાર આવો રે ગાંધીજી શુષ્કિયલ ગરવા,
 હિંદુનાં દુખડાં હરવા,
 એકવાર આવો રે ગાંધીજી શુષ્કિયલ ગરવા !
 સવરાજ લીધું ને મુખિયાં ધારું,
 આ અંસાર મુખિયો કરવા,
 એકવાર આવો રે ગાંધીજી શુષ્કિયલ ગરવા,
 હિંદુનાં દુખડાં હરવા,
 એકવાર આવો રે ગાંધીજી શુષ્કિયલ ગરવા !



જવાહરલાલ ને'રુ

(આ પદ્યાગ્નિન સંતારનૃત્યનું ગીત છે.)

જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રુ છોડી છે ભાલે દેશમાં,
 પહેલું પાણી ખાવળે આવિયુ,
 પછી રેલી છે ધ્રંધ આદરોડાની સીમ;
 જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રુ છોડી છે ભાલે દેશમાં !

એક મેલે' ને મને પોચાતું,
(અને) બરી છે કંઈ જુવાલ^૧ જેવી વાટ;
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

એક કાગળ લખી બાબુભાઈ^૩ મોકલે,
(અને) દેલો જવાહર ને'ડુને હાથ;
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

અરે, પચાસ પદાર બાબુભાઈ મોકલે,
(અને) સાથે જાયે કંઈ નવલભાઈ, કાશીબોન;
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

જુવાલની પાટેથી પાણી છોડિયાં,
આબું રે કંઈ શિયાળ જેવા શે'ર,
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

અરે સો રે પદાર બાબુભાઈ મોકલે,
પાણી લાબ્યાં શિયાળ ફેરા તળાવ રે,
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

સારી રે સલાહ બાબુભાઈ આપતા,
(અને) ચોરને ચીણું અને ચાહટિયાં;
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

અરે ગુણે રે અમે તમારાં ગાઈએ,
ગુણ ગાયનાં આપો તમે ઇનામ;
જવાહરલાલ ને'ડુ, તમે રે ને'ડું છોડી છે બાલે દેશમાં !

ટોપીવાળો અંગરેજ



In china says Arthur waley, folksongs were collected for political purposes They were regarded as a means by which the governing classes could get into touch with the common people and discover their grievance and aspirations

ટાપીવાળો અંગરેજ

[આ] લોકગીતો છે, વિજયપુર અને મહેસાણા જિલ્લાનાં ! ત્યાંની વસતીમાં છે બકા અને કટિયા ઠાકરડા ! અને તેઓ આજેય જૂતકાળના તેમના ગૌરવભર્યા જીવનના ખ્યાલથી અને દિમાકથી જીવી રહ્યા છે. તેમનો એ ખ્યાલ આજેય અંદરથી નથી ગયો કે અમે ઠાકરો છીએ, આ ધરનીના ધણી છીએ.

એ ઠાકરનાં ગામો પર એક પછી એક સસ્તનતો બદલાઈ ગઈ આ મુશ્કેલો પહેલો કામજો રજૂતોએ લીધો, પછી મુસલમાનોએ, પછી લીધો મરાઠાઓએ, પણ તેમણે તેમને સાચવી લીધા અને આને કારણે મદ્દાવરાવ ગાયકવાડ માટેનો પ્રેમ આજેય લોકોએ તેમનાં લોકગીતો દ્વારા વ્યક્ત કર્યો છે દા ત 'શેરનો સૂમો ક્યારે આવશે ?' અથવા 'હોળા ખેતે મદ્દાવરાવ મદ્દારાજ !'

અહીં પ્રગટ થતું ગીત છે ત્યાંની ધરતીની બહેનોએ મદ્દાવરાવ ગાયકવાડને આપેલા ઠપકાનું અંગ્રેજો તેમને પકડીને ગુજરાત બહાર મૂકી આવેલ, તો તે વખતે તેની સાલગીરી, પ્રગ્નની ફિકરચિતા ઈલાકિને આ બહેનો આવતું નથી ચૂક્યાં.

એક બાલો મદ્દાવરાવે બધાવ્યો ને તે માણુવા તે ન રહી શક્યો તેનું આ ગીત છે.

ખીજું ગીત : પિલવર્ષના ઠાકારિયાને ખિરદાવીને અંગ્રેજના માનસનું અપહું ચિત્ર વ્યક્ત કરે છે.

(૧)

ના ના કે'તી'તી ને બંગલો ચણાવ્યો,
 કયાં ગયો બંગલાનો માણનાર માલાવરાવ,
 કયાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?

ના ના કે'તી'તી ને બંગલો ચણાવ્યો,
 કયાં ગયો બંગલાનો ભેનાર માલાવરાવ,
 કયાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?

ના ના કે'તી'તી ને ઘેરીડા વસાવ્યા,
 કયાં ગયો ઘેરીડાનો ખેડનાર માલાવરાવ !
 કયાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?

ના ના કે'તી'તી ને ઘોડીડા વસાવ્યા,
 કયાં ગયો ઘોડીડાનો ખેલનાર માલાવરાવ ?
 કયાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?

ના ના કે'તી'તી ને હાથીડા વસાવ્યા,
 કયાં ગયો હાથીડાનો ખૂલનાર માલાવરાવ ?
 કયાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?

(૨)

ગાડી હાંકે છે પેલો પિલવધનો ગરાસિયો રે,
 રીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ;
 પિલવધ બાળી સરકાર રાજ ધિયો !

ઘોઠ ચઠે છે પેલો પિલવધનો ગરાસિયો રે,
 રીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ,
 પિલવધ બાળી સરકાર રાજ ધિયો !

બંધુક બાધે છે ચેલો પિલવધનો ગરાસિયો રે,
 રીસે બળે છે ચેલો ટોપીવાળો અંગરેજ,
 પિલવધ બાળી સરકાર રાહ ધિયો !

તલવાર બાંધે છે ચેલો પિલવધનો ગરાસિયો રે,
 રીસે બળે છે ચેલો ટોપીવાળો અંગરેજ,
 પિલવધ બાળી સરકાર રાહ ધિયો !

હાલો બાલે છે ચેલો પિલવધનો ગરાસિયો રે,
 રીસે બળે છે ચેલો ટોપીવાળો અંગરેજ,
 પિલવધ બાળી સરકાર રાહ ધિયો !



‘ The real mourning is to be found in the beautiful and moving spontaneous poems that are sung by the bereaved husband and wife, parent or child, on the day of a loved one’s death ’

एको रसः करुण एव

માનવનું જીવન અનેક રસોથી પ્રત્યેક ક્ષણે ભર્યું બાદ્યું રહે છે. જીવનમાં એક ક્ષણ માનવીની એવી નથી જતી હોતી કે જ્યારે તે રસમય ન હોય. ઠાઠ ક્ષણે તે વીરરસ માણતો હોય, તો પછીની ક્ષણે કરુણ. આથી જ એનું જીવન નવે નવ રસમાં વરગોળ રહે છે. સમાજના સ્થિતિમાં જીવનક્રમ પણ રસોને અનુરૂપ બને તેવી જીવનચર્યા ધડી હોય તેવા બાસ વારેવારે થયા કરે છે અને આથી લમ શૃંગારરસનું ટાણું બને છે, ને જીવનનો અંત તે કરુણનું જાન બને છે. તે ગાન પ્રત્યેક માનવીના ચિત્ત પર જીવનમાં સ્પર્શીય બને છે. ઘણી વખતે આ ગીત અને પ્રસંગ સાથેન છાપ મૂકી જાય છે.

આથી રસબોક્તા કવિ, કલાકાર અને સાહિત્યસર્જકોને તે પ્રિય રસ બન્યો લાગે છે. પ્રીત અને રૂમના સાહિત્યકારોએ તેમના ઉત્તમોત્તમ સાહિત્યકારને તે રસે જ સોંપી દીધા છે. સાહિત્યસ્વામી શેક્સપિયરની ચાહગાર કૃતિઓમાં મુખ્ય રસ તો કરુણ છે.

બલભૂતિનું ‘હિતરામચરિત,’ બાસનાં માણેકનંગ શા એકાંકી-ઓમાંથી ‘ઊરુભંગ’ આદિ કૃતિઓ કરુણરસે નીતરતી કૃતિઓ છે. કથાકારોને પણ કરુણ રસ બાવી ગયો છે. લોકસાહિત્યની કૃતિઓમાંથી ‘લયલા અને મજન’, ‘હીર અને રાંઝા’, ‘સુદિણી અને મેદાર’ની કરુણરસનીતરતી કૃતિઓ જગતસાહિત્યમાં કરુણ રસના કારણે જાંચા સિંદાસને બિરાજે છે. અઘનન પરદેશી સાહિત્યમાં ‘મેદમ બાવરી’, ‘ટેસ’, ‘એના કેરેનીના’, ‘નાના’ આદિ કૃતિઓ કરુણ કૃતિઓ છે. જીવનમાં અને સાહિત્યમાં કરુણ રસ એ રસરાજ હોય એવું આથી સાબ્ય કરે છે. માટે જ સંસ્કૃત કવિ બલભૂતિએ આયું કે एको रसः करुण एव.

વિશ્વેશ્વરિ સ્વીન્દનાથ ઠાકુરે ગાયુ છે :

આમિ ઢાલિલો કરુણા-ધારા, આમિ માગિલો પાપાળકારા
આમિ જગન્ પ્લાવિયા વેઢાલો ગાડ્યા બાકુલ પાગલ પારા

હું કરુણાની ધારા વહાવીશ,
હું પાપાણુ કારાગાર તોડી દઇશ.
હું જગતને કલામય કરવાં કરવાં
કોઈ વ્યાકુળ પાગલની જેમ ગાતો ફરીશ.

શુભરાતીમા ન બો. દિએ ગાયુ છે કે.

આ વાદને કરુણગાન વિશેષ લાવે !

આમ માનવ જીવનમાં કદીક કદીક કરુણ ગીત ગાવાનું પણ
પસંદ કરી લે છે પ્રત્યેક માનવના જીવનમાં પ્રત્યક્ષ એક પ્રસંગ તો
એવો આવે જ છે કે જ્યારે તે કરુણગીત ગાય છે

માનવ મૃત્યુથી પણ નથી અત્યંત નજીકના સ્વજનનું મૃત્યુ થાય
છે ત્યારે માનવ કરુણાને મોકળા અને ગાય છે દૈયુ રડે છે, અખિ-
માંથી હોયોહય અમુની ધાગઓ વહે છે લોકગીતના રચનારા લોક
કવિઓએ તેમની વાણીમાં તેની અભ્યન્નાતે-તેના કરુણ માનને ગાયુ છે
શુભરાતમાં તેના અનેક ગીતો-રાગિત્યાઓ, મહાસિપાઓ મગે છે મૈકલ
ટેકરીઓમાં ગહેલી અ દિવાસી પ્રગ્નએ તે ગીતો ગાયા છે, અને શ્રી
વેરિયર એસ્ક્રીન જેવા લોકગીતના સમર્થ સમ્રાટકની નજર બહાર તે
નથી રહ્યા, તેમાંના કેટલાંકને શ્રી વેરિયર એસ્ક્રીને 'મૈકલ ટેકરીનાં લોક-
ગીતો' નામક સમ્રાટમાં મૂક્યાં પણ છે શ્રી વેરિયર એસ્ક્રીન કહે છે
કે, તે પ્રસંગનું દુઃખ ખૂબ જીકું અને મર્મભેદક હોય છે, આથી દુઃખના
મામકો ઉત્કટ ઝીર્મિની પ્રગ્ન સમિત દાગ જન્મ અને સુદૃઢ દર્પનાઓ
ભર્યા તેનાં ગીતો આવે છે કરુણ બાવની ઝીર્મિને વ્યભ કરવા માટે

આ ગાયકોએ જુદાં જુદાં ભાવપ્રતીકોનો (જ. સિમ્બોલ્સ) આશ્રય લીધેલ છે. આથી જ ગુજરાતના મરસિયામાં અભિમન્યુ અને રાવણ અમરત્વને પામ્યા છે. પણ હૃદયસ્થ દરજ્જાને વાચા આપવા માટે ગાયકોએ અભિમન્યુ અને રાવણને મરસિયામાં ભાવપ્રતીકો તરીકે જ માત્ર પ્રયોજ્યા હોય તેવું લાગે છે. આ બે ભાવપ્રતીકો હોડીને પણ ઊર્મિભર્યું ગાન મરસિયામાં થયું છે. જુઓ :

એ લાંબે પાને આંખલી,
એ હરિણી કેરે ખજૂર, હાય !
એ એક અંધારી કેટડી,
ફુલ વેરણ રાત હાય, હાય !
ગામે સુના ગોંદરા,
નગરે સૂની પોળ, હાય !
રાજ વના સુના રાવણ,
કુંવર વના શું તેજ, હાય !
ખાપ વના સો બેટકા,
સો બેટા, સો ખાપ, હાય !
વીરા વના સો બંધવા,
સો બંધવા, સો વેલ, હાય !
માઝે વના સો બેટડી,
છૂટી પડિયા અવતાર, હાય !
ગોતી ચરતો મરઘ મારિયો,
ઢેલડીને પડિયા વિજેગ, હાય !
ચારો ચરતો હંસ મારિયો,
હંસને હંસલીના વિજેગ, હાય !

એ લાંબે પાને આંખલી,
 હરિણી ઠેર ખજૂર, હાય !
 દૂધ પીતો નાગ કોણે મારિયો,
 નાગ ને નાગણુને વિલેગ, હાય
 ખીજરેથી પોપટ કોણે મારિયો,
 પોપટ ને મેનાનો વિલેગ, હાય !
 જિતર્યા છે કાંળીકદલાં વીંછના,
 જિતર્યો છે ઝાંઝરનો ઝંકાર, હાય !
 જિતર્યા છે ઠડાંકારેલિયાં,
 જિતરી ૧૧ દર્યાનિયાની ભેડ, હાય !
 જિતરી ૧૨ ટીલડીમીંદલી,
 જિતરી છે કંકુડાની આડ, હાય !
 મૂઠં ઠઈ રાણી ભાંગ્યો ચૂડલો,
 નખ ઠઈ તોડ્યો ચંદનહાર, હાય !
 ભેભે, જેઠાણી આપણાં,
 કાઠિયાણીને જિતર્યો છે શણગાર, હાય !
 કૂલડે બિછાવી સેજલડી,
 સેજમાં લોટે કાળો નાગ, હાય !
 એ લાંબે પાને આંખલી,
 હરિણી ઠેર ખજૂર, હાય !

મમે આવીને મોતી ચરંતા મરધને માર્યો છે, હંસને માર્યો છે,
 પિંજરાના પોપટને માર્યો છે, દૂધ પીતા નાગને હણ્યો છે; એ પોપટની
 મેનાને, મોતી ચરંતા મોરની ટેલને, હંસની હંસલીને વિલેગ થયા છે.
 સ્વજર્ણ યુવાન-યુવતી માટે લોકલેખિ કટકેટલાં સંકેતો, રૂપકો, ભાવપ્રતીકો

અપોન્ત્યા ! અને ગીતના કરુણરસની બંસરી બાજી છે આ પંક્તિમાં :
 ‘ફૂલડે બિંછાવી સેજડી, સેજમાં લોટે કાળો નાગ,’ અને ‘એ લાંબે
 પાને આબલી, હરિણી કેરે ખજૂર.’ આગલી તો અપશુકનિવાળ વૃક્ષ,
 ત્યજાયેલું વૃક્ષ, એ પંક્તિની વ્યંજના દ્વારા લોકકવિએ વિધવાની કરુણ
 સ્થિતિનું વાસ્તવબલ્ય ચિત્ર આપ્યું છે. અને ‘હરિણી કેરે ખજૂર’ની
 પંક્તિદ્વારા કહે છે કે હવે તો તેના માથે ઝાડ ઊગવાનાં બાકી છે.
 લોકકવિએને નવનવાં પ્રતીકો જડી જ રહે છે. હૃદયના ધેરા, કરુણ ને
 જાલ્ય બાવને વ્યક્ત કરવા કેટકેટલાં, નવનવાં પ્રતીકો લઈને લોકકવિએ
 આવે છે !

સંસ્કૃત દાશનિકે કહ્યું છે કે, કાળ અવધિ વગરનો છે. પણ
 કરુણ ભાવના જાનારા ગાયકો કાળના નિરંકુશપણને સ્વીકારવા તૈયાર
 નથી. તે તો ગાય છે :

પિત્તળ તે લોટાએ જળે ભરી,
 ઢાલણિયાની વેળા થઈ ગઈ;
 મારા ઝમ્મરિયાને બાળા ભોગણુને
 વળો પડ્યો !

તાંબા તે ફૂંડી જળે ભરી,
 નાલણિયાની વેળા થઈ ગઈ;
 મારા છનગારાને બાળા ભોગણુને
 વળો પડ્યો !

એ દાળ ઝોરી મસૂરની,
 એ ફૂર ઝોરો કમોદનો,
 અતરીશબતરીશ ચારણાં,
 એ પાપડ પૂનમચંદના,

એ આયા બિલ્લી સવેજી આયણા,
 એ હલવે કઢિયેલ દૂધડાં,
 એ સોરઠવાડી ઘીએ ભરી,
 એ સેવ વસઈ ને સાકર મેળવી,
 એ લોજનિયાની વેળા વઈ ગઈ,

મારા દુખાયેલને બાળા ભેગણુને
 વખો પડ્યો !

લવંગ, સોપારી ને એલચી,
 મુખવાસની વેળા વઈ ગઈ,

મારા છનગારાને બાળા ભેગણુને
 વખો પડ્યો !

સાવ સોનાનાં સોજે સોગડાં,
 રમતની વેળા વઈ ગઈ,

મારા ગમ્મરિયાને બાળા ભેગણુને
 વખો પડ્યો !

એ ગોઠણુ સમો ઢાળિયો,
 પોઠણિયાની વેળા વઈ ગઈ,

મારા છનગારાને બાળા ભેગણુને
 વખો પડ્યો !

પણ એ કાળતું બંધન આ જીવાની પૂરતું જ છે; માટે આ
 ગીતમાં તેને લોકકવિએ સ્પષ્ટ કરેલ છે :

પિત્તળ લોટા જળે ભર્યાં,
 દાતણિયા (કરનાર) પોઢયા બાગમેં,

એ દાતણ વેળા વધ ગઈ, છતરપોર રાત,
જીવાની ઇની ઢળી ગઈ.

તાંબાફૂડી જળે લરી,
નાવણિયા પોઢયા બાગમેં,

એ નાવણ વેળા વધ ગઈ, છતરપોર રાત,
જીવાની ઇની વધ ગઈ!

સેવે સુંવાળી લાપશી,
લોજનિયા પોઢયા બાગમેં,

એ લોજન વેળા વધ ગઈ, છતરપોર રાત,
જીવાની ઇની વધ ગઈ!

લવંગ સોપારી એલચી,
મુખવાસિયા પોઢયા બાગમેં,

મુખવાસ વેળા વધ ગઈ, છતરપોર રાત,
જીવાની ઇની વધ ગઈ!

ઘંટણ સમો ઢોલિયો,
ગોઠણિયા પોઢયા બાગમેં,

પોઠણ વેળા વધ ગઈ, છતરપોર રાત,
લોજનિયું ઇનું વધ ગયું.

આ ગીતોમાં રૂપકો, સંકેતો અને બાવપ્રતીકો દ્વારા હૃદયસ્થ કરુણાને લોકગીતના ગાનારે વ્યક્ત કરી, પણ કેટલાક રાજિયામાં તે સાવ નમ્મ રૂપે (અ કૂડ) જન્મે છે. રૂપકો, સંકેતો કે પ્રતીકોનો આશ્રય લીધા વગર હૃદયની ઊર્મિનાં હિલકટલા અને પ્રાજ્ઞસ્થ એટલાં હૃદય છે કે ગાનારને બાવપ્રતીકો પ્રયોજવાની જરા પણ આવશ્યકતા દેખાતી નથી. હૃદયમાંથી આપોઆપ કરુણા સરે છે. જેમકે :

હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરથો બોલિયો,
 હાય હાય બોલ્યો ઈમની માડીજના ઓરડે,
 હાય હાય માડીજના દીકરા ઓરવાયા,
 (મત્સ્ય પામ્યા)

હાય હાય મરણ થયુ ઝમ્મરનું
 હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરથો બોલિયો,
 હાય હાય બોલ્યો ઈમના વીરાજના ઓરડે,
 હાય હાય વીરાજના બધવ વીરા ઓરવાયા,
 હાય હાય મરણ થયા ને ને કારમા ।
 હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરથો બોલિયો,
 હાય હાય બોલ્યો ઈમના દીકરાના ઓરડે,
 હાય હાય દહા દીકરા ઓરવાયા,
 હાય હાય મરણ થિયા ઝમ્મરના ।
 હાય હાય રગત પાયાનો દોલિયો,
 હાય હાય ચારે પાથે ચાર જમડા,
 હાય હાય ઈમના દીકરા જમડાને રીઝવે,
 હાય હાય લો ને જમડા લાચો,
 હાય હાય લાચ લઈને એ શું કરું ?
 હાય હાય હરિના અશ્વ તેડા આવિયા,
 હાય હાય પરબુના પરમાણુ પાછ ના વળે,
 હાય હાય અધલ જૂટી ને ચિટ્ટી જિતરી ।

દરબુની જિમિં સ્વય જન્મીતે ધોધના પ્રવાહની જેમ વહેતી આ
 ગીતમાં જેવા મને છે આ ગીતમાં માનવ તે સ્વાર્થો છવ છે, તેની
 પ્રતીતિ 'હાય હાય લોને જમ । લાચો' વગિતમાં થવા વખત રહેતી નથી.

પણ નીચેના ગીતમાં મૃત્યુની લગ્નતા માર્છ છે. મૃત્યુ વખતે પણ એક પ્રકારના સ્વપ્ન તરફથી છેલ્લી વેળાનાં લાડ મૃત માનવને મળાવે છે, તે લાવની અભિવ્યક્તિ આથી શી વિશેષ હોઈ શકે ? ગાય છે કે :

ખંગલો ખૂબ બન્યો જંગલમાં,
 ખંગલો ખૂબ બન્યો જંગલમાં,
 જાંચી મેડી આસમાનમાં,
 નીચાં દોરીડાં તારાં હાટડાં,
 દોરીડાં આબ્યો રે ચંદનચોકમાં,
 ખાગડી લાબ્યો રે ભારે મૂલની,
 તું તો મારા હોંશીલાના કાળે રે,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
 નીચાં સોનીડા તારાં હાટડાં,
 સોનીડા આબ્યો રે ચંદન ચોકમાં,
 તું તો મારા નોખીલાને કાળે રે,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
 નીચાં ઝવેરી તારાં હાટડાં,
 ઝવેરી આબ્યો રે ચંદન ચોકમાં,
 માળાઓ લાબ્યો રે ભારે મૂલની,
 તું તો મારા નોખીલાને કાળે રે !
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
 નીચાં ગાંધીડા તારાં હાટ રે,
 શ્રીફળ લાબ્યો રે ભારે મૂલનાં,
 તું તો મારા નોખીલાને કાળે રે,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !

નીચાં મુખડિયા તારાં હાટડાં,
 મુખડી લાબ્યો રે ભારે મૂલની,
 તું તો મારા બુખાળવાને કાજ રે,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
 નીચાં તંબોળી તારાં હાટડાં,
 તંબોળી આબ્યો રે ચંદનચોકમાં,
 ખીડલાં લાબ્યો રે ભારે મૂલનાં,
 તું તો મારા હોંશીલાને કાજ રે,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
 નીચાં સોદાગર તારાં હાટડાં,
 સોદાગર આબ્યો રે ચંદનચોકમાં,
 ઘોકલાં લાબ્યો રે મોંઘા મૂલનાં,
 તું તો મારા હોંશીલાને કાજ રે,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !

હેશ્વીવારનું આ બધું મનદેદને મણાવવાનું છે ને ! કમચા કરતાં
 વિશેષ અહીં તો હોંશ છે, ઉત્સાહ દેખાય છે સ્વમનનો આ ગીતમાં !
 શ્રુતિને શોભાવવા જાણે તેઓ સૌ ન નીકળ્યા હોય !

આ તો લાડ લાડાબાં મોનો ચંતા મરધને. પણ ત્યારે કંઈ
 મરધડીનો વિચાર સ્વજનો ક્યાં વગર રહે ? તેથી તેના માટે પણ સ્વજનો
 કહેવાને છે કે :

નીચાં ચુડગર તારાં હાટડાં,
 ચૂડા લાવે રે ભારે મૂલનાં,
 તું તો મારાં.....બાને કાજ,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે !

નીચાં સરેયા તારાં હાટડાં,
 કંકુ લાવે રે ભારે મૂલનાં,
 ખુશબો લાવે રે ભારે મૂલનાં ।
 તું તો મારા હોંશીલાને કાજ,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે
 નીચાં માળીડા તારાં હાટડાં,
 તોરા(હારગજરા)લાવે રે ભારે મૂલનાં,
 તું તો મારા માનીતી કાજ,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે ।
 નીચાં લવારી તારાં હાટડાં,
 સાંકળાં લાવે રે મેંઘા મૂલનાં ।
 તું તો નારીને કાજ,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે
 નીચાં કંસારી તારાં હાટડાં,
 કાસંદી લાવે રે ભારે મૂલની,
 તું તો મારા રંગીલાને કાજ,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે ।
 નીચાં ખરાદી તારાં હાટડાં,
 પલગ લાવે રે ભારે મૂલનાં,
 તું તો મારા હોંશીલાને કાજ,
 વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે ।

માત્ર જીવાનને સંબોધીને કુટુંબીઓએ કંઈ ગત જીવ પાછળ
 ઓર્ષા રહન નથી માંડ્યાં હોતાં આત્મા વિનાના જડ દેહના ડેરાતંજુ
 તો મામને પાછર જ તથાપ છે ને । અને સ્વજનોને તો મનમાં શંકા

જન્મે છે કે ધડી પહેલાં આપણામાં આસક્તિ—શ્રદ્ધા રાખીને જીવતો
લાડ આમ સર્વસ્વ મૂકીને ચાલ્યો જ્યો? તે જીવ લોકગીતના રચનારોએ
કઈ રીતે કીધો છે?

ખાદર તંબુડેરા તાણિયા રે લાડા,
જોય લાડા હાય હાય!
કટંગી તેડાવે મોટે માન,
જોય લાડા હાય હાય!
દાદાજી તેડાવે મોટે માન,
જોય લાડા હાય હાય!
તોય ન આલે બોલ્યા બોલ,
જોય લાડા હાય હાય!
બેનડિયું બોલાવે મોટે માન,
જોય લાડા હાય હાય!
તોય ન આલે બોલ્યા બોલ,
જોય લાડા હાય હાય!
માતાજી બોલાવે મોટે માન,
જોય લાડા હાય હાય!
તોય ન આલ્યા બોલ્યા બોલ,
જોય લાડા હાય હાય!

એ જ પ્રકારનું આ ગીતઃ

લીલી લીંબરડીની છાંય રે;
મરઘો બોલ્યો રે કરોધમાં,
મરઘે ઇના કટંગી જગાડિયા,
કટંગીને રામબાણ છૂટયો,

નાસે પંખીડા તુને મારશે !
 પંખી ઊડ્યાં ને રાજા રઈ ગયા,
 લીલી લીંબરડીની છાંય રે !
 નાસે પંખીડાં તુને મારશે,
 પંખી ઊડ્યાં ને રાજા રઈ ગયા
 લીલી લીંબરડીની છાંય રે !
 મરઘે એના દાદાજીને જગાડિયા,
 દાદાજીને રામબાણુ છૂટશે,
 નાસે પંખીડાં તુને મારશે,
 લીલી લીંબરડીની છાંય રે !
 મરઘે એની બેનડિયુ જગાડિયુ,
 બેનડિયુનાં રામબાણુ છૂટશે,
 નાસે પંખીડાં તુને મારશે,
 પંખી ઊડ્યાં ને રાજા રઈ ગયા !

પંખી ઊડી ગયું અને બોલિયું બાહરા રહી ગયું તેનો સ્વજનને
 શોક થયો છે. પછી સ્વજનો આત્મસતોષ માટે પૂછે છે કે :

પાળે ધૂમે પારેવડાં,
 મઢીએ ધૂમે નાગરવેલ,
 એાય લાડા હાય હાય !
 પાંહે રઈને દાદે પૂછિયા,
 ક્યાં છે તમારો વાહ,
 સીંગાસણ અમારા બેહણા,
 ને વધકુંઠ અમારો વાહ,
 એાય લાડા હાય હાય !

આમ કરજીને હળવો કરવા, આત્માની શાંતિ કાળે સ્વજનો
મનને તૈયાર કરે છે. કરજીરસ ચાંતરસમાં છેવટે સરી પડે છે. એ મૃત્યુને
તેઓ મંગળમય બનાવે છે અને ગાય છે :

હાયમાં માળા ને મુખે રામ રે,
રામે કરતાં રાજવી નીસર્યાં,
વિશ્વનાથના ઘરે તંબુ તાણિયા,
મળ્યો છે કાશીનો સંઘ,
હાયમાં માળા ને મુખે રામ રે,
રામે કરતાં રાજવી નીસર્યાં !
મળ્યો છે ડાકોરનો સંઘ,
રણછોકણ તંબુ તાણિય,
મળ્યો છે ઘાંઢોદનો સંઘ,
શેષશામીજીએ તંબુ તાણિયા,
મળ્યો કરનાળીનો સંઘ,
કુબેરના ઘરે તંબુ તાણિયા,
હાયમાં માળા ને મુખે રામ રે,
રામે કરતાં રાજવી નીસર્યાં !

પછી તેઓ જીવશિવના સંબંધને વર્ણવવા લાગે છે :

હાય રે જીવ શીદ કરે ચોસના
તમારું હોય તો બાય નેં,
હાય રે જીવ શીદ કરે ચોસના ?
પોતાનું હોય તો બાય નેં,
મારું મારું કર્યાં મરી ગયા,
તારું નથી તલમાર ને,

તમારું હોય તો જાય નૈ !

રામચંદ્ર જેવા રાજા ગયા,

રિયાં સીતાબાઈ નાર

પોતાનું હોય તો જાય નૈ !

હાય રૈ જીવ શીઘ્ર કરે શોસના ?

તમારું હોય તો જાય નૈ !

રાણાજી જેવા રાજા ગયા,

રિયાં મીરાંબાઈ નાર જો !

પોતાનું હોય તો જાય નૈ !

હાય રૈ જીવ શીઘ્ર કરે શોસના ?

તમારું હોય તો જાય નૈ !

પોતાનું હોય તો જાય નૈ !

આમ સ્વજન પર આવેલી વિપદને ઓછી કરવા એક જ થયેલો
શ્રીવર્ગ શત્રુસમર્થો રાજિયો ગાઈ લે છે.

રાજિયા અને મુસિયાના લોકકથિએ આમ જીવનના મહત્વની
ક્ષણોને ગાઈ છે તેમાં એક છે કરજીની ! અને જીવનમાં માત્ર કરજીને
જ સ્થાન છે, ખરું ? ના, કરજીમાંથી માનવે જીતીને હેરડે તો જીવન-
ના મહામાર્ગ માટે તૈયાર થવાનું છે. તે વખતે તેના કંઠે હોયું જોઈએ
શત્રુસનુ એકાદ ગાણું.

લોકગીતના ગાનારા ત્યારે દાર્શનિકથી જરાય જીતરતા ખરા કે ?
જીવનના મહામૂર્ખા મૂર્ખો તારવીને આમ લોકો સમક્ષ જ તેઓએ
મૂર્ખા ॥ નૈ !

અભિમન્યુના રાજિયા

જનમમૂલના હૃદયથ ભાવો, ઊર્મિઓ, દર્શનશોભના આવેગો, દુર્દૃષ્ટિઓ તે સદૃષ્ટિઓના ધેન કથનો લોકગીતમાં જોડનાં પ્રાપ્ત થાય છે તેટલાં શિષ્ટ સાહિત્યમાં કદાચ ઓછાં જોવાં મળશે એવો પ્રશ્ન કેટલાક લોકગીતની કૃતિઓ વાંચનાં જન્મે છે એ વ્યક્ત કરવા કષ્ટિત ગમાયણ, મહાભારત કે પુરાણનાં પાત્રોનો આશ્રય લઈને તેમનાં પોતાનાં જ હૃદયસ્થ માનવ-ભાવોને માનવીએ વ્યક્ત કર્યાં હોય છે સીતા જેમ ગમાયણનું કરુણપાત્ર છે તેમ મહાભારતનું કરુણપાત્ર ઉત્તરા અને અભિમન્યુ તેમનાં પર મુગ્ધ ધર્મ આપણા સાહિત્યના શિષ્ટ કવિઓએ પણ કર્યાં તેમને કાવ્યમાં ગાઈ નાખીને અમરત્વ નથી આપ્યું ? પ્રેમાનંદ, નરસિંહરાવ દિવેદિયા છત્યાદિએ ઉત્તરા અને અભિમન્યુને ગુજરાતમાં ધગધગનાં બનાવી દીધાં છે, પણ લોકમ દિવ્યના રચનારાઓએ પણ તેમને કાંઈ ઓછું મહત્ત્વ આપ્યું નથી લોકોને પણ આ બંને પાત્રો માટે ઘણું મહત્ત્વ આજેય રહ્યું છે અને તેથી અભિમન્યુના મૃત્યુનો પ્રસંગ લોકોને મન અતિકરુણ પ્રસન્ન છે તે જ કારણે મ્હાલ લોકોએ જનસમાજમાં અભિમન્યુ જેવા યુવાનોના મૃત્યુ વખતે અભિમન્યુના રાજિયા ગાયા છે

રાજિયા ત્રિશે અદિદર્માં મારા મિત્ર ડૉ. થી નટવ શાલ બસે કહ્યું 'આજે એક મીરાણીમેન આપણને ગજિયા મહાવવા બપોરે સવા વાગ્યે આવે'

પણ તે જાહેન કાન્હુવવાત્ અદિદ ન આવી શક્યા, તેથી બપોરના બગમગના તાપમાં આસરે અઢી વાગ્યે દોઢેક માર્છન ધૂળ ખુદીને અમે અને નવા માંડવા ગયા. ગામના છેવાડાં જાગમાં ખુલ્લા આકાશના તળ નીચે એકવચણ નવું બંધાતું ઘર છે ઘરના છાપા પરવરણ પણ

હજી ઝોઢવાયુ નથી પરસાળમાં એક ખાટનો પડ્યો છે ખાટનાની પડખે
બે વાંકડા પડ્યા છે તેના પર બે મીર બેઠા છે અમને જોઈને તેઓ
ધેના ધેના બનીને બોલ્યા 'ડોક્ટર સાહેબ, લાઈસા'બ અમે તો બૂની
ગયા આપ આ તાપમાં અમારા ઘરે ? ખાટલે આવો, આમ આમ !'

'મારા જોળખીતા અમદાવાદવાળા કાલ મે તમને વાત કરી
હતી તે એ તો ગીતો માંડવાં નીકળ્યા છે' મને મતાવી ડોક્ટર બોલ્યા

મીર જીવાન મરકીને બોલ્યા 'આવડતા હશે તેટલા મડાવશું'

'રાજિયા પણ મડાવશો ?' ડોક્ટરે કહ્યું

'રાજિયા તો દરિયાવમે'નને આવડે' આધેડવપર્ના મહેનને મે
ઝોરડામાં ફરતાં જોયાં તેમજો કાળુ સાળુ ઝોઢયુ હતું તેમની પાતળી
કાઠી આમળના બે ત્રણ દાંત મોંમાંથી પડી ગયેસા દાંતે બજર દેવાની
રેવ હોવાથી સાવ શ્યામ પડી ગયેનાં

'બે'ન રજવાડામાં કુવરનાં મૃત્યુ થાય ત્યારે રાજિયા ગાવા જાય
છે બનકના પથ્થર જેવા રાજવી આ રાજિયાનો સાદ સાંભળીને
પીમળા જાય ! એમની સાથે ખીમ્મ ફટનાર્ગ હોય બેન રાજિયાની
પક્ષિઓ આનાથે ખીમ્મ કીને'

મે કહ્યું, 'વડોદરામાંથી મને અભિમન્યુનો રાજિયો મળ્યો
ઉતરાવનાર પૂછ ફાઈ વીસા લાડ વણિક છે મને મારા એક વિદ્વાન
મિત્રે તે આધ્યો છે'

'તમારી પાસે અહીં છે ?' દરિયાવ મહેન મને પૂછ્યું
મે મારી ફાઈવમાંથી રાજિયો કાઢી વાંચવો સર કર્યો.

" જોતરાને થયો અભિમાન,

અભિમન્યુ રાજા રે યુદ્ધે ચડયા

જીવદમા કાઢય સોસરા રે બાણ,

કેમ જોતરાબાઈ રિસાઈ ગયા,

ભુદ્ધમાં કાઠયાં ઢાલતલવાર,
ઝોતરાનો ગર્વ ઉતારિયો.

ઝોતરા રાણી પૂછે છે :

“હૃદય, આજનાં ગયેલ ક્યારે આવશે.”

“આવીશ, આવીશ માસ છ માસ,
ભાદરવાના પાછલા પખવાડિયે.”

રાણાજીએ કીધો છે ક્રોધ,
જોલાણું ત્યારે તું આવજે.”

માંદણી આવી રાજદરબાર,
ઝોતરાને તેડાં મોકલ્યાં.

ઝોતરા રાણી કરે છે રુદન,
હવે મારું તો શું થશે ?”

રામરાજ બેઠી રે ગયાં,
મલેછનાં રાજ બેસાડ્યાં.

“ઝોતરારાણીને થયો છે ગર્ભવાસ.”

એવું કહીને રાણા સચર્યા,
બીજા સાંઢણી આવી છે દરબાર,

રાણીને છાની રાખવા
જે'ની હવે છાની રહે,

યનાર હતું તે યર્ધ જયુ.

“માઝી, મને...મને ઝોત ન આવ્યું,
રામરાજ રે બેઠી ગયાં.”

‘આવો અજિય-ન્યુનો રાત્રિયો તમને...’ એ મીનાણી બહેનને
પૂછ્યું.

‘અભિમન્યુના બધા રાજિયા આવડે છે, પણ અમે તે બધા ન માર્છએ. તેમ રાજિયા મવડાવનાર પણ ન મવડાવે.’

‘કેમ ?’

‘હાં તો મવડાવનારને ત્યાં, કે હાં તો ગાનારને ત્યાં છ મહિનામાં ભારે નુકસાન થાય.’ દરિયાવળહેન બોલ્યા. અગારા ખાટલા સામે બેઠેલ મીરભાઈ બોલ્યા : ‘ડોશીશાસ્ત્ર. અબેમાનના રાજિયા તમે માંડ્યા છે ?’

હાય દરવાન ! દરબાર ઉઘેડ રે,
 શોકીલાને જવું દિલ્હી શહેરમાં.
 હાય દરવાન ! દરબાર ઉઘેડ રે,
 નોખીલાને જાણુ દિલ્હી શહેરમાં.
 સૂતા હાય તો જગાડજો,
 બેઠા હાય તો બોલાવજો,
 હવે મારું શું થાયે રે ?
 કયમ રે રાણા પોઢયા રે, હજૂર બાગમાં.
 કરમે નીકળ્યાં કથીર રે,
 રાણી બેઠી રુદન કરે !
 જગમાં થાયે જાણુ રે,
 આ રે યશું શું રાણા !
 ઇશ્વર ક્રોધ્યા રાજદરબાર રે,
 રાણી બેઠી રુદન કરે !
 હાય દરવાન ! દરબાર ઉઘેડ રે,
 શોકીલાને જવું દિલ્હી શહેરમાં.

‘મને તો આ બે મહ્યા છે,’ મેં કહ્યું. ‘તારે તમને અભેમાનના
ખીજા મરસિયા હું મંડાવું’

‘ઝોય રે બાવા ચડયો અભેમાનરાય,
દિલ્હી તણાં દળ જોને જિમટયાં,
ઝોય રે માડી આજુનાં સમણાં એવાં હોય,
કેરાં ઘરેણાં જોને જિતયાં.’

ઝોય રે દીકરી ઘણી રે ખમ્મા,
ઝોય રે મા, સમણાં પડે રે સમદર બેટમાં,
ઝોય રે બાવા ચડયો અભેમાનરાય,
દિલ્હી તણાં દળ જોને જિમટયો।

ઝોય રે વીરા આજુનાં સમણાં, એવાં હોય,
કેરાં ચૂડી જોને નંદવાયાં.

ઝોય રે બે’ની ઘણી રે ખમ્મા, મારાં બા,
સમણાં પડે દશમન બારણે,
ઝોય રે બે’ની આજુનાં સમણાં એવાં હોય,
કેરાં સાળુડાં જો ને જિતયાં.

ઝોય રે બે’ની ઘણી રે ખમ્મા, મારાં બા,
સમણાં પડે રે શીમળ લાકડે.

ઝોય રે દાદા આજુનાં સમણાં, એવાં હોય,
કેરાં કઠણ નંદવાયાં,

ઝોય રે દીકરી, ઘણી રે ખમ્મા, મારાં બા,
સમણાં પડે સૂકે લાકડે.

દરિયાવજહેને મૂરીવા દટે લહેકા સાથે રાજિયો મંડાવવો ચર કયો.

અમેમાનતો આ મરસિયો તમને મળ્યો છે, હાઈ?'

હું દરિયાવજહેનના કરુણ કંઠનાં ગાનથી મદ્મદિત બની ગયો હતો. સૂરીલા કરુણ કંઠમાં ડેવું બહુ, કેની કળા આ બાઈ માણસે સાધ્ય કર્યાં છે।' હું મનમાં વિચારતો હતો.

મૂર્ખામાંથી બગીને ઉત્તર આપે તેમ મેં જવાબ આપ્યો : 'મારી પાસે નથી.'

તે બહેન મારી સામે મરકી પડ્યાં ને જોડ્યાં : 'આથીય અઠકા સરસ ખીંલે માડો.'

તેમણે તે જ કંઠે ખીંલે મરસિયો આવો સર કર્યો, મેં માંડવા માંડ્યો.

“ઘોતરાની માડી બાંચો સોનીડાની હુકાન,
સૂતેલો તે સોનીડા જગાડિયો.

સોનીડા અબ ઉઘાડ, ઘરેણાં લાવે બારે મૂલના.
કાઢે કાઢે ખીજાં અબ સોનું કાઢેને, પિત્તળ નીપજે,
વધેતાના લખિયા લેખ, કરમે કાળાં રે, ઘોતરા નીપજ્યાં.
ઘોતરાનો વીરો બબલ સૂતો તે બબલ જગાડિયો.
ભાઈ બબલ અબ ઉઘાડ, સાડીઓ લાવે બારે મૂલની.
કાઢે કાઢે રાતી રાતી ચૂલ, રાતી કાઢે તે કાળી નીકળે.
વધેતા લખિયા રે લેખ, કરમે કાળાં રે, ઘોતરા નીપજ્યાં.
ઘોતરાના દાદા ચૂડગરિયાં હુકાન, સૂતો તે ચૂડગર જગાડિયો.
ભાઈ ચૂડગર અબ ઉઘેડય, ચૂડલા લાવ્યે બારે મૂલના.
કાઢે કાઢે રાતાં ચોળ, રાતાં કાઢે ને કાળાં નીપજે.
વધેતા લખિયા રે લેખ, કરમે કાળાં રે, ઘોતરા નીપજ્યાં.

જોતરા સૂતાં પલગ મોઝાર, સમણાં આલ્યા રે જોને કારમાં.
ભાઈ રે રાયકા સાંઢડી સોંઢાડય, મારે જાવું નગર શહેરમાં.
જોતરા તો સાંઢડીએ અસવાર, સામાં મળ્યાં કાઠી લાકડાં.
‘જોતરા, તું પાછેરી વળ, આજનાં શુકન માઠાં ગણાય.
જોતરા તું પાછેરી વળ, આજનાં શુકન માઠાં ગણાય,
માર્યાં માર્યાં સંજેગાર, એક માર્યાં અલોમાન રાયને.’

દરિયાવળેને રાજિયો પૂરો ક્યોં અને તે જોડ્યા. “ભાઈ, આ મરસિયો ક્યાં થયો.”

મેં માથુ ધુણાવ્યું બાઈએ કહ્યો જે કરુણાર્તુ ગાન ગાયું
હતું તે મારા શરીરના અંગે અજમાં બ્યાપો મથું હું તો નાચીજ
આદમી ! આ બાઈની આ ક્યા સકિતની હું સો કદર કરું પણ
જીભા થર્ના થર્તા મનમાં તો થયા ત્યું, આ કઠ કેટલા લુગ ગુજરાતમાં
ટકશે ? આને કાવમી બનાવો દીધો હોય તો ? અને મેના ગુજરીનાં
ઊંઘાં તો ગુજરીની કુખને દીપાવે તેનાં છે તો આવાં ઊંઘાંને નાણી
નાણીને તેમના કઠને ક્યકડાની પદીમાં પૂરી દીધો હોય તો દરિયાપારના
સુવકના મનવીને મેના ગુજરીનાં સત્તાનની તાકાતની ત્યારે જ જાણ
થાય.

શોક અને આનદના મિશ્ર બાવે હું તે ખેરડામાથી જીભો ધપે.

પણ માયા પરના તાપને સ્થન કરવાની સકિત આ બાઈએ
આદાદ વળતારી અને આપી હતી.



परभवतुं परम्

•

‘ After this life of two days is passed;
We must travel onward alone ’

પરભવનું પરળ

હું માની બહારની પડસાળમાં બેત્રણ પઢાર સાથે બેઠો હતો. માત્ર જિજ્ઞાસાપૂર્વક અનેક પ્રશ્નો તેમને પૂછ્યે જતો હતો તેમના ઉત્તરોમાંથી નોંધવા જેવું નોંધી લેતો તે પ્રશ્નોમાં નાતજાતના રિવાજોથી માંડીને તેમના જાતીય જીવનના અમત પ્રશ્નો પણ આવી જતા કોઈ વાર તેઓ મનકતા તો કોઈ વાર ચમકતા ને તેઓ જવાબ આપતા : ‘આવું આવું થું પૂછો છો ?’

‘ખપ હશે ત્યારે જ પૂછતો હર્ષિ ને !’

પછી તો ટોણું પધવા માંડ્યું તેમાં વૃદ્ધઓ અને યુવતિઓનો પણ હિમેરો થયો

મેં પૂછ્યું. ‘આ જીવ જતો રે’ પછી તેનું થું ચતું હશે ?’

‘ભગવાનના ધરે !’ વૃદ્ધ પઢાર જગન રેવાએ જવાબ આપ્યો.

‘ભગત છે જીવની વાતું તે બવ જણે છે’

‘ભગવાનના ધરે ?’ મેં આશ્ચર્ય વ્યક્ત કર્યું

‘બાપલા, શી ખમર એવી વાતોમાં તમે માનતા હશે કે નૈ, પણ જીવ તો નિરમાણી જવા તનસતો હોય ! મારી વાત કરું. માનશો ? હું જન્મીનો છું જપનો મેં જોયેન પણ જન્મનમાં હું પાપિયો માછડાં બાહું, ખડે ! સમજણ નૈં તે પરમાગી વ ખાતો, પણ જપના ડેડે પરજી હોયે વસી અપા તે એકલો ઠર્કક ને ઠર્કક રાગોડું, ન્યાં લાસજી બાવાનો સગ થઈ ગયો ને આ કઠી બધાવી જગન થયો, પરમાગી હોડી.’ અને તેમણે ભજન લનકાર્યું :

હંસલા હાલો હાલો સતગુરુના દેશમાં,
 ત્યાં સર્વે દુખ મટી જાય.
 હંસલા પિયો રે પિયાલો ગુરુના નામનો.
 હંસલા જિંચી રે મેડી તારી જિજ્ઞાસી,
 ત્યાં તો હલકે હીરોળાખાટ,
 હંસલા પિયો રે પિયાલો ગુરુના નામનો.
 હંસલા નદી કડાણાનાં રૂપમાં,
 પરમારથ કરનાર કૌણ હોય ?
 તેમણે મેળ્યાં સમૂળાં જાડ,
 હંસલા હાલો હાલો સતગુરુના દેશમાં.
 હંસલા દેવે રે હુંગરપરી બોલિયા,
 મારા સાધુ અમરાપર હોય !

‘આ હંસલો-શ્રવ સતગુરુના મધકર્મા જવા પાપું’ દેહાવી રહ્યો છે. એનાં ભાગનો મગાણો છે અને આતું જંખના હંસલાને સામેથી કહેણું પણ આવે છે :

એ હંસલા હાલો આપણા દેશમાં,
 રે અચરત ખેલ બન્યો.
 અમારા દેશમાં નિત નિત પૂનમ,
 ને ચોમાસાના તે દિ’
 અમારા દેશમાં અમીરસ વરસે,
 ને ભૂખ્યાં, ને તરસ્યાં,
 હંસા હાલો આપણા દેશમાં;
 રે અચરત ખેલ બન્યો.
 અમારા દેશમાં મેવલા વરસે,

વરસે અખંડધારા,
 સૂઈ રવ મેદાનમાં,
 ને' ભીંજાય તરી કાયા,
 આપણા દેશમાં અચરત ખેલ બન્યો.
 અમારા દેશમાં ઊઠમૂંઠ કૂવો,
 ઠાંક સાંકડી ચેરી,
 અવલ પાણિયારી પાણી ભરે,
 વિના ગાગર, વિના દોરી,
 અચરત ખેલ બન્યો !
 અમારા દેશમાં વાળાં વાગે,
 વાગે અપરંપારા,
 કહત કળીરા. સુણો મેરે સાધુ,
 હંસા નંજરે ના'બ્યા,
 અચરત ખેલ બન્યો.

'ભાઈ, આણું કેણુ આવે કે તરત જ જીવડો શું જંખવા માડે છે,
 જાણો છો તમે !

બાપું છે નિરવાણી,
 જીવડાને બાપું છે નિરવાણી,
 સમ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
 બાપું છે નિરવાણી,

ભાઈ જીવડાને બાપું છે નિરવાણી !

માટી લેજી માટી ધારે,
 પાણી બેળું જળપાણી,
 કાચી કાયાનો ગરવે ન કરીએ,

આખર થાયે ધૂળધાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,

ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !

રાજા જાશે, પરજા જાશે, રૂપાળી રાણી,
ઈંદ્રનું ઈંદ્રાસન જાશે, બ્રહ્મા ને બ્રહ્માણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું ॥ નિરવાણી,

ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !

આણુગઢમા કુલોજી રાણા,
એમના ઘરે પદરસે રાણી,
સત હોડાવવા ચારણુ આવ્યો,
ત્યારે માગી કુલા તારી રાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,

ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !

સગાળથા સરખા શેઠિયા,
એમના ઘરે સઘાવતી રાણી,
સતના કારણીએ ફેલિયો ખાડયો,
નયણે ના'બ્યા પાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,

ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !

હરચંદ સરખા રાજિયા,
 ઈમના ઘરે તારામતી રાણી,
 સતને કારણે તરણે વેચાણાં,
 નીચ ઘર સરિયાં પાણી,
 રામ ચેતનવાળા તમે ચેતીને ચાલો,
 જાવું છે નિરવાણી,
 ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !
 સંકાગઢનો કોટ કનકનો,
 એમના ઘરે મનોહરી રાણી,
 જેની ગાદીએ સૂરજ તપે,
 તેની લોભિકા લેજાણી,
 રામ ચેતનવાળા તમે ચેતીને ચાલો,
 જાવું છે નિરવાણી,
 ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !
 અવિચળ સતિ ધરુને (ધ્રુવને) સોપી,
 દાસ પોતાનો જાણી,
 શુરુપરતાપે બોલ્યા અમરથી,
 તેની અમર રે'શે વાણી,
 રામ ચેતનવાળા તમે ચેતાને ચાલો,
 જાવું છે નિરવાણી,
 ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !

'જીવ આ નજરે ચારે કોર નજર નાખતો ફરે છે. જીવ એની
 જાતને સોંપે છે એટલા ઉપસ્થાનના હાથમાં. જીવ નવું ને જાનું
 બેતોબેતો, વિચારીવિચારીને ફરતો હોય છે.

‘અને પાછો આ જીવને કાઈ ઉપદેશ પણ દેવા કાનમાં વાતો કરતો હોય છે. એના કાજે જીવોને આ ભજન :

લેળીશ નેં રે કાયાને છોડીશ નેં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી લેળીશ નેં રે !

જીવો રે ચપો, ઈનાં ફૂલડાં ઘણેરાં, વા’લા !
દ્રાચું લેજે, ફૂલડાં તોડીશ નેં,
ભમરલા, વાડી તું લેળીશ નેં રે !

લેળીશ નેં રે કાયાને છોડીશ નેં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી લેળીશ નેં રે !

નીચો રે આંખો, ઈનાં ફળ તો ઘણેરાં, વા’લા !
રસ ઘોળીને રસ તું ઢોળીશ નેં,
ભમરલા, વાડી તું લેળીશ નેં રે !

લેળીશ નેં રે કાયાને છોડીશ નેં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી લેળીશ નેં રે !

આર આર મરઘલાં, વાડી લેળવાને આવ્યાં, વા’લા,
ખજમે જણાની નોડયું, આ તોડીશ નેં રે, મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી લેળીશ નેં રે !

લેળીશ નેં રે કાયાને છોડીશ નેં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી લેળીશ નેં રે !’

મેં પૂછ્યું : ‘આ ભજન ખરેખર ફરી ફરી સાંભળવું ગમે એવું છે. ફરી ગાઈ સંભળાવશો ?’ ભજનની દ્રવ્ય, તેનો આધાર, લય, જાણે કાઈ ગાધર્વના કંઠમાંથી રેવનાં હોય તેવું મને લાગ્યું.

‘ભલે’

તેમણે ભજન ફરીથી ગાયું હતું તેના કાવ્યત્વ પર પ્રગ્લ દનો.

તેથી મેં પૂછ્યું: ‘કાનું આ બજન હતું?’

‘અમે તો મીર્જાઈ, કમીર બગત, અમ-શી બગત, મૂનનાથ, વાંદીઆઈ, કુંગરપરી, નયુગમ, લાલા બગત, આવો હેલ, રામદે પીરનાં; આમ સૌનાં બગતું ગાઈએ. તેમાંના કો’કનું હશે આપણે તો બજન હારે કામ છે ને!’

હું તો કહું કહડ પીને આ બધાં બગનો મઠ્યે રાખનો હતો. છગન બગતની વાણી જીવી ઝિઘાગે કે કેમ એ પ્રશ્ન તો લખતાં-લખતાં મને વારે વારે થતાં પણ તેના મર્મ મુધી હું પહોંચીશ કે કેમ તે વિષે મનમાં પ્રશ્ન જ નાંતો જન્મ્યો; કેમકે આ બધાંથી હું કોરોકટ હતો, પણ છગન બગતને શ્રદ્ધા હતી કે મારે તો મારી વાણી વહાવવી. તેમણે ની વાત ઉપાડી: ‘જીવ ને દેહ પણ ઘણી વાર વાતો માંડતા હોય છે, એનું એક બજન તમે સાંભળો.’

બનરાવનમાં હંસા મઠી રે બનાવી રે,
કંચનના મોહું લૂંટાય રે!
તારે મારે તે હંસા જોયા જેવી થાશે રે,
ઠાયા છોડીને હસો જાય રે!
તાલ ને તમાસા જોવા દુનિયા મળે રે,
તમુ વિના હંસા, શરૂ ઉઘસી રે!
દહુડે જડ્યું હું મોટી રે તારે ને મારે હંસા....
થોડા દિવસ હંસા લા’વ લિયો રે!
તારે ને મારે હંસા....
ઠાયા છોડીને હસો જાય રે!
તાલતમાસા જોવા દુનિયા મળે રે!
તારે ને મારે હંસા....

‘હસનો એટલે જીવ જીવને દેહ આ વાતો કહી રહ્યો છે અને આપણો જીવ આપણને ક્યાં એાછી સિખામણુ દે છે ! તેનો સાંભળનાર દુનિયામાંથી તરી જાય, ત્યારે સાંભળો

જૂઠડી કાયા, રાણી, જૂઠા ના જોલો જી,
વઢશે તુંને તારો ઘડનારો રે !
આય પદારથ મોટા મોટા પામ્યા જી,
ભજન કરી લે તું દીનાનાથ
માતાપિતાની તને લાલચ લાગી,
ત્રિયાના બોલડે બધાણો રે-જૂઠડી કાયા .
જાણે જીગતમા વે'લા સુધરજો જી,
ભજન કરી લે તું દીનાનાથ
દૂધપૂતર ને અગળ લખમી
એ શે ફળશે તારી સેવા રે-જૂઠડી કાયા .
અતકાળે જીવુ છે એકલા,
કોઈએ મરણ ને જાણ્યો રે-જૂઠડી કાયા
આ ભૂમિ પર એવા એવા વિયા ગિયા,
હાથી-ધોડાના ચડનારા,
હલ હીતર શુષ્ક ગાય નથુરામ,
આયા નથી કોઈ રે'વાનું રે જૂઠડી કાયા

‘સાચુ કહી બાઈ આંધા કોઈ રહેવાનુ નથી પૂતર, અનગળ લખમી, માનપિતા, સ્ત્રી, આ સૌનો તાલચુ જીવ જાણે કે ‘અતકાળે જીવુ એકલા.’ ત્યારે તે ગાય છે કે ‘આ ભૂમિ પર એવા વિયા ગિયા, હાથી-ધોડાના ચડનાર, પછી મારા જેવા પદાર્થ શુ ? અને પછી અમને ઉપરનાળો આવીને સંધેવો દઈ જાય છે શો સંધેવો ?

હાં....હાંરે હું તો અગ્નિ, હું તો શૂરવીર થઈને,
 હાં રે હું તે ઝોફું, વીછી, હું 'ટંકારો ઝેરી,
 હું વાઘ થઈને વનમાં રવું છું,
 તારે હું તમારો વેરી રે.

હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
 હું તો અગ્નિ, હું તો તમારો વેરી રે.

હું તો તાવ, હું તો તરિયો, હું તો રણઝણ રાગી,
 વેઠ જ થઈને પાંહે રવું છું, હું તમારો લોગી,
 હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
 હું તો અગ્નિ, હું તો તમારો વેરી રે.

હું ભૂલો ને હું ખાવગિયો, હું પાલખમાં રવું છું,
 આલે તેનો ચણ્યો ન આપું, નવ આલે તેનું લવું છું,
 હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
 હું તો અગ્નિ, હું તો તમારો વેરી રે.

હું કાકો ને હું પિતરિયો, હું તે પતા થઈને રવું છું,
 વા'લી તે બાઈના જેઠે વળગિયો ત્યારે,
 રવું છું સાબદો થઈને !

હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
 હું તો અગ્નિ, હું તો તમારો વેરી રે !

'શુવને જોનો નડો છે તે આવો છે. ધડીમાં હું વખ તો ધડીમાં
 રોનું જ તે વારણ. એના રંગપત્રડા પાગવા દોલવા છે. તારે જ શુવ
 મંત્રાઈને ઈતી રમત બાણુવાની ઝાઝી ગડમથલમાં ન પડતાં તેના જ
 પગમાં નમણું કરે છે. નમણું જ લજન તારે સંભળે ॥

સાધુ જોલે છે એ મીઠી વાણી રે,
 પરદેશી મુજને સાધુડાં મળિયાં રે !
 આ રે કાયાનો બંદે ગઢડો હેરાણો,
 વિઠલા કરજો આ મારી વાકું રે !
 આ રે કાયાનો બંદે ગઢડો હેરાણો !
 સાધુ જોલે છે એ મીઠી વાણી રે,
 પરદેશી મુજને સાધુડાં મળિયાં રે.
 સઘળા કટંગની મેં તો આ મરનાદું મેલી રે,
 ખલકો પહેર્યો છે ખાવંદિયા એ તારો રે !
 પરદેશી મુજને સાધુડાં મળિયાં રે,
 સાધુડો મીઠી જોલે છે, એ મીઠી વાણી રે !
 સાંકડી ચેરીમાં આ સતગુરુ મળિયા રે,
 નમણુ કરે છે નર આ નારી રે !
 પરદેશી મુજને સાધુડાં મળિયાં રે,
 સાધુડો મીઠી જોલે છે, એ મીઠી વાણી રે !
 ગુરુના પરતાપે આ બાવો છેલ્લી જોલિયાં,
 જોડ્યાં આ અમીરસ વાણી રે !
 પરદેશી મુજને સાધુડાં મળિયાં રે !
 સાધુડો મીઠી જોલે છે, એ મીઠી વાણી રે !'

સરદાસ યજ્ઞા, તેમણે આજ લીધે અને પછી જોડ્યા : 'ભાઈ,
 જીવે ખાવદનો ખનડો પહેરાવો હોય છે એ ખનડો પહેરતી વેળાએ
 કોઈની લાજ કે શરમ ગણવાની ન હોય ! ને તો જ જીવ સિવને
 ઝોળખે અને સિવને જીવ માટે મમના જાગે, સમજ્યા કે ? અને પછી
 જીવરૂપી મોગવાની થી દસા હોય છે ?

એ મોરલો મરતલોકમાં આંચો રે,
 એ....જી આવડતાં રૂપ ચ્યાંથી લાવ્યો,
 રે મોરલો મરતલોકમાં આંચો રે !
 હે નાભિકમળમાં જાગ્યો એક મોરલો,
 જઈ ખેઠો શીતળ છાપ,

સુરત સુહાગણ સુંદરી રે,
 સૂતા સૂતા શે'રે જગાડ્યો રે !
 રે મોરલો મરતલોકમાં આંચો રે !
 લીલો ને પીળો મોરલો, અજબ ખેર'ગીસા,
 વરણ થકી ફે'વાણો !
 પાંચ બળધિયે તાવ્યો એક ગાડલો,
 જમમ તાણે તાંસ વાણો,
 રે મોરલો મરતલોકમાં આંચો રે !

ધંગળા ને પીંગળા તારી વાટચું ભેવે છે !
 મારા વાલાનો હુકમ હવ્વુ કયમ ના'વ્યો રે !
 કાં તો રાખીલો રેવે બરાયો,
 કાં તો ઘરધધામાં બરાયો,
 રે મોરલો મરતલોકમાં આંચો રે !

હાં કાચી કાચનો મૂરખા મત કર બરોસો,
 ઈનો પરથમી ઉપર નથી પાચો,
 શુરુપરતાપે બોલ્યા નારણુદા,
 શુણુ તો ગોવિંદના ગવાણુ,
 રે મોરલો મરતલોકમાં આંચો રે !

‘હવે આથી વધુ શું કે?’ કાચી કાયાનો તો મરુખા વિસવા કરે, બાકી એનો વિશ્વાસ શું કરાય ?’

ભગત હાથમાં લાકડી લઈને બિભા થયા - ‘ભઈ, અમે તો આવું ભણીએ તમાગ જેવા બણેવા મોટામોટા ચાત્રની વાતો બણે’

‘ના, ભાઈએ તો હજનભાભા તમારા આ સધાં ય બજન માંડી લીધાં છે કાં તો તમાગ વેણુ ય તે !’

તેઓ સૌ ગયાં, મારાં માટે આ બધું જ નવું હતું શિવ, શ્રવ અને કાયા માટે આ મુરદાસે ધડીબર અહીં કેવું પગલવની દુનિયા માટે પરબ માંડ્યું !



રવિદાસની વાણી

‘સોગડી સતવાણી’ ની પ્રસ્તાવનામાં લખ્યું છે કે મીરાંબાઈના ચમાર જાતિના યુરુ ‘રઈદાસ’ નામે કાશી તત્ક, અને આપણે ત્યાં ‘રોઈદાસ’ નામે સુપ્રસિદ્ધ છે એ સોગપ્ટૂમાં સારી પેઢે રહી ગયા મનાય છે ગિરકાંકિના અતરાઈ નામે ગામમાં રોઈદાસ ચમારનો ચામડા ધોવાનો ચમત્કારી કુડ અત્યારે જતાવવામાં આવે છે, અને એના નામે ચડેલા અન્ય પરચાઓ ગામોગામ જાણીતા છે

એમને વૈરાગ્યનો પાકો રંગ લાગી ગયો એને લાગેલી પ્રભુ-લગની જે અનેક ભજનોમાં ઉચ્ચારણ પામી છે, તે ભજનો આજ સુધી સમસ્ત ભજનસાહિત્યના શિરોમણિ મનાયાં છે

રવિદાસની વિવિધતાભરી અને પ્રચુર વાણીમાં પણ ક્યારે કાંઈ સામ્પ્રદાયિક ઉચ્ચાર નથી; એને તો કેવળ નિરંજન, નિરાકાર અને અનામી જ્યોતિના આંતર દર્શન થયા છે તેના ઉપર એ વારંવાર ભાર મૂક્યા કરે છે. એ રીતે રવિનાં તમામ પદો અંતર્મુખ બનવાની જ હાકલ કરે છે.

તે સિવાય સીધા નીતિધર્મનો ઉપદેશ કરતાં પદો પણ એમનાં ઘણાં છે. પાખંડ ઉપર એણે ખૂબ પ્રહારો કરેલ છે. ‘ચડી ખુમારી ન જીતરે,’ ‘આઈ પ્રેમ કરી લહેર’ એવી ‘ખુમારી’ રવિને પ્રિય છે. એનો બીજો પ્રિય શબ્દ છે અનતો. અનતો એટલે નિર્જયતા : વાપનો નાશ.

રાનીપણનો ગર્વ રવિદાસને કડવો ઝેર જોવા લાગે છે.

અત્રે પ્રગટ થતું ભજન વલ્લભ તરફથી સાંપડ્યું છે. ભજનના હિતરાવનાર ભરથરી ખાવા છે.

અરે બેલીડા, બેદલનો સંગ ના કરિયે,

બેદલ મૂળથી મીઠકું બોલે,

આમ એનો અંતર ડાલે !

એની વાતુમાં વરમડ ડાલે,

અરે બેલીડા, કાગડો ને કોયલ એક જ વરણનાં

બેઠાં આંખલિયાની ડાળે,

એક જ વરણું હોય, પણ બેલી બરોબર નહી,

અરે બેલીડા, બેદલનો સંગ ના કરિયે !

હંસલો ને બગલો એક જ વરણુના હોય,

બેઠા સરોવરની પાળ,

એક જ વરણુના હોય, પણ એનો આહાર બરોબર નહીં !

અરે બેલીડા, બેદલનો સંગ ના કરિયે !

કાળા મોઢાની ચણીઠી લાઈ, આવી હેમના તોલમાં,
 હેમ બરોબર હોય, પણ મૂલ બરોબર નહીં,
 અરે બેલીડા, બેદલનો સંગ ના કરિયે !
 આ કળાજગના માનવી, તેના દિલની વાતું ના કરિયે,
 શુરુપરતાપે રવિ ભાણુ સા'બ બોલિયા,
 બેલીડા, ને જીભું ઝાલી ઝાલી રહી !



આ બજન કોનું ?

જુપારે ભરધરી બાવાએ મને આ બજન ગાઈ સંભળાવ્યું
 ત્યારે મારા નાનપણના દિવસોની સ્મૃતિ તાજી થઈ.

મારાં બાળુ હતો, તેમના પુત્રો ખેતી કરે, ને વહેલાં સવારે મારાં
 બાળુ બીદીને ધટીએ બેસી આ બજન લલકારે :

હ ટકિયુંમાં કેમ રે'વાશે, લાઈ,
 મારે રામની રખાયું નહીં !

લગભગ વીશેક વર્ષ પછી ત્યારે ફરી મેં આ જ બજન સંભળ્યું
 ત્યારે ભરધરીજીને મેં કહ્યું : ' ફરી સંભળાવો ! '

બજનરસનો પ્યાલો ઘટઘટાવવા મેં તેમને ક્યું હશે ? ના, મૃત
 સ્વજનની સ્મૃતિઓ તાજી કરવા.

પણ શિશુવયમાં માનમાં આ દષ્ટિ ક્યાં હતી કે બજનો અને
 લોકસાહિત્યની અનન્ય કૃતિઓ એકત્ર કરવી !

મેં રિધરચિત્તે જોજોક વાર આ લજન સાંજળ્યું, અને મેં તે ઉતારી લીધું.

પછી તો તેનો અભ્યાસ આદ્યો. ‘સોરડી સંતવાણી’નાં પાનાં લિખાવ્યાં ને અને તેની પ્રસ્તાવનામાં તે જોવા મળ્યું. આખું નહિ પણ પ્રારંભની આ ત્રણ પંક્તિઓ.

હાટડીએ કેમ રે’વાશે, મારાં સમની રજા નહિ;
 ખેસવા સારુ હાટડી કીધી, હાટડી ખડી મઈ;
 તેડાં આવ્યાં શ્રીરામનાં ત્યારે હાટડી પડી રઈ
 — હાટડીએ.

તે અંતની માત્ર બે પંક્તિઓ :

ધર્મના કામને ઢીલ ન કરવી, વેળા જાશે વઈ,
 દાસી જીવણુ જીમપરતાપે, નામની નોખત થઈ.
 — હાટડીએ.

આ છેલ્લી બે પંક્તિઓ વાચતાં હું વિચારમાં પડી ગયો, કેમકે અને જે લજન સાંજળ્યું છે તેમાં એક પંક્તિમાં છે : ‘દસ હાથીને મોરાર મળિયા તો નામની નોખત થઈ.’

આ પંક્તિ વાંચીને મારા મનમાં પ્રશ્ન જન્મ્યો કે આ લજન મેનું કે મોરાર સાહેબનું કે દાસી જીવણનું ?

મોરાર સાહેબ ઘસદના રાજકુંવર હતા રવિ સાહેબની પાસે તેમજે ભેખ લીધો ને તેમજે જામખંભાળિયા નામના ગામમાં જન્મ્યા બાંધે.

‘દાસી જીવણ’ જીવણદાસ ગોંડલનું ગામકું ઘોઘાવદરના ચમાર ભગત હતા. લજનમંડળીઓમાં મેં જોયું જ ‘દાસી જીવણ’ પ્રિય છે.

મેષાણીઆઈ તેમના પર લખે છે કે, જગનના દિસામે, વ્યાપકતાને દિસામે લોકપ્રિયતાને દિસામે સદૃશી પ્રથમ 'દાસી જીવણ'નાં પદો ભોગવે છે' અને તેમના નામની જાણકારી વચરનું ગુજરાતમાં એક નાનું નેસકું પણ નહિ હોય.

મને પ્રાપ્ત થયેલ પાઠમાંની છેત્તી ત્રણ પંક્તિઓ પણ કંઈક અસ્પષ્ટ લાગે છે. તેા ભજનરસિયા જીવે વધુ માદિતી એકત્ર કરી આ ભજન પર વધુ પ્રકાશ ફેંકે ?

રામની રજાયું નહીં, મારે દેઈનો ભરોસો નહીં,
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !
એક વચાળે હાટડી બાંધી, ઈનો ઠીક બનાવ્યો ઠાંક,
તેડાં આલ્યાં શરી રામનાં, તેા મારી હાટડિયું ઊજડ થે.
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !
નવ ગરહ નવ ઢોલિયે બાંધ્યા, મરણ જરાયે નહીં !
હસ માથાં, વીસ જુજ તોય રાવણ રિયો નહીં !
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !
સા'બ જેવા સમરથ ઢળતા, પોઠવા પલંગ માંહિ,
તો ચાલો ભરે વૈકુંઠમાં, તારો છેડો જાલે નહિ ઢોઈ,
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભઈ, તારે રામની રજાયું નહીં !
હસ હાથીને મોરાર મળિયા, તેા નામની નોખત થઈ,
છંડીદાર ચોકીદાર નત પુકારે, તોય રે'વાના નહીં !
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !

મને નાથ હ્યો ઉગારી !

નરકની ખાણ જેવા માયાની પાવકજ્વાળાએ નિરતર બડ-બડતા આ સસારને કોણુ નિર્મળ નીરે ઠારી શકતું હશે ? હિમાલયપુત્રી મા બાગેરથીનાં નીર એને શાંત કરતાં હશે ? સસારની પાવક જ્વાળા શી યાતનામાંથી તેના પારને પામેન કોઈ જીવ હશે ખરો કે ?

અતમુંખ બનેન જીવ માંલવાને આવા આવા અનેક પ્રશ્નો પૂછવાનો સસારીએને પણ પ્રશ્નો પૂછવાનો મૂઢમતિ સસારી તો ઉત્તર દેવાના જીવને એમાંથી શે ઉગારાય ? કંઈ સસારી જીવે એમાં બળાને ભરમ થઈ ગયા ! દેહનો ધરમ છે કે આમાં પડીને ભરમ થવું !

પણ પેલો અતમુંખ જીવ આથી વધુ વિચારશીન અને ચિંતન-શીન બને છે આ પથ સાચો ? આમાં મારો તો ઉગારો નથી હીરલા શા માનવઅવનારને મૂન-આ વગર મારે સસારની પાવક જ્વાળામાં હોમાઈને ખાખ થવું ?

ના ના ! પેલો નરસિંહ તેમાં ખાખ ન થયો મેડનાની મહા રાણી પાવકજ્વાળા સોસરી નીકળી ગઈ ! દુકારામ અને ચેતન્ય મહા પ્રભુ ચેતનવતા થઈને આ જીલા મારી સામે ! અને તેમની વધુમાર ફેટલી લાંબી છે ? ગોરખનાથ કમીર, જ્ઞાનેશ્વર, નામદેવ, નાનક, ગમદાસ જોલો, ધીરો, નિષ્કુનાનદ

પાવક જ્વાળાનો પાર પામવા તેમને ત્યારે ક્યો હીરનો સાપડયો-હશે ? તે હવે આમ વિચારે છે સસારીનાં વેળ તેને ઇન્દ્રગણ શાં લાગે છે, માયા લાગે છે મૃગજળ તેમાં તેને દેખાય છે ને એ જીવ એટલું તો પામી બેઠો છે કે ઇન્દ્રગણમાં પણ ન મૂકવો મૃગજળ

પાછળ વત્તખાં ન માગ્યાં ! એ તો પછી દૂંદરા નીકળે કંઠોના બાધ-
નાર ગુરુદેવને ! અખણને આત્માનુભવ થયો હતો, તેવોય અનુભવ
અનેક અખેશને ય થયા હશે, 'ગુરુ કાધા મેં ગોકુળનાથ...'

પણ જાગેશ જીવ હવે તો જંપતો નથી. તેને તાણાવેલી જન્મી
છે ચોર્યાગીના ફેરામંથી ઝીમરી જવાની મદિરોમાના મદતો, મહાધિ-
પતિઓ તેને દેખાય છે પેઢી પાવકજ્વાળામાં પડેલા ! તેમનાથી તે
ભાગે છે, તેમની દયા ખાઈને !

અને ત્યારે તેને કોક કંઠી બાધનાર મળી જાય છે ! ને ત્યારે તે
જીવ નાનમનના માનાએ ઊભા કરેલ બંધનમાં પડતો ય નથી રાજસ્થાનની
રાણી 'રૂપાદે'ને મેરવાગ ગુરુ બેટ્યાંતા ! જાગેશ જીવને એવાં તે
બંધન હોય કે ?

સતોની પરંપરામાં વળી આ આવાવાદ રીતો પ્રવેશી ! તેમણે
દિલની ખડકોના કમાડ ત્યાં ઠાંસીને વાસી દીધાં છે.

ને ત્યારે જ નરસિંહ અને મીરાં, જોશવ અને તોરલ, દામી જીવસુ
અને મોરારસાહેબ, બાણસાહેબ અને ધોરડિયો સંત રવિસાહેબ, બાણુ-
સપૂત ખામસાહેબ અને સધી સંત હોયી, હાથમાં ઝગદગની જ્યોત
લઈને આ ચાલ્યા જાય ! સંસારનો કોઈ રંગ એમને લાગ્યો નથી.
સંસારની પવકજ્વાળાનાં તેજ એ જ્યોતધારી આગળ તો ઠરીને
હિમ થઈ ગયાં છે. આ તો મોટા જ્યોતવારીઓ. એમની જ્યોતને નથી
બંધન દિશ્ અને કાગળનાં !

એમની વ.મે વ.મે ટ્યુફડી જ્યોતો લઈને કંઈક મુક્ત જીવો
નીકળ્યા છે. પેવો દેવારામ ને દેવાન પડિન, જોડીરામ અને લખમો
માળી, મંજા સતી અને સોવણ.

તે તો સોનના સતો છે. એમની વણી પડજંદા દેવી હોય છે,
એમની ધરડી પર ! પણ કાગળી પવિત્રારી કે. એનાં બી આવા સંતો

વગર-જ્યોતના ધરનારા વગર ડગલું દેવાતું નથી. જ્યાં ત્યાં પરચમીના પદ
માથે આ વણુગર હાથ્યા કરતી જોવા મળે છે.

રાજસ્થાનના સીમાડા પર પણ હાથમાં એકતારો લઈ આવા
જ્યોતધારીના તેજને રેલાવતા માંજલોને માગામાંથી મોકલો કરવા કંઈ
શ્રેષ્ઠ સાધના કરતા હોય છે.

તે જ્યોતધારીઓ જે મેવાડના પ્લાઠાજી ભગન કદાનડદાસ,
તખતાશદાસ, લખમોશ માળી, કમ્પીર શિખા કમાળી, વજનાથ તે
ગોપાળદાસ આ સૌ છે મેવાડ રાજસ્થાનના વસનારાઓ. રાજસ્થાનના
સીમાડાની લગોલગ લાગેલ નાની મારવાડમાં તેની આ જ્યોતોનો પ્રકાશ
રેલમરેલ થઈ રહ્યો છે.

પ્રકાશની રેલમરેલ કરનાર છે કોઈ સવા ભગત, ગામ
લાંબડિયાના. પોશીના પટામાં પહેલું નાનકડું ગાયકું. જાતે પ્રજાપતિ,
વય ૧૦૦.

કુમરમાળમાં એકપક્ષ પામે લખમીપુરા ગામે કચ્છળી ભગત સમાધ
લઈને બેઠા છે, ત્યાં અડધેપડબેના ભગતિશે એકતારો લઈ સમાધ
પર આ તેજની રેલમરેલ કરવા રામનવમીએ આવતા કળાય છે ત્યારે
તે જ્યોતના તેજને જોવા ચર્મચક્ષુ બધ કરી મનોચક્ષુને હિપાડે છે અને
વાણી વહે છે:

હીરલા લાલ છંદા, જરા કોઈ વહેવાલ
જમડા તોડેલા છતી !

મતિ કરો કાચારો^૧ અંકાર,
મતિ કરો કાચારો અલેમાન;
કાચા તારી ધૂળ સે કાચી !

કાયા તારી કબધડી તાટી,^૧
 પીરા તારા આતમ સંભાળ,
 બગ બગ ખાખ હોરો !

ચલ ગિયા રાણા બકારાવ,
 જ્યારા^૨ ધરિયા રિયા ધનમાલ,
 ઘરે જૂલતા હાથી !

મતિ કરો કાયારો અંકાર,
 મતિ કરો કાયારો અભેમાન;
 કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

ઘટ ગયો ચીદરકા^૩ તેલ,
 મટ ગયો^૪ સખી બધા ખેલ,
 ખૂઝ ગઈ દિવાળી બાતી,^૫
 મતિ કરો કાયારો અંકાર,
 મતિ કરો કાયારો અભેમાન;
 કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

મત કરો કપટીના સંગ,
 મત કરો કાયરોના સગ,
 સંગત સાધુની સાચી !

ભલો કરો સાધુડાના સંગ,
 ભલો કરો સાધુડાના સગ,
 છસમે^૬ ઘણા ઊપજે રંગ,
 સગત સાધારી સાચી,

૧. કારો. ૨. જોના. ૩. કોઈવાનુ. ૪. ખાલી બરે. ૫. જતો.

મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અલેમાન;
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

શુરુજનાં વચન સામા એલ,
શીશ ઉતારી પગ સામા મેલ,^૧
ન્યાં નાહું શૂરાદી છાતી,
મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અલેમાન;
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

એણી પેર બોલ્યા કાનડદાસ,
જેના કાકા તુળશીદાસ.
ન્યાંદી સુકિત હો નામી,^૨
મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અલેમાન,
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

(૨)

તારા મન માંચલાને સમજાવ,
ચોર્યાચીરો ટળ જાય ફેરો;
તારા મનખા જમારા વાળી,
મૂંગોર^૩ વેઈને^૪ કાઈ બાધે ભારા !
આણી માયાજાળ રે માઈ,
ગુસાફર જાય એકલો રે !

૧. શુરુના અર્થે તાઠ માધુ મેલ. ૨. નચી. ૩. કુતુહિનો સાજ. ૪. વહીને.

જોગીડા રે ઘોરો^૧ જોગ સંભાળે,
 સંસારિયાં મું વૈભવ^૨ ન્યારા;
 તારી મુરત ચરમા લગાવ,
 ત્રિવેણી ઘર કર લે ડેરા!
 આણી માયાભળ રે માંઈ,
 મુસાફર જાય એકલો રે!
 આવે જમડાવાળી ફેજ,
 ઠાથારો^૩ ગઢ ઘરે લે ધારા;
 તું ભજને ભોલાવી લે સાથ,
 ચોરાશીરો ટળ જાય ફેરો!
 આણી માયાભળ રે માંઈ,
 મુસાફર જાય એકલો રે!
 ભોલ્યા તખતોણ દાસ,
 ભરમણા શું વેળવ ન્યારા;
 આણી માયાભળ રે માંઈ,
 મુસાફર જાય એકલો રે!

(૩)

નાલિકમળમાં નાથનિરંજન,
 નૂરતસુરત અસમાન ચડે;
 દશમે દુવારે દેખો તમાસા,
 જળહળ જ્યોતો અંડ જળે!
 સોન ચિખર પર સફુરુ,

અનહદ નોખત અધર જળે !
 ખોજ કરો રે ઘટભીંર દિલમે,
 જમીં અસમાન એક ઘડે રે, લાઈ એક ઘડે !

પાંચ તતખત^૧ બન્યા પૂતળા,
 મહેરમ^૨ સદ્ગુરુ માંહી યળે !
 સોન શિખર પર સદ્ગુરુ,
 અનહદ નોખત અધર જળે !
 તખત તેરા માનસરોવર,
 અજા વસતા લાઈ જાન^૩ મીલે રે;
 લાઈ જાન મીલે રે !

કેવળ નામના કરો પિછાના,
 જરા કરમ તને ના અડે;
 સોન શિખર પર સદ્ગુરુ,
 અનહદ નોખત અધર જળે !
 બાળક હો કર બહાલી કર લે,
 સંતવરણમે સાન મિલે રે !
 લાઈ સાન મિલે રે !

અમર પુરુષને યાદ લે,
 જનમ-મરણુરા હોદ ટળે,
 ગરુગમ કોઈ ગોતી લેના,
 નરનુગરાને નાહીં જડે ! નાહીં જડે !
 લાઈ નાહીં જડે રે !

દો કર ખોલી, લખમો માળી બોલ્યા,
ખોજ કરો તો ખબર પડે,
સોન શિખર પર સદ્ગુરુ,
અનહદ નોખત અધર જળે !

(૪)

પહેલાં રે મન તારો માંદાલો સમજીને,
પછી પવાડો^૧ લીજે !

કર સમરણુ ગુરુજી રે આજે !

હિંમત હાન મત રીજે,
ભગતી રાજી હોઈને રીજે,

જળ તારો માંદાલો કહ્યો ન માને,
તારો દોષ ગુરોજીનો મત લીજે !^૨

તરવાની આશા હોય તો,
તરત ગુરુજી કર લીજે !
કામકોધ જુઠી નિદા,
દો ખાત તજ લીજે,
ભગતિ રાજી વેધને લીજે !

અમર દેશમાં અમી વરસતાં,
કણુ^૨ કાળ ને પડંતાં,
રામભજનના પિયો પિયાલા,
હરિભજનના પિયો પિયાલા,

આંહી મગન હોઈ રીજે ।
 લગતિ રાજ વેઈને લીજે ।
 નાલિકમળમેં નોખત વાજે,
 તુંહિ તુંહિ રટ લીજે;
 લગતિ રાજ વેઈને લીજે ।
 ઠહે ઠમાલી ઠળીર સાહી લડકી,
 અમર મગન રીજે,
 લગતિ રાજ વેઈને લીજે ।

(૪)

લોળી દુનિયા ભરમસેં જૂલી,
 કરતી મેરી તેરી ।
 ખાલી નદીઓ ખળકવા લાગી;
 રૂબ મરે અહ કારી !
 તનમન તપસ્યા તારી,
 મને નાથ લ્યો ઉગારી રે, ઓ જી !
 આરે કાચારા મેલ બનાયા,
 મેલી ઝરૂખા બારી,
 વણુ? બારીમાં બાળતાં,
 મને નજરે પડ્યા ગિરધારી;
 મને નાથ લ્યો ઉગારી રે ઓ જી !
 ચાર ખૂંટ ને ચોદ ભુવનમાં,
 દેખ્યા કૃષ્ણ મુરારી,

લખું તો લખવામાં ન આવે,
 વો^૧ હે અચરજ ભારી !
 મને નાથ લ્યો ઉગારી રે ઝો છ !
 ભણે ગોપાળદાસ ગુરાંછને ચરણે,
 આઠે પહોર એકતારી.
 મને નાથ લ્યો ઉગારી રે ઝો છ !

(૧)

કોઈકે લખશે સંત સૂરમાં,
 નૂરમે^૨ નૂર મિલાઈ !
 સંતો અબતક લિખિયો નૈં જાવે,
 જેસા ચંદ ઉદકમે^૩ દરસે,
 યું સાહેબ સખ માંહી !
 ધર ચરમા દેખો ઘટ ભીતલ,
 નૂર નિરંજન વાંહી !
 સંતો અબતક લિખિયો નૈં જાવે.

દૂર જાંરે દૂર હે,
 ભીર^૨ જાંરે ભીર હે;
 હરિ હીરદારી^૩ માંહી !
 સપનામાં નારી ગમાયો,
 જાગ પડી જળ વાંહી^૪
 સંતો અબતક લિખિયો નૈં જાવે !

૧. તે. ૨. નજક. ૩. હૃડમનો. ૪. આ પદ્ધતિ અધૂરી સાંપડી છે.
 બીજો પાઠ : ' જાગ પડી જળ વાંહી જારો જાગક.'

જાગી જ્યાંરી જોત,
 જાગી ઘટ લીતર;
 જ્યાં દેખું ત્યાં સાંઈ,
 ઉગત સાણુ, વીત ગઈ રજણી,
 હરિ હમ અંતર નાહી,
 સંતો અબતક લિખિયો નેં જાવે !
 મમતા મોટો^૧ મહ્યા મોહન મું
 ગુરુસે ગમ પાઈ !
 કહે વજનાથ સુનો બાઈ સાધુ;
 સખ કુછ ઘોષા નેં !
 સંતો અબતક લિખિયો નેં જાવે !



પરિશિષ્ટ

હજોતરા

=

રાગ-સિંધ હીરવી

તાલ-ખેમટો

અલ્યા જિંઘાં સાં રામ, આઈ અખાતરી
હેંઘાં જઈએ અજોતરા કરવા....ઓ લાલિયા,
જઈએ અજોતરા કરવા.

આખલાંને પૂંહરે ભેડીને પૂંહરે
બાંધી લ્યાં ઓળને તાણી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અજોતરા કરવા.

કોટિયાં ને ટોકરાં બાંધીને પ્રેમથી
બળદાંને લેતે શણગારી....

ભેળે પરજો ન બૂલતો, લ્યા પૂંજિયા
રાસળાં લેતે હંકારી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અજોતરા કરવા.

ઓળે ને ઓઘે બગદાંને ચેંગડે
બાંધી લ્યાં નાડાસડી....

મૂરતનો ગાળ લ્યાં વેંચી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અજોતરા કરવા.

મૂરત ચોધીને હેંઘાં દરીએ અજોતરા
લીએ શકન પાંળીઆરી....

ડાબેથી દેવલી જમણે બિટે તો
આંખલાં લેતો હંકારી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

ખેડી જમીન રૂડા કરીએ અળોતરા,
કરીએ વાવેતર લારી....

મેઘરાજા ને અલ્યા ! મે'ર કરે તો
રંગત રઇ જાય હારી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

અલ્યા બિંધાં સાં શમ, આઈ અખાતરી
હુંડાં જઈએ અળોતરા કરવા....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.



પરિશિષ્ટ—૧ અ

મનમુખલાલ ઝવેરભાઈ મિસ્ત્રી,
ડી. ટી. સી., જી. ડી. આર્ટ., એ. એમ.
રામજી આસર વિદ્યાલય હાઈસ્કૂલ,
ઘાટકોપર તા. ૧૦-૬-૫૩

શ્રી પુષ્કર ચંદરવાકર નમસ્તે.

આપુ માસના ‘સંસ્કૃતિ’નાં પાનાં ફેરવા ‘આઈ અખાતરી’
ના મથાળા તરફ મારું ધ્યાન ખાસ ખેંચાયું તરત જ મારી દષ્ટિ
આખા પાના ઉપર ફરી વળી. “અસ્થા ગિરાં સાં સમ” લીલી વાંચીને
આનંદ થયો, પણ તેના સંબાદક તરીકે પુષ્કર ચંદરવાકર નામ
વાંચીને હું નિરાશ થઈ ગયો. છતાંય હું આપું ગીત વાંચી ગયો, તેથી
તો મને આધાન જ થયો.

આપના નામથી સૌની જોમ હું પગિચિત છું. મારા નામથી
આપ પગિચિત ન હો તે સ્વાભાવિક છે. હવે મૂળ વાત પર આવું છું.

આપે ‘સંસ્કૃતિ’માં પ્રસિદ્ધ કથાવેલું ગીત, એ કાઈની પણ ઊંચા
વગરનું મારું સ્વનત્ર સર્જન છે. અને તે ગીત તથા “ખાટાં મીઠાં
બોર” નામનું મારું બીજું ગીત બે ઉપર ત્યાંના દિદી પ્રચાર સમિ-
તિના મંત્રી અને મોડેલ ઇચ્છીય સ્કૂલમાં કામ કરી રહેલ શ્રી
મૌરીયંકર જોશીએ એક વિગ્નૃત લેખ લખેલો છે. શ્રી ઈન્દ્રવદન દાહારે
“લોકનાદ”નો ખાસ વધારો જ્ઞાત પાડી ચોપા વગસ પડેલાં પ્રસિદ્ધ
કરેલો.

સિવાય શ્રી ઇન્દુલાલ યાજ્ઞિકના “આમવિકાસ,” શ્રી રામચંદ્ર દાકુરનું ‘ઈતિજ્યોતિ’ આદેય, ‘આગ્રહી’ વગેરે પત્રોમાં આ ગીત પ્રસિદ્ધ થયેલું છે. સિવાય મેં મારા લખેલાં કેટલાંક ગીતોનો એક નાનકડો સંગ્રહ “ખાટાં મીઠાં ખોર” અમુક ઉદ્દેશથી પ્રસિદ્ધ કરેલો, જે હું આપને લુકપોસ્ટથી મોકલી રહ્યો છું તેમાં પણ આ ગીત આપ જોશે.

લખવાની મતનમ કે ગીતને અને મને આપના લેખથી ખૂબ જ અન્યાય જાણ્યે કે અજાણ્યે થયો છે કારણ, મૂળ કરતાં તદ્દન વિદૂત રીતે તેને રજૂ કરવામાં આવ્યું છે કદાચ આપે સાંભળ્યું હશે તેવું લખ્યું હશે, એમ બને તો મારી પુસ્તિકા આપને મળ્યેથી તે ગીત મારા નામ સાથે તેના મૂળ સ્વરૂપમાં ફરીથી છપાય એવો બદોબસત કરાવશો જેથી મારી ધવાયેલી લાવના જલદી ફાઈન બન.

વળી મોઝાસાથી ત્રણ માર્ચલ દૂર ગામ બાકેશવ જેને અમે હાલ મહાદેવગ્રામ કહીએ છીએ ત્યાંના હું વતની છું શ્રી હિ બાઈનું ગામ મારા ગામથી ફક્ત પાંચ માર્ચલ દૂર છે. ઇતિ જ્યોતિ’ના પ્રથમ અંકમાં ત્યારે એ ગીત છપાયું ત્યારે તેમણે ખૂબ વખાણેલું મેં સ્વમુખે માર્ચ બતાવેલું છતાં તેમના ખ્યાલમાંથી કેમ નીકળી ગયું હશે તે પ્રશ્ન છે. શ્રી જોશીને પણ મેં પત્ર લખ્યા છે, ને એક પુસ્તિકાની નકલ પણ મોકલુ છું તકલીફ માફ કરશો બેઅજાણી માફ કરશો.

તા કે પ્રૌઢ શિક્ષણ માટે મારા ગીતનો સારો એવો ઉપયોગ થયો છે શ્રી ગૌરીસંકર જોષી પાસેથી આપને વિશેષ માદિતી મળશે.

હિ આપનો મિત્ર
મ જ મિસ્ત્રી
કે શિ

એચ. એલ. કોલેજ ઓફ દોમ્સ
અમદાવાદ, ૧૩ જૂન, ૧૯૫૩

પ્રિય ભાઈશ્રી,

આપનો પત્ર મળ્યો. આપ પણ એમ નહીં કહી શકો કે હાલેથી
ગીત મારું છે એવો મેં દાવો કર્યો હોય. સાબરકાંઠામાં લોકોના
કંઠે સાંભળેલું ગીત મેં લોકોના માટે જ 'સંસ્કૃતિ'માં સંપાદન કરીને
મુદ્રિતું, ત્યારે ખ્યાલ પણ ન હતો કે જેને મેં લોકગીત માન્યું તે
વૈયક્તિક સર્જન હશે. આપનું જો સર્જન હોય તો મારા અભિનંદન
એવાં, લખ્યા બદલ અને લોકગીત બન્યા બદલ. લોકસાહિત્યનો પ્રચ-
સક ડોઢને પણ અન્યાય કરવાની ઈચ્છા ન સેવે તે આપ સમજ
શકશો. એટલે 'સંસ્કૃતિ'ના તંત્રીને આપનો પત્ર ધટતું કરવા મોકલાવ્યો
છે તેની નોંધ લેશો. આશા છે કે આપ કુશળ હશે.

લિ: આપનો,

પુષ્કર ચંદરનાકર

શાંતિજીવન, ખગવતા કોલેની પાઞ્જ,
એલિસવિટ. અમદાવાદ-૬
૮-૧૨-૫૫

પ્રિય ભાણશ્રી,

હમણાં મારાં સપાદિત લોકગીતનો સમ્રહ જહાર પ.વામાં છે તમારું 'હજોતરા' અને મારા પ્રવાસમાંથી સાંપડેલું 'આઈ અખાતરી' ગીત, તમારી ઈચ્છા અને સમતિ હોય તો તેમાં મુકું. પાઞ્જ પરિચિદ્ધે તમારું ગીત, તમારો અને મારો પત્રવ્યવહાર પણ મુકવાનું વિચારું છું હું તેને એક સારા ગ્રામગીત તરીકે જોળજી છું સાથે સાથે આતુ સારું ગીત લોકો સુધી પહોંચે, તે ઠેરી રીતે પહોંચે, શા માટે પહોંચે, તે સર્વ ચર્ચા કરવાનો મારો વિચાર પ્રસ્તાવનામાં છે

હિતર તરત આપશો તો હું આભારી ધર્મજીને તમારી અનિચ્છા હોય તો હું તેને સમ્રહમાંથી જલ્દીથી નાતલ કરું શ્રી દેવેન્દ્ર સત્યાથીએ શ્રી હિમાચલર જોષીનું ગીત 'આજી અધુરુ મેલ્યમાં' તેમના 'મેલ ગભીર ગુજરાત' નામક લેખમાં ગુજરાતી લોકગીતોમાં મૂકીને તેવી ચર્ચા પણ કરી છે તેથી લોકો સુધી ગયાં હોય તે ગીતોને આ રીતે પ્રચાર મળે તો મને કશું જ ખોટું દીસતું નથી.

કુશળ હશે

વિ આપનો,
પુષ્કર ચંદરવાકરના વદન.

ઘાટકોપર,

તા. ૧૦-૧૨-૫૫

મુરખી શ્રી. પુષ્કરભાઈ

આપનો પત્ર ગઈ દિવસે મળ્યો. આપ તરફથી બહાર પડના સંપ્રદ માટે માફ માન પ્રશંસા અને પસંદગી પામ્યું તે એક સુયોગ ગણાય.

આમે આપને મળવાની ઈચ્છા હતી, પરંતુ એવો યોગ મળ્યો નહીં. નહીં તો આપણે એકબીજાને વધુ સારી રીતે સમજી શક્યા હોત, કદાચ આવી રીતે મારી સંમતિ માગવી પણ ન પડત. સમજી લેા કે મારી સંમતિ મળી ચૂકી. કારણ કે હું તો એમ જ માનું છું કે આપ તે દ્વારા મારા કાર્યમાં મદદ કરી રહ્યા છે. ચીતોનો લાભ લેાકા વધુ ને વધુ લેના રહે તે ઈચ્છનીય છે. આપણો પત્રવ્યવહાર છાપવા પાછળ આપની દષ્ટિ સ્ત્રી છે તે મને ખમર નથી. છતાંય આપના પ્રયત્નને તે દ્વારા ઓળસ મળે એમ હોય તો મારે શું કહેવાનું હોય ! આપનો અવસાય છે, એટલે આપ વિશેષ માદિનગાર મળ્યાઓ. જો વૈકલ્પિકમાં કદાચ તે બાજુ આવીશ તો મળવાનો પ્રયત્ન કરીશ. કુસંગ હશે. ચોખ્ખો સેવા જણાવશે.

સિ. મ. ઝ. મિત્રીના વંદન

पढ़ारके प्रणयगीत

(शीराष्ट और वय्यत्री, भिन दोनों राज्योंकी सीमाओंके बीच भेक बहुत सम्यी चौड़ी झील है; जिधे नल-सरोवर कहते हैं । झुसके किनारे पर लगभग पढ़ार जातिके छः हजार लोग बसते हैं । भिन स्त्रियोंकी जीवनचर्या, श्रुत्य, गीत आदिवाचि बहुत आकर्षक होते हैं । नीचे दिया गया गीत पढ़ारके 'लोकगीतों' में से लिया गया है ।)

गीत

भे सूती'ती ने प्रीतीयालाभे पछीते पाया घमाडया.
 पछीते पाया घाम्या, बेली मारा पछीते पाया घाज्या,
 मारो जीयडियो झुदासी, भाभीबंध मोरा जो.
 पायठडे पग घोती, बेली मारा, साजणनी घाट जोती,
 मारो जीयडियो झुदासी, भाभीबंध मोरा जो.
 तारा ते अंगनो रुमाल, बेली मारा, तारा ते अंगनो रुमाल,
 तारो रुमाल देखी रुझ आवै, भाभीबंध मोरा जो.
 तारा ते अंगनो रेंडो, बेली मारा, तारा ते अंगनो रेंडो,
 मने घड़ीक ओढवा देखे, भाभीबंध मोरा जो.
 तारा ते जीवने सारुं, वाला साजण, तारा ते जीवने सारुं,
 में तो मैल्यो सैयरनो साथ, भाभीबंध मोरा जो.
 तारा पगमां बेडी, बेली मारा, तारा ते पगमां बेडी,
 आपण नाना हुता तयारनी, नानपणनी हेडी.
 तारा ते जीवने सारुं, वाला साजण, तारा ते जीवने सारुं,
 में तो ब्रह्मां छे माने घाण, भाभीबंध मोरा जो.

तारा ते जीवने साखं, घाला साजण, तारा ते जीवने साखं,
मैं तो मेल्या छे माभीने भोजाभी, माभीबंध मोरा जो.

आयुंरे नोतुं जाण्युं, घाला साजण, आयुंरे नोतुं जाण्युं,
नीकर थडको थोडी राखत, घाला साजण,

नीकर थडथी थोडी राखत, माभीबंध मोरा जो-

भाषार्थ

हे प्रियतम ! मैं प्रेमके बारेमें कुछ जानती नहीं थी। परन्तु मेरे साथ प्रेम करनेवालेने आकर मुझे नौदमसे जामत किया। खुसने बसी बजाभी, और मेरा जी खुदास हो गया। कुभेके किनारेपर बैठकर मैं पैरोंको धो रही थी और अपने प्रियतमकी प्रतीक्षा कर रही थी। हे प्रियतम ! तेरे पास जो इमाल है, खुसे देखकर मेरी आँखें आँसुसे भर जाती हैं। हे प्रियतम ! तेरे भस्तकरर जो कपड़ा है, खुसे देखकर मैं रोने लग जाती हूँ। हे प्रियतम ! तेरे लिये माँबाप, माँभी, भौजाभी और सहेली, सभीको छोड़कर मैं अकेली हो गयी हूँ। हे प्रियतम ! तेरे पैरमें जो अलकार (बिड़ी) है, वह तेरे बाल्य-कालसे ही है। और खुस दिनसे तेरी और मेरी दोस्ती शुरू हो गयी है। परन्तु, हे प्रियतम ! मुझे कुछ बकत यह ख्याल नहीं था कि खुसका अत अितना घुरा होगा। यदि पहलेसे ही यह ख्याल होता, तो मैं प्रारम्भसे ही तेरे पास अितनी निकट न आती। (यह पदार जातिके लोगोका कहण गीत है। प्रेमकी निष्कल बसी जिस गीतमें बजाभी गयी है)।



आहनो सूर

अमदावाद येथें आन्तर भारतीचें कार्य जी तरुण मदळी करीत आहेत त्यापैकी प्रा पुष्कर चंदरवाकर हे एक आहेत त्यांना साहित्य विप्रयाची गोडी आहे आणि विशेषतः लोक-साहित्याचा खास अभ्यास आहे.

सौ

ताष्ट्र आणि मुबई राज्य याच्या सीमा जेथें एकमेकांना मिळतात तेथे एक विशाल सरोवर आहे हें सरोवर मल सरोवर या नावाने ओळखलें जातें या सरोवराची लांबी २१ मैल आणि रुंदी १९ मैल आहे या सरोवराच्या काठी १२ गावात पठार लोक राहतात त्यांची वस्ती छुमारे पांच हजार असावी हे पठार लोक उत्तर प्रदेशांतून आले असावे असा इतिहासज्ञाचा तर्क आहे त्याची चेदरेपट्टी, रीतिरिवाज व वागणूक यावरून ते आदिवासीपैकींच असावे असें वाजते हे वनवासी लोक पटोचे पोहोणारे, अव्वल दर्जाचे शिकारी आणि कुशल मच्छीमार आहेत पक्षी मारणें, शेती करणें हीं कामेहि हे लोक कार्यक्षमतेनें करतात.

परन्तु नागरालेस्मा सस्यानी मुलखात असल्याने आधुनिक सुधारणेचा प्रकाश आतांपर्यंत त्याच्यापर्यंत पोचला नव्हता खऱ्या अर्थानें हे लोक घरातीचीं लेकरे आहेत त्यांना त्या सरोवरवद्दल अपार प्रेम वाढतें परन्तु मध्यतरीच्या काळात ह्या स्वातंत्र्यप्रेमी, निसर्गप्रिय भूमातेच्या लेकराचें स्वातंत्र्य राजपूत राजांनीं हिरावून घेतलें व त्यांना वाटेल त्याप्रमाणें वागवाचयाला सुरुवात केली हे राजे मनमानेल तसा जुलूम त्यांच्यावर करीत ह्या लोकांना विंगर मोवदला राबराबवून घेणें हा आपला हक्कच आहे असें राज्यकर्त्यांना वाटत असे ह्या लोकांचा स्वाभिमान मारून त्यांना रशवहीन करतां येईल तितकें करण्याचा प्रयत्न राज्यकर्त्यांनीं केला. आपल्यावर होणाऱ्या

अन्यामांची दाद त्यांना जगाच्या बाजारांत लावता आरो नाही तरी त्यांच्या मनांत ती वगर तर राहातच असे कधी कधी लोकगीताच्या रूपाने ही त्यांची वेदना बाहेर पडत असते आपले गाव्हणें ते निसर्गमातेच्या, आकाशाच्या, सरोवरच्या कानावर सतुदायानें घावीत असनात, तुलसीदासजींनीं अेक दाहा लिहिला आहे त्यांत ते म्हणतात:

तुलसी हाय गरीबकी
कष्ट न निष्कल जाय
मरे बैरके चामसे
लोह मरम है जाय ॥

तुलसीदास म्हणतात गरीबाची 'हाय' कधी वांया जात नाही. बैलाला लोखंडाची पराणी टोचतात, लोणडी मुरीने त्यांच्या माना कापतात. पण त्या बैलाच्या कातड्याचा माता वनवित्यावर त्याच्या हाय-हायीतून लोखंडाचेहि मरम होऊन जाते पडार लोकांनीं शेकडोंवर्षे हालअपेष्टा भोगल्या भारत स्वतंत्र झाल्यावर आज त्यांची स्थिति थोडी सुधारली आहे. त्यांच्यावर जुलूम करणारे राजेरजवाडे खाऊ झाले आहेत. पडार लोकांवरील अन्यायाविरुद्ध गाव्हणें करणारे सुर अजूनहि कल सरोवराच्या आसमतांत झुमतांना एकू येतील. पडार लोक आपल्यावरील जुलूमांची ही गाथा समुदायाने गातात.

अेक चालीश तो दाडीया लाव्यो

पायडा लाव्यो चार
कामनो ना' ब्यो पार
चोनीलाल मोझडीवाला ॥

पाया खोदीने हाथडा दुप्या
अे टाढियो आव्यो ताव ॥ कामनो०
माथडे टोपी, हाथमां सोटी
फरतो फेरो राय ॥ कामनो०

तारो सपें तो घवरे भूंडो
 धोकला मेल्या चार ॥ कामनो०
 पांच रुपियातो रोकडा आल्या
 पायलानो नई पार ॥ कामनो०
 गोंदरा सुधी चांसडे हांके
 चोखे मशन चालू थाय ॥ कामनो०

राजेसाहेबांना एक दिवस सरोवराची सोभा पाहाण्याची इच्छा झाली. भनतविभव निसर्गापुढे जातानाहि राजा दिमागाने जाऊ इच्छितो राजाला जाण्याचं तर जाण्यायेनाय जागला रस्ता नाही. म्हणून रस्ता करण्याचा हुकूम सुटला. चौतीलाल मोनडीवाला हा रस्त्याचा टेकेदार साहेबाच्या सपरानि त्याच्यासारखे कपडे हा घालू लागलेला डोक्यावर हॅट हातात छडी. त्याने त्या पडाऱ्या लोकांना काम करायला पसविलें

काम लहान नव्हतें. रस्त्याची लांबी मोठी होती येठीने हें सारें काम तो घेणार होता कामाला पुरेशी हयारें देखील त्यानें आणलीं नव्हतीं, चार फावड्यांनीं एवढें मोठें काम कोण कसें करणार ? जिवाच्याचें फावड्यांनीं काम करून हात धकले, दूरू लागले पण त्यांना ना विश्रांति ना आराम. त्याच्यावर एक मुकादम ठेवला होता. त्यांनीं हात थोडे हल्लू चालविले कीं तो येऊन हातांतली छडी सपकावी साऱ्या दिवसभर त्याने ४१ पडारांना एकसारखे रावविले, त्याच्याकडून जिवापाड काम करून घेतलें आणि शेवटीं त्याच्या अंगावर जणु मेहेरवागी म्हणून पाच रुपये केशल.

*

*

*

सगळेच पट्टार असला अपानुब जुलूम सदासर्वदा सहन करीत असें नाही. असा कांहीं जुलूम झाला कीं काहीं तरगतचें रक्त राववून जात असे. अश्वित् एगद्या तरगाला हा जुलूम असण नाटे. व मग तो आपल्या ताकदीचा विचार न करता प्रतीकार करी. पण हा एकट्या/दुकट्याचा

प्रतिकार कृती काळ चालणार जोपर्यंत असा प्रतिकारामार्गे सधटित जनशक्ति नसते तोपर्यंत असा प्रतिकार करणारी व्यक्ति शासनाला पात्र होते व इतरांना त्यामुळे भाक वाटू लागतो इतर पडारानी प्रतिकार केला नाही. ते शुद्धम होतांना पाहून त्याच्या निवारणार्थ धावून आले नाहीत तरी त्या तरुणाधरता हळूहळूत असाच एक तेजस्वी तरण मगनिया. त्याने प्रतिकार केला त्याला शासन झाले मारपीट झाली तेव्हा पडार म्हणतात :

घाडीना मारगे आवे मगनियो
 घाडीना मारगे आवे रे लोल ॥
 मधाडे कुंझडी घोली मगनियाने
 मधाडे कुंझडी घोली रे लोल ॥
 पाछी मोढे धांध्यो मगनियाने
 पाछी मोढे धांध्यो रे लोल ॥
 नेतरनी सोटीअे मायों मगनियाने
 नेतरनी सोटीअे मायों रे लोल ॥
 धोडो इना मा ने बाप
 धोडो मगनियाने मायों रे लोल ॥
 धोडो इना भाई ने बाप
 धोडो मगनियाने मायों रे लोल ॥

कुंझडी हा एक पक्षी आहे कोणाच्या माथ्यावर तो ओरडला की त्यास्यावर सकट येते असा लोकसमज आहे मगनच्या डोक्यावर हा पक्षी बोलला आणि बिचारा मगन दुश्मनाच्या हातांत सापडला त्यांनी मगनला पकडले त्याचे दोन्ही हात करकचून पांटीमाये बापले आणि त्याच्यावर घेताची झडी चाचवायला सुरवात केली लोकानी हें पाहिले, त्यांना कणा आली तसे ते धावत पळत गेले आणि मगनच्या भाई-बापांना, भावांना हाका मारू लागले “बापांगे, तुम्ही तरी मधे पडा

आणि त्याला वाचवा" अशी आर्नेवें ते करू लागले.

*

*

*

ज्या दिवशी हे पदार् समूहसक्ति ओळखतील, त्यांना त्या शक्तिचा साक्षात्कार होईल त्या दिवशी त्यांच्यावर होणारा सारा शुद्धम नाहीसा होईल आणि ह्या गोष्टी जुन्या काळची स्मृति म्हणूनच त्यांच्या गीतात राहतील. असा काळ दूर नाही स्वातंत्र्याचा प्रकाश आणि उध्दता त्यांच्यासाठी पोचली की ते जागे होतील व आपले हृद व कर्तव्ये यांना जपू लागतील.

साधनाभाषी



૨૫	ત્રાડીના મારગે આવે મગનિયો,	૩૦
૨૬	પાંચ રૂપિયાનું કાપડું રે લીધું જે'રીને હાલી પાણી,	૩૨
૨૭	રોકા મારે દયનો ભોમી, હોકે કરેન છે ભેમી,	૩૨
૨૮	ભાયોજી જીની બાયડી જૂડી, પીડા અતરે જીડી !	૩૩
૨૯	અમરચંદનની ઢાંકણી, વવ શુ ક્રતા નવવાણી ને,	૩૪
૩૦	જિયો ગોવિંદાની પીંપળી, નીચા દતારીનાં ફાટ, વાંદા !	૩૪
૩૧	મારી સગી નણંદના પીરા, રૂમાલ મારો લેતા જમ્મે,	૩૬
૩૨	ઝરમર ઝરમર મેહુલો, ભોગાવે કચરોપાણી;	૩૭
૩૩	પાંચે પાંચે બેડાં નાની વહિ દયકે ભરી આવી ને,	૩૭
૩૪	રણુજી રણુજી રે દુડો ફરિયો,	૩૮
૩૫	રોડના કાંઠે એક લીમડી,	૪૨
૩૬	વઢવાણનો ભોગાવો બહુ બારે	૪૨
૩૭	ડેબીએ ડેબીએ રે ! કનુભાના ડાપગ,	૪૩
૩૮	બકરાણા વચ્ચે બગનો, જીવુજી !	૪૪
૩૯	એ ગામના ઝાંપલે છોટુલ નો બગસો	૪૫
૪૦	એ જીવજી હાકોગ, કાયા મેલી રે, જૂનાની જોલમાં !	૪૬
૪૧	હસોનો સાંદિયો લીધો સારણિયે,	૪૭
૪૨	આગળ ધનશ્યામ સાહેબનાં ઘોડ્યાં રે !	૪૮
૪૩	હાર્યો ઝોનોગમસગ, હાર્યો ઝોનો રૂપસગ,	૫૦
૪૪	મીનામાઈ ઝોતમકુગમા અવનર્મી રે,	૫૪
૪૫	ચાંદિ જીઓ પૂનમ નાતનો જી રે !	૫૫
૪૬	જોડિયાનો મેળો, રજાડાજીનો મેળો,	૫૫
૪૭	ચાલો બાબવડી, વનમાં જાડી,	૫૬
૪૮	સોના વાટકડી રે, કેશ ધોળ્યાં વાંલમિયા ?	૫૭
૪૯	હાકોતિયા, રજવાડાને રે પાદર પાગસપીપળો,	૫૭
૫૦	જાગુડો જીઓ રે સસિયા, મોંલમાં રે !	૫૮

	૫૪૮
૫૧ દાદા વાલી કૃત્યો રે, લાગા પાંદડે,	૫૮
૫૨ સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હોડે, બા, આંખાની ડાળ્ય;	૫૯
૫૩ આં ગુણુ માનુ મોલી,	૬૦
૫૪ એકનડી ઊભી હુ પનઘટની ખારીએ,	૬૧
૫૫ ધધા બિન દય મુરકીજ, કીનના ચરવોગ હય દિલ !	૬૬
૫૬ મણેશ ગુજરા ને પનેરું મોનો,	૬૮
૫૭ હીમઃલીનાં લુમેઝૂમે પાન રે,	૬૮
૫૮ આજ મારે આનંદના વવામણાં,	૬૯
૫૯ મારી ચમડીમાં આવે એવી ચૂદડી રે,	૬૯
૬૦ આંગણિયે નાવે મઢી બનાવી,	૭૦
૬૧ પોપટ બોલે આગ નેન-માં,	૭૧
૬૨ હોળી બાઈમા કાઈ નિયે હે, લોમણ લોભ !	૭૬
૬૩ ખારા મઢીની હોળીનાઈ ચેકે દોદી ચેનીવા,	૭૭
૬૪ હોળી તે બાઈ લુ, કાળેકેરા ગેરિયા !	૭૮
૬૫ ખારા મઢીની હોળીરા બાઈ લુ,	૭૮
૬૬ રવા તે રાજે બેના, ચેનો રાજે વા !	૭૯
૬૭ દારૂ છોડા, દારૂ છોડા રા !	૮૦
૬૮ ચાલેવા આવે હે રાડાધો કેકેડા વાર લાગો,	૮૧
૬૯ રામે ગમે ગમેગ ડાયાં !	૮૧
૭૦ ચમ ઘેરા બજવણુવાળો, સાગે તાગે રિજે રે !	૮૩
૭૧ તેલ ને સિંદુર બાજો દનુમાન માગે,	૮૬
૭૨ મોલન ને જોયાણા વચ્ચે, ગેરા ઢોલ ગાગે !	૮૬
૭૩ પનઘટિયા વડવા ઉપર સોલન ચડિયો, બોલે જો !	૮૭
૭૪ મગામે સોનાનો ફૂલ, સાપે ચડિયો નાચે જો !	૮૮
૭૫ મંગા તાગ ઘાટમાં, ગેરી પાણી ફેરવયો,	૮૮
૮૬ ગાગાન રખરાગા રેડો, કાપલ દોને બોધુ રે !	૮૮

૭૭	મેળ્ય ત્યાર થઈ ગઈ, તામણિયો રેઈજો તાળા મે!	૮૯
૭૮	મેળાના માંજે મને ધૂધમાળ લાધી રે!	૮૯
૭૯	કરેલિયો સજુગારી, છોરો મેજે ત્યારી લેજિયો રે!	૮૯
૮૦	તારે મારે મેસણી નદીઓના કાંઠે રે!	૯૦
૮૧	ઓલો મારા માલિયા, પથારે પલો ખાધે!	૯૦
૮૨	રાતે તો સાસુજી, માને સાચવો સપનો આયો રે!	૯૦
૮૩	ઓઢવા ને પાલીનો પીળા, ધડીક રમવા મેતો!	૯૧
૮૪	કાઠિયા ઊંઘઆની ઊંચી, સામે ઢોરે જળકે હો!	૯૧
૮૫	ગાડી ને ગુણેશ ધાગો, ગણિવારામા મળિયો;	૯૧
૮૬	અવાવાળો અડખોરાળ, બામણી ગઢ સાડી,	૯૨
૮૭	નથુંદલ ને જોખાઈ જોડે માથો ધાયો,	૯૨
૮૮	ધોળ્યા ખેડાની જોડ્યા, માળખિયો લાયો રે!	૯૨
૮૯	હાથમાં ઓઢો, ખેઠક સારી લાગે,	૯૩
૯૦	કાઠિા ને જાતિજો, હોઠો આકાડિયો મેં ભરિયો,	૯૩
૯૧	દસને મૂડે બોલો, અનેસો મથી રાખો રે!	૯૪
૯૨	કેસર ધોળી કાળમેં પાણુજી ધાને સોવે!	૯૪
૯૩	ગળાનો વાડલિયો મૂળીને જૂડો ધાગો લાયો રે!	૯૪
૯૪	કાખરિયા જરદિયાની જોડ, માળખિયાથી લાઈ રે!	૯૫
૯૫	હાથમેં કડિયારી ડાંગ, ખડિયો બાધણ ટેરી,	૯૫
૯૬	નેથુરો સજુગાર કાળજા કૂપજીમે રે ગિયો!	૯૫
૯૭	ઊંચા રે યડ, દૂકડે મારું સાસરુ,	૯૬
૯૮	સાસુ મારી સાંભળોને સાહેલીની હાથમા અગૂઠી,	૧૦૦
૯૯	સમેળામાં જિયો રમ કેવડો રે,	૧૦૧
૧૦૦	સંત મારું સાસરુ જાતુ પળ વેગળુ;	૧૦૧
૧૦૧	લીલુડી પાટણની બગડી બહુ સારી,	૧૦૨
૧૦૨	લીંબડી ઊંચી લીલુડી રેતમાં, કેન્દાળાં ઊંચા મેલીને!	૧૦૧

૧૦૩	કે રસિયા, વાડીનાં પડખું રે, નવરંગ લાકડું રે લોલ !	૧૦૭
૧૦૪	આપણા મનકમાં માયાણુ મનરી,	૧૦૮
૧૦૫	મેના દાખાડી ને સ્પર્ધાનાં છે તીંગ,	૧૦૯
૧૦૬	ઠા'તો રાણી, જે દાઢાં ધડાવું,	૧૦૯
૧૦૭	લાલ જુમારી, છે જુમારી,	૧૧૦
૧૦૮	જુગલિયો સદાસે, જૂનક કાઈ ગમશે નેં રે !	૧૧૧
૧૦૯	સર્ધાડો મેમાન આપ્યો વખની,	૧૧૩
૧૧૦	નાયક રે તમે આપણું રૂઢ,	૧૧૫
૧૧૧	તાર માર હીક છ ગાયલ રે ! (અરજિયો)	૧૧૮
૧૧૨	માગવાડ ગરું માગ ધન રે કેસરિયાલાલ !	૧૨૧
૧૧૩	નદી કિનારે મધિય પનંગ છાડે,	૧૨૩
૧૧૪	પાવા તે ગઢનું પરેવકું, માણાગજ !	૧૨૪
૧૧૫	દેવને મળે ન જર્હિય રે જવતા,	૧૨૪
૧૧૬	ગજ સાહેબખાન રૂપાળા, મોતી ગજગ હેમની માળા,	૧૨૬
૧૧૭	ઉગમણી ધર્તીને વેપારી આપ્યો,	૧૩૦
૧૧૮	પત્ર પદમણે દાઢાં નારે પેરવા છે કે નેં ?	૧૩૧
૧૧૯	હ્યો હ્યો, તમ્મરનાં લાકડાંનાં બારે, એ તમ્મરનો બારો !	૧૩૬
૧૨૦	સોના રૂપાનું દાતરડું રે લોલ,	૧૩૮
૧૨૧	ઓતર રે દખણુ રે ચડી એણી વાદળી;	૧૪૦
૧૨૨	મેવયો આવે ને મે લાવે,	૧૪૪
૧૨૩	ઓતર-દખણની વાદળી ચડી રે,	૧૪૫
૧૨૪	ઓતર-દખણથી ચડી રે વાદળી રે લોલ,	૧૪૬
૧૨૫	વરસ્યા વરસ્યા અપાલીલા મેવ રે;	૧૪૭
૧૨૬	અદવા ઊર્ધા સી સમ,	૧૪૯
૧૨૭	સામળાજીના મેળે હારે રમજણિયું રે પીંજણિયું વામે	૧૫૪
૧૨૮	એક આના માણે, એક સો લગાયા;	૧૫૬

૧૨૯	આજ મારે બાજરો પાવવો,	૧૫૭
૧૩૦	પ્રીતમજી, સાડી ગુલાબી મગાવો,	૧૬૦
૧૩૧	સરિતા તીરે તપસા કીધી, સાગરમતીના સતજી,	૧૬૭
૧૩૨	સન અદિ સાક્ષી શબ્દ સુધાયા, છાંત્રગીતા ગુણ ગાયાજી,	૧૬૮
૧૩૩	દેવી તખત, સિદ્ધાસન ઉપર જોગ જવાહરલાલજી,	૧૬૮
૧૩૪	ગાંધી માંતમા રે, તાગ ખાતી નમરમાં રે,	૧૬૯
૧૩૫	એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુલિમય ગરવા,	૧૭૦
૧૩૬	જવાહરલાલ નેરુ, તમે રે નેરુ છોડી છે લાલે દેશમાં,	૧૭૦
૧૩૭	ના ના કેંતી 'તી ને જમયો અણગ્યો,	૧૭૬
૧૩૮	ગાડી હાંકે છે પેલો પિયવછનો મગસિયો રે,	૧૭૬
૧૩૯	એ લાંબે પાને આંખતી,	૧૮૩
૧૪૦	પિત્તળ તે લોટાએ જળે લાચી	૧૮૫
૧૪૧	હાથ હાથ પાછલે પરાદિયે મરઘો બોલિયો,	૧૮૮
૧૪૨	જગલો ખૂન જન્યો જ મનમા,	૧૮૯
૧૪૩	નીચાં ચુકમર તારાં હાટડાં,	૧૯૦
૧૪૪	પાદર તણુ-ડેરા તાણિયા રે લાડા,	૧૯૨
૧૪૫	પાળે ધૂમે પારેવડાં,	૧૯૩
૧૪૬	હાથમાં માળા ને મુખે રામ રે,	૧૯૪
૧૪૭	હાથ રે શવ શીદ કરે શાસના,	૧૯૪
૧૪૮	'ઓતરાને થયો અભિમાન'	૧૯૭
૧૪૯	હાથ દરવાન ! દરનાર ઉધેઃ રે	૧૯૯
૧૫૦	જોય રે બાવા ચડવો અભેમાનરાય,	૨૦૦
૧૫૧	ઓતરાની માડી અઓ સોનીડાની કુઝાન,	૨૦૧
૧૫૨	હસવા હાલો હાલો સતશરુના દેશમાં,	૨૦૬
૧૫૩	એ હસવા હાલો આપણા દેશમાં,	૨૦૬
૧૫૪	જનુ છે નિરવાણી,	૨ ૭

૧૫૫	બેળાંય નેં રે કાવાને હોડીય નેં,	૨૧૦
૧૫૬	વનરાવનમાં દસા મડો રે જનાવી રે,	૨૧૧
૧૫૭	જૂડી કાવા, ગણો, જૂડાં ના બોલો છ,	૨૧૨
૧૫૮	હાં ..હાર હુ તો અગ્નિ, હુ તો જ્યાર યજ્ઞને,	૨૧૩
૧૫૯	સાધુ બોલે ॥ એ મીઠી વાણી રે,	૨૧૪
૧૬૦	એ મોગસો મન્યોકમાં આવ્યો રે,	૨૧૫
૧૬૧	અરે બેવીડા, બેદવનો સગ ના કરિયે,	૨૧૭
૧૬૨	ગમની રજ્યુ નહી, મારે દેષનો બરોસો નહી,	૨૨૦
૧૬૩	હિન્દા લાલ છલ, જગ કેઈ વરેલાલ,	૨૨૩
૧૬૪	તાગ મન માંયવાને સમજાવ,	૨૨૫
૧૬૫	નાલિકમગમાં નાથ નિરજન,	૨૨૬
૧૬૬	પહેલાં રે મન તારો માલ્યો સમજીને,	૨૨૮
૧૬૭	બોળી દુનિયા બરમસે જૂયો,	૨૨૯
૧૬૮	કોઈ લખશે મેંન સૂરમાં,	૨૩૦



શપ્દોની સૂચિ

પા. નં.

પા. નં.

અખાલ	૨૨૨
અખાત્રીજ	૧૪૯
અનુક્રુપ ૭૬	૯૪, ૯૬
અભિમન્યુ	૧૮૩, ૧૯૬
અમદાવાદ	૬૫, ૮૩, ૮૪, ૧૬૭
અમરથી જગત	૨૧૧
આચાર્ય ૩૫૬મુ. જી.	૧
આચાર્ય વેલી	૧૭૩
આર્નોલ્ડ બેનેટ	૪૦
આણ	૮૪
આજિયા કોમ	૧૧૫
ઈન્દ્રજિત આચાર્ય	૧૧૫
ઈન્દુલાલ યાસિક	૨૩૫
ઈન્દ્રવદન કાકોર	૨૩૪
ઉત્તર દિશ	૬૫, ૮૪, ૮૫
ઉત્તર ગુજરાત	૧૨૦, ૧૨૬
ઉત્તરા	૧૯૬
ઉદ્દેપુર	૮૫
જમાઈકર જોષી	૨૩૭
જોડીયા મહારાજ	૧૪૩
એલિસબીજ	૧૪૦
એથેલો	૩૫
એડિલીઆ	૩૫
અંમેજો	૭૨
કચ્છના રણ	૧૨૬
કચીર જગત	૨૧૧, ૨૨૧

કમાણી	૨૨૩
કદાનકદાસ	૨૨૩
કુક્યા	૭૫
કુંકાવા મામ	૮
કુબેરનગર	૬૫
કોળાઓ	૭૪, ૧૨૯
કોમેસ	૫૦
„ વાદી	૬૭
„ વાળા	૧૭
ખીમ સાહેબ	૨૨૨
ગલેશ	૭૨
ગમા સતી	૨૨૨
ગામીત	૭૪, ૭૫
„ ના જૂથ	૭૬
ગાંધીજી	૧૬૭
ગાંધીમાપુ	૬૭
ગિંગકાંદો	૨૧૬
ગિરધારી	૫૪
મીસ	૧૮૧
ગુજરાત	૬૫
„ ના જારા	૬૫
„ ની પૂર્વ સરદદ	૭૫
„ ના ધરમીનો	૧૧૦, ૧૨૨
ગુનાહિત કોમ	૬૫
„ જાનિ	૭૨

પા. નં.

શુન્યાગતી ટકરી	૧૪૦
એ. મા. ત્રિ	૧૨૮
ગોધગ	૬૫
ગોપાળદાસ	૨૨૩
ગોગખનાથ	૨૨૧
ગૌરીવદ્ નેત્રી	૨૩૪, ૨૩૧
ઘનશ્યામમ હેમ	૪૮
ધોવાપદ	૨૧૯
ચરોતર	૬૫
ચદિદ	૧૯૬, ૨૦૨
ચરિદ કન્નાણી	૮૪
ચાપાને	૪૪
ચૈતન્ય મહાપ્રભુ	૨૨૧
ચોધરા	૭૫
છાનદેવા પદ્ય	૨૦૫, ૨૧૧
છાન ગાનિ	૬૪
„ ની તવારીખ	૬૪
„ નમર	૭૨
„ મડગ	૬૭
„ ના રીતરિવાજ	૭૨
છોટુમાર્ષ	૪૫
જગનસાહિત્ય	૩૫
જનમાહુમી	૧૧૫
જવાહરલાલ	૧૬૮
જમ ખલ ગિયા	૨૧૯
જ ક. જ નેત્રી	૧૩૫
જુજી બકરાણા	૪૪

પા. નં.

જૂનાગઢની જ્યે	૪૬
જેડિયાનો મેળો	૫૫
જેઠીનામ	૨૨૨
જેસન અને તોરન	૨૨૨
જીનાવાડ	૧૩૧
ટીટોડાનાં મીત	૩૦
ટેસ	૩૫
ટાંકડા	૭૪
„ -ભીઓ	૧૦૩
„ કાટિયા-	૧૭૧
ડામગિયા	૭૯
ડિયેન દામસ	૪૦
ફૂજરપરી	૨૧૧
ફેઝડીમોના	૩૫
ફેફાડાઈસ	૪૦
ફેવીસ ડામ્સુ એચ	૪૦
તખનાજી	૨૨૩
તાપ્ત વેશી રેવ	૭૫
ગુકારામ	૨૨૧
દરિયાવમેન ૧૯૭, ૧૯૯, ૨૦૦	
૨૦૧, ૨૦૨	
દારનાં મીતો	૭૪
દામી જીવજી ૨૧૯, ૨૨૦, ૨૨૨	
ડિવાળીમહેન	૫૨
દુધ્યત	૩૫
દેવારામ	૨૨૨
દેવાન પાંડિત	૨૨૨

	પા. નં.
દેવેન્દ્ર સત્યાર્થો	૮૪, ૯૬, ૨૭૩
ધીરા	૨૨૧
ધોળકા	૨૧, ૧૩૫
નટવત્સાહ વ્યાસ	૧૯૬
નયુરુગ	૨૧૧
નર્મદ કવિ	૧૨૮
નર્મદા	૪૧
નગસિંહ	૨૨૧, ૨૨૨
નરસિંહરાવ દિવેડીયા	૧૯૬
નવનબાર્હ	૪૫
નવગપુરા	૮૩
નવાળ સાહેબ બગણાના	૧૨૬, ૧૨૭
નળ સરોવર	૩૧
„ નો કઠિા	૨૭, ૪૧
નાનક	૩૨૧
નાનુબાર્હ	૧૦૬
નામદેવ	૨૨૧
નિધુલાનદ	૨૨૧
પદાર	૧૭, ૨૦૫, ૨૧૨
પદારણા	૧૮
પદ્મદેના લોકગીતો	૧૬
„ નો સમાજ	૩૧, ૩૨, ૩૬
„ ની સંસ્કૃતિ	૩૧
પરતાપબાર્હ બપાડ	૧૩૫
પરબા	૧૧૭

	પા. નં.
પાટણવાડા	૧૧૫, ૧૬૭
પારવતી બહેન	૧૦૬, ૧૨૯
પોપગિયા	૪૨
પૂછ ફોર્મ	૧૯૭
પૂનમચંદબાર્હ	૧૫૩
પોશીના પટાના બીલો	૮
પ્રેમાનંદ	૧૯૬
ફાગ	૮૪, ૮૫ ૮૮ ૯૧
„ ચોપડિયા	૯૫
ફિન્લાડ	૧૨૭
ફોનિન્સ બેન્ટલી	૫૧
બગોદરા ગામ	૪૮
બનાસના તીર	૧૬૭
બાકરોલ	૨૩૫
બાવો ઉલ	૨૧૧
બાજન સાહિત્ય	૨૧૬
બવમૂનિ	૧૮૧
બવબાર્હ	૧૫૬, ૧૬૦
‘બાવુ’	૬૫
ભાદર	૯૯
ભાલ	૧૭, ૧૨૨, ૧૩૮
ભાસ	૧૮૧
બાણ સાહેબ	૨૨૨
બીલો રામસ્થાની	૮૪
બૂનાય	૨૨૧
બ-રખા	૮૨

	પા. નં.
ભોગાવો લોમડી વડવાણ	૪૨
મનમુખવાદ મીચો	૨૩૪
મગસિયા	૧૨૬, ૧૬૫, ૨૦૧
મદાતમા માંધી	૪, ૫
મહીપનગમ નીનકઠ	૧૨૮
મહી	૪૧
મહુવા	૧૩૬
મહુડીની ભોનારાણી	૯૯
મહેસાણા	૧૭૫
મન્દાવરાવ	૧૭૧
માંડબુગડ	૮૫
માંડવા	૧૮૬
મારવાડી જીવાનિયા	૮૩
, વાધરી	૮૩, ૧૪૦
મીરાંબાઈ ૫૪, ૨૧૧ ૨૧૬, ૨૨૨	
મુખી કનુભા	૪૩
મુનિ સતમાન	૪૫
મેવાણીબાઈ ૧૧૭, ૧૨૮, ૨૨૦	
મેઝદીઠ	૪૦
મેઝદ ટેકરિયા	૧૮૨
મોગર સાહેબ	૨૧૮, ૨૨૨
મોડાસા	૨૩૫
મૃત્યુમીતો	૭૮
મગ્નપૂત જાનિ	૬૫
રદિયાળી રાત	૧૧૭
રજીજીન ભ વાવાભાઈ	૧૨૮

	પા. નં.
રગારી	૧૬૭
રવિનાથ	૨૨૬, ૨૧૭
રવિસાહેબ સત	૨૨૨
રવિશંકર મદારાજ	૮૯
રવીન્દ્રનાથ ઠાકુર	૧૮૨
ગહેમનપર	૧૦૫
ગજપીપગા	૭૫
રાજસ્થાન	૬૫, ૮૫, ૨૨૩
રાગિયા ૨૭, ૧૮૭, ૧૯૫, ૧૯૭	
રાજુડી	૫૩
રામ	૩૫
રામાપીર રણજના	૮૪
રામદેવી	૨૧૧
રામદાસ	૨૨૧
રામચંદ્ર ઠાકુર	૨૩૫
રામચંદ્ર	૧૨૮
રાવણ	૧૮૩
રાડ નહી	૪૨
સખમોખા	૨૨૩
સખમો મળી	૨૨૨, ૨૨૩
સગનમીનો, દિફુના	૭૨
સાના જાન	૨૧૧
વિવામ ફોલોદગી	૪૦
વ્યુસી ઝે	૪૦
લોકનાટ્ય	૧૬૧
લવણ	૨૨૨
લોદા	૪૦

	પા. નં.
વડાંઝવડાં	૪૦
વજુમારા	૨૨, ૨૩, ૭૪
વોહરા	૧૯૭
વનગતિઓ	૭૫
વત્રીભાઈ	૧૧૮, ૧૫૪
વર્ણદાની દુવેલી	૮૪
મજનાથ	૨૨૩
વાધજીપુર	૧૪૩
વાલીએન બાઈ	૫૩, ૫૪, ૫૫ ૬૨, ૨૧૧
વિળપુર	૧૭૫
વિધ્યભાઈ	૧૩૫, ૧૩૬
વિધ્યરામ કૃષ્ણરામ	૧૩૫
વિહા ગંગદા	૫૨, ૫૩
વેરિયર ઓસ્વન	૧૮૨
વેસેકસ	૯૯
શકુન્તલા	૩૫
શાંતિભાઈ	૪૫
શામળાજીનો મેળો	૧૫૩
શિયાળગામ	૪૫, ૫૨, ૧૧૫
શેકસપિયર	૪૦, ૧૮૧
સંભાદ્રી	૭૫
સસેકમ	૯૯
સાતપુડા	૭૫

	પા. નં.
સાગરકંઠા	૮૪, ૧૫૩
સાગરકંઠા-પોશીનો પટો	૩
સાગરકંઠાના બીલો	૧૧
સાગર નદી	૪૧
સિંધ	૧૧૩
સીના	૩૫, ૧૬૬
સુણસર	૯૯
સુગત જીમો	૭૫
સુર્કિસ્ય પારીક	૧૩૩
સેટવમેન્ટ	૬૫, ૬૭
મોમાબાઈ	૧૦૫, ૧૦૬
સોરઠ	૯૯
સોરઠી સંતવાણી	૨૧૯
‘સોશિટરી રીપર’	૪૦
સૌરાષ્ટ્ર	૧૨૩
‘સમૃદ્ધિ’	૨૩૪, ૨૩૬
હુગોવીદ પ્રેમશંકર ત્રિવેદી	૧૨૮
દિમનનગર	૧૫૪
હેવુડી	૪૪
હેમલેટ	૩૫
હોયી સંત	૨૨૨
હોળીના ગીતો	૭૬, ૭૯
અમસિનિર	૮૨
શ્રીમત સ્વાજીરાવ	૯૯
જ્ઞાનેશ્વર	૨૧૨



આમાં નાંઈખા બિખારી

કાળુડાં ભાંડુ

દોળો બાઈલા બિખારી આમાં નાહા બિખાર્યાં !

આ માથુ છે ગુજરાતમાં વસનાં કાળુડાં ભાંડુએ, સહ્યાદ્રિ અને સાતપુત્રની કુંગરાળ વચ્ચે વસનાર્ગ વનવામીઓએ, અગ્ન્યર્ધમાં ધૂમનાર્ગ બિહારિય કાળાં માનવીઓએ, જમ્બુની ઘાટીમાં ડમલાં મૂકે ત્યારે તેની સાથે અને ધરતી સાથે આત્મીય ભાવ ડેળવી જિંદગીને સાણી ગજુનાર્ગોએ કેટલાક નવંશશાસ્ત્રીઓએ તેમને આદિવાસીઓના નામે ઓળખાવ્યાં, કેઈએ તેમને કાળીપગ્ગ કહ્યાં, તો તે સમાજનાં દિન રૂંચે વન્યાં છે તેવાઓએ તે નામને સંકારીને રાનીપરગના કુલામણા નામે સંબોધ્યાં તો સ્વરાજ આવ્યા પછી તેઓ વનગતિના નામે ઓળખાયાં તો કેઈએ તેમને ત્રિગિજન અને જમિજન કહી મિરદાવ્યાં. ગુજરાતનાં અસ્પૃશ્યોમાં, કુચગોત્રીમાં, નદીકાંતગોત્રીમાં અને પર્વતોમાં વસનાં આ 'કાળુડાં ભાંડુ' બહુ મોટી સંખ્યામાં છે, તેનો ખ્યાલ વરતી-ગજુનગીના જનસંક્રાંતિ પત્રી આવે છે,

શાસ્ત્રવિદોએ તેમને આ ધરતીના ધણી તરીકે પણ ઓળખાવ્યાં છે. ગજગી મામડીવાળા, લાંબા, રૂપાળા ને અણિયવ નાકવાળા, ૫૫-૭૬ સરીર, મોટાં માથાવાળા ને અંજરી પીંજરી આંખોવાળા તો આ સર્જીમાં પડેલીએ છે, ધરતીના સાચા ધણી તો ગુજરાતના સીમાડે એડેસ બીન, જાંબા, ગામીન, વસાવ, કેળી, વાંદર આદિ છે.

પણ વર્તમાનમાં ઊજળા વર્ણવાળી પ્રજાએ આ કાળુડા લોક પર જબ્બર સત્તા અને અધિકાર જમાવ્યા છે ભૂતકાળ-નજીકના ભૂતકાળમાં તેમની રિયનિ આ દત્તી પરિણામે કાળુડા ભાંડુ હોજગઈ ગયા, દર્બાર ગયા અને જગનોમાં, પદાડોમાં, નદીઓના કાતરોમાં, અલાબીડ પ્રત્યત પ્રેશ માં, દરિયાકાંઠે કે ગણના મુનકમાં જઈને સતાર્થ બેઠાં. આ જાનિઓના પગે નીકળીએ તો પુગણકાળથી આગળ જઈને ઊભા રહેવું પડે છે પુરાણના પ્રથેમાં સબ્દો જડે છે - કૌલ દરવુ દાર, કિાત, ઈત્યાદિ ડો વેગિયર એનિને તેમની એ પુસ્તિકામાં નેગિટો Negrito, પ્રોટો ઓસ્ટ્રાલોઈડ્ઝ Proto Australoids જેવા સબ્દો મુકયા છે એક વિદ્વાને કહ્યું છે It is undoubted that these tribes in most cases, are of Dravidian ancestry તેમનાં સંસ્કાર અને સંસ્કારિતા અને જીવનીનાય સમઃ પ્રાચીન પ્રથેમાંથી જડે છે. તે કાળુડા ભાંડુ પાસે તેમનું જ બધું હતું જે આર્યોએ આવીને, ઊજળી આમડીના માનવીઓએ આવીને, તેમની વચ્ચે વસીને ખૂટવી લીધું અને તેમના પર તેમના સંસ્કારોનો ઓપ, મલેપ અને રમ ચઢાવવા મથા-મથુ કરી, પણ તેય આજનિન સુધી તે કાળુડા લોકોએ તેમના સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિ સિવાય કશાયને તેમના સુધી આવવા નથી દીધાં હા, તેમાંથી સાંકયું જન્મ્યું છે, અર્યોમાં અને આ કાળુડા ભાંડુમાં તેમ જતાંય તેમની મુક્તાનમપ્રથા આજેય અકમલ જળરાઈ રહી છે તેમનો સંસાર આંતીવૂની વગરનો નન્યા વગર સાવ સતળ જ હજુ છે અને તેમના શેખો—માજવાં પકડવાં, શિકાર ખેનવો, દાર પીવો, નાચવું, મેળા કરવા—આજ સુધી નબ્યા છે રાજકીય પતટાઓ સાથે તેમના જીવનમાં કાંક કાંક પતટાઓ આવ્યા છે, પણ તે પાછા તેટલી જ સળ તાથી ખરી પણ મવા છે તેમની જિન સંસ્કૃતિ જતાંય તેમણે સદ અસ્તિત્વ રવીકાયું તેથી જ ડો વાસુદેવસરણ અમરાને તેમના માટે લખ્યું છે પૃષ્ઠીકો ગોદસે જિસને જન્મ લિયા હૈ ઝહીસે હમારા વાંધુવક્ર નાતા હૈ ।

ગુજરાતમાં ક્યાં ક્યાં ?

ગુજરાતનો સામ્રાજ્ય તેમણે સર કર્યો છે સગરકાંઠા પર વસતા ખનાસી, ખારવા તો કાળીઓ છે, કૌવમાથી જીતરી આવેલ પ્રજા-મરત, ત્રિદાદિલ અને મગજવા ગુજરાતના ઉત્તરપૂર્વના સીમાડા પર જોયા મસ્તકે જીભેન અવસ્થી, પાવાગઢ, સાતપૂડા અને વિધ્યમા વસના બીવ, ધોડિયા, દુમળા, તળાવિયા, નાયકા વારના, વસાવા, ચોધરા, મામીત અને કાળીઓ છે સુસ્તના દરિયાકાંઠા પર આ કાળી-ઓના ધામા છે અરવલ્લીના હુગરાઓ ને જાખરના મુનકમાં બીવો અને કાળીઓ સાથે વસવાટ કરે છે મધ્ય સોરઠમાં કાળી સાથે જીજળી મેર અને આહીર જેવી ખડતલ પ્રજા પણ બેડી છે કોડીનારના કાંઠે વાધેર જેવી અરણિયા ઝંડૂલી જાતિ ગુજરાતનું રખવાળુ કરે છે ગુજરાત-સૌરાષ્ટ્રના સીમાડે નળસરોવરના કાંઠે પઢાર, સામરમતીના કાંઠે કાકરડા મહીના કોતરોમાં ખારેમા, ધારાળા, નર્મદાકાંઠે વસાવા અને માછીઓ મનાસના ઉત્તરકાંઠે કાળી અને કાકરડા અને કચ્છના રણના સૌરાષ્ટ્રને વળગીને પેરેલ છેડા પર ચુવાળિયા કાળીઓ, જલ અને મિયાણા આમ કાળુડાં ભાંડુ ગુજરાતના વિશાળ મહેરામણનો આશરો લઈ રહ્યાં છે, તો કોઈક હુમરાની ધાર સાથે વાંસનાં ખોરડાં બાંધીને જીવે છે ચોડાંક ચરાદરીના રેતાળ અર્ધ-રણુ પ્રદેશમાં દહાડા કાઢી રહ્યાં છે, તો કેટલાંક વનવાસી બન્યાં છે નદીનાં કોતરોએ પણ તેમને સ્થળો છે સમળ અને સપાટ મુલક—અરોન, નર્મદા તાપી વચ્ચેનો મુલક અને ઝાનાવાડ ગોહીનવાડ-નવાબી પાડી જીજળા વણુના માનવાઓ ત્યાં વસ્યાં ઇતિ-હાસ ટહ છે કે ચાસન કરનારનો જાવ જિતાયેલાને રહેતો હોય છે તે કરતા હોય છે—માન તેના લરકરથી જ નહીં, પણ લરકરથી ૫ વધુ તકાતવાળાં ધર્મ, સરકાર અને રહેણીનાં બીક લાગતી હોય છે । કાળુડાં ભાંડુ આવા જ જાયે હુગરામાં, અણથમાં, છુમાં અને નિર્જન પ્રદેશમાં ચાંપ્યાં મયા

કેવા છે તેમના વસવાટો ?

અંગ્રેજોમાં લખાયેન આ વર્ણન જુઓ ‘The aborigines

live on the hills, forest and ragged countryside of India. Broadly speaking, they live on a long and broad belt of land starting from the Arvalli Hills in the west, proceeding into the Vindhya and Satpura Hills and portions of Western Ghats.'

આ બીજું અવગણ્ય વાંચો : 'If you care to travel through their villages, their hills and forests, you will find them in thousands roaming in nature's garb...'

તેઓ વમે છે મરણ પડ, કુમર પડ. દરેક કુમરે છૂટક છૂટક ખોડાં જોવા મળે. ગ્રામ વસાવીને જૂથમાં વસવાની ટેવ તો તેઓએ આજે પણ કેળવી નથી. તેમના આ મરણમાં વાસ, સાગ, મહુડા ખૂન જોગે, તેથી તેમાંથી જ તેઓ તેમનાં ખોડાં બનાવી લે છે. ભીંસા, ગાંધીતો, વસાવાની આ ઝવનરીનિ છે. પણ નદીકાંતોમાં અને રણની કાંધી પર રહેતા કોળી, ધાંગળા, બારિયા, હાકડડા અને પડાર જૂથમાં વમે છે. તેઓ વાસ બાંધીને ગ્રામમાં જ વસતા હોય છે પડાર કુળમાં જ રહે છે. એક કહેલી છે : 'કેળીખાઈનો કૂબો...'. કોળી પણ આજ દિન તક આવા કુળમાં જ વસતા. પણ હવે ખેડમાં જોડા જીનરેય કોળીઓ ધર વસાવે રહેતા થાકેલ વર્ષથી થયા છે. યગદરી, કાંકરેજના હાકડડા પણ કુળા અને ખોડાંમાં વમે છે. ધારાળા, બારિયા ધર બાંધીને જવે છે.

ક્યા કુળના?

આ રહ્યું એક ઇંગ્લેન્ડનાં કવિ : 'India is an ancient land and its history dates back four to six thousand years. India has been the home of the primitive races from prehistoric times. The Vedas contain

useful information about the dark thick-lipped noseless, godless primitives who came into conflict with ancestors of the Aryan race...

ભાડા હોઠવાળા, ચીંચા નાકવાળા, કાળી ચામડીવાળા અને મૂર્તિપૂજના અજ્ઞાનવાળા લોક તે જ પેલા Negrito તો નહિ? દ્રવિડોએ તો નહિ? બીસ, વસાવા, પદાર, કોળી વગેરે કાળી ચામડીવાળા છે. તેમના ધર્મના માટે સંશોધન કરતાં જણવા મળે છે : તેઓ પશુપૂજા અને શક્તિપૂજામાં માનનારા છે. તેઓ તેમના હુમરાના દેવને પૂજે છે. પિતૃપૂજા પણ તેમનામાં ખરી. પદારો શક્તિપૂજક છે : The primitive races in India are animist, but through the centuries, they have been assimilated into what is broadly and generally known as Hinduism. આમ તેમના ધર્મમાં અને સંસ્કારમાં આર્યોનાં, હિંદુઓનાં સંસ્કાર અને છાપ આજે જોવા મળે છે, પણ જુઓ :

‘દેવલી માડીએ જાંતીજે, ડાયા જતારો, હેરા આલેરામાં ડાયા’

‘દેવલી માડી’ હુમરાનો દેવ : આ માયું સોનમદબ્યારાના આદિવાસીઓએ પદાર શક્તિપૂજક છે તેમની કટકેટલી દેવાઓ છે ! અને તેમનો બુલો તેમની રવાણીઓ માય છે. અને કોળી ઈત્યાદિને કયા કુંગના લેખવા ? પદાર અને કોળી એક જ કુળમાંથી જ એમ પદારના સંશોધન પછી લગભગ સ્થાપિત સત્ય બનવા પામેલ છે. પણ આર. ઈ. એન્થોપનનું આ કથન જુઓ : Bhils and Kolis are aboriginal tribes which probably do not differ at all in origin. નિશ્ચય હેતરે કોળી માટે કહ્યું છે : They are only civilized Bhils. મિ. વિલંધબી (Willoughby) કહે છે : Baria has sprung from Kolis. મિ. ટેલર ધારાણને કોળીની

પગતના લેખે છે અને મિ. મેનરિંગે લખ્યું છે the wilder population of eastern Ahmedabad are equally under the name of Bhil and Koli. પણ મેનર જે કન્ટ્રી વોટ્સન અને રેવ. ટેલર માને છે ‘...it is very difficult to draw any line between Koli and Rajput. The story with which the Prantj Kolis account for their own origin is general in Eastern Gujarat, namely that their progenitor was a Rajput, who lost cast by taking water from the hand of a Bhil woman.’ આવા જ ઉદ્ભવે મિ. એફ. એસ. પી. લેનીએ પણ આ કોળીઓ માટે કહે્યો છે સાપ ગયા...

થરાદરીના કોળીઓમાં કિવદત્તી છે કે તેઓનો પૂર્વજ રજપૂત હતો, પણ રૂપાળી કોળીઓના પ્રેમમાં પડ્યો અને તે વડનાયો એના પેટના સતાનો તે થરાદરીના કોળીઓ, હામરડાઓ જીવોમાં મગશિયા કૃત્યાદિ ઓળખનામો છે તેમને પણ રજપૂત કહેવાવલુ ગમે છે પદારો દહે છે કે ધનમેર કોળીનું આવાથી અને પાણી પીવાથી અમે દુધડી જાતિના થયા, પણ અમે મૂળ તો રજપૂતો દરિજનોમાં અને કુળો રજપૂતોમાંથી આન્યાં છે એમ તેઓ દહે છે મડોળા વાવરીઓ પણ મહે છે કે અમારો વડનો જુવાન વાધણના પ્રેમમાં પડ્યો, તેને પરણ્યો ત્યાર પછી તેને તેની નાતના રજપૂતોએ નાત્તમદાર મૂક્યો અને તેમાંથી અમે મડોળા વાધરીઓ પેટ થયા નાજપીપગાના વસાવા પણ તેમને રજપૂત હોવાનું માની ભેગ છે છારાઓ પણ તેમને રજપૂત હોવાનું દહી ન્હા છે આમ આ દાગી માનવીમાં આ માનવના આજે પણ પ્રચલિત છે કે તેઓના પૂર્વજો રજપૂતો હતા, અને તે કુળગૌતવમાં આજે વ તેઓ રાંચે છે સામતથાદી મુગમાં ન્યારે રાજસાસદની બેદાનુ સદા હતી, ત્યારે અનેક લોકોને, જાનિઓને અને કુળોને સતાના

સાંભ હોય તેવું કહેવડાવવું ગમ્યું લાગે છે. આજે પણ તેમ જ છે. આ જ કારણે, સત્તાથીયે કુળોની નજીક તેમના કુળને યોડવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. મધ્યાહ્નથી નાં છતિદાસમાં હિંદુઓમાંથી આખા ય ભારતવર્ષ પર રજપૂતોએ ઠીક ઠીક વર્ષો લગી શાસન ચલાવ્યું. તે માળામાં આ ભતિઓએ તેમને રજપૂત કહેવડાવ્યા. સાચ જ્યા, અને હિસોટા રહ્યા. પણ આ બધામાંથી તારણ તો આટલું જ નીકળે છે : ‘આ પૃથ્વી-પુત્રોને આર્યોના અંરક્ષણી છાંટ આપીને જિવાડવામાં આવ્યા છે.’

જીવનનું કર્મણ્ય

આ કાળમાં બાકીએ જિંદગીમાં સીધો, સાદો અને સરળ પથ સ્વીકાર્યો છે. તેમના જીવનમાં પ્રકૃતિને અને પ્રકૃતિમાંથી મળતા આનંદને સ્થાન મળ્યું છે. પૃથ્વીની રજ ને પ્રકૃતિનાં અનેક તરવો જ તેમની નજીક છે ને તેમાં તેઓ જોતજોત બને છે. તેમાં જીવનના આનંદને જ ગાયો છે. માટે જ તેઓએ ગાયું છે :

‘આને, પીએ ને માયા માણ્યું રે !’

મરત જીવન ! કોઈ મળતી બીજી લપછપ નથી. ખાવું છે, પેટ બરીને, સિંધવ ખેતીને, માછલાં પકડીને, પખીનો સિંકાર કરીને

અને માયા માણવાની રીત પણ તેમની અતોખી છે :

હાથ કટુરી હાથ રે, રમજીયુ રે, પીજીયુ વાળે !

હામજાળને મેળે રે, “ “ “

મેળા કરવા છે અને મેળા કરવા છે તો કઈ રીતે !

હ પહેરીને જઈયુ રે,

કાને કઈને જઈયુ રે,

ન મોડે તો, કપડે જઈયુ રે,

માયા, આમ, માણવી છે. ‘જીવનપોરનું ગાજરિયું’ બરધાને હોય ત્યારે ‘કોને કોને હવ કરે છે ? તે ય તે સમાજના લોકોએ માર્ગ નાખ્યું છે.

જીવન જીવવાના, તેમના માર્ગ—ઘાંટા અનોખા છે. પદારણ પુત્રવધૂને
પણ આજ મેળા કરવાની આત છે :

મારી સાસુ ક' ઉ ક વહુ, નથી ભણું મેળે !
ઠ.નીમાની રે'લે, ચૂલે બેસી રે'લે, ચેટલા ધડી રે'લે,
મારે ભણુ ઉ મેળે.

મેળે જનાર પદારણને જીવનમાં શાં શાં અરમાન જન્મે છે ?

• કાકોરિયા રજવાડાને રે પાદર પારસપી પળે.

હીચકો તો પાદર બધાયો છે, પણ આ પદારણ તો રસની
રસિયણ છે તેથી પુછાવે છે કે ક્યાં બધાનું હીંચકો.

કાકોરિયા, આં રે બધાનું રોજર હીંચકો ?

અને આ અરમાન અનોખું છે :

બાધાળે બવાલા રે રમે,
સૌએ છારિયું ત્રેવા ભય,
ફેબા સારા આદમી દારે ભય,
ફેબાને દેવશે દેરી ગયો !

ફેબાને દેવશે દેરી ભય છે, જલ્પે કાકીની સાથેના નાનાને
કાગળે માથું દૂધ કરી દે છે, વખની સમીડાની સાથે બાગી ભય છે
તો તેને ઉવાડા હાંમે ગાનાં આ સમાજને કોઈ નિષિદ્ધ નડનાં નથી.
તેમના જીવનનાં આબમાં જ આ ગીનો, આથી જનતા પામ્યાં છે.
આ ગીતો તે જીવનની વિવરનાનાં આકૃષ્ટી બન્યાં છે. જીવન એટલે જ
વિવરના અને વેદના. જેમ વિવરના તેઓએ ગાઈ છે તેમ વેદના પણ
ક્યાં એકી ગઈ છે !

વજાળગના ફામ જુઓ ! પનિયની વચ્ચેના સંજયો જમડયા
છે ત્યારે સખી ચિખામણ આવે છે :

જા ચે સજયો ! દે રે જા ચે સજયો !

પદાર યુવતીના એવા જ સંજ ધોના કાંઠે લોકગતના ગાયકને
ગાવું પડ્યું છે :

ઠાઠા, આવેડયાં દખ વેઠ્યા કેમ નય ?

સૈયર, અખોલા ભને ર્યાં !

ત્યારે વ્યયિત હોયે દાદાને દીકરી સિખામણુ આપે છે :

‘ દીચરી, નેમ વેઠાય, ઇમ વેઠલે,

આપણુ મોહાનાં છાત્રુ કેંવાય.’

દેવાની આવી વેદનાને કોઈ ખીજી રીતે પણ લોકઆપકે વ્યક્ત
કરી છે :

‘ તારા દલની આંદી મેલી !’

વજ્રગમના કામની ભાષામાં હિપચુકત કથનને વ્યક્ત કરવું હોય તો
આમ જ વ્યક્ત કરી શકાય ને ? ‘ કર લે રાજપો !’

આ ‘ કર લે રાજપો ’ કે ‘ તારા દલની આંદી મેલી’માં વ્યવહાર-
દક્ષતા જ ગાયકે બતાવી છે ને ? દલની આંદી મેલી શકે કાં તો કોઈ
વ્યવહારપુરુષ કે કાં તો દિલ્લરિયાવ માનવી ! સંસાર તો એવા જ
પુરુષો ને સ્ત્રીઓથી સમુજગવલ ભાસે છે ને ? નાનકડા શબ્દગુચ્છમાં
લોકકવિએ જનસમાજને સી મોટી સિખામણુ આપી છે ! દલની
આંદી મેલે કે રાજપો કરી લે તો તો મુઢો થ જાય, દિલમાંથી, દિમાક-
માંથી, પ્રજાએ પ્રજામાંથી અને ગાંઠે રાષ્ટ્રમાંથી ! લોકકવિઓએ આ
જ રીતે માનવજાતને સરકારવાની પ્રવૃત્તિ આજ સુધી કરી છે એ
પ્રવૃત્તિ અવિરતપણે અઘાપિપમંત ચાલુ રહી છે સત્પરકાદાના કોલોએ
ગાયુ :

ઘર કોઈ મા ખીલે, ને નવો હલકો રે !

... ..

ઘો તો કોઈ મા માલે, ને નવો હલકો રે !

... ..

દુશી કોઈ મા માલે, ને નવો હલકો રે !

ગામીન લોકોએ ગાયુ છે

દાર છોડા, દાર છોડા રા !

ઓ રામ, સત્યનાથ વૈયા !

ત્યારે વ્યવહારુ વણખર્ચને વણખરા જોડેનો મનમેળ તૂટ્યો છે
તેને તે સમારનીર ડહોળવાની ના પાડે છે -

કર લે રાછપો હે રે કર લે રાછપો !

તેમના ફાગની આ પકિતઓ જુઓ

હાથમા ગોમ, બેઠક સારી લાગે,

માથામા અમલની ડબી, ખારી લાગે !

માવો છોડ હે ! હે રે, માવો છોડ હે !

અને ચૂવાળની ઢાળણને જુમડિયા પતિનો પૂરા પરિચય થયો છે
માટે તેણે ગાયુ

જુમડિયા સરદારે, જુમડ કોઈ રમયો નૈ દે !

જુમડ રમવા શું શું હાર્યો ! જુમડ રમવા બાચકી હાર્યો !

છાન્ડા વિખાજ્યા ડહ્યા, જુમડ કોઈ રમયો નૈ રે !

અને માનવને એણે આપે—કાર્યગત થવા માટેની તે આ
પકિતઓ

અસ્થા દિધા છા સમ,

અસ્થા બિધા છા સમ,

અસ્થા બિધો છો છા મટે રે જીક અને જામ ! કામે લામ ! બને
યા હે મ કરીને આગે પાવની લવના કવિએ એમાં ન દાલવી દોષ,
પણ માનનીને રચદારે માગીને તેને સગવળતા તો એ જરૂર કરી દે !

મીઠી સુઆનિદિ સિખામણ આપનાર સંરક્ષકનાએ તે મહાજના
અનેક પ્રમગને દષ્ટિ સમક્ષ ગાખીને તેની કાવ્યસર્જનપ્રવૃત્તિને ત્યાં
જોડી છે આમ તે પત્ર-સ્તી નજરે સમજને નિદાગનાર તેના

સમાજના નાનકડા પ્રમંગને તે કવવાનું કદી નથી જુવતો, જો તે જરૂર
પણ 'ફોમેટિક' હોય તો ! ચાલુનો છોકરો સાંઢિયો લઈને ધીના
ભાડે ગયો તે લૂંટાયો તે પ્રસંગ આજે મળે છે. ચેલા બે બીડા પુવનો
પોલીસના પંખમાં આવ્યા તો તેને તેઓએ છોડ્યો નથી કે બીયમાં
ફૂકાળનો કારમો અને કનાળ પત્તે પડ્યો તો તે પણ તેમનો કવનવિષય
બન્યો છે. આ તો સામાજિક વિષયો છે, પણ ઐતિહાસિક પ્રસંગો
તેમાં ગવાય છે. કડીમાં મદદારરાવે બંગલો બંધાવ્યો તો તેનું ગીત
ઉત્તર ગુજરાતમાં મળે છે સજીસરના દારૂડા પાસેથી અંગ્રેજ ટોપીવાળા-
નાં ગીતો મળે છે તેમાં માત્ર ઇન્દિયાસની શુભક વિગત નથી પણ
માનવહિસની સહાનુભૂતિ અને અનુકંપા પણ જોવા મળે છે આમ તે
કવિ તો માનાર છે માનવહિસનાં સંવેદનોને જ. તે ગવાયાં છે માટે
લોકગીતનાં ઋણીનાં નીર નથી વાસી ચર્વા કે નથી ગંધાયાં.

પણ ધણા લવ સાવ નવા પણ લાગે છે. ને તે જ છે માનવનાં
મનડાંની ખૂબી. જે લાવ સામાન્ય જનસમાજમાં નથી જોવા મળતા,
તે લાવ 'કાળુડાં લાંકુ'નાં લોકગીતોમાં જોવા મળે છે. જદ્ર સમાજે
સાસનિયામાં કુઃખ વેઠતી દીકરીને શિખામણ આપતાં ગાયુ :

‘દાદા, આવેડયા દખ વેઠયા કેમ વેઠાય ?’

‘દીવરી, જમે વેઠાય, ઈમ વેઠજે !’

અને દીકરીને સાસરે વળાવનાં પણ કઈ કઈ શિખામણ લદ્ર
સમાજે દીકરીને આપી છે, પણ ગામીનનાં લોકગીતોમાં જુઓ :

‘ત્વા તે રાજે બેના, ચેતી રાજે વા’

સાસરે વળાવતી દીકરીને કહ્યું : ‘ખહેની, તારાથી સાસરે રહેવાય
તો રહેજે, નહોં તો પાછી આવજે !’ અને આગળ ગાયુ છે કે તારું
સાસરિયાં હલકાં લોક છે ને ધરમાંથી તને જગજમાં કાઢી મૂકશે. જો
આવું બને તો આપજે દહેજના પૈસા પાછા આપી દઈશ.

એનો ગો અર્થ ? છેડો જ ફાડી દર્શાવું

ત્યારે, આ લોકગીતોએ સમાજના અનેક ભાવોને, પ્રસંગોને, જિવન-જોને અને નિષિદ્ધોને ગાયાં છે અને આમ માનવસમાજનાં તે સાચાં આભવાં સમ જન્યાં છે.

આ વાસી કવિતા નથી

સમાજનાં આ જ વર્ગોનાં ગીતો લોકગીતની મુદ્દિમાં સાંપડે છે ! દીકરી, દીકરીનાં દુખો, પ્રેમની સફળતા કરતાં વિશેષ નિષ્ફળતાના ભાવો, વ્યસનનાં ગીતો કે ફાટેલ આંખનાં સુમારગીતો જ આ મુદ્દિમાં સાંપડે છે ! ખરો સજવળો સંગ્રોધક તેવાં જ ગીતો મેઘવીને ઓઝાર નહોં ખાવ ! કેમ કે તે સમાજને માનવસૃષ્ટિના સર્વ કાર્ષ્ણ્યો ભાવો-વર્તમાન યુગ તેમજ જૂનકાળન-અપર્યંતા હોય છે તેમને તેમના આર્થિક પ્રશ્નો પણ 'ભાવ'રૂપે જ તેમની સામે આવીને ઊભા હોય છે, તેથી જ ગાય છે :

એક ચાળીસ તો દારિયા લાગ્યા.

આ એક ચાળીસ દારિયાને શી શી મૂઝવણો અનુભવરી પડી ! ચુનીલાન મોઝડીવળાએ તેમની પાસેથી પગલે મજૂરી કરાવી તે તેમને ન રૂચી, પણ કરે શું ? તે ભાવને માત્ર કહીમાથી જ વહેતો મુકાવ. તેથી તેને તે સમાજે ગાયુ. પણ વર્તમાન સમયની વધુ નજીક છે પહારનો આ ભાવ :

દાર્પો ઓઝો રામસજ,

દાર્પો ઓઝો રૂપસજ,

દાર્પો ઓઝો ધપુમવાડો રે .

કૌમિસનું ગળ્લ રથરાધુ, ગમસંગ-રૂપસજ જેવા કાઝારો તે ગયા, પણ ધપુમ પર ગજ કરનારી કિટિય સગાર પણ મર્યા અને આજગ જઈને કૌમિસનું રોનકદાગ ચિત્ર આપે છે :

પાંચસે પાસવાળા કોમેસ બાપુ !

હસેં ખેતરવાળા.....

લીલડી ઘોડીવાળા કોમેસ બાપુ !

રોજડી ઘોડીવાળા કોમેસ બાપુ રે લોલ !

અને સ્વરાજના આઘ્યાની હાદલ પોરણીના પટામાં બીનોના કાન
પર કઈ રીતે પડી ?

માતમા ગાંધી આવે, ને નવો હલકો રે !

લાકરિયા તાર માંધણી, ને નવો હલકો રે !

બાંધવી એકી બાંધવી, ને નવો હલકો રે !

આ નવા યુગનો નવો હલકો બીનોએ ગાયો, પણ ન્યાયે
ગામીતોએ શ્રમશિબિરે ગામડાંમાં મની જોઈ ત્યારે તાનમાં આવીને ગાયું :

શિબિર દેરા આવેતમાં ડાયા !

જલ્દીરા રુરીઓ જલ્દીરે ડાયા !

શિબિર આવી છે. તેમને મન તે પાત્રાનું ધામ છે.

આમ સ્વરાજનાં આગમનનાં તેમણે વધામણાં ગાયાં. ગાંધીજીના
તત્ત્વજ્ઞાનને તેમની કલ્પનામાં મઢી લીધું અને સ્વરાજના કાળમાં યોજાતી
શિબિરોને પણ તેમણે તેમનાં ગીતોમાં સમાવી લીધી. તેમના આગળ
કોઈ પણ પ્રસંગ માત્ર ‘ભાવ’રૂપે જ આવે છે ને માટે તેઓ તેને
તરત જ ગાઈ શક્યા લાગે છે. ભાવમાં જ રસ હોય ને ? કલ્પનાએ
તે ભાવને પછી તેઓ ચક્રતા લાગે છે !

કેવાં ભાવપ્રતીકો ?

જવાની તે ‘જીવનપોરનું’ બાજરિયું ‘કવિના મનમાં’ બને છે.
રૂપકડો, કૂટડો, જીવાન યુવતીને મન છે ‘ચૂંકુના મનિપાર,’ પ્રેમી
‘હૈયાનો દાર’ અને પરણ્યો ‘ડગા પળની મોઝડી.’ રાજિવાના
માનારને મન યુવાન તે અભિમન્યુ. ચમને ‘મરઘો’ના સંજોધને

હલા માર્યો દેલિ ઓલા ગાંધી શી પલટન દા ॥

આ તો ગાંધીની પલટન પર રચાયેલ ગીત છે. રેકા રાણીએ કયાં ગાંધીપલટન પર ગીત નથી લેખ્યું ?

પશુ ધારાને જમાનાની અસર સ્પર્શી જાય છે, તેથી તેઓએ ગાયું :

વેા શી હવ જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના !

આયું ગીત ગઢવાણી લોકોએ ગાયું : ક્યા જમાનો આવે. મોટર આવી તે પલટાતા જમાનાનું ચિહ્ન, તેથી તેમને પલટાતો જમાનો સ્પર્શી ગયો. ધારાએ નું જીવન આર્થિક અને સામાજિક પરિવર્તનમાંથી પસાર થઈ રહ્યું છે, માટે તેમણે તેનું ગીત ગાયું. આ ગીતો સમસંવેદનમાંથી જ ફૂટ્યા છે ને ! ક્યાં ગઢવાણી લોકો અને ક્યાં આ ગુનાહિત કામો કરી જીવનને ખેંચી કાઢતી જાનિ ! અને કાલનું ‘ગુજલડી રે’ (નવો હલકો પૃ. ૧૩૮) પરનું ગીત સુરત જિલ્લામાંનાં માનારાં લોકોએ ગાયું :

ખરા લોહાનું માટું કાતેડું રે લોહ,

પડયું પેલા લાલિયા હાથે, મારા બાલમજા દો;

હવે ના જઈ ધાસ કાઢવા રે લોહ !

આ ધાસ કાઢવા તે નારી કેમ નથી જતી ? એ પ્રશ્નનો ઉત્તર એ ગીતમાંથી જડતો નથી. જ્યારે ‘નવો હલકો’ના ‘ગુજલડી’માંથી મળે છે, પશુ કેટલીક પંક્તિઓ તો સાચ ખરાબર છે :

જુઓ, ‘નવો હલકો’નું ગીત :

પરજી વાઢયા પાંચ પૂરિયા રે લોહ,

મે રે વાઢી છે બીડ, રે મારા વાલમજા,

સરકારી બીડમાં વાઢવાં, ગુજલડી રે !

સરખાવો :

પરજી વાઢયા પાંચ કાળિયા રે લોહ.

મે રે વાઢયા ફસલોસ, મારા બાલમજા દો !

ગુજલડીના લોકગીતો પૃ. ૧૨૨.